भूमिका



कवि मेरेडिथ (George meredith) ने एक रमणी से कहा:—God's rarest blessing is after all a good woman (ईश्वर का सबसे बढ़कर आशीर्वाद है, सुशीला स्त्री) उस स्त्री ने फौरन जवाब दिया:—rarer than that is good music (उससे भी बढ़कर दुर्लभ है, सुन्दर 'सङ्गीत')

स्वयं भगवान् ने सङ्गीताचार्य नारद मुनि से कहा है:—

नाहं वसामिवैकुण्ठे योगिनां हृदये न च ।
मद्भक्ता यत्रगायन्ति तत्रतिष्ठामिनारदः ॥

अर्थात्—हे नारद ! न तो मैं बैकुण्ठ में रहता हूँ, न योगियों के हृदय में । जहां मेरे भक्त सङ्गीत चर्चा (गायन, वादन) करते हैं, मैं वहीं रहता हूँ ।

इतना ही नहीं, हिन्दू शास्त्रों ने नाद को ब्रह्म का स्वरूप माना है । प्रणवनाद (ॐकार) से ही सृष्टि का आरम्भ समझा गया है । हमारे देवी-देवताओं के व्यक्तित्व में भी सङ्गीत का प्रधान महत्व है । शिवजी का डमरू, नारद की वीणा और कृष्ण की वंशी का नाम जब तक संसार है, अमर रहेगा ।

प्रत्येक मनुष्य की आत्मा में गीत है; किसी के पास थोड़ा, किसी के पास अधिक, किन्तु ज्ञानतः या अज्ञानतः हम सब के अन्तस्तल में उस वस्तु को, जो केवल सङ्गीत में ही प्रकट हो सकती है, प्रकट करने की लालसा मौजूद है । इस चिन्ता, उलझन और झंझट के युग में तो सङ्गीत की आवश्यकता और भी बढ़गई है । जिस प्रकार अपने साहस को बनाये रखने के लिये एक बालक सीटी बजाता है । उसी प्रकार हम अपने आत्म विश्वास को दृढ़ करने के लिये किसी चीज के वास्ते चिल्लाते हैं । जब साधारण सीटी बजाने या चिल्लाने में इतनी शक्ति मौजूद है, तब यदि उसी ध्वनि को सुन्दरता से सुस्वरों द्वारा प्रकट किया जाय तो क्यों न उसका आश्चर्यजनक प्रभाव होगा ।

सुन्दर सङ्गीत में बड़ी विचित्र शक्ति है । इसकी मधुर स्वरलहरी जङ्गली जानवरों तक को मोहित कर लेती है, मदारी की बीन पर भयंकर विषधर सर्प फण फटकार थिरक उठता है, बहेलिये की वीणा से मुग्ध होकर मृग उसके जाल में फँस जाते हैं । जब मूक पशुओं पर सङ्गीत का जादू जैसा प्रभाव होता है, तो मनुष्यों का क्या कहना ?

आप दिन भर के व्यवसाय की चिन्ता से कितने ही थके हुए क्यों न हों, घर आकर सितार, वेला या हारमोनियम लेकर बैठ जाइये, सारी थकान एक क्षण मे जाती रहेगी । सङ्गीत श्रवण करने से उतनी थकान नहीं मिटती, जितनी कि स्वयं गाने बजाने से । सङ्गीत के प्रभाव को एक मनोवैज्ञानिक स्नान कहा जा

सकता है। सङ्गीत सुनने या गाने के बाद मनुष्य ऐसा अनुभव करने लगता है मानों उसका दिल धुल गया है और शान्ति से विश्राम ले रहा है।

प्रसन्नता की बात है कि इधर कुछ वर्षों से इस उपयोगी कला का प्रचार देश में द्रुत गति से बढ़ रहा है। देश के शिक्षित स्त्री-पुरुष सङ्गीत की आवश्यकता अनुभव करने लगे हैं, शिक्षा संस्थाओं के संचालकों ने भी इस ओर ध्यान देना आरम्भ कर दिया है। जगह-जगह स्कूलों और कालेजों में सङ्गीत कक्षाएँ खुल भी रही हैं, यह सब शुभ लक्षण हैं, किन्तु अभी उन्नति की काफी गुञ्जाइश है। हमें तो तब प्रसन्नता होगी जब समस्त सरकारी और गैर सरकारी शिक्षा संस्थाओं में सङ्गीत शिक्षा अनिवार्य करदी जायगी। आज तो हम स्वाधीन हैं—अपनी कला, अपनी संस्कृति और अपने उत्थान का इससे अच्छा अवसर और कब मिलेगा? अतः हृदयों में उदारता और स्नेह के अंकुर सँजोकर सङ्गीत कला की तन, मन, धन से सेवा करने में जुट जायँ तो वह दिन दूर नहीं जब भारत के कोने-कोने मे सङ्गीत का नाद गूँज उठेगा।

जब सङ्गीत का प्रचार बढ़ जायेगा तो उसके लिये योग्य शिक्षक भी तैयार होने में देर न लगेगी फिर तो अनेक ऐसे व्यक्ति भी इसे सीखने के लिये तैयार हो जायेंगे जो अभी तक किसी कारण वश उससे अलग रहते थे।

वह व्यक्ति विशेषतः वह बालक सचमुच अभागा है, जिसके माता-पिता ने उसे सङ्गीत कला की शिक्षा देने या दिलाने का प्रयत्न नहीं किया। किसी अच्छे गुरू से सङ्गीत शिक्षा दिलाना एक महान् उपकार है, जिसे माता पिता अपने प्यारे बच्चे पर कर सकते हैं; किन्तु दुर्भाग्य से जिन व्यक्तियों को बाल्यकाल मे सङ्गीत सीखने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ वे अब भी स्वाध्याय द्वारा इस कला को सीख कर अपना जीवन आनन्दमय बना सकते है। आवश्यकता है केवल सच्ची लगन और परिश्रम की। अब वह भी समय गया जबकि उस्ताद लोग अपना सङ्गीत किसी दूसरे को बताना पाप समझते थे, ऐसे उस्ताद नामधारी सङ्गीत के शत्रु अब उँगलियों पर गिनने लायक ही निकलेंगे और जो कुछ वर्तमान समय में हैं भी, उनकी हमें अब विशेष आवश्यकता भी नहीं है क्यों कि वर्तमान समय का अधिकांश सङ्गीत समुदाय अपने सङ्गीत को अपने साथ ले जाने के बजाय उसे सङ्गीत विद्यार्थियों और जिज्ञासुओं के समक्ष रख देने का इच्छुक है।

ऐसे ही सङ्गीत के शुभचिन्तकों की कृपा, प्रेरणा और आग्रह का फल यह "सङ्गीत सागर" है।

पुस्तक चार अध्यायों मे विभक्त की गई है। प्रथम अध्याय मे नाद, स्वर, ग्राम, श्रुति, मूर्च्छना और राग-रागिनी इत्यादि का वर्णन किया गया है, दूसरे अध्याय मे, विविध सङ्गीत विद्वानों द्वारा रचित पक्के गीतों की स्वरलिपियां हैं। तीसरे अध्याय मे ताल और लय विवरण के साथ मुख्य-मुख्य वाद्य-यन्त्रों (साजों) के बजाने की विधि सचित्र लेखों द्वारा बताई है और चौथे अध्याय में नृत्यकला के सचित्र लेखो सहित तोड़े और बोल दिये गये हैं।

इस प्रकार सङ्गीत सम्बन्धी अधिक से अधिक सामग्री देने की चेष्टा की गई है, फिर भी सङ्गीतकला अथाह है:—

"नादाब्धेस्तु परं पारं नजानातिसरस्वती"

अतः जो कुछ है, आपके सामने उपस्थित है, इसे अपनाकर लाभ उठाइये।

इस ग्रन्थ की तैयारी में मुझे अनेक सङ्गीत विद्वानों एवं मित्रों ने लेख या स्वर-लिपियां भेजकर जो उदारता दिखाई है, उनका मैं अत्यन्त आभारी हूं और आशा करता हूँ कि वे सङ्गीतकला के प्रति ऐसा ही प्रेमभाव बनाये रक्खेंगे।

हाँ, पाठकों को यह बता देना अनुचित न होगा कि इस "सङ्गीत-सागर" में बहुमूल्य रत्न भरे हुए हैं। पाठक गण यदि नियम पूर्वक एक घण्टा प्रति दिन भी इस सागर में गोता लगाते रहेंगे तो अवश्य ही वे उन रत्नों को प्राप्त करके सङ्गीत लहरी का आनन्द उठावेंगे, किन्तु सावधान! बीच-बीच में जो लहर रूपी बाधायें उपस्थित हों, उनसे ऊब कर निराश न हूजिये। 'परिश्रमी व्यक्ति के आगे सफलता हाथ बांधे खड़ी रहती है'। इस वाक्य को सदा याद रखिये!

संगीत कार्यालय
हाथरस।



प्रभूलाल गर्ग



विषय सूची—संगीत-सागर

प्रथम-अध्याय

नाद-स्वर, श्रुति, मूर्च्छना, राग-रागिनी इत्यादि

द्वितीय अध्याय

पक्के गायनों की स्वरलिपियां (Classical Music)

तृतीय—अध्यय

ताल और कन्सर्ट

(तबला, सितार, बेला, बांसुरी, जलतरङ्ग, वीन, वैन्जो)

चतुर्थ—अध्याय, नृत्यकला

चिन्ह परिचय—

निम्नलिखित चिन्हों का प्रयोग इस पुस्तक में किया गया है। प्रत्येक पाठक के लिये इनका ध्यानपूर्वक अवलोकन कर लेना अत्यन्त आवश्यक है।

ग	जिस स्वर पर कोई चिन्ह न हो, वह मध्य सप्तक का शुद्ध स्वर है।
ग (नीचे रेखा)	जिस स्वर के नीचे पड़ी रेखा हो, वह कोमल स्वर है।
म	कोमल मध्यम पर कोई चिन्ह न होगा, क्योंकि वह शुद्ध स्वर माना गया है।
मं (ऊपर खड़ी रेखा)	तीव्र मध्यम इस प्रकार होगा। अन्य किसी भी तीव्र स्वर पर यह निशान न होगा क्योंकि मध्यम के सिवा सभी तीव्र स्वर शुद्ध माने गये हैं।
ध़	इस प्रकार नीचे बिन्दी वाले स्वर मन्द्र सप्तक के हैं।
सं	ऊपर बिन्दी वाले स्वर उच्च (तार) सप्तक के हैं।
ग –	जिस स्वर के आगे ऐसी जितनी पड़ी लकीरें हों उसे उतनी ही मात्रा तक और बजाइये जैसे ग – – यहाँ पर गंधार के आगे २ मात्रा ठहरना होगा, किन्तु कहीं पर ग—–इस प्रकार लकीरें सटी हुई आवें तो वहां एक मात्रा काल में (गSS) पूरा करना होगा।
S	गीत में जिन अक्षरों के आगे यह चिन्ह जितने हों, उसे उतनी ही मात्रा तक और गाइये, जैसे मे S S दो मात्रा बढ़ाकर "मे ए ए" गाया जायगा, किन्तु कहीं कहीं मेSS इस प्रकार मिले हुए (सटे हुए) अक्षर हों तो वहां एक मात्रा में ही (मे ए ए) बोला जायगा।
मप	इस प्रकार २ या ३ स्वर मिले हुए (सटे हुए) हों वे १ मात्रा के समय में ही बजाये जायेंगे।
⌒	यह चिन्ह स्वरों के ऊपर जहां आवे, वहां पर मींड देनी होगी।
× +	यह चिन्ह सम के हैं।
०	यह खाली ताल का चिन्ह है।
|	यह भरी ताल का चिन्ह है।
*	यह फूल जहां पर हो वहां १ मात्रा काल के लिये चुप रहना होगा।

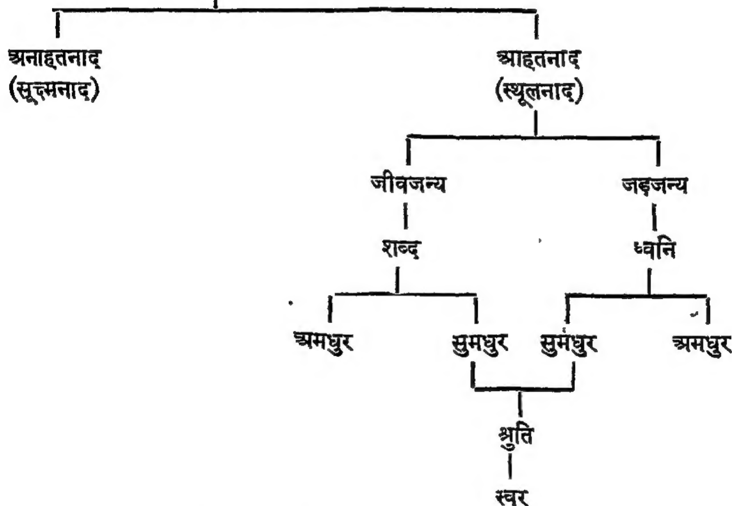
पहला अध्याय

नाद, स्वर, ग्राम, श्रुति, मूर्च्छना और राग-रागिनी



नादब्रह्मणेनमः





चैतन्यं सर्वभूतानां विवृतं जगदात्मनाम् ।
नादब्रह्म तदानन्दमद्वितीयमुपास्महे ॥

हृदय मे नाभि के ऊपर ब्रह्मस्थान में प्राण वायु से एक प्रकार का शब्द होता है, वही मुख द्वारा प्रकाशित होता है, उसी को "नाद" कहते हैं यथा:—

नाभेरूर्ध्व हृदिस्थानान्मारुतः प्राण—संज्ञकः ।
नदति ब्रह्मरन्ध्रान्ते तेन नादः प्रकीर्तितः ॥

ब्रह्माण्ड की प्रत्येक चराचर वस्तुओं में नाद व्याप्त है। अतएव इस नाद को "नादब्रह्म" ऐसी संज्ञा दी है। मूल भूत नादब्रह्म ओमूकार वाचक है और इसी नाद-ब्रह्म से सङ्गीत की उत्पत्ति है। नाद की ४ अवस्थायें होती हैं।

१—स्थान भेद २—रूप भेद या परिमाण भेद ३—जाति भेद
४—ठहराव भेद।

(१) स्थान भेद से यह ज्ञान होता है कि आवाज ऊँचे स्थान से निकल रही है या नीचे स्थान से।

(२) रूप भेद से यह भान होता है कि आवाज़ जोर से निकल रही है या धीरे-धीरे।

(३) जाति भेद से यह मालूम होता है कि आवाज़ सितार की है या तबला की अथवा और किसी वाद्य की।

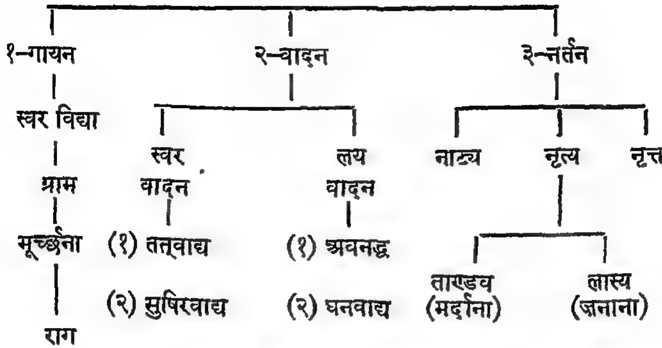
(४) ठहराव भेद से यह मालूम होता है कि आवाज़ कितनी देर ठहरी, एक मात्रा या आधी मात्रा।

नादब्रह्म से आहत और अनाहत दो प्रकार के नादों की उत्पत्ति हुई। जो नाद बिना किसी आघात से पैदा होता है, उसे अनाहत नाद कहते हैं। जैसे कान को अँगुली से बन्द करने पर जो "घन्नघन्न" शब्द होता है वही अनाहत नाद कहलाता है, इस नाद से सङ्गीत का कोई सम्बन्ध नहीं है। आघात, स्पर्श या संघर्ष से यानी दो वस्तुओं की रगड़ से या टकराने से जो शब्द निकलता है, उसे आहत नाद कहते हैं। स्वरों की उत्पत्ति इस आहत नाद से ही हुई है और सङ्गीत शास्त्र का इसी नाद से सम्बन्ध है।



सङ्गीत





"गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं सङ्गीतमुच्यते"

गायन वादन तथा नर्तन इन तीनों क्रियाओं को "सङ्गीत" ऐसी व्यापक संज्ञा दी है।

"मार्ग–देशी–विभागेन सङ्गीतं द्विविधं मतम्"

अर्थात् सङ्गीत के २ भेद हैं, मार्गी और देशी।

मार्गी देशीति तद्द्वेधा तत्र मार्गः स उच्यते।
यो मार्गितो विरिंच्याद्यैः प्रयुक्तो भरतादिभिः॥

मार्गी वह है जिसे भरत और ब्रह्मा ने चलाया और वही नियमित है।

देशे–देशे जनानां यद्रुच्या हृदय–रंजकम्।
गानं च वादनं नृत्यं तद्देशीत्यभिधीयते॥

—सङ्गीत रत्नाकर

देशी वह है, जिसे मनुष्य अपना चित्त प्रसन्न करने के लिये गाते बजाते और नाचते हैं। जैसे—मारवाड़ में मांड, मुलतान में मुलतानी, जौनपुर में जौनपुरी और मिर्ज़ापुर में कजरी इत्यादि।

सङ्गीत के चार मत माने गये है (१) शिवमत या सोमेश्वरमत 'रागविबोध' के लेखक सोमनाथ का (२) कृष्णमत "सङ्गीत रत्नाकर" के टीकाकार कल्लिनाथ का। (३) "हनुमत मत" हनूमान जी का और (४) "भरतमत" नाट्यशास्त्र के रचयिता भरतमुनि का चलाया हुआ है। शिवमत से कृष्णमत और भरतमत से हनुमत मत मिलता–जुलता है।

सङ्गीत के मुख्य दो अङ्ग हैं स्वर और ताल। स्वर आवाज को सीमा में रखता है और ताल समय को। पहिले हम समय के बारे में ही लिखेंगे।

सङ्गीत के स्वर—

श्रुत्यन्तरभावी यः स्निग्धोऽनुरणनात्मकः।
स्वतो रञ्जयतिश्रोतृचित्तं स स्वरउच्यते॥ २६॥

—रत्नाकर

अर्थात्—ध्वनि में लगातार भनक या गुनगुनाहट हो, कोई ध्वनि किसी ऊँचाई पर पहुंच कर वहां बराबर क़ायम रहे और नीचे ऊपर खिसके नहीं, उसे सङ्गीत स्वर कहते हैं। अथवा सङ्गीत के स्वर वे हैं जिनका आपसी स्थान (Relative Place of pitch) निश्चित है और वे प्रत्येक अपने-अपने स्थान, पर बराबर एक से बोलते रहते हैं तथा सुनने में रंजक व सुहावने मालूम होते है।

निषादर्षभ—गान्धार-षड्ज-मध्यम-धैवतः।
पंचमश्चेत्यमी सप्त तन्त्री-कण्ठोत्थिताः स्वराः॥

—अमरकोश

षडज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद। इस प्रकार मुख्य ७ स्वर हैं। जिन्हें संक्षेप में सा, रे, ग, म, प, ध, नी कहते है। इन्हीं को अंग्रेजी में Do, Re, Mi, Ga, Sol, La, Se, कहते हैं और इनके सांकेतिक चिन्ह इस प्रकार हैं।

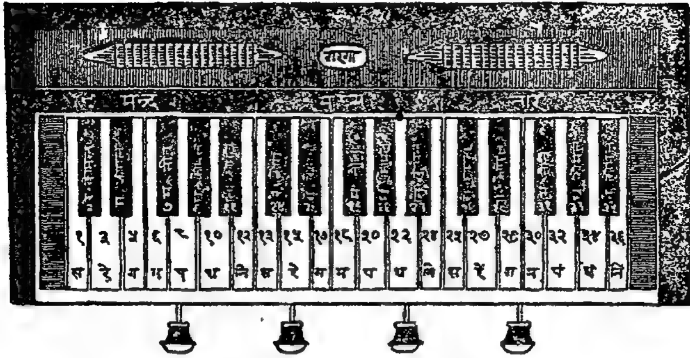
अंग्रेजी स्वर—	C.	D.	E.	F.	G.	A.	B.
स्वरों की नाद लहरें	240	270	300	320	360	405	450
भारतीय स्वर—	सा	रे	ग	म	प	ध	नि

सप्तक—

उपरोक्त सात स्वरों के रहने के स्थान को सप्तक कहते हैं। सप्तक तीन प्रकार के होते है। मन्द्र, मध्य और तार सप्तक, जिन्हें उदारा मुदारा और तारा भी कहते हैं।

ऊँचाई-नीचाई के अनुसार नाद के तीन भेद माने गये हैं। मन्द्र, मध्य और तार। इन्हें नाद स्थान कहते हैं। इस प्रत्येक स्थान में एक-एक स्वर सप्तक मानकर तीन सप्तक क़ायम किये गये हैं। जिस आवाज़ में हम साधारणतया बातचीत करते हैं, उसको मध्यसप्तक और उससे नीची को मन्द्रसप्तक तथा ऊँची को तारसप्तक कहते हैं।

निम्नांकित चित्र में तीनों सप्तकें देखिये—



तीव्र और कोमल स्वर—

मुख्य स्वर "सा रे ग म प ध नि" सात है। इन सात स्वरों में सा और प दो स्वर अविकारी (अचल) हैं। बाकी ५ स्वर (रे, ग, म, ध, नि) विकारी हैं। इनके कोमल और तीव्र दो रूप (हारमोनियम मे) माने गये है। शुद्ध स्वर अपने नियत स्थान पर से नीचा या ऊँचा करने पर विकृत हुआ समझा जाता है। हिन्दुस्तानी सङ्गीत पद्धति मे स्वरों को विकृत करने के कुछ सामान्य नियम निश्चित हैं वे इस प्रकार हैं:—

विकृत (विकारी) स्वर

(१) <u>रे</u> <u>ग</u> <u>ध</u> <u>नि</u> विकृत होने पर उन्हे कोमल के नाम से पुकारते है।

(२) मध्यम विकृत होने पर तीव्र मं बन जाता है। क्योंकि कोमल मध्यम ही शुद्ध स्वर माना गया है।

शुद्ध स्वर—सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सात है, और कोमल <u>रे</u>, कोमल <u>ग</u>, तीव्र मं, कोमल <u>ध</u>, और कोमल <u>नि</u> ये पांच स्वर विकृत माने जाते हैं, इस प्रकार कुल मिलाकर १२ स्वर हैं।

सा और प अचल (अविकारी) क्यों होते हैं ?

'सा' स्वर रे ग म प ध नि इन छः स्वरों का उत्पादक है, अतएव यह अचल तथा अविकारी है। और 'प' गणितानुसार 'सा' स्वर की आवाज से सम प्रमाण से ड्यौढ़ा ऊँचा है, इसलिये 'सा' स्वर की आवाज़ मे पूर्णता से सम्मिलित हो जाता है। बाकी—रे, ग, म, ध, नि, ये पांचों स्वर 'सा' की आवाज़ मे विषम प्रमाण में सम्मिलित होते हैं। "प" स्वर के समान सम प्रमाण मे सम्मिलित नहीं होने, एवं

चतुश्चतुश्चतुश्चैव षड्ज–मध्यम–पंचमाः ।
द्वे–द्वे निषादगान्धारौ त्रिस्त्री ऋषभ-धैवतौ ॥ —संगीत दर्पण

अर्थात्–षड्ज, मध्यम, पंचम चार–चार श्रुति । निषाद, गांधार, दो–दो श्रुति और ऋषभ धैवत तीन–तीन श्रुति के फासले पर हैं । प्राचीन शास्त्रकारों ने वीणा के मेरु पर निषाद और वहां से आगे चौथी श्रुति पर षड्ज, सातवीं पर ऋषभ इत्यादि इस प्रकार माने हैं, किन्तु आधुनिक सङ्गीत में वीणा के मेरु पर जोड़ी का तार खुला बजने पर उसे ही षड्ज मानने का रिवाज चल रहा है । इसलिये उपरोक्त नक्शे में मेरु के तार पर षड्ज दिखाया गया है । भारतीय गान विद्या की खोज में श्री० देवल जी ने बड़ा परिश्रम किया है । आपने अपने ग्रन्थों में २२ श्रुतियों की तालिका इस प्रकार दी है:—

(नाद लहरों सहित २२ श्रुतियों का नकशा)

संख्या	श्रुतियों के नाम	नाद लहरें	स्वर नाम
१	छन्दोवती मध्या	२४०	सा, शुद्ध
२	दयावती करुणा	२५२	रे, अति कोमल
३	रंजनी मध्या	२५६	रे, कोमल
४	रतिका मृदु	२६६ २/३	रे, मध्य
५	रौद्री दीप्ता	२७०	रे, तीव्र
६	क्रोधा आयता	२८४ ४/९	ग, अति कोमल
७	वज्रिका दीप्ता	२८८	ग, कोमल
८	प्रसारिणी आयता	३००	ग, तीव्र
९	प्रीति मृदु	३०३ ३/४	ग, तीव्र तर
१०	मार्जनी मध्या	३१५	म, अति कोमल
११	क्षिति मृदु	३२०	म, कोमल
१२	रक्ता मध्या	३३७ १/२	म, तीव्र
१३	संदीपनी आयता	३४१ १/३	म, तीव्रतर
१४	अलापिनी करुणा	३६०	प, शुद्ध
१५	मदन्ती करुणा	३७८	ध, अति कोमल
१६	रोहिणी आयता	३८४	ध, कोमल
१७	रम्या मध्या	४००	ध, मध्य
१८	उग्रा दीप्ता	४०५	ध, तीव्र
१९	क्षोभिनी मध्या	४२६ २/३	नि, अति कोमल
२०	तीव्रा दीप्ता	४३२	नि, कोमल
२१	कुमुद्वती उग्रा	४५०	नि, तीव्र
२२	मन्दा मृदु	४५५ ५/८	नि, तीव्रतर
१	छन्दोवती (ऊपर की)	४८०	सां (दूसरी सप्तक का)

यह तो हुआ प्राचीन कलाकारों की २२ श्रुतियों का विवरण। अब नीचे आधुनिक गायकों की १२ श्रुतियों का नक़शा भी देखिये जो कि हारमोनियम बाजे द्वारा प्रदर्शित की जाती हैं और यही आजकल अधिक प्रचलित भी है।

१२ श्रुतियों का नकशा (नाद लहरों सहित)

संख्या	श्रुतियों के नाम	जाति	स्वर-नाम	नाद-लहरें
१	छन्दोवती	मध्या	सा, शुद्ध	२४०
२	रंजनी	"	रे, कोमल	२५६
३	रौद्री	दीप्ता	रे, तीव्र	२७०
४	वज्रिका	"	ग, कोमल	२८८
५	प्रसारिणी	आयता	ग, तीव्र	३००
६	क्षिती	मृदु	म, कोमल	३२०
७	रक्ता	मध्या	म, तीव्र	३३७½
८	अलापिनी	करुणा	प, शुद्ध	३६०
९	रोहिणी	आयता	ध, कोमल	३८४
१०	उग्रा	दीप्ता	ध, तीव्र	४०५
११	तीव्रा	"	नि, कोमल	४३२
१२	कुमुद्वती	आयता	नि, तीव्र	४५०
१	छन्दोवती (दूसरे सप्तक की)		सां (दूसरी सप्तक)	४८०

इन १२ (स्वरों) में ही आजकल के गाने बजाने वाले प्रत्येक राग-रागिनी गाते-बजाते हैं, इसका अर्थ यह नहीं कि २२ स्वरों में गाने वाले भारत में हैं ही नहीं। हैं, पर बहुत कम। प्रचलित पुस्तकों में जो नोटेशन (स्वरलिपि) दिये जा रहे हैं, वह इन्हीं १२ श्रुतियों के हैं क्योंकि २२ श्रुतियों का नोटेशन देना जितना कठिन है, उतना ही कठिन उनका निकालना भी है। यहां पर हम एक नक़शा प्राचीन पद्धति अनुसार २२ श्रुतियों का दे देना भी उचित समझते हैं जो हमें श्रीयुत पंडित फीरोज फ्रामजी सङ्गीत शास्त्री पूना वालों की कृपा से प्राप्त हुआ है।

२२ श्रुतियों की सप्त स्वरों में योजना—

१ से आरम्भ करके २२ तक जो श्रुतियाँ हैं, उनमें प्राचीन षड्ज ग्रामिक ७ शुद्ध स्वर किस-किस जगह पर कितने-कितने अन्तर से क़ायम हैं, उनका नकशा श्रीयुत फ़ीरोज़ फ़्रामजी सङ्गीतशास्त्री ने इस प्रकार दिया है:—

प्राचीन ७ शुद्ध स्वर और उनके परस्पर २२ श्रुतियों का नक़्शा

श्रुति नं०	श्रुति नाम	स्वर नाम
१	तीव्रा	
२	कुमुद्वती	
३	मन्दा	
४	छन्दोवती	षड्ज
५	दयावती	
६	रंजनी	
७	रतिका	ऋषभ
८	रौद्री	
९	क्रोधा	गन्धार
१०	वज्रिका	
११	प्रसारिणी	
१२	प्रीति	
१३	मार्जनी	मध्यम
१४	क्षिती	
१५	रक्ता	
१६	संदीपिनी	
१७	अलापिनी	पंचम
१८	मदन्ती	
१९	रोहणी	धैवत
२०	रम्या	
२१	उग्रा	निषाद
२२	क्षोभिणी	

प्राचीन षड्ज ग्रामिक सात शुद्ध स्वर
४ सा ३ रे २ ग ४ म ४ प ३ ध २ नि

प्राचीन षड्ज ग्रामिक शुद्ध स्वरों का श्रुत्यन्तर
४, ३, २, ४, ४, ३, २ इस प्रकार कुल जोड़ २२ हो गया।

भारतीय संगीत की २२ श्रुतियों का नकशा

श्रुति अनुक्रम	श्रुतिनाम	प्राचीन स्वरनाम	आधुनिक श्रुतिसंख्यावाचक स्वर नाम	लौकिक स्वर नाम	कंपन संख्या
०	क्षोभिणी	शुद्ध नि	शुद्ध सा	शुद्ध	२४०
१	तीव्रा				(२५२$\frac{६८}{८१}$)
२	कुमुद्वती	काकली नि	लघुद्विश्रुतिक रि	अतिकोमल	२५३$\frac{१}{८}$
			द्विश्रुतिक रि	कोमल	२५६
३	मन्दा		तिश्रुतिक रि	तीव्र	२६६$\frac{२}{३}$
४	छन्दोवती	शुद्ध सा	चतुःश्रुतिक रि	तीव्रतर	२७०
५	दयावन्ती		संकीर्ण श्रुतिक ग	अतिकोमल	२८४$\frac{४}{९}$
६	रंजनी		द्विश्रुतिक ग	कोमल	२८८
७	रतिका	शुद्ध रि	त्रिश्रुतिक ग	तीव्र	३००
			सं० त्रिश्रुतिक ग	तीव्रतर	३०३$\frac{११}{२७}$
८	रौद्री				(३०३$\frac{३}{४}$)
९	क्रोधा	शुद्ध ग	द्विश्रुतिक म	कोमल	३२०
१०	वज्रिका				(३२४)
११	प्रसारिणी	अन्तर ग	चतुःश्रुतिक म	तीव्र	३३७$\frac{१}{२}$
			संकीर्णचतुःश्रु.म	तीव्रतर	३४१$\frac{१}{३}$
१२	प्रीति				(३५५$\frac{५}{९}$)
१३	मार्जनी	शुद्ध म	शुद्ध प	शुद्ध	३६०
१४	क्षिती				(३७९$\frac{७}{२७}$)
१५	रक्ता		लघुद्विश्रुतिक ध	अतिकोमल	३७९$\frac{११}{१५}$
			द्विश्रुतिक ध	कोमल	३८४
१६	संदीपिनी		त्रिश्रुतिक ध	तीव्र	४००
१७	आलापिनी	शुद्ध प	चतुःश्रुतिक ध	तीव्रतर	४०५
१८	मदन्ती		संकीर्णश्रुतिक नि	अतिकोमल	४२६$\frac{२}{३}$
१९	रोहिणी		द्विश्रुतिक नि	कोमल	४३२
२०	रम्या	शुद्ध ध	त्रिश्रुतिक नि	तीव्र	४५०
			सं० त्रिश्रुतिक नि	तीव्रतर	४५५$\frac{५}{८}$
२१	उग्रा				(४५५$\frac{१}{९}$)
२२	क्षोभिणी	शुद्ध नि	शुद्ध सां	शुद्ध	४८०



ग्रामः स्वरसमूहः स्यान्मूर्छनादेः समाश्रयः ।
तौ द्वौ धरातले तत्र स्यात्षड्जग्राम आदिमः ॥

—रत्नाकरे

ग्रामेष्वेतेषु गांधारग्रामो नास्ति महीतले ।
स्वर्गलोके वर्ततेऽसौ सर्वेषामेव सम्मतम् ॥

—चतुर्दण्डिप्रकाशिका

"ग्राम" स्वरों के समूह को कहते हैं। यह मूर्छनादि (तान, क्रम, वर्ण अलंकार आदि) का समाश्रय है। ग्रामों में से दो पृथ्वीतल मे हैं। उनमें पहला षड्ज ग्राम और दूसरा मध्यम ग्राम है। गन्धार ग्राम पृथ्वीतल में नहीं गाया जाता, यह स्वर्गलोक में ही गाया जाता है। इसी कारण इसे "गन्धार ग्राम" कहते हैं। अन्यथा इसका नाम निषाद ग्राम है। फिर भी ग्राम शब्द का अर्थ गांव है, जिस प्रकार मनुष्यों के रहने की जगह को गांव कहते हैं उसी प्रकार सङ्गीत-स्वरों के रहने के स्थान को ग्राम कहते हैं। जिस प्रकार भिन्न-भिन्न ग्रामों मे भिन्न-भिन्न प्रकार के मनुष्य निवास करते हैं, उसी प्रकार सङ्गीत के भिन्न-भिन्न ग्रामों में भिन्न प्रकार के अन्तरों पर स्वर रहते हैं, जैसे एक ग्राम में सब स्वर शुद्ध यानी अपने स्वाभाविक श्रुत्यन्तरों के रहते हैं, और दूसरे ग्राम में दो स्वरों का श्रुत्यन्तर घट बढ़ कर उनका और उनके घटने बढ़ने के कारणों से बाकी स्वरों का रूप भी बदल जाता है और तीसरे ग्राम में प्रायः सब ही स्वर घट बढ़ जाते हैं।

ग्राम ३ प्रकार के होते हैं इनकी उत्पत्ति षड्ज, मध्यम तथा गान्धार स्वरों से हुई है। अतएव इनका भी नाम षड्ज, मध्यम और गान्धार है और इन्हीं का नाम क्रमशः मन्द्र-ग्राम, मध्य ग्राम तथा तीव्र ग्राम दिया गया है, यथा—

षड्जग्रामो भवेदादौ मध्यम-ग्राम एव च ।
गान्धार-ग्राम इत्येतद्ग्रामत्रयमुदाहृतम् ॥
षड्जमध्यमगान्धारास्त्रयाणां जन्महेतवः ।

आचार्यों ने उपर्युक्त तीन ग्रामों को नन्द्यावर्त, जीमूत तथा सुभद्र—ऐसी संज्ञा भी दी हैं।

ग्राम चक्र—

मन्द्र ग्राम	मध्य ग्राम	तीव्र ग्राम
सा रे॒ रे ग॒ ग	म मं प ध॒ ध	नि॒ नि

मूर्च्छना

क्रमात्स्वराणां सप्तानामारोहश्चावरोहणम्।
मूर्च्छनेत्युच्यते ग्रामद्वये ताः सप्त सप्त चः ।। —सङ्गीत रत्नाकर

स्वरों के क्रम से आरोह और अवरोह को अर्थात् एक स्वर से सिलसिलेवार वारी-वारी से शुरू करके सातों स्वरों की आरोही-अवरोही करने को मूर्च्छना कहते हैं, यही राग की जन्मभूमि है और इसी से राग की उत्पत्ति हुई है।

आरोहेणावरोहेण क्रमेण स्वर-सप्तकम्।
मूर्च्छनाशब्दवाच्यं हि विज्ञेयं तद्विचक्षणैः ।।

प्रत्येक ग्राम की सात-मूर्च्छनाये होती हैं इस प्रकार कुल २१ मूर्च्छना हैं। जिनके नाम तथा क्रम इस प्रकार हैं:—

मूर्च्छनाचक्र—

संख्या	षड्ज ग्राम	मध्यम ग्राम	निषाद ग्राम
१	उत्तरामन्द्रा	सौवीरी	नन्दा
२	रजनी	हरिणश्वा	विशाला
३	उत्तरायता	कलोपनता	सुमुखी
४	शुद्धषड्जा	शुद्धमध्या	चित्रा
५	मत्सरीकृता	मार्गी	रोहिणी
६	अश्वक्रांता	पौरवी	सुखा
७	अभिरुद्गता	हृष्यका	अलापा

२१ मूर्च्छनाओं की आरोही-अवरोही

षड्ज ग्राम की मूर्च्छना

नं०	नाम	आरोह	अवरोह
१	उत्तरामन्द्रा	सा रे ग म प ध नि	नि ध प म ग रे सा
२	रजनी	नि़ सा रे ग म प ध	ध प म ग रे सा नि़
३	उत्तरायता	ध़ नि़ सा रे ग म प	प म ग रे सा नि़ ध़
४	मत्सरीकृता	प़ ध़ नि़ सा रे ग म	म ग रे सा नि़ ध़ प़
५	शुद्ध षडजा	म़ प़ ध़ नि़ सा रे ग	ग रे सा नि़ ध़ प़ म़
६	अश्वक्रान्ता	ग़ म़ प़ ध़ नि़ सा रे	रे सा नि़ ध़ प़ म़ ग़
७	अभिरुद्गता	रे़ ग़ म़ प़ ध़ नि़ सा	सा नि़ ध़ प़ म़ ग़ रे़

मध्यम ग्राम की मूर्च्छना

१	सौवीरी	म	प	ध	नि	सां	रें	गं	गं	रें	सां	नि	ध	प	म
२	हरिणश्वा	ग	म	प	ध	नि	सां	रें	रें	सां	नि	ध	प	म	ग
३	कलोपनता	रे	ग	म	प	ध	नि	सां	सां	नि	ध	प	म	ग	रे
४	शुद्ध मध्या	सा	रे	ग	म	प	ध	नि	नि	ध	प	म	ग	रे	सा
५	मार्गी	नि़	सा	रे	ग	म	प	ध	ध	प	म	ग	रे	सा	नि़
६	पौरवी	ध़	नि़	सा	रे	ग	म	प	प	म	ग	रे	सा	नि़	ध़
७	हृष्यका	प़	ध़	नि़	सा	रे	ग	म	म	ग	रे	सा	नि़	ध़	प़

निषाद ग्राम की मूर्च्छना

१	नन्दा	नि	सां	रें	गं	मं	पं	धं	धं	पं	मं	गं	रे	सां	नि
२	विशाला	ध	नि	सां	रें	गं	मं	पं	पं	मं	गं	रें	सां	नि	ध
३	सुमुखी	प	ध	नि	सां	रें	गं	मं	मं	गं	रें	सां	नि	ध	प
४	चित्रा	म	प	ध	नि	सां	रें	गं	गं	रें	सां	नि	ध	प	म
५	रोहिणी	ग	म	प	ध	नि	सां	रें	रें	सां	नि	ध	प	म	ग
६	सुखा	रे	ग	म	प	ध	नि	सां	सां	नि	ध	प	म	ग	रे
७	अलापा	सा	रे	ग	म	प	ध	नि	नि	ध	प	म	ग	रे	सा

स्वर प्रस्तार, आलाप अथवा तान

तान का अर्थ है फैलाना, अर्थात् कुछ स्वरों को एक साथ तेजी से गाने बजाने को तान या आलाप कहते हैं। जैसे सारेगम, पमगरे, पधनिध, पधनिसां, इत्यादि।

आर्चिको गाथिकश्चैव सामिकश्च स्वरान्तरः।
औड्वः षाडवश्चैव सम्पूर्णश्चेति सप्तकम् ॥

—संगीत रत्नाकर

आर्चिक, गाथिक, सामिक, स्वरान्तर, औडुव, षाड्व और सम्पूर्ण इस प्रकार 'सङ्गीत रत्नाकर' में स्वरों की संज्ञा मानी गई हैं। एक स्वर के प्रयोग को आर्चिक, दो स्वरों के प्रयोग को गाथिक, तीन स्वरों के प्रयोग को सामिक, चार स्वरों के प्रयोग को स्वरान्तर, पांच स्वरों के प्रयोग को औडुव, छः स्वरों के प्रयोग को षाड्व तथा सात स्वरों के प्रयोग को सम्पूर्ण कहते हैं, जो निम्नांकित चक्र से स्पष्ट है:—

संज्ञा चक्र

आर्चिक	गाथिक	सामिक	स्वरांतर	औडुव	षाडव	संपूर्ण
सा	सा, रे,	सा, रे, ग,	सा, रे, ग, म,	सा, रे, ग, म, प,	सा, रे, ग, म, प, ध,	सा, रे, ग, म, प, ध, नि

सात स्वरों का उलट-फेर करने से कुल ५०४० सम्पूर्ण तानें हो सकती है। इसी प्रकार ६ स्वरो से ७२० षाड्व तान, पांच स्वरो से १२० औडुव तान, ४ स्वरों मे २४ स्वरांतर तान, तीन स्वरों की ६ सामिक तान, २ स्वरों की २ गाथिक तान और १ स्वर की १ आर्थिक तान हो सकती है।

अधिकतर ४-५ या ६ स्वरो की ही तानें होती है, सात स्वरों की (संपूर्ण) तानें प्रायः बहुत कम होती है। षाड्व तानों मे एक स्वर का लोप होता है, और औडुव तानों में २ स्वरों का लोप होता है। जैसे:—

षाड्व तान		औडुव तान	
आरोही	अवरोही	आरोही	अवरोही
सा रे ग म प ध	ध प म ग रे सा	सा रे म प ध	ध प म रे सा
रे ग म प ध नि	नि ध प म ग रे	रे ग म ध नि	नि ध म ग रे
ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग	ग म ध नि सां	सां नि ध म ग

शुद्धतान और कूटतान

जिस तान में स्वर अपने क्रमानुसार (सिलसिलेवार) आते जाते हैं, उसे सरल-तान या शुद्ध तान कहते है, जैसे सारेगम, निधपम, पधनिसां इत्यादि। और जिस तान में स्वर अपने क्रमानुसार नहीं आते जाते, उसे कूटतान या वक्रतान कहते है। जैसे—रेमगप, गधमरे, निरेसाध इत्यादि।

कूटतानें क्रम रहित मूर्च्छना की बनती हैं। ये बहुत कठिन होती है, इन्हे बड़े अभ्यास और परिश्रम द्वारा उत्तम संगीतज्ञ ही तैयार कर सकते हैं, तथा परिश्रमी सङ्गीत जिज्ञासु ही उन्हें निकालने मे समर्थ होते हैं। आगे ७ स्वरों की ४६, छै स्वरों की ३६ और पांच स्वरों की २५ कूटतानें दी जा रही हैं। ये कूटतानें पूना निवासी श्रीयुत-पं० अन्ना पुरुषोत्तम घारपुरे जी की बताई हुई है। इनकी विशेषता यही है कि कोई भी तान किसी दूसरी तान से मेल नहीं खायगी।

७ स्वरों की ४६ कूटतानें

१—सा	म	नि	ग	ध	रे	सा	८—रे	ग	ध	म	प	सा	नि
२—ग	रे	प	सा	म	ध	नि	९—म	सा	नि	रे	ग	प	ध
३—ध	प	ग	रे	नि	म	सा	१०—प	नि	म	सा	ध	ग	रे
४—नि	सा	ध	म	रे	प	ग	११—ध	रे	प	ग	सा	नि	म
५—म	ध	सा	नि	प	ग	रे	१२—ग	प	रे	ध	नि	म	सा
६—प	ग	रे	ध	सा	नि	म	१३—नि	म	सा	प	रे	ध	ग
७—रे	नि	म	प	ग	सा	ध	१४—सा	ध	ग	नि	म	रे	प

१५-म नि सा ध ग प रे	२२-प ग रे नि सा ध म
१६-ध प रे म नि ग सा	२३-नि ध म प रे सा ग
१७-ग रे ध प सा नि म	२४-सा म नि ध ग रे प
१८-सा म ग नि प रे ध	२५-ग प सा रे ध म नि
१९-नि ग म सा रे ध प	२६-रे सा प ग म नि ध
२०-रे ध प ग म सा नि	२७-म नि ध सा प ग रे
२१-प सा नि रे ध म ग	२८-ध रे ग म नि प सा
२९-नि प म सा रे ग ध	३६-ग ध रे प नि म सा
३०-सा ग ध नि प रे म	३७-प म सा ग ध नि रे
३१-रे ध सा ग म प नि	३८-नि सा प म रे ध ग
३२-म नि रे प ग ध सा	३९-रे ग नि ध म सा प
३३-प रे नि म ध सा ग	४०-ध नि ग रे सा प म
३४-ध सा ग रे नि म प	४१-सा प म नि ग रे ध
३५-ग म प ध सा नि रे	४२-म रे ध सा प ग नि

४३-ध सा प रे म नि ग
४४-रे नि ग ध सा म प
४५-म ग रे नि प सा ध
४६-प ध म सा नि ग रे
४७-सा म ध प ग रे नि
४८-ग रे नि म ध प सा
४९-नि ध सा ग रे ध म

ये सात स्वरों की ४९ कूट तानें हैं। सम्पूर्ण जाति के राग-रागनियों में इनका प्रयोग कोमल तीव्र के भेदानुसार कर सकते हैं। यह तो हुईं ७ स्वर वाली सम्पूर्ण कूटतानें। अब आगे ६ स्वर वाली षाड्व जाति की कूटतानें दी जाती हैं।

६ स्वरों की ३६ कूटतान (षाड़व)

१– सा ग प रे म ध	७– म ध रे प सा ग
२– म रे ध सा प ग	८– सा प ग म रे ध
३– रे ध ग म सा प	९– प ग ध सा म रे
४– ध म रे प ग सा	१०– ग सा प रे ध म
५– प सा म ग ध रे	११– रे म सा ध ग प॰
६– ग प सा ध रे म	१२– ध रे म ग प सा
१३– रे ध म ग प सा	१९– प सा ग ध रे म
१४– प ग सा रे ध म	२०– रे ध म प ग सा
१५– ग सा म प रे ध	२१– ध म सा रे प ग
१६– सा प ग ध म रे	२२– म रे ध ग सा प
१७– ध रे प म सा ग	२३– ग प रे सा म ध
१८– म ध रे सा ग प	२४– सा ग प म ध रे
२५– ग प सा म ध रे	३१– ध रे म सा ग प
२६– ध म रे ग सा प	३२– ग सा प ध म रे
२७– म रे प ध ग सा	३३– सा प रे ग ध म
२८– रे ध म सा प ग	३४– प ग सा म रे ध
२९– सा ग ध प रे म	३५– म ध ग रे प सा
३०– प सा ग रे म ध	३६– रे म ध प सा ग

इन कूटतानों का षाड़व जाति के राग-रागिनियों में उपयोग कर सकते हैं। अब आगे ५ स्वरों की २५ कूटतानें देखिये, जोकि औड़व जाति की हैं:—

५ स्वरों की २५ कूट तानें (औडुव)

१–सा ग म प रे	६–सा म ग प रे	११–सा प ग म रे
२–ग रे प सा म	७–रे सा प ग म	१२–रे म प सा ग
३–प म ग रे सा	८–ग रे सा म प	१३–ग सा रे म प
४–रे प सा म ग	९–प ग म रे सा	१४–म ग सा रे प
५–म सा रे ग प	१०–म प रे सा ग	१५–प रे म ग सा

१६–प सा ग रे म	२१–प रे सा म ग
१७–रे ग सा म प	२२–रे म ग सा प
१८–म प रे ग सा	२३–ग सा प रे म
१९–सा रे म प ग	२४–सा प म ग रे
२०–ग म प सा रे	२५–म ग रे प सा

उपरोक्त कूट तानों का औडुव राग–रागनियों में प्रयोग किया जाता है।

पल्टा (अलंकार)

तान के टुकड़े को ही पल्टा कहते हैं। पल्टे प्रायः तान से सीधे और सरल होते हैं। तान कई प्रकार की होती हैं, आलापतान, आलापचारी, फिकराबन्दी, कंठतान, बांट, जबड़े की तान, सपाट तान, लचका तान इत्यादि। ये सब सङ्गीत के अलंकार कहलाते हैं। वास्तव में सङ्गीत कला की शोभा अलंकारों से ही है। यथाः–

शशिना रहितेव निशा, विजलेव नदी, लता विपुष्पेव !
अविभूषितेव कान्ता, गीतिरलंकारहीना स्यात् ॥

जैसे चन्द्रमा के बिना रात्रि, जल के बिना नदी और पुष्प रहित लता तथा आभूषण के बिना स्त्री की शोभा नहीं, उसी प्रकार अलंकार बिना गीत की शोभा नहीं।

अलंकार का अर्थ है–आभूषण अथवा "वर्णन करने की वह रीति जिससे रोचकता आजाय"। गाने बजाने की शोभा तान पल्टों से ही हो सकती है, अतः गान विद्या के लिये यही अलंकार हैं।

सङ्गीत जिज्ञासुओं के लिये यह बहुत ही आवश्यक है कि राग–रागिनी से पहिले वे तान पल्टों द्वारा कण्ठ को मांज लें। आगे चलकर ये पल्टे बड़ा काम देते हैं। नीचे पाठकों के लाभार्थ स्वराभ्यास के लिये ५० अलंकृत पल्टे दिये जाते हैं।

स्वराभ्यास के लिये—

५० अलंकृत पल्टे

१–सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां—सां, नि, ध, प, म, ग, रे, सा।
२–सारे, रेग, गम, मप, पध, धनि निसां—सांनि, निध, धप, पम, मग, गरे, रेसा।
३–सारेसा, रेगरे, गमग, मपम, पधप, धनिध, निसांनि।
निसांनि, धनिध, पधप, मपम, गमग, रेगरे, सारेसा॥
४–सारेसासा, रेगरेरे, गमगग, मपमम, पधपप, धनिधध, निसांनिनि।
निनिसांनि, धधनिध, पपधप, ममपम, गगमग, रेरेगरे, सासारेसा॥
५–सारेरेसा, रेगगरे, गममग, मपपम, पधधप, धनिनिध, निसांसांनि।
निसांसांनि, धनिनिध, पधधप, मपपम, गममग, रेगगरे, सारेरेसा॥
६–सानि, रेसा, गरे, मग, पम, धप, निध, सांनि।
निसां, धनि, पध, मप, गम, रेग, सारे, निसा॥
७–रेरेसारे, गगरेग, ममगम, पपमप, धधपध, निनिधनि, सांसांनिसां।
सांनिसांसां, निधनिनि, धपधध, पमपप, मगमम, गरेगग, रेसारेरे॥
८–रेसाऽसा, गरेऽरे, मगऽग, पमऽम, धपऽप, निधऽध, सांनिऽनि।
निऽनिसां, धऽधनि, पऽपध, मऽमप, गऽगम, रेऽरेग, साऽसारे॥
९–रेऽसा, गऽरे, मऽग, पऽम, धऽप, निऽध, सांऽनि।
निऽसां, धऽनि, पऽध, मऽप, गऽम, रेऽग, साऽरे॥
१०–सारेसारेऽरे, रेगरेगऽग, गमगमऽम, मपमपऽप, पधपधऽध, धनिधनिऽनि, निसांनिसांऽसां।
सांऽसांनिसांनि, निऽनिधनिध, धऽधपधप, पऽपमपम, मऽमगमग, गऽगरेगरे, रेऽरेसारेसा।
११–सासा, रेरे, गग, मम, पप, धध, निनि, सांसां।
सांसां, निनि, धध, पप, मम, गग, रेरे, सासा॥
१२–सासासासा, गगगग, रेरेरेरे, मममम, गगगग, पपपप, मममम, धधधध, पपपप, निनिनिनि, धधधध, सांसांसांसां।
सांसांसांसां, धधधध, निनिनिनि, पपपप, धधधध, मममम, पपपप, गगगग, मममम, रेरेरेरे, गगगग, सासासासा॥
१३–सारेग, रेगम, गमप, मपध, पधनि, धनिसां। सांनिध, निधप, धपम, पमग, मगरे, गरेसा॥
१४–सारेगऽ, रेगमऽ, गमपऽ, मपधऽ, पधनिऽ, धनिसांऽ।
सांनिधऽ, निधपऽ, धपमऽ, पमग, मगरेऽ, गरेसाऽ॥
१५–सारेसारेग, रेगरेगम, गमगमप, मपमपध, पधपधनि, धनिधनिसां।
सांनिधनिध, निधपधप, धपमपम, पमगमग, मगरेगरे, गरेसारेसा॥
१६–सारेगरेग, रेगमगम, गमपमप, मपधपध, पधनिधनि, धनिसांनिसां।
सांनिसांनिध, निधनिधप, धपधपम, पमपमग, मगमगरे, गरेगरेसा॥
१७–सारेसागऽग, रेगरेमऽम, गमगपऽप, मपमधऽध, पधपनिऽनि, धनिधसांऽसां।
सांऽसांधनिध, निऽनिपधप, धऽधमपम, पऽपगमग, मऽमरेगरे, गऽगसारेसा॥
१८–साऽसागरेग, रेऽरेमगम, गऽगपमप, मऽमधपध, पऽपनिधनि, धऽधसांनिसां।
सांनिसांधऽध, निधनिपऽप, धपधमऽम, पमपगऽग, मगमरेऽरे गरेगसाऽसा॥

१९–गरेसारेगऽग, मगरेगमऽम, पमगमपऽप, धपमपधऽध, निधपधनिऽनि, सांनिधनिसांऽसां ।
सांऽसांनिधनिसां, निऽनिधपधनि, धऽधपमपध, पऽपमगमप, मऽमगरेगम, गऽगरेसारेग ॥

२०–गरेसारे, मगरेग, पमगम, धपमप, निधपध, सांनिधनि ।
निधनिसां, धपधनि, पमपध, मगमप, गरेगम, रेसारेग ॥

२१–रेसारेग, गरेगम, मगमप, पमपध, धपधनि, निधनिसां ।
सांनिधनि, निधपध, धपमप, पमगम, मगरेग, गरेसारे ॥

२२–गरेसारेगरेसारे, मगरेगमगरेग, पमगमपमगम, धपमपधपमप, निधपधनिधपध, सांनिधनिसांनिधनि ।
निधनिसांनिधनिसां, धपधनिधपधनि, पमपधपमपध, मगमपमगमप, गरेगमगरेगम, रेसारेगरेसारेग ॥

२३–गरेसागरेसागरे, गरेसारेगरेसारे, मगरेमगरेमग, मगरेगमगरेग, पमगपमगपम, पमगमपमगम, धपमधपमधप, धपमपधपमप, निधपनिधपनिध, निधपधनिधपध, सांनिधसांनिधसांनि, सांनिधनिसांनिधनि ।
निधनिसांनिधनिसां, निसांधनिसांधनिसां, धपधनिधपधनि, धनिपधनिपधनि, पमपधपमपध, पधमपधमपध, मगमपमगमप, मपगमपगमप, गरेगमगरेगम, गमरेगमरेगम, रेसारेगरेसारेग, रेगसारेगसारेग ॥

२४–सारेगम, रेगमप, गमपध, मपधनि, पधनिसां ।
सांनिधप, निधपम, धपमग, पमगरे, मगरेसा ॥

२५–सारेसारेसारेगम, रेगरेगरेगमप, गमगमगमपध, मपमपमपधनि, पधपधपधनिसां, सांनिसांनिसांनिधप, निधनिधनिधपम, धपधपधपमग, पमपमपमगरे, मगमगमगरेसा ।

२६–सारेसारेगम, रेगरेगमप, गमगमपध, मपमपधनि, पधपधनिसां ।
सांनिधपधप, निधपमपम, धपमगमग, पमगरेगरे, मगरेसारेसा ॥

२७–सारेगसा, रेगमरे, गमपग, मपधम, पधनिप, धनिसांध ।
धसांनिध पनिधप, मधपम, गपमग, रेमगरे, सागरेसा ॥

२८–सारेगसारेसा रेगमरेगरे, गमपगमग, मपधमपम, पधनिपधप धनिसांधनिध, धनिधसांनिध, पधपनिधप, मपमधपम, गमगपमग, रेगरेमगरे, सारेसागरेसा ॥

२९–सारेगममगरेसा, रेगमपपमगरे, गमपधधपमग, मपधनिनिधपम, पधनिसांसांनिधप ।
पधनिसांसांनिधप, मपधनिनिधपम, गमपधधपमग, रेगमपपमगरे, सारेगममगरेसा ॥

३०–सारेगमप, रेगमपध, गमपधनि, मपधनिसां । सांनिधपम, निधपमग, धपमगरे, पमगरेसा ॥

३१–मगरेसा, पमगरे, धपमग, निधपम, सांनिधप ।
पधनिसां, मपधनि, गमपध, रेगमप, सारेगम ॥

३२–रेसामग, गरेपम, मगधप, पमनिध, धपसांनि ।
निसांपध, धनिमप, पधगम, मपरेग, गमसारे ॥

३३–रेसारेसा, गरेगरे, मगमग, पमपम, धपधप, निधनिध, सांनिसांनि ।
निसांनिसां, धनिधनि, पधपध, मपमप, गमगम, रेगरेग, सारेसारे ॥

३४–सागरेग, मगरेसा, रेमगम, पमगरे, गपमप, धपमग, मधपध, निधपम, पनिधनि, सांनिधप ।
पधनिसां धपनिप, मपधनि पमधम, गमपध पमपग, रेगमप मगमरे, सारेगम गरेमसा ॥

३५–साम, रेप, गध, मनि, पसां । सांप, निम, धग, परे, मसा ॥

३६–सासा मम, रेरे पप, गग धध, मम निनि, पप सांसां ।
सांसां पप, निनि मम, धध गग, पप रेरे, मम सासा ॥

३७–साप, रेध गनि, मसां । सांम, निग, धरे, पसा ।

३८–सासासासा, पपपप, रेरेरेरे, धधधध, गगगग, निनिनिनि, मममम, सांसांसांसां ।
सांसांसांसां, मममम, निनिनिनि, गगगग, धधधध, रेरेरेरे, पपपप, सासासासा ॥

३९–पऽसाऽपऽसाऽ मगरेग मगरेग, धऽरेऽधऽरेऽ पमगम पमगम, निऽगऽनिऽगऽ धपमप धपमप, सांऽमऽसांऽमऽ, निधपध निधपध ।
धपधनि धपधनि मऽसांऽमऽसांऽ, पमपध पमपध गऽनिऽगऽनिऽ, मगमप मगमप रेऽधऽरेऽधऽ, गरेगम गरेगम साऽपऽसाऽपऽ ॥

४०–मगरेग पऽसाऽ, पमगम धऽरेऽ, धपमप निऽगऽ, निधपध सांऽमऽ ।
मऽसांऽ धपधनि, गऽनिऽ पमपध, रेऽधऽ मगमप, साऽपऽ गरेगम ॥

४१–गरेसा, मगरे, पमग, धपम, निधप, सांनिध । धनिसां, पधनि, मपध, गमप, रेगम, सारेग ॥

४२–साग, रेम, गप, मध, पनि, धसां । सांध, निप, धम, पग, मरे, गसा ॥

४३–साऽसा गगगग, रेऽरे मममम, गऽग पपपप, मऽम धधधध, पऽप निनिनिनि, धऽध सांसांसांसां ।
सांसांसांसां धऽध, निनिनिनि पऽप, धधधध मऽम, पपपप गऽग, मममम रेऽरे, गगगग साऽसा ।

४४–सारेग, सारेगम, रेगम रेगमप, गमप गमपध, मपध मपधनि, पधनि पधनिसां ।
सांनिधप निधप, निधपम धपम, धपमग पमग, पमगरे मगरे, मगरेसा गरेसा ॥

४५–गरेसा गरेसा, मगरे मगरे, पमग पमग, धपम धपम, निधप निधप, सांनिध सांनिध ।
धनिसां धनिसां, पधनि पधनि, मपध मपध, गमप गमप, रेगम रेगम, सारेग सारेग ॥

४६–गरेगरे सारेमग, मगमग रेगपम, पमपम गमधप, धपधप मपनिध, निधनिध पधसांनि ।
निसांपध धनिधनि, धनिपम पधपध, पधमग मपमप, मपगरे गमगम, गमरेसा रेगरेग ॥

४७–मगप सारे, पमध रेग, धपनि गम, निधसां मप ।
पम सांधनि, मग निपध, गरे धमप, रेसा पगम ॥

४८–सागरे मधप, रेमग पनिध, गपम धसांनि । निसांध मपग, धनिप गमरे, पधम रेगसा ॥

४९–मगसारे निपध, परेमग सांधनि । निधसां गमरेप, धपनि रेगसाम ॥

५०–सारेगमपधनि सांनिधपमगरेसा, सारेगमपधनिधपमगरेसा, सारेगमपमगरेसा, सारेगमगरेसा, सारेगरेसा, सारेसा ।
सारेसा, सारेगरेसा, सारेगमगरेसा, सारेगमपमगरेसा, सारेगमपधपमगरेसा, सारेगमपधनिधपमगरेसा, सारेगमपधनिसां, निधपमगरेसा ॥

स्वर-प्रस्तार

स्वर प्रस्तार जिसने सिद्ध कर लिये, समझ लीजिये वह सङ्गीत का पूर्ण मर्मज्ञ हो गया। प्राचीन गायक पहिले वर्षों तक केवल इन स्वर प्रस्तारो का ही अभ्यास करते थे, तभी तो वे इतने पारंगत होते थे कि उन्हें फिर तान पल्टे रटने की आवश्यकता नहीं रहती थी। उनके गले से स्वयं नई-नई तानें निकलती थीं।

स्वरप्रस्तार गणित द्वारा निकालने की रीति यह है कि जितने स्वरो का प्रस्तार निकालना हो, उन्हें क्रमशः गुणा करते जाइये, जितना गुणनफल आवे, उन स्वरों से उतने ही प्रस्तार तैयार हो सकेंगे।

७ शुद्ध स्वरों से कुल ५०४० स्वर प्रस्तार तैयार होंगे:—

स्वरप्रस्तार कोष्टक

स्वर नाम	सा	रे	ग	म	प	ध	नि
स्वर संख्या	१	२	३	४	५	६	७
प्रस्तार संख्या	१	२	६	२४	१२०	७२०	५०४०

१ सा का प्रस्तार—केवल एक ही होगा, क्योंकि १×१=१
२ रे के प्रस्तार—२ रे×१ सा=२
३ म " " —३ ग×२ रे× १ सा=६
४ म " " —४ म×३ ग×२ रे×१ सा=२४
५ प " " —५ प×४ म×३ ग×२ रे×१ सा=१२०
६ ध " " —६ ध×५ प×४ म×३ ग×२ रे×१ सा=७२०
७ नि " " —७ नि×६ ध×५ प×४ म×३ ग×२ रे×१ सा=५०४०

अब आगे उपरोक्त सातों स्वरों के ५०४० स्वर प्रस्तार दिये जाते है, इन प्रस्तारों की यह विशेषता है कि सब में भिन्नता होगी। उदाहरणार्थ किसी जगह यदि रे सा प ग म यह स्वर प्रस्तार आगया है तो फिर यह पाँच हजार चालीस प्रस्तारों मे अन्यत्र दुबारा दिखाई नहीं देगा। यही इस गणित का चमत्कार है।

(१) प्रथम स्वर "सा" का प्रस्तार=१ (सा)

सा

(२×१) दो स्वर के प्रस्तार=२ (सा रे)

सारे, रेसा।

(३×२×१) तीन स्वर के प्रस्तार=६ (सारेग)

सारेग, सागरे, रेसाग, रेगसा, गसारे, गरेसा।

(४×३×२×१) चार स्वरों के प्रस्तार २४ (स रे ग म)

१ सरेगम	७ रेसगम	१३ गसरेम	१९ मगरेस
२ सगरेम	८ रेसमग	१४ गसमरे	२० मगसरे
३ समरेग	९ रेगसम	१५ गरेसम	२१ मरेसग
४ सरेमग	१० रेगमस	१६ गरेमस	२२ मरेगस
५ सगमरे	११ रेमगस	१७ गमसरे	२३ मसगरे
६ समगरे	१२ रेमसग	१८ गमरेस	२४ मसरेग

(५×४×३×२×१) पांच स्वरों के प्रस्तार १२० (स रे ग म प)

स

१ सरेगमप	७ सगरेमप	१३ समगरेप	१९ सपगरेम
२ सरेगपम	८ सगरेपम	१४ समगपरे	२० सपगमरे
३ सरेमपग	९ सगपमरे	१५ समपगरे	२१ सपरेगम
४ सरेमगप	१० सगपरेम	१६ समपरेग	२२ सपरेमग
५ सरेपमग	११ सगमरेप	१७ समरेपग	२३ सपमरेग
६ सरेपगम	१२ सगमपरे	१८ समरेगप	२४ सपमगरे

रे

२५ रेसगमप	३१ रेगसमप	३७ रेमगसप	४३ रेपगसम
२६ रेसगपम	३२ रेगसपम	३८ रेमगपस	४४ रेपगमस
२७ रेसमपग	३३ रेगपमस	३९ रेमपगस	४५ रेपसगम
२८ रेसमगप	३४ रेगपसम	४० रेमपसग	४६ रेपसमग
२९ रेसपमग	३५ रेगमसप	४१ रेमसपग	४७ रेपमसग
३० रेसपगम	३६ रेगमपस	४२ रेमसगप	४८ रेपमगस

ग

४९ गरेसमप	५५ गसरेमप	६१ गमसरेप	६७ गपसरेम
५० गरेसपम	५६ गसरेपम	६२ गमसपरे	६८ गपसमरे
५१ गरेमपस	५७ गसपमरे	६३ गमपसरे	६९ गपरेसम
५२ गरेमसप	५८ गसपरेम	६४ गमपरेस	७० गपरेमस
५३ गरेपमस	५९ गसमरेप	६५ गमरेपस	७१ गपमरेस
५४ गरेपसम	६० गसमपरे	६६ गमरेसप	७२ गपमसरे

म

७३ मरेगसप	७९ मगरेसप	८५ मसगरेप	९१ मपगरेस
७४ मरेगपस	८० मगरेपस	८६ मसगपरे	९२ मपगसरे
७५ मरेसपग	८१ मगपसरे	८७ मसपगरे	९३ मपरेगस
७६ मरेसगप	८२ मगपरेस	८८ मसपरेग	९४ मपरेसग
७७ मरेपसग	८३ मगसरेप	८९ मसरेपग	९५ मपसरेग
७८ मरेपगस	८४ मगसपरे	९० मसरेगप	९६ मपसगरे

प

९७ परेगमस	१०३ पगरेमस	१०९ पमगरेस	११५ पसगरेम
९८ परेगसम	१०४ पगरेसम	११० पमगसरे	११६ पसगमरे
९९ परेमसग	१०५ पगसमरे	१११ पमसगरे	११७ पसरेगम
१०० परेमगस	१०६ पगसरेम	११२ पमसरेग	११८ पसरेमग
१०१ परेसमग	१०७ पगमरेस	११३ पमरेसग	११९ पसमरेग
१०२ परेसगम	१०८ पगमसरे	११४ पमरेगस	१२० पसमगरे

(६×५×४×३×२×१) छः स्वरों के प्रस्तार ७२० (स रे ग म प ध)

स

१ सरेगमपध	२८ सधरेपमग	५५ सधगमरेप	८२ सपगरेधम
२ सरेगमधप	२९ सधरेमगप	५६ सधगमपरे	८३ सपगमधरे
३ सरेगधपम	३० सधरेमपग	५७ सधगरेमप	८४ सपगमरेध
४ सरेगधमप	३१ सरेमगधप	५८ सधगरेपम	८५ सधमरेगप
५ सरेगपधम	३२ सरेमगपध	५९ सधगपरेम	८६ सधमरेपग
६ सरेगपमध	३३ सरेमपगध	६० सधगपमरे	८७ सधमपरेग
७ सरेपगमध	३४ सरेमपधग	६१ सगरेमपध	८८ सधमपगरे
८ सरेपगधम	३५ सरेमधगप	६२ सगरेमधप	८९ सधमगरेप
९ सरेपधगम	३६ सरेमधपग	६३ सगरेधमप	९० सधमगपरे
१० सरेपधमग	३७ सरेधगपम	६४ सगरेधपम	९१ सगपमधरे
११ सरेपमधग	३८ सरेधगमप	६५ सगरेपमध	९२ सगपमरेध
१२ सरेपमगध	३९ सरेधपगम	६६ सगरेपधम	९३ सगपधरेम
१३ समरेगधप	४० सरेधपमग	६७ सगमरेपध	९४ सगपधमरे
१४ समरेगपध	४१ सरेधमपग	६८ सगमरेधप	९५ सगपरेधम
१५ समरेधपग	४२ सरेधमगप	६९ सगमपरेध	९६ सगपरेमध
१६ समरेधगप	४३ समपधगरे	७० सगमपधरे	९७ सगधरेपम
१७ समरेपगध	४४ समपधरेग	७१ सगमधपरे	९८ सगधरेमप
१८ समरेपधग	४५ समपगरेध	७२ सगमधरेप	९९ सगधमरेप
१९ समगरेपध	४६ समपगधरे	७३ सपरेगधम	१०० सगधमपरे
२० समगरेधप	४७ समपरेगध	७४ सपरेगमध	१०१ सगधपरेम
२१ समगपरेध	४८ समपरेधग	७५ सपरेधमग	१०२ सगधपमरे
२२ समगपधरे	४९ समधपगरे	७६ सपरेधगम	१०३ सपमरेगध
२३ समगधपरे	५० समधपरेग	७७ सपरेमगध	१०४ सपमरेधग
२४ समगधरेप	५१ समधरेपग	७८ सपरेमधग	१०५ सपमगरेध
२५ सधरेगमप	५२ समधरेगप	७९ सपगधरेम	१०६ सपमगधरे
२६ सधरेगपम	५३ समधगरेप	८० सपगधमरे	१०७ सपमधरेग
२७ सधरेपगम	५४ समधगपरे	८१ सपगरेमध	१०८ सपमधगरे

१०९ सपधरेगम	११२ सपधमरेग	११५ सधपमगरे	११८ सधपरेगम
११० सपधरेमग	११३ सपधगरेम	११६ सधपमरेग	११९ सधपगमरे
१११ सपधमगरे	११४ सपधगमरे	११७ सधपरेमग	१२० सधपगरेम

रे

१२१ रेसगमपध	१५१ रेसमगधप.	१८१ रेगसमपध	२११ रेगपमधस
१२२ रेसगमधप	१५२ रेसमगपध	१८२ रेगसमधप	२१२ रेगपमसध
१२३ रेसगधपम	१५३ रेसमपगध	१८३ रेगसधमप	२१३ रेगपधसम
१२४ रेसगधमप	१५४ रेसमपधग	१८४ रेगसधपम	२१४ रेगपधमस
१२५ रेसगपधम	१५५ रेसमधगप	१८५ रेगसपमध	२१५ रेगपसधम
१२६ रेसगपमध	१५६ रेसमधपग	१८६ रेगसपधम	२१६ रेगपसमध
१२७ रेसपगमध	१५७ रेसधगपम	१८७ रेगमसपध	२१७ रेगधसपम
१२८ रेसपगधम	१५८ रेसधगमप	१८८ रेगमसधप	२१८ रेगधसमप
१२९ रेसपधगम	१५९ रेसधपगम	१८९ रेगमपसध	२१९ रेगधमसप
१३० रेसपधमग	१६० रेसधपमग	१९० रेगमपधस	२२० रेगधमपस
१३१ रेसपमधग	१६१ रेसधमपग	१९१ रेगमधपस	२२१ रेगधपसम
१३२ रेसपमगध	१६२ रेसधमगप	१९२ रेगमधसप	२२२ रेगधपमस
१३३ रेमसगधप	१६३ रेमपधगस	१९३ रेपसगधम	२२३ रेपमसगध
१३४ रेमसगपध	१६४ रेमपधसग	१९४ रेपसगमध	२२४ रेपमसधग
१३५ रेमसधपग	१६५ रेमपगसध	१९५ रेपसधमग	२२५ रेपमगसध
१३६ रेमसधगप	१६६ रेमपगधस	१९६ रेपसधगम	२२६ रेपमगधस
१३७ रेमसपगध	१६७ रेमपसगध	१९७ रेपसमगध	२२७ रेपमधसग
१३८ रेमसपधग	१६८ रेमपसधग	१९८ रेपसमधग	२२८ रेपमधगस
१३९ रेमगसपध	१६९ रेमधपगस	१९९ रेपगधसम	२२९ रेपधसगम
१४० रेमगसधप	१७० रेमधपसग	२०० रेपगधमस	२३० रेपधसमग
१४१ रेमगपसध	१७१ रेमधसपग	२०१ रेपगसमध	२३१ रेपधमगस
१४२ रेमगपधस	१७२ रेमधसगप	२०२ रेपगसधम	२३२ रेपधमसग
१४३ रेमगधपस	१७३ रेमधगसप	२०३ रेपगमधस	२३३ रेपधगसम
१४४ रेमगधसप	१७४ रेमधगपस	२०४ रेपगमसध	२३४ रेपधगमस
१४५ रेधसगमप	१७५ रेधगमसप	२०५ रेधमसगप	२३५ रेधपमगस
१४६ रेधसगपम	१७६ रेधगमपस	२०६ रेधमसपग	२३६ रेधपमसग
१४७ रेधसपगम	१७७ रेधगसमप	२०७ रेधमपसग	२३७ रेधपसमग
१४८ रेधसपमग	१७८ रेधगसपम	२०८ रेधमपगस	२३८ रेधपसगम
१४९ रेधसमगप	१७९ रेधगपसम	२०९ रेधमगसप	२३९ रेधपगमस
१५० रेधसमपग	१८० रेधगपमस	२१० रेधमगपस	२४० रेधपगसम

ग

२४१ गरेसमपध	२४३ गरेसधपम	२४५ गरेसपधम	२४७ गरेपसमध
२४२ गरेसमधप	२४४ गरेसधमप	२४६ गरेसपमध	२४८ गरेपसधम

२४६ गरेपधसम
२५० गरेपधमस
२५१ गरेपमधस
२५२ गरेपमसध
२५३ गमरेसधप
२५४ गमरेसपध
२५५ गमरेधपस
२५६ गमरेधसप
२५७ गमरेपसध
२५८ गमरेपधस
२५९ गमसरेपध
२६० गमसरेधप
२६१ गमसपरेध
२६२ गमसपधरे
२६३ गमसधपरे
२६४ गमसधरेप
२६५ गधरेसमप
२६६ गधरेसपम
२६७ गधरेपसम
२६८ गधरेपमस
२६९ गधरेमसप
२७० गधरेमपस
२७१ गरेमसधप
२७२ गरेमसपध
२७३ गरेमपसध
३७४ गरेमपधस
३७५ गरेमधसप
२७६ गरेमधपस
२७७ गरेधसपम
२७८ गरेधसमप
२७९ गरेधपसम
२८० गरेधपमस
२८१ गरेधमपस
२८२ गरेधमसप
२८३ गमपधसरे
२८४ गमपधरेस
२८५ गमपसरेध
२८६ गमपसधरे
२८७ गमपरेसध
२८८ गमपरेधस
२८९ गमधपसरे
२९० गमधपरेस
२९१ गमधरेपस
२९२ गमधरेसप
२९३ गमधसरेप
२९४ गमधसपरे
२९५ गधसमरेप
२९६ गधसमपरे
२९७ गधसरेमप
२९८ गधसरेपम
२९९ गधसपरेम
३०० गधसपमरे
३०१ गसरेमपध
३०२ गसरेमधप
३०३ गसरेधमप
३०४ गसरेधपम
३०५ गसरेपमध
३०६ गसरेपधम
३०७ गसमरेपध
३०८ गसमरेधप
३०९ गसमपरेध
३१० गसमपधरे
३११ गसमधपरे
३१२ गसमधरेप
३१३ गपरेसधम
३१४ गपरेसमध
३१५ गपरेधमस
३१६ गपरेधसम
३१७ गपरेमसध
३१८ गपरेमधस
३१९ गपसधरेम
३२० गपसधमरे
३२१ गपसरेमध
३२२ गपसरेधम
३२३ गपसमधरे
३२४ गपसमरेध
३२५ गधमरेसप
३२६ गधमरेपस
३२७ गधमपरेस
३२८ गधमपसरे
३२९ गधमसरेप
३३० गधमसपरे
३३१ गसपमधरे
३३२ गसपमरेध
३३३ गसपधरेम
३३४ गसपधमरे
३३५ गसपरेधम
३३६ गसपरेमध
३३७ गसधरेपम
३३८ गसधरेमप
३३९ गसधमरेप
३४० गसधमपरे
३४१ गसधपरेम
३४२ गसधपमरे
४४३ गपमरेसध
४४४ गपमरेधस
३४५ गपमसरेध
३४६ गपमसधरे
३४७ गपमधरेस
३४८ गपमधसरे
३४९ गपधरेसम
३५० गपधरेमस
३५१ गपधमसरे
३५२ गपधमरेस
३५३ गपधसरेम
३५४ गपधसमरे
३५५ गधपमसरे
३५६ गधपमरेस
३५७ गधपरेमस
३५८ गधपरेसम
३५९ गधपसमरे
३६० गधपसरेम

म

३६१ मरेगसपध
३६२ मरेगसधप
३६३ मरेगधपस
३६४ मरेगधसप
३६५ मरेगपधस
३६६ मरेगपसध
३६७ मरेपगसध
३६८ मरेपगधस
३६९ मरेपधगस
३७० मरेपधसग
३७१ मरेपसधग
३७२ मरेपसगध
३७३ मसरेगधप
३७४ मसरेगपध
३७५ मसरेधपग
३७६ मसरेधगप
३७७ मसरेपगध
३७८ मसरेपधग
३७९ मसगरेपध
३८० मसगरेधप
३८१ मसगरेपध
३८२ मसगपधरे
३८३ मसगपरेध
३८४ मसगधरेप
३८५ मधरेगसप
३८६ मधरेगपस
३८७ मधरेपगस
३८८ मधरेपसग
३८९ मधरेसगप
३९० मधरेसपग
३९१ मरेसगधप
३९२ मरेसगपध
३९३ मरेसपगध
३९४ मरेसपधग
३९५ मरेसधगप
३९६ मरेसधपग

३९७ मरेधगपस
३९८ मरेधगसप
३९९ मरेधपगस
४०० मरेधपसग
४०१ मरेधसपग
४०२ मरेधसगप
४०३ मसपधगरे
४०४ मसपधरेग
४०५ मसपगरेध
४०६ मसपगधरे
४०७ मसपरेगध
४०८ मसपरेधग
४०९ मसधपगरे
४१० मसधपरेग
४११ मसधरेपग
४१२ मसधरेगप
४१३ मसधगरेप
४१४ मसधगपरे
४१५ मधगसरेप
४१६ मधगसपरे
४१७ मधगरेसप
४१८ मधगरेपस
४१९ मधगपरेस
४२० मधगपसरे
४२१ मगरेसपध
४२२ मगरेसधप
४२३ मगरेधसप
४२४ मगरेधपस
४२५ मगरेपसध
४२६ मगरेपधस
४२७ मगसरेपध
४२८ मगसरेधप
४२९ मगसपरेध
४३० मगसपधरे
४३१ मगसधपरे
४३२ मगसधरेप
४३३ मपरेगधस
४३४ मपरेगसध
४३५ मपरेधसग
४३६ मपरेधगस
४३७ मपरेसगध
४३८ मपरेसधग
४३९ मपगधरेस
४४० मपगधसरे
४४१ मपगरेसध
४४२ मपगरेधस
४४३ मपगसधरे
४४४ मपगसरेध
४४५ मधसरेगप
४४६ मधसरेपग
४४७ मधसपरेग
४४८ मधसपगरे
४४९ मधसगरेप
४५० मधसगपरे
४५१ मगपसधरे
४५२ मगपसरेध
४५३ मगपधरेस
४५४ मगपधसरे
४५५ मगपरेधस
४५६ मगपरेसध
४५७ मगधरेपस
४५८ मगधरेसप
४५९ मगधसरेप
४६० मगधसपरे
४६१ मगधपरेस
४६२ मगधपसरे
४६३ मपसरेगध
४६४ मपसरेधग
४६५ मपसगरेध
४६६ मपसगधरे
४६७ मपसधरेग
४६८ मपसधगरे
४६९ मपधरेगस
४७० मपधरेसग
४७१ मपधसगरे
४७२ मपधसरेग
४७३ मपधगरेस
४७४ मपधगसरे
४७५ मधपसगरे
४७६ मधपसरेग
४७७ मधपरेसग
४७८ मधपरेगस
४७९ मधपगसरे
४८० मधपगरेस

प

४८१ परेगमसध
४८२ परेगमधस
४८३ परेगधसम
४८४ परेगधमस
४८५ परेगसधम
४८६ परेगसमध
४८७ परेसगमध
४८८ परेसगधम
४८९ परेसधगम
४९० परेसधमग
४९१ परेसमधग
४९२ परेसमगध
४९३ पमरेगधस
४९४ पमरेगसध
४९५ पमरेधसग
४९६ पमरेधगस
४९७ पमरेसगध
४९८ पमरेसधग
४९९ पमगरेसध
५०० पमगरेधस
५०१ पमगसरेध
५०२ पमगसधरे
५०३ पमगधसरे
५०४ पमगधरेस
५०५ पधरेगमस
५०६ पधरेगसम
५०७ पधरेसगम
५०८ पधरेसमग
५०९ पधरेमगस
५१० पधरेमसग
५११ परेमगधस
५१२ परेमगसध
५१३ परेमसगध
५१४ परेमसधग
५१५ परेमधगस
५१६ परेमधसग
५१७ परेधगसम
५१८ परेधगमस
५१९ परेधसगम
५२० परेधसमग
५२१ परेधमसग
५२२ परेधमगस
५२३ पमसधगरे
५२४ पमसधरेग
५२५ पमसगरेध
५२६ पमसगधरे
५२७ पमसरेगध
५२८ पमसरेधग
५२९ पमधसगरे
५३० पमधसरेग
५३१ पमधरेसग
५३२ पमधरेगस
५३३ पमधगरेस
५३४ पमधगसरे
५३५ पधगमरेस
५३६ पधगमसरे
५३७ पधगरेमस
५३८ पधगरेसम
५३९ पधगसरेम
५४० पधगसमरे
५४१ पगरेमसध
५४२ पगरेमधस
५४३ पगरेधमस
५४४ पगरेधसम

५४५ पगरेसमध
५४६ पगरेसधम
५४७ पगमरेसध
५४८ पगमरेधस
५४९ पगमसरेध
५५० पगमसधरे
५५१ पगमधसरे
५५२ पगमधरेस
५५३ पसरेगधम
५५४ पसरेगमध
५५५ पसरेधमग
५५६ पसरेधगम
५५७ पसरेसगध
५५८ पसरेमधग
५५९ पसगधरेम
५६० पसगधमरे
५६१ पसगरेमध
५६२ पसगरेधम
५६३ पसगमधरे
५६४ पसगमरेध
५६५ पधमरेगस
५६६ पधमरेसग
५६७ पधमसरेग
५६८ पधमसगरे
५६९ पधसगरेस
५७० पधमगसरे
५७१ पगसमधरे
५७२ पगसमरेध
५७३ पगसधरेम
५७४ पगसधमरे
५७५ पगसरेधम
५७६ पगसरेमध
५७७ पगधरेसम
५७८ पगधरेमस
५७९ पगधमरेस
५८० पगधमसरे
५८१ पगधसरेम
५८२ पगधसमरे
५८३ पसमरेगध
५८४ पसमरेधग
५८५ पसमगरेध
५८६ पसमगधरे
५८७ पसमधरेग
५८८ पसमधगरे
५८९ पसधरेगम
५९० पसधरेमग
५९१ पसधमगरे
५९२ पसधमरेग
५९३ पसधगरेम
५९४ पसधगमरे
५९५ पधसमगरे
५९६ पधसमरेग
५९७ पधसरेमग
५९८ पधसरेगम
५९९ पधसगमरे
६०० पधसगरेम

ध

६०१ धरेगमपस
६०२ धरेगमसप
६०३ धरेगसपम
६०४ धरेगसमप
६०५ धरेगपसम
६०६ धरेगपमस
६०७ धरेपगमस
६०८ धरेपगसम
६०९ धरेपसगम
६१० धरेपसमग
६११ धरेपमसग
६१२ धरेपमगस
६१३ धमरेगसप
६१४ धमरेगपस
६१५ धमरेसपग
६१६ धमरेसगप
६१७ धमरेपगस
६१८ धमरेपसग
६१९ धमगरेपस
६२० धमगरेसप
६२१ धमगपरेस
६२२ धमगपसरे
६२३ धमगसपरे
६२४ धमगसरेप
६२५ धसरेगमप
६२६ धसरेगपम
६२७ धसरेपगम
६२८ धसरेपमग
६२९ धसरेमगप
६३० धसरेमपग
६३१ धरेमगसप
६३२ धरेमगपस
६३३ धरेमपगस
६३४ धरेमपसग
६३५ धरेमसगप
६३६ धरेमसपग
६३७ धरेसगपम
६३८ धरेसगमप
६३९ धरेसपगम
६४० धरेसपमग
६४१ धरेसमपग
६४२ धरेसमगप
६४३ धमपसगरे
६४४ धमपसरेग
६४५ धमपगरेस
६४६ धमपगसरे
६४७ धमपरेगस
६४८ धमपरेसग
६४९ धमसपगरे
६५० धमसपरेग
६५१ धमसरेपग
६५२ धमसरेगप
६५३ धमसगरेप
६५४ धमसगपरे
६५५ धसगमरेप
६५६ धसगमपरे
६५७ धसगरेमप
६५८ धसगरेपम
६५९ धसगपरेम
६६० धसगपमरे
६६१ धगरेमपस
६६२ धगरेमसप
६६३ धगरेसमप
६६४ धगरेसपम
६६५ धगरेपमस
६६६ धगरेपसम
६६७ धगमरेपस
६६८ धगमरेसप
६६९ धगमपरेस
६७० धगमपसरे
६७१ धगमसपरे
६७२ धगमसरेप
६७३ धपरेगसम
६७४ धपरेगमस
६७५ धपरेसमग
६७६ धपरेसगम
६७७ धपरेमगस
६७८ धपरेमसग
६७९ धपगसरेम
६८० धपगसमरे
६८१ धपगरेमस
६८२ धपगरेसम
६८३ धपगमसरे
६८४ धपगमरेस
६८५ धसमरेगप
६८६ धसमरेपग
६८७ धसमपरेग
६८८ धसमपगरे
६८९ धसमगरेप
६९० धसमगपरे
६९१ धगपमसरे
६९२ धगपमरेस
६९३ धगपसरेम
६९४ धगपसमरे
६९५ धगपरेसम
६९६ धगपरेमस
६९७ धगसरेपम
६९८ धगसरेमप
६९९ धगसमरेप
७०० धगसमपरे
७०१ धगसपरेम
७०२ धगसपमरे
७०३ धपमरेगस
७०४ धपमरेसग
७०५ धपमगरेस
७०६ धपमगसरे
७०७ धपमसरेग
७०८ धपमसगरे
७०९ धपसरेगम
७१० धपसरेमग
७११ धपसमगरे
७१२ धपसमरेग
७१३ धपसगरेम
७१४ धपसगमरे
७१५ धसपमगरे
७१६ धसपमरेग
७१७ धसपरेमग
७१८ धसपरेगम
७१९ धसपगमरे
७२० धसपगरेम

(७×६×५×४×३×२×१) सात स्वरों का प्रस्तार ५०४० (स रे ग म प ध नि)

स

१ सरेगमपधनि
२ सरेमगपधनि
३ सरेमपगधनि
४ सरेमपधगनि
५ सरेमपधनिग
६ सरेगमपनिध
७ सरेमगपनिध
८ सरेमपगनिध
९ सरेमपनिगध
१० सरेमपनिधग
११ सरेगमधपनि
१२ सरेमगधपनि
१३ सरेमधगपनि
१४ सरेमधपगनि
१५ सरेमधपनिग
१६ सरेगमधनिप
१७ सरेमगधनिप
१८ सरेमधगनिप
१९ सरेमधनिगप
२० सरेमधनिपग
२१ सरेगमनिपध
२२ सरेमगनिपध
२३ सरेमनिगपध
२४ सरेमनिपगध
२५ सरेमनिपधग
२६ सरेगमनिधप
२७ सरेमगनिधप
२८ सरेमनिगधप
२९ सरेमनिधगप
३० सरेमनिधपग
३१ सरेगपमधनि
३२ सरेपगमधनि
३३ सरेपमगधनि
३४ सरेपमधगनि
३५ सरेपमधनिग
३६ सरेगपधमनि
३७ सरेपगधमनि
३८ सरेपधगमनि
३९ सरेपधमगनि
४० सरेपधमनिग
४१ सरेगपधनिम
४२ सरेपगधनिम
४३ सरेपधगनिम
४४ सरेपधनिगम
४५ सरेपधनिमग
४६ सरेगपमनिध
४७ सरेपगमनिध
४८ सरेपमगनिध
४९ सरेपमनिगध
५० सरेपमनिधग
५१ सरेगपनिमध
५२ सरेपगनिमध
५३ सरेपनिगमध
५४ सरेपनिमगध
५५ सरेपनिमधग
५६ सरेगपनिधम
५७ सरेपगनिधम
५८ सरेपनिगधम
५९ सरेपनिधगम
६० सरेपनिधमग
६१ सरेगधमपनि
६२ सरेधगमपनि
६३ सरेधमगपनि
६४ सरेधमपगनि
६५ सरेधमपनिग
६६ सरेगधपमनि
६७ सरेधगपमनि
६८ सरेधपगमनि
६९ सरेधपमगनि
७० सरेधपमनिग
७१ सरेगधपनिम
७२ सरेधपनिगम
७३ सरेधपगनिम
७४ सरेधपनिगम
७५ सरेधपनिमग
७६ सरेगधमनिप
७७ सरेधगमनिप
७८ सरेधमगनिप
७९ सरेधमनिगप
८० सरेधमनिपग
८१ सरेगधनिमप
८२ सरेधगनिमप
८३ सरेधनिगमप
८४ सरेधनिमगप
८५ सरेधनिमपग
८६ सरेगधनिपम
८७ सरेधगनिपम
८८ सरेधनिगपम
८९ सरेधनिपगम
९० सरेधनिपमग
९१ सरेगनिमपध
९२ सरेनिगमपध
९३ सरेनिमगपध
९४ सरेनिमपगध
९५ सरेनिमपधग
९६ सरेगनिपमध
९७ सरेनिगपमध
९८ सरेनिपगमध
९९ सरेनिपमगध
१०० सरेनिपमधग
१०१ सरेगनिपधम
१०२ सरेनिगपधम
१०३ सरेनिपगधम
१०४ सरेनिपधगम
१०५ सरेनिपधमग

१०६ सरेगनिमधप
१०७ सरेनिगमधप
१०८ सरेनिमगधप
१०९ सरेनिमधगप
११० सरेनिमधपग
१११ सरेगनिधमप
११२ सरेनिगधमप
११३ सरेनिधगमप
११४ सरेनिधमगप
११५ सरेनिधमपग
११६ सरेगनिधपम
११७ सरेनिगधपम
११८ सरेनिधगपम
११९ सरेनिधपगम
१२० सरेनिधपमग
१२१ सगमपरेधनि
१२२ समगपरेधनि
१२३ समपगरेधनि
१२४ समपधरेगनि
१२५ समपधरेनिग
१२६ सगमपरेनिध
१२७ समगपरेनिध
१२८ समपगरेनिध
१२९ समपनिरेगध
१३० समपनिरेधग
१३१ सगमधरेपनि
१३२ समगधरेपनि
१३३ समधगरेपनि
१३४ समधपरेगनि
१३५ समधपरेनिग
१३६ सगमधरेनिप
१३७ समगधरेनिप
१३८ समधगरेनिप
१३९ समधनिरेगप
१४० समधनिरेपग
१४१ सगमनिरेपध
१४२ समगनिरेपध
१४३ समनिगरेपध
१४४ समनिपरेगध
१४५ समनिपरेधग
१४६ सगमनिरेधप
१४७ समगनिरेधप
१४८ समनिगरेधप
१४९ समनिधरेगप
१५० समनिधरेपग
१५१ सगपमरेधनि
१५२ सपगमरेधनि
१५३ सपमगरेधनि
१५४ सपमधरेगनि
१५५ सपमधरेनिग
१५६ सगपधरेमनि
१५७ सपगधरेमनि
१५८ सपधगरेमनि
१५९ सपधमरेगनि
१६० सपधमरेनिग
१६१ सगपधरेनिम
१६२ सपगधरेनिम
१६३ सपधगरेनिम
१६४ सपधनिरेमग
१६५ सपधनिरेगम
१६६ सगपमरेनिध
१६७ सपगमरेनिध
१६८ सपमगरेनिध
१६९ सपमनिरेगध
१७० सपमनिरेधग
१७१ सगपनिरेमध
१७२ सपगनिरेमध
१७३ सपनिगरेमध
१७४ सपनिमरेगध
१७५ सपनिमरेधग
१७६ सगपनिरेधम
१७७ सपगनिरेधम
१७८ सपनिगरेधम
१७९ सपनिधरेगम
१८० सपनिधरेमग
१८१ सगधमरेपनि
१८२ सधगमरेपनि
१८३ सधमगरेपनि
१८४ सधमपरेगनि
१८५ सधमपरेनिग
१८६ सगधपरेमनि
१८७ सधगपरेमनि
१८८ सधपगरेमनि
१८९ सधपमरेगनि
१९० सधपमरेनिग
१९१ सगधपरेनिम
१९२ सधगपरेनिम
१९३ सधपगरेनिम
१९४ सधपनिरेगम
१९५ सधपनिरेमग
१९६ सगधमरेनिप
१९७ सधगमरेनिप
१९८ सधमगरेनिप
१९९ सधमनिरेगप
२०० सधमनिरेपग
२०१ सगधनिरेमप
२०२ सधगनिरेमप
२०३ सधनिगरेमप
२०४ सधनिमरेगप
२०५ सधनिमरेपग
२०६ सगधनिरेपम
२०७ सधगनिरेपम
२०८ सधनिगरेपम
२०९ सधनिपरेगम
२१० सधनिपरेमग
२११ सगनिमरेपध
२१२ सनिगमरेपध
२१३ सनिमगरेपध
२१४ सनिमपरेगध
२१५ सनिमपरेधग
२१६ सगनिपरेमध
२१७ सनिगपरेमध
२१८ सनिपगरेमध
२१९ सनिपमरेगध
२२० सनिपमरेधग
२२१ सगनिपरेधम
२२२ सनिगपरेधम

२२३	सनिपगरेधम	२६२	समरेगनिपध	३०१	सगरेधमपनि
२२४	सनिपधरेगम	२६३	समरेनिगपध	३०२	सधरेगमपनि
२२५	सनिपधरेमग	२६४	समरेनिपगध	३०३	सधरेमगपनि
२२६	सगनिमरेधप	२६५	समरेनिपधग	३०४	सधरेमपगनि
२२७	सनिगमरेधप	२६६	सगरेमनिधप	३०५	सधरेमपनिग
२२८	सनिमगरेधप	२६७	समरेगनिधप	३०६	सगरेधपमनि
२२९	सनिमधरेगप	२६८	समरेनिगधप	३०७	सधरेगपमनि
२३०	सनिमधरेपग	२६९	समरेनिधगप	३०८	सधरेपगमनि
२३१	सगनिधरेमप	२७०	समरेनिधपग	३०९	सधरेपमगनि
२३२	सनिगधरेमप	२७१	सगरेपमधनि	३१०	सधरेपमनिग
२३३	सनिधगरेमप	२७२	सपरेगमधनि	३११	सगरेधपनिम
२३४	सनिधमरेगप	२७३	सपरेमगधनि	३१२	सधरेपनिगम
२३५	सनिधमरेपग	२७४	सपरेमधगनि	३१३	सधरेपगनिम
२३६	सगनिधरेपम	२७५	सपरेमधनिग	३१४	सधरेपनिगम
२३७	सनिगधरेपम	२७६	सगरेपधमनि	३१५	सधरेपनिमग
२३८	सनिधगरेपम	२७७	सपरेगधमनि	३१६	सगरेधमनिप
२३९	सनिधपरेगम	२७८	सपरेधगमनि	३१७	सधरेगमनिप
२४०	सनिधपरेमग	२७९	सपरेधमगनि	३१८	सधरेमगनिप
२४१	सगरेमपधनि	२८०	सपरेधमनिग	३१९	सधरेमनिगप
२४२	समरेगपधनि	२८१	सगरेपधनिम	३२०	सधरेमनिपग
२४३	समरेपगधनि	२८२	सपरेगधनिम	३२१	सगरेधनिमप
२४४	समरेपधगनि	२८३	सपरेधगनिम	३२२	सधरेगनिमप
२४५	समरेपधनिग	२८४	सपरेधनिगम	३२३	सधरेनिगमप
२४६	सगरेमपनिध	२८५	सपरेधनिमग	३२४	सधरेनिमगप
२४७	समरेगपनिध	२८६	सगरेपमनिध	३२५	सधरेनिमपग
२४८	समरेपगनिध	२८७	सपरेगमनिध	३२६	सगरेधनिपम
२४९	समरेपनिगध	२८८	सपरेमगनिध	३२७	सधरेगनिपम
२५०	समरेपनिधग	२८९	सपरेमनिगध	३२८	सधरेनिगपम
२५१	सगरेमधपनि	२९०	सपरेमनिधग	३२९	सधरेनिपगम
२५२	समरेगधपनि	२९१	सगरेपनिमध	३३०	सधरेनिपमग
२५३	समरेधगपनि	२९२	सपरेगनिमध	३३१	सगरेनिमपध
२५४	समरेधपगनि	२९३	सपरेनिगमध	३३२	सनिरेगमपध
२५५	समरेधपनिग	२९४	सपरेनिमगध	३३३	सनिरेमगपध
२५६	सगरेमधनिप	२९५	सपरेनिमधग	३३४	सनिरेमपगध
२५७	समरेगधनिप	२९६	सगरेपनिधम	३३५	सनिरेमपधग
२५८	समरेधगनिप	२९७	सपरेगनिधम	३३६	सगरेनिपमध
२५९	समरेधनिगप	२९८	सपरेनिगधम	३३७	सनिरेगपमध
२६०	समरेधनिपग	२९९	सपरेनिधगम	३३८	सनिरेपगमध
२६१	सगरेमनिपध	३००	सपरेनिधमग	३३९	सनिरेपमगध

३४० सनिरेपमधग
३४१ सगरेनिपधम
३४२ सनिरेगपधम
३४३ सनिरेपगधम
३४४ सनिरेपधगम
३४५ सनिरेपधमग
३४६ सगरेनिमधप
३४७ सनिरेगमधप
३४८ सनिरेमगधप
३४९ सनिरेमधगप
३५० सनिरेमधपग
३५१ सगरेनिधमप
३५२ सनिरेगधमप
३५३ सनिरेधगमप
३५४ सनिरेधमगप
३५५ सनिरेधमपग
३५६ सगरेनिधपम
३५७ सनिरेगधपम
३५८ सनिरेधगपम
३५९ सनिरेधपगम
३६० सनिरेधपमग
३६१ सगमपधरेनि
३६२ समगपधरेनि
३६३ समपगधरेनि
३६४ समपधगरेनि
३६५ समपधनिरेग
३६६ सगमपनिरेध
३६७ समगपनिरेध
३६८ समपगनिरेध
३६९ समपनिगरेध
३७० समपनिधरेग
३७१ सगमधपरेनि
३७२ समगधपरेनि
३७३ समधगपरेनि
३७४ समधपगरेनि
३७५ समधपनिरेग
३७६ सगमधनिरेप
३७७ समगधनिरेप
३७८ समधगनिरेप
३७९ समधनिगरेप
३८० समधनिपरेग
३८१ सगमनिपरेध
३८२ समगनिपरेध
३८३ समनिगपरेध
३८४ समनिपगरेध
३८५ समनिपधरेग
३८६ सगमनिधरेप
३८७ समगनिधरेप
३८८ समनिगधरेप
३८९ समनिधगरेप
३९० समनिधपरेग
३९१ सगपमधरेनि
३९२ सपगमधरेनि
३९३ सपमगधरेनि
३९४ सपमधगरेनि
३९५ सपमधनिरेग
३९६ सगपधमरेनि
३९७ सपगधमरेनि
३९८ सपधगमरेनि
३९९ सपधमगरेनि
४०० सपधमनिरेग
४०१ सगपधनिरेम
४०२ सपगधनिरेम
४०३ सपधगनिरेम
४०४ सपधनिमरेग
४०५ सपधनिगरेम
४०६ सगपमनिरेध
४०७ सपगमनिरेध
४०८ सपमगनिरेध
४०९ सपमनिगरेध
४१० सपमनिधरेग
४११ सगपनिमरेध
४१२ सपगनिमरेध
४१३ सपनिगमरेध
४१४ सपनिमगरेध
४१५ सपनिमधरेग
४१६ सगपनिधरेम
४१७ सपगनिधरेम
४१८ सपनिगधरेम
४१९ सपनिधगरेम
४२० सपनिधमरेग
४२१ सगधमपरेनि
४२२ सधगमपरेनि
४२३ सधमगपरेनि
४२४ सधमपगरेनि
४२५ सधमपनिरेग
४२६ सगधपमरेनि
४२७ सधगपमरेनि
४२८ सधपगमरेनि
४२९ सधपमगरेनि
४३० सधपमनिरेग
४३१ सगधपनिरेम
४३२ सधगपनिरेम
४३३ सधपगनिरेम
४३४ सधपनिगरेम
४३५ सधपनिमरेग
४३६ सगधमनिरेप
४३७ सधगमनिरेप
४३८ सधमगनिरेप
४३९ सधमनिगरेप
४४० सधमनिपरेग
४४१ सगधनिमरेप
४४२ सधगनिमरेप
४४३ सधनिगमरेप
४४४ सधनिमगरेप
४४५ सधनिमपरेग
४४६ सगधनिपरेम
४४७ सधगनिपरेम
४४८ सधनिगपरेम
४४९ सधनिपगरेम
४५० सधनिपमरेग
४५१ सगनिमपरेध
४५२ सनिगमपरेध
४५३ सनिमगपरेध
४५४ सनिमपगरेध
४५५ सनिमपधरेग
४५६ सगनिपमरेध

४५७	सनिगपमरेध	४९६	सगमरेधनिप	५३५	सपनिरेमधग
४५८	सनिपगमरेध	४९७	समगरेधनिप	५३६	सगपरेनिधम
४५९	सनिपमगरेध	४९८	समधरेगनिप	५३७	सपगरेनिधम
४६०	सनिपमधरेग	४९९	समधरेनिगप	५३८	सपनिरेगधम
४६१	सगनिपधरेम	५००	समधरेनिपग	५३९	सपनिरेधगम
४६२	सनिगपधरेम	५०१	सगमरेनिपध	५४०	सपनिरेधमग
४६३	सनिपगधरेम	५०२	समगरेनिपध	५४१	सगधरेमपनि
४६४	सनिपधगरेम	५०३	समनिरेगपध	५४२	सधगरेमपनि
४६५	सनिपधमरेग	५०४	समनिरेपगध	५४३	सधमरेगपनि
४६६	सगनिमधरेप	५०५	समनिरेपधग	५४४	सधमरेपगनि
४६७	सनिगमधरेप	५०६	सगमरेनिधप	५४५	सधमरेपनिग
४६८	सनिमगधरेप	५०७	समगरेनिधप	५४६	सगधरेपमनि
४६९	सनिमधगरेप	५०८	समनिरेगधप	५४७	सधगरेपमनि
४७०	सनिमधपरेग	५०९	समनिरेधगप	५४८	सधपरेगमनि
४७१	सगनिधमरेप	५१०	समनिरेधपग	५४९	सधपरेमगनि
४७२	स नगधमरेप	५११	सगपरेमधनि	५५०	सधपरेमनिग
४७३	सनिधगमरेप	५१२	सपगरेमधनि	५५१	सगधरेपनिम
४७४	सनिधमगरेप	५१३	सपमरेगधनि	५५२	सधपरेनिगम
४७५	सनिधमपरेग	५१४	सपमरेधगनि	५५३	सधपरेगनिम
४७६	सगनिधपरेम	५१५	सपमरेधनिग	५५४	सधपरेनिगम
४७७	सनिगधपरेम	५१६	सगपरेधमनि	५५५	सधपरेनिमग
४७८	सनिधगपरेम	५१७	सपगरेधमनि	५५६	सगधरेमनिप
४७९	सनिधपगरेम	५१८	सपधरेगमनि	५५७	सधगरेमनिप
४८०	सनिधपमरेग	५१९	सपधरेमगनि	५५८	सधमरेगनिप
४८१	सगमरेपधनि	५२०	सपधरेमनिग	५५९	सधमरेनिगप
४८२	समगरेपधनि	५२१	सगपरेधनिम	५६०	सधमरेनिपग
४८३	समपरेगधनि	५२२	सपगरेधनिम	५६१	सगधरेनिमप
४८४	समपरेधगनि	५२३	सपधरेगनिम	५६२	सधगरेनिमप
४८५	समपरेधनिग	५२४	सपधरेनिमग	५६३	सधनिरेगमप
४८६	सगमरेपनिव	५२५	सपधरेनिगम	५६४	सधनिरेमगप
४८७	समगरेपनिध	५२६	सगपरेमनिध	५६५	सधनिरेमपग
४८८	समपरेगनिध	५२७	सपगरेमनिध	५६६	सगधरेनिपम
४८९	समपरेनिगध	५२८	सपमरेगनिध	५६७	सधगरेनिपम
४९०	समपरेनिधग	५२९	सपमरेनिगध	५६८	सधनिरेगपम
४९१	सगमरेधपनि	५३०	सपमरेनिधग	५६९	सधनिरेपगम
४९२	समगरेधपनि	५३१	सगपरेनिमध	५७०	सधनिरेपमग
४९३	समधरेगपनि	५३२	सपगरेनिमध	५७१	सगनिरेमपध
४९४	समधरेपगनि	५३३	सपनिरेगमध	५७२	सनिगरेमपध
४९५	समधरेपनिग	५३४	सपनिरेमगध	५७३	सनिमरेगपध

५७४ सनिमरेपगध
५७५ सनिमरेपधग
५७६ सगनिरेपमध
५७७ सनिगरेपमध
५७८ सनिपरेगमध
५७९ सनिपरेमगध
५८० सनिपरेमधग
५८१ सगनिरेपधम
५८२ सनिगरेपधम
५८३ सनिपरेगधम
५८४ सनिपरेधगम
५८५ सनिपरेधमग
५८६ सगनिरेमधप
५८७ सनिगरेमधप
५८८ सनिमरेगधप
५८९ सनिमरेधगप
५९० सनिमरेधपग
५९१ सगनिरेधमप
५९२ सनिगरेधमप
५९३ सनिधरेगमप
५९४ सनिधरेमगप
५९५ सनिधरेमपग
५९६ सगनिरेधपम
५९७ सनिगरेधपम
५९८ सनिधरेगपम
५९९ सनिधरेपगम
६०० सनिधरेपमग
६०१ सगमपधनिरे
६०२ समगपधनिरे
६०३ समपगधनिरे
६०४ समपधगनिरे
६०५ समपधनिगरे
६०६ सगमपनिधरे
६०७ समगपनिधरे
६०८ समपगनिधरे
६०९ समपनिगधरे
६१० समपनिधगरे
६११ सगमधपनिरे
६१२ समगधपनिरे
६१३ समधगपनिरे
६१४ समधपगनिरे
६१५ समधपनिगरे
६१६ सगमधनिपरे
६१७ समगधनिपरे
६१८ समधगनिपरे
६१९ समधनिगपरे
६२० समधनिपगरे
६२१ सगमनिपधरे
६२२ समगनिपधरे
६२३ समनिगपधरे
६२४ समनिपगधरे
६२५ समनिपधगरे
६२६ सगमनिधपरे
६२७ समगनिधपरे
६२८ समनिगधपरे
६२९ समनिधगपरे
६३० समनिधपगरे
६३१ सगपमधनिरे
६३२ सपगमधनिरे
६३३ सपमगधनिरे
६३४ सपमधगनिरे
६३५ सपमधनिगरे
६३६ सगपधमनिरे
६३७ सपगधमनिरे
६३८ सपधगमनिरे
६३९ सपधमगनिरे
६४० सपधमनिगरे
६४१ सगपधनिमरे
६४२ सपगधनिमरे
६४३ सपधगनिमरे
६४४ सपधनिमगरे
६४५ सपधनिगमरे
६४६ सगपमनिधरे
६४७ सपगमनिधरे
६४८ सपमगनिधरे
६४९ सपमनिगधरे
६५० सपमनिधगरे
६५१ सगपनिमधरे
६५२ सपगनिमधरे
६५३ सपनिगमधरे
६५४ सपनिमगधरे
६५५ सपनिमधगरे
६५६ सगपनिधमरे
६५७ सपगनिधमरे
६५८ सपनिगधमरे
५५९ सपनिधगमरे
६६० सपनिधमगरे
६६१ सगधमपनिरे
६६२ सधगमपनिरे
६६३ सधमगपनिरे
६६४ सधमपगनिरे
६६५ सधमपनिगरे
६६६ सगधपमनिरे
६६७ सधगपमनिरे
६६८ सधपगमनिरे
६६९ सधपमगनिरे
६७० सधपमनिगरे
६७१ सगधपनिमरे
६७२ सधगपनिमरे
६७३ सधपगनिमरे
६७४ सधपनिगमरे
६७५ सधपनिमगरे
६७६ सगधमनिपरे
६७७ सधगमनिपरे
६७८ सधमगनिपरे
६७९ सधमनिगपरे
६८० सधमनिपगरे
६८१ सगधनिमपरे
६८२ सधगनिमपरे
६८३ सधनिगमपरे
६८४ सधनिमगपरे
६८५ सधनिमपगरे
६८६ सगधनिपमरे
६८७ सधगनिपमरे
६८८ सधनिगपमरे
६८९ सधनिपगमरे
६९० सधनिपमगरे

६६१	सगनिमपधरे	७०१	सगनिपधमरे	७११	सगनिधमपरे
६६२	सनिगमपधरे	७०२	सनिगपधमरे	७१२	सनिगधमपरे
६६३	सनिमगपधरे	७०३	सनिपगधमरे	७१३	सनिधगमपरे
६६४	सनिमपगधरे	७०४	सनिपधगमरे	७१४	सनिधमगपरे
६६५	सनिमपधगरे	७०५	सनिपधमगरे	७१५	सनिधमपगरे
६६६	सगनिपमधरे	७०६	सगनिमधपरे	७१६	सगनिधपमरे
६६७	सनिगपमधरे	७०७	सनिगमधपरे	७१७	सनिगधपमरे
६६८	सनिपगमधरे	७०८	सनिमगधपरे	७१८	सनिधगपमरे
६६९	सनिपमगधरे	७०९	सनिमधगपरे	७१९	सनिधपगमरे
७००	सनिपमधगरे	७१०	सनिमधपगरे	७२०	सनिधपमगरे

रे

७२१	रेसगमपधनि	७४७	रेसमगनिधप	७७३	रेसपनिगमध
७२२	रेसमगपधनि	७४८	रेसमनिगधप	७७४	रेसपनिमगध
७२३	रेसमपगधनि	७४९	रेसमनिधगप	७७५	रेसपनिमधग
७२४	रेसमपधगनि	७५०	रेसमनिधपग	७७६	रेसगपनिधम
७२५	रेसमपधनिग	७५१	रेसगपमधनि	७७७	रेसपगनिधम
७२६	रेसगमपनिध	७५२	रेसपगमधनि	७७८	रेसपनिगधम
७२७	रेसमगपनिध	७५३	रेसपमगधनि	७७९	रेसपनिधगम
७२८	रेसमपगनिध	७५४	रेसपमधगनि	७८०	रेसपनिधमग
७२९	रेसमपनिगध	७५५	रेसपमधनिग	७८१	रेसगधमपनि
७३०	रेसमपनिधग	७५६	रेसगपधमनि	७८२	रेसधगमपनि
७३१	रेसगमधपनि	७५७	रेसपगधमनि	७८३	रेसधमगपनि
७३२	रेसमगधपनि	७५८	रेसपधगमनि	७८४	रेसधमपगनि
७३३	रेसमधगपनि	७५९	रेसपधमगनि	७८५	रेसधमपनिग
७३४	रेसमधपगनि	७६०	रेसपधमनिग	७८६	रेसगधपमनि
७३५	रेसमधपनिग	७६१	रेसगपधनिम	७८७	रेसधगपमनि
७३६	रेसगमधनिप	७६२	रेसपगधनिम	७८८	रेसधपगमनि
७३७	रेसमगधनिप	७६३	रेसपधगनिम	७८९	रेसधपमगनि
७३८	रेसमधगनिप	७६४	रेसपधनिगम	७९०	रेसधपमनिग
७३९	रेसमधनिगप	७६५	रेसपधनिमग	७९१	रेसगधपनिम
७४०	रेसमधनिपग	७६६	रेसगपमनिध	७९२	रेसधगपनिम
७४१	रेसगमनिपध	७६७	रेसपगमनिध	७९३	रेसधपगनिम
७४२	रेसमगनिपध	७६८	रेसपमगनिध	७९४	रेसधपनिगम
७४३	रेसमनिगपध	७६९	रेसपमनिगध	७९५	रेसधपनिमग
७४४	रेसमनिपगध	७७०	रेसपमनिधग	७९६	रेसगधमनिप
७४५	रेसमनिपधग	७७१	रेसगपनिमध	७९७	रेसधगमनिप
७४६	रेसगमनिधप	७७२	रेसपगनिमध	७९८	रेसधमगनिप

७९९	रेसधमनिगप	८३८	रेसनिधगपम	८७७	रेपगधसमनि
८००	रेसधमनिपग	८३९	रेसनिधपगम	८७८	रेपधगसमनि
८०१	रेसगधनिमप	८४०	रेसनिधपमग	८७९	रेपधमसगनि
८०२	रेसधगनिमप	८४१	रेगमपसधनि	८८०	रेपधमसनिग
८०३	रेसधनिगमप	८४२	रेमगपसधनि	८८१	रेगपधसनिम
८०४	रेसधनिमगप	८४३	रेमपगसधनि	८८२	रेपगधसनिम
८०५	रेसधनिमपग	८४४	रेमपधसगनि	८८३	रेपधगसनिम
८०६	रेसगधनिपम	८४५	रेमपधसनिग	८८४	रेपधनिसगम
८०७	रेसधगनिपम	८४६	रेगमपसनिध	८८५	रेपधनिसमग
८०८	रेसधनिगपम	८४७	रेमगपसनिध	८८६	रेगपमसनिध
८०९	रेसधनिपगम	८४८	रेमपगसनिध	८८७	रेपगमसनिध
८१०	रेसधनिपमग	८४९	रेमपनिसगध	८८८	रेपमगसनिध
८११	रेसगनिमपध	८५०	रेमपनिसधग	८८९	रेपमनिसगध
८१२	रेसनिगमपध	८५१	रेगमधसपनि	८९०	रेपमनिसधग
८१३	रेसनिमगपध	८५२	रेमगधसपनि	८९१	रेगपनिसमध
८१४	रेसनिमपगध	८५३	रेमधगसपनि	८९२	रेपगनिसमध
८१५	रेसनिमपधग	८५४	रेमधपसगनि	८९३	रेपनिगसमध
८१६	रेसगनिपमध	८५५	रेमधपसनिग	८९४	रेपनिमसगध
८१७	रेसनिगपमध	८५६	रेगमधसनिप	८९५	रेपनिमसधग
८१८	रेसनिपगमध	८५७	रेमगधसनिप	८९६	रेगपनिसधम
८१९	रेसनिपमगध	८५८	रेमधगसनिप	८९७	रेपगनिसधम
८२०	रेसनिपमधग	८५९	रेमधनिसगप	८९८	रेपनिगसधम
८२१	रेसगनिपधम	८६०	रेमधनिसपग	८९९	रेपनिधसगम
८२२	रेसनिगपधम	८६१	रेगमनिसपध	९००	रेपनिधसमग
८२३	रेसनिपगधम	८६२	रेमगनिसपध	९०१	रेगधमसपनि
८२४	रेसनिपधगम	८६३	रेमनिगसपध	९०२	रेधगमसपनि
८२५	रेसनिपधमग	८६४	रेमनिपसगध	९०३	रेधमगसपनि
८२६	रेसगनिमधप	८६५	रेमनिपसधग	९०४	रेधमपसगनि
८२७	रेसनिगमधप	८६६	रेगमनिसधप	९०५	रेधमपसनिग
८२८	रेसनिमगधप	८६७	रेमगनिसधप	९०६	रेगधपसमनि
८२९	रेसनिमधगप	८६८	रेमनिगसधप	९०७	रेधगपसमनि
६३०	रेसनिमधपग	८६९	रेमनिधसगप	९०८	रेधपगसमनि
८३१	रेसगनिधमप	८७०	रेमनिधसपग	९०९	रेधपमसगनि
८३२	रेसनिगधमप	८७१	रेगपमसधनि	९१०	रेधपमसनिग
८३३	रेसनिधगमप	८७२	रेपगमसधनि	९११	रेगधपसनिम
८३४	रेसनिधमगप	८७३	रेपमगसधनि	९१२	रेधगपसनिम
८३५	रेसनिधमपग	८७४	रेपमधसगनि	९१३	रेधपगसनिम
८३६	रेसगनिधपम	८७५	रेपमधसनिग	९१४	रेधपनिसगम
८३७	रेसनिगधपम	८७६	रेगपधसमनि	९१५	रेधपनिसमग

९१६ रेगधमसनिप
९१७ रेधगमसनिप
९१८ रेधमगसनिप
९१९ रेधमनिसगप
९२० रेधमनिसपग
९२१ रेगधनिसमप
९२२ रेधगनिसमप
९२३ रेधनिगसमप
९२४ रेधनिमसगप
९२५ रेधनिमसपग
९२६ रेगधनिसपम
९२७ रेधगनिसपम
९२८ रेधनिगसपम
९२९ रेधनिपसगम
९३० रेधनिपसमग
९३१ रेगनिमसपध
९३२ रेनिगमसपध
९३३ रेनिमगसपध
९३४ रेनिमपसगध
९३५ रेनिमपसधग
९३६ रेगनिपसमध
९३७ रेनिगपसमध
९३८ रेनिपगसमध
९३९ रेनिपमसगध
९४० रेनिपमसधग
९४१ रेगनिपसधम
९४२ रेनिगपसधम
९४३ रेनिपगसधम
९४४ रेनिपधसगम
९४५ रेनिपधसमग
९४६ रेगनिमसधप
९४७ रेनिगमसधप
९४८ रेनिमगसधप
९४९ रेनिमधसगप
९५० रेनिमधसपग
९५१ रेगनिधसमप
९५२ रेनिगधसमप
९५३ रेनिधगसमप
९५४ रेनिधमसगप
९५५ रेनिधमसपग
९५६ रेगनिधसपम
९५७ रेनिगधसपम
९५८ रेनिधगसपम
९५९ रेनिधपसगम
९६० रेनिधपसमग
९६१ रेगसमपधनि
९६२ रेमसगपधनि
९६३ रेमसपगधनि
९६४ रेमसपधगनि
९६५ रेमसपधनिग
९६६ रेगसमपनिध
९६७ रेमसगपनिध
९६८ रेमसपगनिध
९६९ रेमसपनिगध
९७० रेमसपनिधग
९७१ रेगसमधपनि
९७२ रेमसगधपनि
९७३ रेमसधगपनि
९७४ रेमसधपगनि
९७५ रेमसधपनिग
९७६ रेगसमधनिप
९७७ रेमसगधनिप
९७८ रेमसधगनिप
९७९ रेमसधनिगप
९८० रेमसधनिपग
९८१ रेगसमनिपध
९८२ रेमसगनिपध
९८३ रेमसनिगपध
९८४ रेमसनिपगध
९८५ रेमसनिपधग
९८६ रेगसमनिधप
९८७ रेमसगनिधप
९८८ रेमसनिगधप
९८९ रेमसनिधगप
९९० रेमसनिधपग
९९१ रेमसपमधनि
९९२ रेपसगमधनि
९९३ रेपसमगधनि
९९४ रेपसमधगनि
९९५ रेपसमधनिग
९९६ रेगसपधमनि
९९७ रेपसगधमनि
९९८ रेपसधगमनि
९९९ रेपसधमगनि
१००० रेपसधमनिग
१००१ रेगसपधनिम
१००२ रेपसगधनिम
१००३ रेपसधगनिम
१००४ रेपसधनिगम
१००५ रेपसधनिमग
१००६ रेगसपमनिध
१००७ रेपसगमनिध
१००८ रेपसमगनिध
१००९ रेपसमनिगध
१०१० रेपसमनिधग
१०११ रेगसपनिमध
१०१२ रेपसगनिमध
१०१३ रेपसनिगमध
१०१४ रेपसनिमगध
१०१५ रेपसनिमधग
१०१६ रेगसपनिधम
१०१७ रेपसगनिधम
१०१८ रेपसनिगधम
१०१९ रेपसनिधगम
१०२० रेपसनिधमग
१०२१ रेगसधमपनि
१०२२ रेधसगमपनि
१०२३ रेधसमगपनि
१०२४ रेधसमपगनि
१०२५ रेधसमपनिग
१०२६ रेगसधपमनि
१०२७ रेधसगपमनि
१०२८ रेधसपगमनि
१०२९ रेधसपमगनि
१०३० रेधसपमनिग
१०३१ रेगसधपनिम
१०३२ रेधसगपनिम

१०३३ रेधसपगनिम
१०३४ रेधसपनिगम
१०३५ रेधसपनिमग
१०३६ रेगसधमनिप
१०३७ रेधसगमनिप
१०३८ रेधसमगनिप
१०३९ रेधसमनिगप
१०४० रेधसमनिपग
१०४१ रेगसधनिमप
१०४२ रेधसगनिमप
१०४३ रेधसनिगमप
१०४४ रेधसनिमगप
१०४५ रेधसनिमपग
१०४६ रेगसधनिपम
१०४७ रेधसगनिपम
१०४८ रेधसनिगपम
१०४९ रेधसनिपगम
१०५० रेधसनिपमग
१०५१ रेगसनिमपध
१०५२ रेनिसगमपध
१०५३ रेनिसमगपध
१०५४ रेनिसमपगध
१०५५ रेनिसमपधग
१०५६ रेगसनिपमध
१०५७ रेनिसगपमध
१०५८ रेनिसपगमध
१०५९ रेनिसपमगध
१०६० रेनिसपमधग
१०६१ रेगसनिपधम
१०६२ रेनिसगपधम
१०६३ रेनिसपगधम
१०६४ रेनिसपधगम
१०६५ रेनिसपधमग
१०६६ रेगसनिमधप
१०६७ रेनिसगमधप
१०६८ रेनिसमगधप
१०६९ रेनिसमधगप
१०७० रेनिसमधपग
१०७१ रेगसनिधमप
१०७२ रेनिसगधमप
१०७३ रेनिसधगमप
१०७४ रेनिसधमगप
१०७५ रेनिसधमपग
१०७६ रेगसनिधपम
१०७७ रेनिसगधपम
१०७८ रेनिसधगपम
१०७९ रेनिसधपगम
१०८० रेनिसधपमग
१०८१ रेगमपधसनि
१०८२ रेमगपधसनि
१०८३ रेमपगधसनि
१०८४ रेमपधगसनि
१०८५ रेमपधनिसग
१०८६ रेगमपनिसध
१०८७ रेमगपनिसध
१०८८ रेमपगनिसध
१०८९ रेमपनिगसध
१०९० रेमपनिधसग
१०९१ रेगमधपसनि
१०९२ रेमगधपसनि
१०९३ रेमधगपसनि
१०९४ रेमधपगसनि
१०९५ रेमधपनिसग
१०९६ रेगमधनिसप
१०९७ रेमगधनिसप
१०९८ रेमधगनिसप
१०९९ रेमधनिगसप
११०० रेमधनिपसग
११०१ रेगमनिपसध
११०२ रेमगनिपसध
११०३ रेमनिगपसध
११०४ रेमनिपगसध
११०५ रेमनिपधसग
११०६ रेगमनिधसप
११०७ रेमगनिधसप
११०८ रेमनिगधसप
११०९ रेमनिधगसप
१११० रेमनिधपसग
११११ रेगपमधसनि
१११२ रेपगमधसनि
१११३ रेपमगधसनि
१११४ रेपमधगसनि
१११५ रेपमधनिसग
१११६ रेगपधमसनि
१११७ रेपगधमसनि
१११८ रेपधगमसनि
१११९ रेपधमगसनि
११२० रेपधमनिसग
११२१ रेगपधनिसम
११२२ रेपगधनिसम
११२३ रेपधगनिसम
११२४ रेपधनिगसम
११२५ रेपधनिमसग
११२६ रेगपमनिसध
११२७ रेपगमनिसध
११२८ रेपमगनिसध
११२९ रेपमनिगसध
११३० रेपमनिधसग
११३१ रेगपनिमसध
११३२ रेपगनिमसध
११३३ रेपनिगमसध
११३४ रेपनिमगसध
११३५ रेपनिमधसग
११३६ रेगपनिधसम
११३७ रेपगनिधसम
११३८ रेपनिगधसम
११३९ रेपनिधगसम
११४० रेपनिधमसग
११४१ रेगधमपसनि
११४२ रेधगमपसनि
११४३ रेधमगपसनि
११४४ रेधमपगसनि
११४५ रेधमपनिसग
११४६ रेगधपमसनि
११४७ रेधगपमसनि
११४८ रेधपगमसनि
११४९ रेधपमगसनि

११५० रेधपमनिसग
११५१ रेगधपनिसम
११५२ रेधगपनिसम
११५३ रेधपगनिसम
११५४ रेधपनिगसम
११५५ रेधपनिमसग
११५६ रेगधमनिसप
११५७ रेधगमनिसप
११५८ रेधमगनिसप
११५९ रेधमनिगसप
११६० रेधमनिपसग
११६१ रेगधनिमसप
११६२ रेधगनिमसप
११६३ रेधनिमगसप
११६४ रेधनिमगपस
११६५ रेधनिमपसग
११६६ रेगधनिपसम
११६७ रेधगनिपसम
११६८ रेधनिगपसम
११६९ रेधनिपगसम
११७० रेधनिपमसग
११७१ रेगनिमपसध
११७२ रेनिगमपसध
११७३ रेनिमगपसध
११७४ रेनिमपगसध
११७५ रेनिमपधसग
११७६ रेगनिपमसध
११७७ रेनिगपमसध
११७८ रेनिपगमसध
११७९ रेनिपमगसध
११८० रेनिपमधसग
११८१ रेगनिपधसम
११८२ रेनिगपधसम
११८३ रेनिपगधसम
११८४ रेनिपधगसम
११८५ रेनिपधमसग
११८६ रेगनिमधसप
११८७ रेनिगमधसप
११८८ रेनिमगधसप
११८९ रेनिमधगसप
११९० रेनिमधपसग
११९१ रेगनिधमसप
११९२ रेनिगधमसप
११९३ रेनिधगमसप
११९४ रेनिधमगसप
११९५ रेनिधमपसग
११९६ रेगनिधपसम
११९७ रेनिगधपसम
११९८ रेनिधगपसम
११९९ रेनिधपगसम
१२०० रेनिधपमसग
१२०१ रेगमसपधनि
१२०२ रेमगसपधनि
१२०३ रेमपसगधनि
१२०४ रेमपसधगनि
१२०५ रेमपसधनिग
१२०६ रेगमसपनिध
१२०७ रेमगसपनिध
१२०८ रेमपसगनिध
१२०९ रेमपसनिगध
१२१० रेमपसनिधग
१२११ रेगमसधपनि
१२१२ रेमगसधपनि
१२१३ रेमधसगपनि
१२१४ रेमधसपगनि
१२१५ रेमधसपनिग
१२१६ रेगमसधनिप
१२१७ रेमगसधनिप
१२१८ रेमधसगनिप
१२१९ रेमधसनिगप
१२२० रेमधसनिपग
१२२१ रेगमसनिपध
१२२२ रेमगसनिपध
१२२३ रेमनिसगपध
१२२४ रेमनिसपगध
१२२५ रेमनिसपधग
१२२६ रेगमसनिधप
१२२७ रेमगसनिधप
१२२८ रेमनिसगधप
१२२९ रेमनिसधगप
१२३० रेमनिसधपग
१२३१ रेगपसमधनि
१२३२ रेपगसमधनि
१२३३ रेपमसगधनि
१२३४ रेपमसधगनि
१२३५ रेपमसधनिग
१२३६ रेगपसधमनि
१२३७ रेपगसधमनि
१२३८ रेपधसगमनि
१२३९ रेपधसमगनि
१२४० रेपधसमनिग
१२४१ रेगपसधनिम
१२४२ रेपगसधनिम
१२४३ रेपधसगनिम
१२४४ रेपधसनिगम
१२४५ रेपधसनिमग
१२४६ रेगपसमनिध
१२४७ रेपगसमनिध
१२४८ रेपमसगनिध
१२४९ रेपमसनिगध
१२५० रेपमसनिधग
१२५१ रेगपसनिमध
१२५२ रेपगसनिमध
१२५३ रेपनिसगमध
१२५४ रेपनिसमगध
१२५५ रेपनिसमधग
१२५६ रेगपसनिधम
१२५७ रेपगसनिधम
१२५८ रेपनिसगधम
१२५९ रेपनिसधगम
१२६० रेपनिसधमग
१२६१ रेगधसमपनि
१२६२ रेधगसमपनि
१२६३ रेधमसगपनि
१२६४ रेधमसपगनि
१२६५ रेधमसपनिग
१२६६ रेगधसपमनि

१२६७ रेधगसपमनि
१२६८ रेधपसगमनि
१२६९ रेधपसमगनि
१२७० रेधपसमनिग
१२७१ रेगधसपनिम
१२७२ रेधगसपनिम
१२७३ रेधपसगनिम
१२७४ रेधपसनिगम
१२७५ रेधपसनिमग
१२७६ रेगधसमनिप
१२७७ रेधगसमनिप
१२७८ रेधमसगनिप
१२७९ रेधमसनिगप
१२८० रेधमसनिपग
१२८१ रेगधसनिमप
१२८२ रेधगसनिमप
१२८३ रेधनिसगमप
१२८४ रेधनिसमगप
१२८५ रेधनिसमपग
१२८६ रेगधसनिपम
१२८७ रेधगसनिपम
१२८८ रेधनिसगपम
१२८९ रेधनिसपगम
१२९० रेधनिसपमग
१२९१ रेगनिसमपध
१२९२ रेनिगसमपध
१२९३ रेनिमसगपध
१२९४ रेनिमसपगध
१२९५ रेनिमसपधग
१२९६ रेगनिसपमध
१२९७ रेनिगसपमध
१२९८ रेनिपसगमध
१२९९ रेनिपसमगध
१३०० रेनिपसमधग
१३०१ रेगनिसपधम
१३०२ रेनिगसपधम
१३०३ रेनिपसगधम
१३०४ रेनिपसधगम
१३०५ रेनिपसधमग

१३०६ रेगनिसमधप
१३०७ रेनिगसमधप
१३०८ रेनिमसगधप
१३०९ रेनिसमधगप
१३१० रेनिमसधपग
१३११ रेगनिसधमप
१३१२ रेनिगसधमप
१३१३ रेनिधसगमप
१३१४ रेनिधसमगप
१३१५ रेनिधसमपग
१३१६ रेगनिसधपम
१३१७ रेनिगसधपम
१३१८ रेनिधसगपम
१३१९ रेनिधसपगम
१३२० रेनिधसपमग
१३२१ रेगमपधनिस
१३२२ रेमगपधनिस
१३२३ रेमपगधनिस
१३२४ रेमपधगनिस
१३२५ रेमपधनिगस
१३२६ रेगमपनिधस
१३२७ रेमगपनिधस
१३२८ रेमपगनिधस
१३२९ रेमपनिगधस
१३३० रेमपनिधगस
१३३१ रेगमधपनिस
१३३२ रेमगधपनिस
१३३३ रेमधगपनिस
१३३४ रेमधपगनिस
१३३५ रेमधपनिगस
१३३६ रेगमधनिपस
१३३७ रेमगधनिपस
१३३८ रेमधगनिपस
१३३९ रेमधनिगपस
१३४० रेमधनिपगस
१३४१ रेगमनिपधस
१३४२ रेमगनिपधस
१३४३ रेमनिगपधस
१३४४ रेमनिपगधस

१३४५ रेमनिपधगस
१३४६ रेगमनिधपस
१३४७ रेमगनिधपस
१३४८ रेमनिगधपस
१३४९ रेमनिधगपस
१३५० रेमनिधपगस
१३५१ रेगपमधनिस
१३५२ रेपगमधनिस
१३५३ रेपमगधनिस
१३५४ रेपमधगनिस
१३५५ रेपमधनिगस
१३५६ रेगपधमनिस
१३५७ रेपगधमनिस
१३५८ रेपधगमनिस
१३५९ रेपधमगनिस
१३६० रेपधमनिगस
१३६१ रेगपधनिमस
१३६२ रेपगधनिमस
१३६३ रेपधगनिमस
१३६४ रेपधनिगमस
१३६५ रेपधनिमगस
१३६६ रेगपमनिधस
१३६७ रेपगमनिधस
१३६८ रेपमगनिधस
१३६९ रेपमनिगधस
१३७० रेपमनिधगस
१३७१ रेगपनिमधस
१३७२ रेपगनिमधस
१३७३ रेपनिगमधस
१३७४ रेपनिमगधस
१३७५ रेपनिमधगस
१३७६ रेगपनिधमस
१३७७ रेपगनिधमस
१३७८ रेपनिगधमस
१३७९ रेपनिधगमस
१३८० रेपनिधमगस
१३८१ रेगधमपनिस
१३८२ रेधगमपनिस
१३८४ रेधमगपनिस

१३८४ रेधमपगनिस
१३८५ रेधमपनिगस
१३८६ रेगधपमनिस
१३८७ रेधगपमनिस
१३८८ रेधपगमनिस
१३८९ रेधपमगनिस
१३९० रेधपमनिगस
१३९१ रेगधपनिमस
१३९२ रेधगपनिमस
१३९३ रेधपगनिमस
१३९४ रेधपनिगमस
१३९५ रेधपनिमगस
१३९६ रेगधमनिपस
१३९७ रेधगमनिपस
१३९८ रेधमगनिपस
१३९९ रेधमनिगपस
१४०० रेधमनिपगस
१४०१ रेगधनिमपस
१४०२ रेधगनिमपस
१४०३ रेधनिगमपस
१४०४ रेधनिमगपस
१४०५ रेधनिपमगस
१४०६ रेगधनिपमस
१४०७ रेधगनिपमस
१४०८ रेधनिगपमस
१४०९ रेधनिपगमस
१४१० रेधनिपमगस
१४११ रेगनिमपधस
१४१२ रेनिगमपधस
१४१३ रेनिमगपधस
१४१४ रेनिमपगधस
१४१५ रेनिमपधगस
१४१६ रेगनिपमधस
१४१७ रेनिगपमधस
१४१८ रेनिपगमधस
१४१९ रेनिपमगधस
१४२० रेनिपमधगस
१४२१ रेगनिपधमस
१४२२ रेनिगपधमस
१४२३ रेनिपगधमस
१४२४ रेनिपधगमस
१४२५ रेनिपधमगस
१४२६ रेगनिमधपस
१४२७ रेनिगमधपस
१४२८ रेनिमगधपस
१४२९ रेनिमधगपस
१४३० रेनिमधपगस
१४३१ रेगनिधमपस
१४३२ रेनिगवमपस
१४३३ रेनिधगमपस
१४३४ रेनिधमगपस
१४३५ रेनिधमपगस
१४३६ रेगनिधपमस
१४३७ रेनिगधपमस
१४३८ रेनिधगपमस
१४३९ रेनिधपगमस
१४४० रेनिधपसगस

ग

१४४१ गरेसमपधनि
१४४२ गरेमसपधनि
१४४३ गरेमपसधनि
१४४४ गरेमपधसनि
१४४५ गरेमपधनिस
१४४६ गरेसमपनिध
१४४७ गरेमसपनिध
१४४८ गरेमपसनिध
१४४९ गरेमपनिसध
१४५० गरेमपनिधस
१४५१ गरेसमधपनि
१४५२ गरेमसधपनि
१४५३ गरेमधसपनि
१४५४ गरेमधपसनि
१४५५ गरेमधपनिस
१४५६ गरेसमधनिप
१४५७ गरेमसधनिप
१४५८ गरेमधसनिप
१४५९ गरेमधनिसप
१४६० गरेमधनिपस
१४६१ गरेसमनिपध
१४६२ गरेमसनिपध्
१४६३ गरेमनिसपध
१४६४ गरेमनिपसध
१४६५ गरेमनिपधस
१४६६ गरेसमनिधप
१४६७ गरेमसनिधप
१४६८ गरेमनिसधप
१४६९ गरेमनिधसप
१४७० गरेसनिधपस
१४७१ गरेसपमधनि
१४७२ गरेपसमधनि
१४७३ गरेपमसधनि
१४७४ गरेपमधसनि
१४७५ गरेपमधनिस
१४७६ गरेसपधमनि
१४७७ गरेपसधमनि
१४७८ गरेपधसमनि
१४७९ गरेपधमसनि
१४८० गरेपधमनिस
१४८१ गरेसपधनिम
१४८२ गरेपसधनिम
१४८३ गरेपधसनिम
१४८४ गरेपधनिसम
१४८५ गरेपधनिमस
१४८६ गरेसपमनिध
१४८७ गरेपसमनिध
१४८८ गरेपमसनिध
१४८९ गरेपमनिसध
१४९० गरेपमनिधस
१४९१ गरेसपनिमध

१४९२ गरेपसनिमध
१४९३ गरेपनिसमध
१४९४ गरेपनिमसध
१४९५ गरेपनिमधस
१४९६ गरेसपनिधम
१४९७ गरेपसनिधम
१४९८ गरेपनिसधम
१४९९ गरेपनिधसम
१५०० गरेपनिधमस
१५०१ गरेसधमपनि
१५०२ गरेधसमपनि
१५०३ गरेधमसपनि
१५०४ गरेधमपसनि
१५०५ गरेधमपनिस
१५०६ गरेसधपमनि
१५०७ गरेधसपमनि
१५०८ गरेधपसमनि
१५०९ गरेधपमसनि
१५१० गरेधपमनिस
१५११ गरेसधपनिम
१५१२ गरेधसपनिम
१५१३ गरेधपसनिम
१५१४ गरेधपनिसम
१५१५ गरेधपनिमस
१५१६ गरेसधमनिप
१५१७ गरेधसमनिप
१५१८ गरेधमसनिप
१५१९ गरेधमनिसप
१५२० गरेधमनिपस
१५२१ गरेसधनिमप
१५२२ गरेधसनिमप
१५२३ गरेधनिसमप
१५२४ गरेधनिमसप
१५२५ गरेधनिमपस
१५२६ गरेसधनिपम
१५२७ गरेधसनिपम
१३२८ गरेधनिसपम
१५२९ गरेधनिपसम
१५३० गरेधनिपमस
१५३१ गरेसनिमपध
१५३२ गरेनिसमपध
१५३३ गरेनिमसपध
१५३४ गरेनिमपसध
१५३५ गरेनिमपधस
१५३६ गरेसनिपमध
१५३७ गरेनिसपमध
१५३८ गरेनिपसमध
१५३९ गरेनिपमसध
१५४० गरेनिपमधस
१५४१ गरेसनिपधम
१५४२ गरेनिसपधम
१५४३ गरेनिपसधम
१५४४ गरेनिपधसम
१५४५ गरेनिपधमस
१५४६ गरेसनिमधप
१५४७ गरेनिसमधप
१५४८ गरेनिमसधप
१५४९ गरेनिमधपस
१५५० गरेनिमधसप
१५५१ गरेसनिधमप
१५५२ गरेनिसधमप
१५५३ गरेनिधसमप
१५५४ गरेनिधमसप
१५५५ गरेनिधमपस
१५५६ गरेसनिधपम
१५५७ गरेनिसधपम
१५५८ गरेनिधसपम
१५५९ गरेनिधपसम
१५६० गरेनिधपमस
१५६१ गसमपरेधनि
१५६२ गमसपरेधनि
१५६३ गमपसरेधनि
१५६४ गमपधरेसनि
१५६५ गमपधरेनिस
१५६६ गसमपरेनिध
१५६७ गमसपरेनिध
१५६८ गमपसरेनिध
१५६९ गमपनिरेसध
१५७० गमपनिरेधस
१५७१ गसमधरेपनि
१५७२ गमसधरेपनि
१५७३ गमधसरेपनि
१५७४ गमधपरेसनि
१५७५ गमधपरेनिस
१५७६ गसमधरेनिप
१५७७ गमसधरेनिप
१५७८ गमधसरेनिप
१५७९ गमधनिरेसप
१५८० गमधनिरेपस
१५८१ गसमनिरेधप
१५८२ गमसनिरेपध
१५८३ गमनिसरेपध
१५८४ गमनिपरेसध
१५८५ गमनिपरेधस
१५६६ गसमनिरेधप
१५८७ गमसनिरेधप
१५८८ गमनिसरेधप
१५८९ गमनिधरेसप
१५९० गमनिधरेपस
१५९१ गसपमरेधनि
१५९२ गपसमरेधनि
१५९३ गपमसरेधनि
१५९४ गपमधरेसनि
१५९५ गपमधरेनिस
१५९६ गसपधरेमनि
१५९७ गपसधरेमनि
१५९८ गपधसरेमनि
१५९९ गपधमरेसनि
१६०० गपधमरेनिस
१६०१ गसपधरेनिम
१६०२ गपसधरेनिम
१६०३ गपधसरेनिम
१६०४ गपधनिरेसम
१६०५ गपधनिरेमस
१६०६ गसपमरेनिध
१६०७ गपसमरेनिध
१६०८ गपमसरेनिध

१६०९	गपमनिरेसध	१६४८	गधनिसरेपम	१६८७	गमरेसपनिध
१६१०	गपमनिरेधम	१६४९	गधनिपरेसम	१६८८	गमरेपसनिध
१६११	गसपनिरेमध	१६५०	गधनिपरेमस	१६८९	गसरेपनिसध
१६१२	गपसनिरेमध	१६५१	गसनिमरेपध	१६९०	गमरेपनिधस
१६१३	गपनिसरेमध	१६५२	गनिसमरेपध	१६९१	गसरेमधपनि
१६१४	गपनिमरेसध	१६५३	गनिमसरेपध	१६९२	गमरेसधपनि
१६१५	गपनिमरेधस	१६५४	गनिमपरेसध	१६९३	गमरेधसपनि
१६१६	गसपनिरेधम	१६५५	गनिमपरेधस	१६९४	गमरेधपसनि
१६१७	गपसनिरेधम	१६५६	गसनिपरेमध	१६९५	गमरेधपनिस
१६१८	गपनिसरेधम	१६५७	गनिसपरेमध	१६९६	गसरेमधनिप
१६१९	गपनिधरेसम	१६५८	गनिपसरेमध	१६९७	गमरेसधनिप
१६२०	गपनिधरेमस	१६५९	गनिपमरेमध	१६९८	गमरेधसनिप
१६२१	गसधमरेपनि	१६६०	गनिपमरेधस	१६९९	गमरेधनिसप
१६२२	गधसमरेपनि	१६६१	गसनिपरेधम	१७००	गमरेधनिपस
१६२३	गधमसरेपनि	१६६२	गनिसपरेधम	१७०१	गसरेमनिधप
१६२४	गधमपरेसनि	१६६३	गनिपसरेधम	१७०२	गमरेसनिपध
१६२५	गधमपरेनिस	१६६४	गनिपधरेसम	१७०३	गमरेनिसपध
१६२६	गसधपरेमनि	१६६५	गनिपधरेमस	१७०४	गमरेनिपसध
१६२७	गधसपरेमनि	१६६६	गसनिमरेधप	१७०५	गमरेनिपधस
१६२८	गधपसरेमनि	१६६७	गनिसमरेधप	१७०६	गसरेमनिधप
१६२९	गधपमरेसनि	१६६८	गनिमसरेधप	१७०७	गमरेसनिधप
१६३०	गधपमरेनिस	१६६९	गनिमधरेपस	१७०८	गमरेनिसधप
१६३१	गसधपरेनिम	१६७०	गनिसधरेसप	१७०९	गमरेनिधसप
१६३२	गधसपरेनिम	१६७१	गसनिधरेमप	१७१०	गमरेनिधपस
१६३३	गधपसरेनिम	१६७२	गनिसधरेमप	१७११	गसरेपमधनि
१६३४	गधपनिरेसम	१६७३	गनिधसरेमप	१७१२	गपरेसमधनि
१६३५	गधपनिरेमस	१६७४	गनिधमरेसप	१७१३	गपरेमसधनि
१६३६	गसधमरेनिप	१६७५	गनिधमरेपस	१७१४	गपरेमधसनि
१६३७	गधसमरेनिप	१६७६	गसनिधरेपम	१७१५	गपरेमधनिस
१६३८	गधमसरेनिप	१६७७	गनिसधरेपम	१७१६	गसरेपधमनि
१६३९	गधमनिरेसप	१६७८	गनिधसरेपम	१७१७	गपरेसधमनि
१६४०	गधमनिरेपस	१६७९	गनिधपरेसम	१७१८	गपरेधसमनि
१६४१	गसधनिरेमप	१६८०	गनिधपरेमस	१७१९	गपरेधमसनि
१६४२	गधसनिरेमप	१६८१	गसरेमपधनि	१७२०	गपरेधमनिस
१६४३	गधनिसरेमप	१६८२	गमरेसपधनि	१७२१	गसरेपधनिम
१६४४	गधनिमरेसप	१६८३	गमरेपसधनि	१७२२	गपरेसधनिम
१६४५	गधनिमरेपस	१६८४	गमरेपधसनि	१७२३	गपरेधसनिम
१६४६	गसधनिरेमप	१६८५	गमरेपधनिस	१७२४	गपरेधनिसम
१६४७	गधसनिरेपम	१६८६	गसरेमपनिध	१७२५	गपरेधनिमस

१७२६ गसरेपमनिध
१७२७ गपरेसमनिध
१७२८ गपरेमसनिध
१७२९ गपरेमनिसध
१७३० गपरेमनिधस
१७३१ गसरेपनिमध
१७३२ गपरेसनिमध
१७३३ गपरेनिसमध
१७३४ गपरेनिमसध
१७३५ गपरेनिमधस
१७३६ गसरेपनिधम
१७३७ गपरेसनिधम
१७३८ गपरेनिसधम
१७३९ गपरेनिधसम
१७४० गपरेनिधमस
१७४१ गसरेधसमपनि
१७४२ गधरेसमपनि
१७४३ गधरेमसपनि
१७४४ गधरेमपसनि
१७४५ गधरेमपसनि
१७४६ गसरेधपसमनि
१७४७ गधरेसपमनि
१७४८ गधरेपसमनि
१७४९ गधरेपमसनि
१७५० गधरेपमनिस
१७५१ गसरेधपनिम
१७५२ गधरेसपनिम
१७५३ गधरेपसनिम
१७५४ गधरेपनिसम
१७५५ गधरेपनिमस
१७५६ गसरेधमनिप
१७५७ गधरेसमनिप
१७५८ गधरेमसनिप
१७५९ गधरेमनिसप
१७६० गधरेसनिपस
१७६१ गसरेधनिमप
१७६२ गधरेसनिमप
१७६३ गधरेनिसमप
१७६४ गधरेनिमसप
१७६५ गधरेनिमपस
१७६६ गसरेधनिमप
१७६७ गधरेसनिपम
१७६८ गधरेनिसपम
१७६९ गधरेनिपसम
१७७० गधरेनिपमस
१७७१ गसरेनिमपध
१७७२ गनिरेसमपध
१७७३ गनिरेमसपध
१७७४ गनिरेमपसध
१७७५ गनिरेमपधस
१७७६ गसरेनिपमध
१७७७ गनिरेसपमध
१७७८ गनिरेपसमध
१७७९ गनिरेपमसध
१७८० गनिरेपमधस
१७८१ गसनिरेपधम
१७८२ गनिरेसपधम
१७८३ गनिरेपसधम
१७८४ गनिरेपधसम
१७८५ गनिरेपधमस
१७८६ गसरेनिमधप
१७८७ गनिरेसमधप
१७८८ गनिरेमसधप
१७८९ गनिरेमधपस
१७९० गनिरेमधसप
१७९१ गसरेनिधमप
१७९२ गनिरेसधमप
१७९३ गनिरेधसमप
१७९४ गनिरेधमसप
१७९५ गनिरेधमपस
१७९६ गसरेनिधपम
१७९७ गनिरेसधपम
१७९८ गनिरेधसपम
१७९९ गनिरेधपसम
१८०० गनिरेधपमस
१८०१ गससमपधरेनि
१८०२ गमसपधरेनि
१८०३ गमपसधरेनि
१८०४ गमपधसरेनि
१८०५ गमपधनिरेस
१८०६ गसमपनिरेध
१८०७ गमसपनिरेध
१८०८ गमपसनिरेध
१८०९ गमपनिसरेध
१८१० गमपनिधरेस
१८११ गसमधपरेनि
१८१२ गमसधपरेनि
१८१३ गमधसपरेनि
१८१४ गमधपसरेनि
१८१५ गमधपनिरेस
१८१६ गसमधनिरेप
१८१७ गमसधनिरेप
१८१८ गमधसनिरेप
१८१९ गमधनिसरेप
१८२० गमधनिपरेस
१८२१ गसमनिधरेप
१८२२ गमसनिपरेध
१८२३ गमनिसपरेध
१८२४ गमनिपसरेध
१८२५ गमनिपधरेस
१८२६ गसमनिधरेप
१८२७ गमसनिधरेप
१८२८ गमनिसधरेप
१८२९ गमनिधसरेप
१८३० गमनिधपरेस
१८३१ गसपमधरेनि
१८३२ गपसमधरेनि
१८३३ गपमसधरेनि
१८३४ गपमधसरेनि
१८३५ गपमधनिरेस
१८३६ गसपधमरेनि
१८३७ गपसधमरेनि
१८३८ गपधसमरेनि
१८३९ गपधमसरेनि
१८४० गपधमनिरेस
१८४१ गसपधनिरेम
१८४२ गपसधनिरेम

१८४३ गपधसनिरेम
१८४४ गपधनिसरेम
१८४५ गपधनिमरेस
१८४६ गसपमनिरेध
१८४७ गपसमनिरेध
१८४८ गपमसनिरेध
१८४९ गपमनिसरेध
१८५० गपमनिधरेस
१८५१ गसपनिमरेध
१८५२ गपसनिमरेध
१८५३ गपनिसमरेध
१८५४ गपनिमसरेध
१८५५ गपनिरेमधस
१८५६ गसपनिधरेम
१८५७ गपसनिधरेम
१८५८ गपनिसधरेम
१८५९ गपनिधसरेम
१८६० गपनिधमरेस
१८६१ गसधमपरेनि
१८६२ गधसमपरेनि
१८६३ गधमसपरेनि
१८६४ गधमपसरेनि
१८६५ गधमपनिरेस
१८६६ गसधपमरेनि
१८६७ गधसपमरेनि
१८६८ गधपसमरेनि
१८६९ गधपमसरेनि
१८७० गधपमनिरेस
१८७१ गसधपनिरेम
१८७२ गधसपनिरेम
१८७३ गधपसनिरेम
१८७४ गधपनिसरेम
१८७५ गधपनिमरेस
१८७६ गसधमनिरेप
१८७७ गधसमनिरेप
१८७८ गधमसनिरेप
१८७९ गधमनिसरेप
१८८० गधमनिपरेस
१८८१ गसधनिसरेप

१८८२ गधसनिमरेप
१८८३ गधनिसमरेप
१८८४ गधनिमसरेप
१८८५ गधनिमपरेस
१८८६ गसधनिमरेप
१८८७ गधसनिपरेम
१८८८ गधनिसपरेम
१८८९ गधनिपसरेम
१८९० गधनिपमरेस
१८९१ गसनिमपरेध
१८९२ गनिसमपरेध
१८९३ गनिमसपरेध
१८९४ गनिमपसरेध
१८९५ गनिमपधरेस
१८९६ गसनिपमरेध
१८९७ गनिसपमरेध
१८९८ गनिपसमरेध
१८९९ गनिपमसरेध
१९०० गनिपमधरेस
१९०१ गसनिपधरेम
१९०२ गनिसपधरेम
१९०३ गनिपसधरेम
१९०४ गनिपधसरेम
१९०५ गनिपधमरेस
१९०६ गसनिमधरेप
१९०७ गनिसमधरेप
१९०८ गनिमसधरेप
१९०९ गनिमधपरेस
१९१० गनिमधसरेप
१९११ गसनिधमरेप
१९१२ गनिसधमरेप
१९१३ गनिधसमरेप
१९१४ गनिधमसरेप
१९१५ गनिधमपरेस
१९१६ गसनिधपरेम
१९१७ गनिसधपरेम
१९१८ गनिधसपरेम
१९१९ गनिधपसरेम
१९२० गनिधपमरेस

१९२१ गसमरेपधनि
१९२२ गमसरेपधनि
१९२३ गमपरेसधनि
१९२४ गमपरेधसनि
१९२५ गमपरेधनिस
१९२६ गसमरेपनिध
१९२७ गमसरेपनिध
१९२८ गमपरेसनिध
१९२९ गमपरेनिसध
१९३० गमपरेनिधस
१९३१ गसमरेधपनि
१९३२ गमसरेधपनि
१९३३ गमधरेसपनि
१९३४ गमधरेपसनि
१९३५ गमधरेपनिस
१९३६ गसमरेधनिप
१९३७ गमसरेधनिप
१९३८ गमधरेसनिप
१९३९ गमधरेनिसप
१९४० गमधरेनिपस
१९४१ गसमरेनिधप
१९४२ गमसरेनिपध
१९४३ गमनिरेसपध
१९४४ गमनिरेपसध
१९४५ गमनिरेपधस
१९४६ गसमरेनिधप
१९४७ गमसरेनिधप
१९४८ गमनिरेसधप
१९४९ गमनिरेधसप
१९५० गमनिरेधपस
१९५१ गसपरेमधनि
१९५२ गपसरेमधनि
१९५३ गपमरेसधनि
१९५४ गपमरेधसनि
१९५५ गपमरेधनिस
१९५६ गसपरेधमनि
१९५७ गपसरेधमनि
१९५८ गपधरेसमनि
१९५९ गधरेमसपनि

१९६०	गपधरेमनिस
१९६१	गसपरेधनिम
१९६२	गपसरेधनिम
१९६३	गपधरेसनिम
१९६४	गपधरेनिसम
१९६५	गपधरेनिमस
१९६६	गसपरेमनिध
१९६७	गपसरेमनिध
१९६८	गपमरेसनिध
१९६९	गपमरेनिसध
१९७०	गपमरेनिधस
१९७१	गसपरेनिमध
१९७२	गपसरेनिमध
१९७३	गपनिरेसमध
१९७४	गपनिरेमसध
१९७५	गपनिरेमधस
१९७६	गसपरेनिधम
१९७७	गपसरेनिधम
१९७८	गपनिरेसधम
१९७९	गपनिरेधसम
१९८०	गपनिरेधमस
१९८१	गसधरेमपनि
१९८२	गधसरेमपनि
१९८३	गधमरेसपनि
१९८४	गधमरेपसनि
१९८५	गधमरेपनिस
१९८६	गसधरेपमनि
१९८७	गधसरेपमनि
१९८८	गधपरेसमनि
१९८९	गधपरेमसनि
१९९०	गधपरेमनिस
१९९१	गसधरेपनिम
१९९२	गधसरेपनिम
१९९३	गधपरेसनिम
१९९४	गधपरेनिसम
१९९५	गधपरेनिमस
१९९६	गसधरेमनिप
१९९७	गधसरेमनिप
१९९८	गधमरेसनिप
१९९९	गधमरेनिसप
२०००	गधमरेनिपस
२००१	गसधरेनिमप
२००२	गधसरेनिमप
२००३	गधनिरेसमप
२००४	गधनिरेमसप
२००५	गधनिरेमपस
२००६	गसधरेनिपम
२००७	गधसरेनिपम
२००८	गधनिरेसपम
२००९	गधनिरेपसम
२०१०	गधनिरेपमस
२०११	गसनिरेमपध
२०१२	गनिसरेमपध
२०१३	गनिमरेसपध
२०१४	गनिमरेपसध
२०१५	गनिमरेपधस
२०१६	गसनिरेपमध
२०१७	गनिसरेपमध
२०१८	गनिपरेसमध
२०१९	गनिपरेमसध
२०२०	गनिपरेमधस
२०२१	गसनिरेपधम
२०२२	गनिसरेपधम
२०२३	गनिपरेसधम
२०२४	गनिपरेधसम
२०२५	गनिपरेधमस
२०२६	गसनिरेमधप
२०२७	गनिसरेमधप
२०२८	गनिमरेसधप
२०२९	गनिमरेधपस
२०३०	गनिमरेधसप
२०३१	गसनिरेधमप
२०३२	गनिसरेधमप
२०३३	गनिधरेसमप
२०३४	गनिधरेमसप
२०३५	गनिधरेमपस
२०३६	गसनिरेधपम
२०३७	गनिसरेधपम
२०३८	गनिधरेसपम
२०३९	गनिधरेपसम
२०४०	गनिधरेपमस
२०४१	गसमपधनिरे
२०४२	गमसपधनिरे
२०४३	गमपसधनिरे
२०४४	गमपधसनिरे
२०४५	गमपधनिसरे
२०४६	गसमपनिधरे
२०४७	गमसपनिधरे
२०४८	गमपसनिधरे
२०४९	गमपनिसधरे
२०५०	गमपनिधसरे
२०५१	गसमधपनिरे
२०५२	गमसधपनिरे
२०५३	गमधसपनिरे
२०५४	गमधपसनिरे
२०५५	गमधपनिसरे
२०५६	गसमधनिपरे
२०५७	गमसधनिपरे
२०५८	गमधसनिपरे
२०५९	गमधनिसपरे
२०६०	गमधनिपसरे
२०६१	गसमनिधपरे
२०६२	गमसनिपधरे
२०६३	गमनिसपधरे
२०६४	गमनिपसधरे
२०६५	गमनिपधसरे
२०६६	गसमनिधपरे
२०६७	गमसनिधपरे
२०६८	गमनिसधपरे
२०६९	गमनिधसपरे
२०७०	गमनिधपसरे
२०७१	गसपमधनिरे
२०७२	गपसमधनिरे
२०७३	गपमसधनिरे
२०७४	गपमधसनिरे
२०७५	गपमधनिसरे
२०७६	गसपधमनिरे

२०७७	गपसधमनिरे	२१०५	गधसपमनिसरे	२१३३	गनिमसपधरे
२०७८	गपधसमनिरे	२१०६	गसधपमनिरे	२१३४	गनिमपसधरे
२०७९	गपधमसनिरे	२१०७	गधसपमनिरे	२१३५	गनिमपधसरे
२०८०	गपधमनिसरे	२१०८	गधपसमनिरे	२१३६	गसनिपमधरे
२०८१	गसपधनिमरे	२१०९	गधपमसनिरे	२१३७	गनिसपमधरे
२०८२	गपसधनिमरे	२११०	गधपमनिसरे	२१३८	गनिपसमधरे
२०८३	गपधसनिमरे	२१११	गसधपनिमरे	२१३९	गनिपमसधरे
२०८४	गपधनिसमरे	२११२	गधसपनिमरे	२१४०	गनिपमधसरे
२०८५	गपधनिमसरे	२११३	गधपसनिमरे	२१४१	गसनिपधमरे
२०८६	गसपमनिधरे	२११४	गधपनिसमरे	२१४२	गनिसपधमरे
२०८७	गपसमनिधरे	२११५	गधपनिमसरे	२१४३	गनिपसधमरे
२०८८	गपमसनिधरे	२११६	गसधमनिपरे	२१४४	गनिपधसमरे
२०८९	गपमनिसधरे	२११७	गधसमनिपरे	२१४५	गनिपधमसरे
२०९०	गपमनिधसरे	२११८	गधमसनिपरे	२१४६	गसनिमधपरे
२०९१	गसपनिमधरे	२११९	गधमनिसपरे	२१४७	गनिसमधपरे
२०९२	गपसनिमधरे	२१२०	गधमनिपसरे	२१४८	गनिमसधपरे
२०९३	गपनिसमधरे	२१२१	गसधनिमपरे	२१४९	गनिमधपसरे
२०९४	गपनिमसधरे	२१२२	गधसनिमपरे	२१५०	गनिमधसपरे
२०९५	गपनिमरेधस	२१२३	गधनिसमपरे	२१५१	गसनिधमपरे
२०९६	गसपनिधमरे	२१२४	गधनिमसपरे	२१५२	गनिसधमपरे
२०९७	गपसनिधमरे	२१२५	गधनिमपसरे	२१५३	गनिधसमपरे
२०९८	गपनिसधमरे	२१२६	गसधनिमपरे	२१५४	गनिधमसपरे
२०९९	गपनिधसमरे	२१२७	गधसनिपमरे	२१५५	गनिधमपसरे
२१००	गपनिधमसरे	२१२८	गधनिसपमरे	२१५६	गसनिधपमरे
२१०१	गसधमपनिरे	२१२९	गधनिपसमरे	२१५७	गनिसधपमरे
२१०२	गधसमपनिरे	२१३०	गधनिपमसरे	२१५८	गनिधसपमरे
२१०३	गधमसपनिरे	२१३१	गसनिमपधरे	२१५९	गनिधपसमरे
२१०४	गधसपसनिरे	२१३२	गनिसमपधरे	२१६०	गनिधपमसरे

म

२१६१	मरेगसपधनि	२१६९	मरेसपनिगध	२१७७	मरेसगधनिप
२१६२	मरेसगपधनि	२१७०	मरेसपनिधग	२१७८	मरेसधगनिप
२१६३	मरेसपगधनि	२१७१	मरेगसधपनि	२१७९	मरेसधनिगप
२१६४	मरेसपधगनि	२१७२	मरेसगधपनि	२१८०	मरेसधनिपग
२१६५	मरेसपधनिग	२१७३	मरेसधगपनि	२१८१	मरेगसनिपध
२१६६	मरेगसपनिध	२१७४	मरेसधपगनि	२१८२	मरेसगनिपध
२१६७	मरेसगपनिध	२१७५	मरेसधपनिग	२१८३	मरेसनिगपध
२१६८	मरेसपगनिध	२१७६	मरेगसधनिप	२१८४	मरेसनिपगध

२१८५ मरेसनिपधग
२१८६ मरेगसनिधप
२१८७ मरेसगनिधप
२१८८ मरेसनिगधप
२१८९ मरेसनिधगप
२१९० मरेसनिधपग
२१९१ मरेगपसधनि
२१९२ मरेपगसधनि
२१९३ मरेपसगधनि
२१९४ मरेपसधगनि
२१९५ मरेपसधनिग
२१९६ मरेगपधसनि
२१९७ मरेपगधसनि
२१९८ मरेपधगसनि
२१९९ मरेपधसगनि
२२०० मरेपधसनिग
२२०१ मरेगपधनिस
२२०२ मरेपगधनिस
२२०३ मरेपधगनिस
२२०४ मरेपधनिगस
२२०५ मरेपधनिसग
२२०६ मरेगपसनिध
२२०७ मरेपगसनिध
२२०८ मरेपसगनिध
२२०९ मरेपसनिगध
२२१० मरेपसनिधग
२२११ मरेगपनिसध
२२१२ मरेपगनिसध
२२१३ मरेपनिगसध
२२१४ मरेपनिसगध
२२१५ मरेपनिसधग
२२१६ मरेगपनिधस
२२१७ मरेपगनिधस
२२१८ मरेपनिगधस
२२१९ मरेपनिधगस
२२२० मरेपनिधसग
२२२१ मरेगधसपनि
२२२२ मरेधगसपनि
२२२३ मरेधसगपनि
२२२४ मरेधसपगनि
२२२५ मरेधसपनिग
२२२६ मरेगधपसनि
२२२७ मरेधगपसनि
२२२८ मरेधपगसनि
२२२९ मरेधपसगनि
२२३० मरेधपसनिग
२२३१ मरेगधपनिस
२२३२ मरेधगपनिस
२२३३ मरेधपगनिस
२२३४ मरेधपनिगस
२२३५ मरेधपनिसग
२२३६ मरेगधसनिप
२२३७ मरेधगसनिप
२२३८ मरेधसगनिप
२२३९ मरेधसनिगप
२२४० मरेधसनिपग
२२४१ मरेगधनिसप
२२४२ मरेधगनिसप
२२४३ मरेधनिगसप
२२४४ मरेधनिसगप
२२४५ मरेधनिसपग
२२४६ मरेगधनिपस
२२४७ मरेधगनिपस
२२४८ मरेधनिगपस
२२४९ मरेधनिपगस
२२५० मरेधनिपसग
२२५१ मरेगनिसपध
२२५२ मरेनिगसपध
२२५३ मरेनिसगपध
२२५४ मरेनिसपगध
२२५५ मरेनिसपधग
२२५६ मरेगनिपसध
२२५७ मरेनिगपसध
२२५८ मरेनिपगसध
२२५९ मरेनिपसगध
२२६० मरेनिपसधग
२२६१ मरेगनिपधस
२२६२ मरेनिगपधस
२२६३ मरेनिपगधस
२२६४ मरेनिपधसग
२२६५ मरेनिपधगस
२२६६ मरेगनिसधप
२२६७ मरेनिसगधप
२२६८ मरेनिसगपध
२२६९ मरेनिसधगप
२२७० मरेनिसधपग
२२७१ मरेगनिधसप
२२७२ मरेनिगधसप
२२७३ मरेनिधगसप
२२७४ मरेनिधसगप
२२७५ मरेनिधसपग
२२७६ मरेगनिधपस
२२७७ मरेनिगधपस
२२७८ मरेनिधगपस
२२७९ मरेनिधपगस
२२८० मरेनिधपसग
२२८१ मगसपरेधनि
२२८२ मसगपरेधनि
२२८३ मसपगरेधनि
२२८४ मसपधरेगनि
२२८५ मसपधरेनिग
२२८६ मगसपरेनिध
२२८७ मसगपरेनिध
२२८८ मसपगरेनिध
२२८९ मसपनिरेगध
२२९० मसपनिरेधग
२२९१ मगसधरेपनि
२२९२ मसगधरेपनि
२२९३ मसधगरेपनि
२२९४ मसधपरेगनि
२२९५ मसधपरेनिग
२२९६ मगसधरेनिप
२२९७ मसगधरेनिप
२२९८ मसधगरेनिप
२२९९ मसधनिरेगप
२३०० मसधनिरेपग
२३०१ मगसनिरेपध

२३०२ मसगनिरेपध
२३०३ मसनिगरेपध
२३०४ मसनिपरेगध
२३०५ मसनिपरेधग
२३०६ मगसनिरेधप
२३०७ मसगनिरेधप
२३०८ मसनिगरेधप
२३०९ मसनिधरेगप
२३१० मसनिधरेपग
२३११ मगपसरेधनि
२३१२ मपगसरेधनि
२३१३ मपसगरेधनि
२३१४ मपसधरेगनि
२३१५ मपसधरेनिग
२३१६ मगपधरेसनि
२३१७ मपगधरेसनि
२३१८ मपधगरेसनि
२३१९ मपधसरेगनि
२३२० मपधसरेनिग
२३२१ मगपधरेनिस
२३२२ मपगधरेनिस
२३२३ मपधगरेनिस
२३२४ मपधनिरेगस
२३२५ मपधनिरेसग
२३२६ मगपसरेनिध
२३२७ मपगसरेनिध
२३२८ मपसगरेनिध
२३२९ मपसनिरेगध
२३३० मपसनिरेधग
२३३१ मगपनिरेसध
२३३२ मपगनिरेसध
२३३३ मपनिगरेसध
२३३४ मपनिसरेगध
२३३५ मपनिसरेधग
२३३६ मगपनिरेधस
२३३७ मपगनिरेधस
२३३८ मपनिगरेधस
२३३९ मपनिधरेगस
२३४० मपनिधरेसग
२३४१ मगधसरेपनि
२३४२ मधगसरेपनि
२३४३ मधसगरेपनि
२३४४ मधसपरेगनि
२३४५ मधसपरेनिग
२३४६ मगधपरेसनि
२३४७ मधगपरेसनि
२३४८ मधपगरेसनि
२३४९ मधपसरेगनि
२३५० मधपसरेनिग
२३५१ मगधपरेनिस
२३५२ मधगपरेनिस
२३५३ मधपगरेनिस
२३५४ मधपनिरेगस
२३५५ मधपनिरेसग
२३५६ मगधसरेनिप
२३५७ मधगसरेनिप
२३५८ मधसगरेनिप
२३५९ मधसनिरेगप
२३६० मधसनिरेपग
२३६१ मगधनिरेसप
२३६२ मधगनिरेसप
२३६३ मधनिगरेसप
२३६४ मधनिसरेगप
२३६५ मधनिसरेपग
२३६६ मगधनिरेपस
२३६७ मधगनिरेपस
२३६८ मधनिगरेपस
२३६९ मधनिपरेगस
२३७० मधनिपरेसग
२३७१ मगनिसरेपध
२३७२ मनिगसरेपध
२३७३ मनिसगरेपध
२३७४ मनिसपरेगध
२३७५ मनिसपरेधग
२३७६ मगनिपरेसध
२३७७ मनिगपरेसध
२३७८ मनिपगरेसध
२३७९ मनिपसरेगध
२३८० मनिपसरेधग
२३८१ मगनिपरेधस
२३८२ मनिगपरेधस
२३८३ मनिपगरेधस
२३८४ मनिपधरेगस
२३८५ मनिपधरेसग
२३८६ मगनिसरेधप
२३८७ मनिगसरेधप
२३८८ मनिसगरेधप
२३८९ मनिसधरेगप
२३९० मनिसधरेपग
२३९१ मगनिधरेसप
२३९२ मनिगधरेसप
२३९३ मनिधगरेसप
२३९४ मनिधसरेगप
२३९५ मनिधसरेपग
२३९६ मगनिधरेपस
२३९७ मनिगधरेपस
२३९८ मनिधगरेपस
२३९९ मनिधपरेगस
२४०० मनिधपरेसग
२४०१ मगरेसपधनि
२४०२ मसरेगपधनि
२४०३ मसरेपगधनि
२४०४ मसरेपधगनि
२४०५ मसरेपधनिग
२४०६ मगरेसपनिध
२४०७ मसरेगपनिध
२४०८ मसरेपगनिध
२४०९ मसरेपनिगध
२४१० मसरेपनिधग
२४११ मगरेसधपनि
२४१२ मसरेगधपनि
२४१३ मसरेधगपनि
२४१४ मसरेधपगनि
२४१५ मसरेधपनिग
२४१६ मगरेसधनिप
२४१७ मसरेगधनिप
२४१८ मसरेधगनिप

२४१९ मसरेधनिगप
२४२० मसरेधनिपग
२४२१ मगरेसनिपध
२४२२ मसरेगनिपध
२४२३ मसरेनिगपध
२४२४ मसरेनिपगध
२४२५ मसरेनिपधग
२४२६ मगरेसनिधप
२४२७ मसरेगनिधप
२४२८ मसरेनिगधप
२४२९ मसरेनिधगप
२४३० मसरेनिधपग
२४३१ मगरेपसधनि
२४३२ मपरेगसधनि
२४३३ मपरेसगधनि
२४३४ मपरेसधगनि
२४३५ मपरेसधनिग
२४३६ मगरेपधसनि
२४३७ मपरेगधसनि
२४३८ मपरेधगसनि
२४३९ मपरेधसगनि
२४४० मपरेधसनिग
२४४१ मगरेपधनिस
२४४२ मपरेगधनिस
२४४३ मपरेधगनिस
२४४४ मपरेधनिगस
२४४५ मपरेधनिसग
२४४६ मगरेपसनिध
२४४७ मपरेगसनिध
२४४८ मपरेसगनिध
२४४९ मपरेसनिगध
२४५० मपरेसनिधग
२४५१ मगरेपनिसध
२४५२ मपरेगनिसध
२४५३ मपरेनिगसध
२४५४ मपरेनिसगध
२४५५ मपरेनिसधग
२४५६ मगरेपनिधस
२४५७ मपरेगनिधस
२४५८ मपरेनिगधस
२४५९ मपरेनिधगस
२४६० मपरेनिधसग
२४६१ मगरेधसपनि
२४६२ मधरेगसपनि
२४६३ मधरेसगपनि
२४६४ मधरेसपगनि
२४६५ मधरेसपनिग
२४६६ मगरेधपसनि
२४६७ मधरेगपसनि
२४६८ मधरेपगसनि
२४६९ मधरेपसगनि
२४७० मधरेपसनिग
२४७१ मगरेधपनिस
२४७२ मधरेगपनिस
२४७३ मधरेपगनिस
२४७४ मधरेपनिगस
२४७५ मधरेपनिसग
२४७६ मगरेधसनिप
२४७७ मधरेगसनिप
२४७८ मधरेसगनिप
२४७९ मधरेसनिगप
२४८० मधरेसनिपग
२४८१ मगरेधनिसप
२४८२ मधरेगनिसप
२४८३ मधरेनिगसप
२४८४ मधरेनिसगप
२४८५ मधरेनिसपग
२४८६ मगरेधनिपस
२४८७ मधरेगनिपस
२४८८ मधरेनिगपस
२४८९ मधरेनिपगस
२४९० मधरेनिपसग
२४९१ मगरेनिसपध
२४९२ मनिरेगसपध
२४९३ मनिरेसगपध
२४९४ मनिरेसपगध
२४९५ मनिरेसपधग
२४९६ मगरेनिपसध
२४९७ मनिरेगपसध
२४९८ मनिरेपगसध
२४९९ मनिरेपसगध
२५०० मनिरेपसधग
२५०१ मगरेनिपधस
२५०२ मनिरेगपधस
२५०३ मनिरेपगधस
२५०४ मनिरेपधसग
२५०५ मनिरेपधगस
२५०६ मगरेनिसधप
२५०७ मनिरेसगधप
२५०८ मनिरेसगपध
२५०९ मनिरेसधगप
२५१० मनिरेसधपग
२५११ मगरेनिधसप
२५१२ मनिरेगधसप
२५१३ मनिरेधगसप
२५१४ मनिरेधसगप
२५१५ मनिरेधसपग
२५१६ मगरेनिधपस
२५१७ मनिरेगधपस
२५१८ मनिरेधगपस
२५१९ मनिरेधपगस
२५२० मनिरेधपसग
२५२१ मगसपधरेनि
२५२२ मसगपधरेनि
२५२३ मसपगधरेनि
२५२४ मसपधगरेनि
२५२५ मसपधनिरेग
२५२६ मगसपनिरेध
२५२७ मसगपनिरेध
२५२८ मसपगनिरेध
२५२९ मसपनिगरेध
२५३० मसपनिधरेग
२५३१ मगसधपरेनि
२५३२ मसगधपरेनि
२५३३ मसधगपरेनि
२५३४ मसधपगरेनि
२५३५ मसधपनिरेग

२५३६ मगसधनिरेप
२५३७ मसगधनिरेप
२५३८ मसधगनिरेप
२५३९ मसधनिगरेप
२५४० मसधनिपरेग
२५४१ मगसनिपरेध
२५४२ मसगनिपरेध
२५४३ मसनिगपरेध
२५४४ मसनिपगरेध
२५४५ मसनिपधरेग
२५४६ मगसनिधरेप
२५४७ मसगनिधरेप
२५४८ मसनिगधरेप
२५४९ मसनिधगरेप
२५५० मसनिधपरेग
२५५१ मगपसधरेनि
२५५२ मपगसधरेनि
२५५३ मपसगधरेनि
२५५४ मपसधगरेनि
२५५५ मपसधनिरेग
२५५६ मगपधसरेनि
२५५७ मपगधसरेनि
२५५८ मपधगसरेनि
२५५९ मपधसगरेनि
२५६० मपधसनिरेग
२५६१ मगपधनिरेस
२५६२ मपगधनिरेस
२५६३ मपधगनिरेस
२५६४ मपधनिगरेस
२५६५ मपधनिसरेग
२५६६ मगपसनिरेध
२५६७ मपगसनिरेध
२५६८ मपसगनिरेध
२५६९ मपसनिगरेध
२५७० मपसनिधरेग
२५७१ मगपनिसरेध
२५७२ मपगनिसरेध
२५७३ मपनिगसरेध
२५७४ मपनिसगरेध
२५७५ मपनिसधरेग
२५७६ मगपनिधरेस
२५७७ मपगनिधरेस
२५७८ मपनिगधरेस
२५७९ मपनिधगरेस
२५८० मपनिधसरेग
२५८१ मगधसपरेनि
२५८२ मधगसपरेनि
२५८३ मधसगपरेनि
२५८४ मधसपगरेनि
२५८५ मधसपनिरेग
२५८६ मगधपसरेनि
२५८७ मधगपसरेनि
२५८८ मधपगसरेनि
२५८९ मधपसगरेनि
२५९० मधपसनिरेग
२५९१ मगधपनिरेस
२५९२ मधगपनिरेस
२५९३ मधपगनिरेस
२५९४ मधपनिगरेस
२५९५ मधपनिसरेग
२५९६ मगधसनिरेप
२५९७ मधगसनिरेप
२५९८ मधसगनिरेप
२५९९ मधसनिगरेप
२६०० मधसनिपरेग
२६०१ मगधनिसरेप
२६०२ मधगनिसरेप
२६०३ मधनिगसरेप
२६०४ मधनिसगरेप
२६०५ मधनिसपरेग
२६०६ मगधनिपरेस
२६०७ मधगनिपरेस
२६०८ मधनिगपरेस
२६०९ मधनिपगरेस
२६१० मधनिपसरेग
२६११ मगनिसपरेध
२६१२ मनिगसपरेध
२६१३ मनिसगपरेध
२६१४ मनिसपगरेध
२६१५ मनिसपधरेग
२६१६ मगनिपसरेध
२६१७ मनिगपसरेध
२६१८ मनिपगसरेध
२६१९ मनिपसगरेध
२६२० मनिपसधरेग
२६२१ मगनिपधरेस
२६२२ मनिगपधरेस
२६२३ मनिपगधरेस
२६२४ मनिपधगरेस
२६२५ मनिपधसरेग
२६२६ मगनिसधरेप
२६२७ मनिगसधरेप
२६२८ मनिसगधरेप
२६२९ मनिसधगरेप
२६३० मनिसधपरेग
२६३१ मगनिधसरेप
२६३२ मनिगधसरेप
२६३३ मनिधगसरेप
२६३४ मनिधसगरेप
२६३५ मनिधसपरेग
२६३६ मगनिधपरेस
२६३७ मनिगधपरेस
२६३८ मनिधगपरेस
२६३९ मनिधपगरेस
२६४० मनिधपसरेग
२६४१ मगसरेपधनि
२६४२ मसगरेपधनि
२६४३ मसपरेगधनि
२६४४ मसपरेधगनि
२६४५ मसपरेधनिग
२६४६ मगसरेपनिध
२६४७ मसगरेपनिध
२६४८ मसपरेगनिध
२६४९ मसपरेनिगध
२६५० मसपरेनिधग
२६५१ मगसरेधपनि
२६५२ मसगरेधपनि

२६५३ मसधरेगपनि
२६५४ मसधरेपगनि
२६५५ मसधरेपनिग
२६५६ मगसरेधनिप
२६५७ मसगरेधनिप
२६५८ मसधरेगनिप
२६५९ मसधरेनिगप
२६६० मसधरेनिपग
२६६१ मगसरेनिपध
२६६२ मसगरेनिपध
२६६३ मसनिरेगपध
२६६४ मसनिरेपगध
२६६५ मसनिरेपधग
२६६६ मगसरेनिधप
२६६७ मसगरेनिधप
२६६८ मसनिरेगधप
२६६९ मसनिरेधगप
२६७० मसनिरेधपग
२६७१ मगपरेसधनि
२६७२ मपगरेसधनि
२६७३ मपसरेगधनि
२६७४ मपसरेधगनि
२६७५ मपसरेधनिग
२६७६ मगपरेधसनि
२६७७ मपगरेधसनि
२६७८ मपधरेगसनि
२६७९ मपधरेसगनि
२६८० मपधरेसनिग
२६८१ मगपरेधनिस
२६८२ मपगरेधनिस
२६८३ मपधरेगनिस
२६८४ मपधरेनिगस
२६८५ मपधरेनिसग
२६८६ मगपरेसनिध
२६८७ मपगरेसनिध
२६८८ मपसरेगनिध
२६८९ मपसरेनिगध
२६९० मपसरेनिधग
२६९१ मगपरेनिसध
२६९२ मपगरेनिसध
२६९३ मपनिरेगसध
२६९४ मपनिरेसगध
२६९५ मपनिरेसधग
२६९६ मगपरेनिधस
२६९७ मपगरेनिधस
२६९८ मपनिरेगधस
२६९९ मपनिरेधगस
२७०० मपनिरेधसग
२७०१ मगधरेसपनि
२७०२ मधगरेसपनि
२७०३ मधसरेगपनि
२७०४ मधसरेपगनि
२७०५ मधसरेपनिग
२७०६ मगधरेपसनि
२७०७ मधगरेपसनि
२७०८ मधपरेगसनि
२७०९ मधपरेसगनि
२७१० मधपरेसनिग
२७११ मगधरेपनिस
२७१२ मधगरेपनिस
२७१३ मधपरेगनिस
२७१४ मधपरेनिगस
२७१५ मधपरेनिसग
२७१६ मगधरेसनिप
२७१७ मधगरेसनिप
२७१८ मधसरेगनिप
२७१९ मधसरेनिगप
२७२० मधसरेनिपग
२७२१ मगधरेनिसप
२७२२ मधगरेनिसप
२७२३ मधनिरेगसप
२७२४ मधनिरेसगप
२७२५ मधनिरेसपग
२७२६ मगधरेनिपस
२७२७ मधगरेनिपस
२७२८ मधनिरेगपस
२७२९ मधनिरेपगस
२७३० मधनिरेपसग
२७३१ मगनिरेसपध
२७३२ मनिगरेसपध
२७३३ मनिसरेगपध
२७३४ मनिसरेपगध
२७३५ मनिसरेपधग
२७३६ मगनिरेपसध
२७३७ मनिगरेपसध
२७३८ मनिपरेगसध
२७३९ मनिपरेसगध
२७४० मनिपरेसधग
२७४१ मगनिरेपधस
२७४२ मनिगरेपधस
२७४३ मनिपरेगधस
२७४४ मनिपरेधसग
२७४५ मनिपरेधगस
२७४६ मगनिरेसधप
२७४७ मनिसरेगधप
२७४८ मनिसरेगपध
२७४९ मनिसरेधगप
२७५० मनिसरेधपग
२७५१ मगनिरेधसप
२७५२ मनिगरेधसप
२७५३ मनिधरेगसप
२७५४ मनिधरेसगप
२७५५ मनिधरेसपग
२७५६ मगनिरेधपस
२७५७ मनिगरेधपस
२७५८ मनिधरेगपस
२७५९ मनिधरेपगस
२७६० मनिधरेपसग
२७६१ मगसपधनिरे
२७६२ मसगपधनिरे
२७६३ मसपगधनिरे
२७६४ मसपधगनिरे
२७६५ मसपधनिगरे
२७६६ मगसपनिधरे
२७६७ मसगपनिधरे
२७६८ मसपगनिधरे
२७६९ मसपनिगधरे

२७७०	मसपनिधगरे	२८०७	मपगसनिधरे	२८४४	मधनिसगपरे
२७७१	मगसधपनिरे	२८०८	मपसगनिधरे	२८४५	मधनिसपगरे
२७७२	मसगधपनिरे	२८०९	मपसनिगधरे	२८४६	मगधनिपसरे
२७७३	मसधगपनिरे	२८१०	मपसनिधगरे	२८४७	मधगनिपसरे
२७७४	मसधपगनिरे	२८११	मगपनिसधरे	२८४८	मधनिगपसरे
२७७५	मसधपनिगरे	२८१२	मपगनिसधरे	२८४९	मधनिपगसरे
२७७६	मगसधनिपरे	२८१३	मपनिगसधरे	२८५०	मधनिपसगरे
२७७७	मसगधनिपरे	२८१४	मपनिसगधरे	२८५१	मगनिसपधरे
२७७८	मसधगनिपरे	२८१५	मपनिसधगरे	२८५२	मनिगसपधरे
२७७९	मसधनिगपरे	२८१६	मगपनिधसरे	२८५३	मनिसगपधरे
२७८०	मसधनिपगरे	२८१७	मपगनिधसरे	२८५४	मनिसपगधरे
२७८१	मगसनिपधरे	२८१८	मपनिगधसरे	२८५५	मनिसपधगरे
२७८२	मसगनिपधरे	२८१९	मपनिधगसरे	२८५६	मगनिपसधरे
२७८३	मसनिगपधरे	२८२०	मपनिधसगरे	२८५७	मनिगपसधरे
२७८४	मसनिपगधरे	२८२१	मगधसपनिरे	२८५८	मनिपगसधरे
२७८५	मसनिपधगरे	२८२२	मधगसपनिरे	२८५९	मनिपसगधरे
२७८६	मगसनिधपरे	२८२३	मधसगपनिरे	२८६०	मनिपसधगरे
२७८७	मसगनिधपरे	२८२४	मधसपगनिरे	२८६१	मगनिपधसरे
२७८८	मसनिगधपरे	२८२५	मधसपनिगरे	२८६२	मनिगपधसरे
२७८९	मसनिधगपरे	२८२६	मगधपसनिरे	२८६३	मनिपगधसरे
२७९०	मसनिधपगरे	२८२७	मधगपसनिरे	२८६४	मनिपधगसरे
२७९१	मगपसधनिरे	२८२८	मधपगसनिरे	२८६५	मनिपधसगरे
२७९२	मपगसधनिरे	२८२९	मधपसगनिरे	२८६६	मगनिसधपरे
२७९३	मपसगधनिरे	२८३०	मधपसनिगरे	२८६७	मनिगसधपरे
२७९४	मपसधगनिरे	२८३१	मगधपनिसरे	२८६८	मनिसगधपरे
२७९५	मपसधनिगरे	२८३२	मधगपनिसरे	२८६९	मनिसधगपरे
२७९६	मगपधसनिरे	२८३३	मधपगनिसरे	२८७०	मनिसधपगरे
२७९७	मपगधसनिरे	२८३४	मधपनिगसरे	२८७१	मगनिधसपरे
२७९८	मपधगसनिरे	२८३५	मधपनिसगरे	२८७२	मनिगधसपरे
२७९९	मपधसगनिरे	२८३६	मगधसनिपरे	२८७३	मनिधगसपरे
२८००	मपधसनिगरे	२८३७	मधगसनिपरे	२८७४	मनिधसगपरे
२८०१	मगपधनिसरे	२८३८	मधसगनिपरे	२८७५	मनिधसपगरे
२८०२	मपगधनिसरे	२८३९	मधसनिगपरे	२८७६	मगनिधपसरे
२८०३	मपधगनिसरे	२८४०	मधसनिपगरे	२८७७	मनिगधपसरे
२८०४	मपधनिगसरे	२८४१	मगधनिसपरे	२८७८	मनिधगपसरे
२८०५	मपधनिसगरे	२८४२	मधगनिसपरे	२८७९	मनिधपगसरे
२८०६	मगपसनिधरे	२८४३	मधनिगसपरे	२८८०	मनिधपसगरे

पंचम

२८८१ परेगमसधनि
२८८२ परेमगसधनि
२८८३ परेमसगधनि
२८८४ परेमसधगनि
२८८५ परेमसधनिग
२८८६ परेगमसनिध
२८८७ परेमगसनिध
२८८८ परेमसगनिध
२८८९ परेमसनिगध
२८९० परेमसनिधग
२८९१ परेगमधसनि
२८९२ परेमगधसनि
२८९३ परेमधगसनि
२८९४ परेमधसगनि
२८९५ परेमधसनिग
२८९६ परेगमधनिस
२८९७ परेमगधनिस
२८९८ परेमधगनिस
२८९९ परेमधनिगस
२९०० परेमधनिसग
२९०१ परेगमनिसध
२९०२ परेमगनिसध
२९०३ परेमनिगसध
२९०४ परेमनिसगध
२९०५ परेमनिसधग
२९०६ परेगमनिधस
२९०७ परेमगनिधस
२९०८ परेमनिगधस
२९०९ परेमनिधगस
२९१० परेमनिधसग
२९११ परेगसमधनि
२९१२ परेसगमधनि
२९१३ परेसमगधनि
२९१४ परेसमधगनि
२९१५ परेसमधनिग
२९१६ परेगसधमनि
२९१७ परेसगधमनि
२९१८ परेसधगमनि
२९१९ परेसधमगनि
२९२० परेसधमनिग
२९२१ परेगसधनिम
२९२२ परेसगधनिम
२९२३ परेसधगनिम
२९२४ परेसधनिगम
२९२५ परेसधनिमग
२९२६ परेगसमनिध
२९२७ परेसगमनिध
२९२८ परेसमगनिध
२९२९ परेसमनिगध
२९३० परेसमनिधग
२९३१ परेगसनिमध
२९३२ परेसगनिमध
२९३३ परेसनिगमध
२९३४ परेसनिमगध
२९३५ परेसनिमधग
२९३६ परेगसनिधम
२९३७ परेसगनिधम
२९३८ परेसनिगधम
२९३९ परेसनिधगम
२९४० परेसनिधमग
२९४१ परेगधमसनि
२९४२ परेधगमसनि
२९४३ परेधमगसनि
२९४४ परेधमसगनि
२९४५ परेधमसनिग
२९४६ परेगधसमनि
२९४७ परेधगसमनि
२९४८ परेधसगमनि
२९४९ परेधसमगनि
२९५० परेधसमनिग
२९५१ परेगधसनिम
२९५२ परेधगसनिम
२९५३ परेधसगनिम
२९५४ परेधसनिगम
२९५५ परेधसनिमग
२९५६ परेगधमनिस
२९५७ परेधगमनिस
२९५८ परेधमगनिस
२९५९ परेधमनिगस
२९६० परेधमनिसग
२९६१ परेगधनिमस
२९६२ परेधगनिमस
२९६३ परेधनिगमस
२९६४ परेधनिमगस
२९६५ परेधनिमसग
२९६६ परेगधनिसम
२९६७ परेधगनिसम
२९६८ परेधनिगसम
२९६९ परेधनिसगम
२९७० परेधनिसमग
२९७१ परेगनिमसध
२९७२ परेनिगमसध
२९७३ परेनिमगसध
२९७४ परेनिमसगध
२९७५ परेनिमसधग
२९७६ परेगनिसमध
२९७७ परेनिगसमध
२९७८ परेनिसगमध
२९७९ परेनिसमगध
२९८० परेनिसमधग
२९८१ परेगनिसधम
२९८२ परेनिगसधम
२९८३ परेनिसगधम
२९८४ परेनिसधगम
२९८५ परेनिसधमग
२९८६ परेगनिमधस
२९८७ परेनिगमधस
२९८८ परेनिमगधस
२९८९ परेनिमधगस
२९९० परेनिमधसग
२९९१ परेगनिधमस

२९९२	परेनिगधमस	३०३१	पगसमरेधनि	३०७०	पधसमरेनिग
२९९३	परेनिधगमस	३०३२	पसगमरेधनि	३०७१	पगधसरेनिम
२९९४	परेनिधमगस	३०३३	पसमगरेधनि	३०७२	पधगसरेनिम
२९९५	परेनिधमसग	३०३४	पसमधरेगनि	३०७३	पधसगरेनिम
२९९६	परेगनिधसम	३०३५	पसमधरेनिग	३०७४	पधसनिरेगस
२९९७	परेनिगधसम	३०३६	पगसधरेमनि	३०७५	पधसनिरेमग
२९९८	परेनिधगसम	३०३७	पसगधरेमनि	३०७६	पगधमरेनिस
२९९९	परेनिधसगम	३०३८	पसधगरेमनि	३०७७	पधगमरेनिस
३०००	परेनिधसमग	३०३९	पसधमरेगनि	३०७८	पधमगरेनिस
३००१	पगमसरेधनि	३०४०	पसधमरेनिग	३०७९	पधमनिरेगस
३००२	पमगसरेधनि	३०४१	पगसधरेनिम	३०८०	पधमनिरेसग
३००३	पमसगरेधनि	३०४२	पसगधरेनिम	३०८१	पगधनिरेमस
३००४	पमसधरेगनि	३०४३	पसधगरेनिम	३०८२	पधगनिरेमस
३००५	पमसधरेनिग	३०४४	पसधनिरेगम	३०८३	पधनिगरेमस
३००६	पगमसरेनिध	३०४५	पसधनिरेमग	३०८४	पधनिमरेगस
३००७	पमगसरेनिध	३०४६	पगसमरेनिध	३०८५	पधनिमरेसग
३००८	पमसगरेनिध	३०४७	पसगमरेनिध	३०८६	पगधनिरेसम
३००९	पमसनिरेगध	३०४८	पसमगरेनिध	३०८७	पधगनिरेसम
३०१०	पमसनिरेधग	३०४९	पसमनिरेगध	३०८८	पधनिगरेसम
३०११	पगमधरेसनि	३०५०	पसमनिरेधग	३०८९	पधनिसरेगम
३०१२	पमगधरेसनि	३०५१	पगसनिरेमध	३०९०	पधनिसरेमग
३०१३	पमधगरेसनि	३०५२	पसगनिरेमध	३०९१	पगनिमरेसध
३०१४	पमधसरेगनि	३०५३	पसनिगरेमध	३०९२	पनिगमरेसध
३०१५	पमधसरेनिग	३०५४	पसनिमरेगध	३०९३	पनिमगरेसध
३०१६	पगमधरेनिस	३०५५	पसनिमरेधग	३०९४	पनिमसरेगध
३०१७	पमगधरेनिस	३०५६	पगसनिरेधम	३०९५	पनिमसरेधग
३०१८	पमधगरेनिस	३०५७	पसगनिरेधम	३०९६	पगनिसरेमध
३०१९	पमधनिरेगस	३०५८	पसनिगरेधम	३०९७	पनिगसरेमध
३०२०	पमधनिरेसग	३०५९	पसनिधरेगम	३०९८	पनिसगरेमध
३०२१	पगमनिरेसध	३०६०	पसनिधरेमग	३०९९	पनिसमरेगध
३०२२	पमगनिरेसध	३०६१	पगधमरेसनि	३१००	पनिसमरेधग
३०२३	पमनिगरेसध	३०६२	पधगमरेसनि	३१०१	पगनिसरेधम
३०२४	पमनिसरेगध	३०६३	पधमगरेसनि	३१०२	पनिगसरेधम
३०२५	पमनिसरेधग	३०६४	पधमसरेगनि	३१०३	पनिसगरेधम
३०२६	पगमनिरेधस	३०६५	पधमसरेनिग	३१०४	पनिसधरेगम
३०२७	पमगनिरेधस	३०६६	पगधसरेमनि	३१०५	पनिसधरेमग
३०२८	पमनिगरेधस	३०६७	पधगसरेमनि	३१०६	पगनिमरेधस
३०२९	पमनिधरेगस	३०६८	पधसगरेमनि	३१०७	पनिगमरेधस
३०३०	पमनिधरेसग	३०६९	पधसमरेगनि	३१०८	पनिमगरेधस

३१०६ पनिमधरेगस
३११० पनिमधरेसग
३१११ पगनिधरेमस
३११२ पनिगधरेमस
३११३ पनिधगरेमस
३११४ पनिधमरेगस
३११५ पनिधमरेसग
३११६ पगनिधरेसम
३११७ पनिगधरेसम
३११८ पनिधगरेसम
३११९ पनिधसरेगम
३१२० पनिधसरेमग
३१२१ पगरेमसधनि
३१२२ पमरेगसधनि
३१२३ पमरेसगधनि
३१२४ पमरेसधगनि
३१२५ पमरेसधनिग
३१२६ पगरेमसनिध
३१२७ पमरेगसनिध
३१२८ पमरेसगनिध
३१२९ पमरेसनिगध
३१३० पमरेसनिधग
३१३१ पगरेमधसनि
३१३२ पमरेगधसनि
३१३३ पमरेधगसनि
३१३४ पमरेधसगनि
३१३५ पमरेधसनिग
३१३६ पगरेमधनिस
३१३७ पमरेगधनिस
३१३८ पमरेधगनिस
३१३९ पमरेधनिगस
३१४० पमरेधनिसग
३१४१ पगरेमनिसध
३१४२ पमरेगनिसध
३१४३ पमरेनिगसध
३१४४ पमरेनिसगध
३१४५ पमरेनिसधग
३१४६ पगरेमनिधस
३१४७ पमरेगनिधस
३१४८ पमरेनिगधस
३१४९ पमरेनिधगस
३१५० पमरेनिधसग
३१५१ पगरेसमधनि
३१५२ पसरेगमधनि
३१५३ पसरेमगधनि
३१५४ पसरेमधगनि
३१५५ पसरेमधनिग
३१५६ पगरेसधमनि
३१५७ पसरेगधमनि
३१५८ पसरेधगमनि
३१५९ पसरेधमगनि
३१६० पसरेधमनिग
३१६१ पगरेसधनिम
३१६२ पसरेगधनिम
३१६३ पसरेधगनिम
३१६४ पसरेधनिगम
३१६५ पसरेधनिमग
३२६६ पगरेसमनिध
३१६७ पसरेगमनिध
३१६८ पसरेमगनिध
३१६९ पसरेमनिगध
३१७० पसरेमनिधग
३१७१ पगरेसनिमध
३१७२ पसरेगनिमध
३१७३ पसरेनिगमध
३१७४ पसरेनिमगध
३१७५ पसरेनिमधग
३१७६ पगरेसनिधम
३१७७ पसरेगनिधम
३१७८ पसरेनिगधम
३१७९ पसरेनिधगम
३१८० पसरेनिधमग
३१८१ पगरेधमसनि
३१८२ पधरेगमसनि
३१८३ पधरेमगसनि
३१८४ पधरेमसगनि
३१८५ पधरेमसनिग
३१८६ पगरेधसमनि
३१८७ पधरेगसमनि
३१८८ पधरेसगमनि
३१८९ पधरेसमगनि
३१९० पधरेसमनिग
३१९१ पगरेधसनिम
३१९२ पधरेगसनिम
३१९३ पधरेसगनिम
३१९४ पधरेसनिगम
३१९५ पधरेसनिमग
३१९६ पगरेधमनिस
३१९७ पधरेगमनिस
३१९८ पधरेमगनिस
३१९९ पधरेमनिगस
३२०० पधरेमनिसग
३२०१ पगरेधनिमस
३२०२ पधरेगनिमस
३२०३ पधरेनिगमस
३२०४ पधरेनिमगस
३२०५ पधरेनिमसग
३२०६ पगरेधनिसम
३२०७ पधरेगनिसम
३२०८ पधरेनिगसम
३२०९ पधरेनिसगम
३२१० पधरेनिसमग
३२११ पगरेनिमसध
३२१२ पनिरेगमसध
३२१३ पनिरेमगसध
३२१४ पनिरेमसगध
३२१५ पनिरेमसधग
३२१६ पगरेनिसमध
३२१७ पनिरेगसमध
३२१८ पनिरेसगमध
३२१९ पनिरेसमगध
३२२० पनिरेसमधग
३२२१ पगरेनिसधम
३२२२ पनिरेगसधम
३२२३ पनिरेसगधम
३२२४ पनिरेसधगम
३२२५ पनिरेसधमग

३२२६ पगरेनिमधस
३२२७ पनिरेगमधस
३२२८ पनिरेमगधस
३२२९ पनिरेमधगस
३२३० पनिरेमधसग
३२३१ पगरेनिधमस
३२३२ पनिरेगधमस
३२३३ पनिरेधगमस
३२३४ पनिरेधमगस
३२३५ पनिरेधमसग
३२३६ पगरेनिधसम
३२३७ पनिरेगधसम
३२३८ पनिरेधगसम
३२३९ पनिरेधसगम
३२४० पनिरेधसमग
३२४१ पगमसधरेनि
३२४२ पमगसधरेनि
३२४३ पमसगधरेनि
३२४४ पमसधगरेनि
३२४५ पमसधनिरेग
३२४६ पमगसनिरेध
३२४७ पगमसनिरेध
३२४८ पमसगनिरेध
३२४९ पमसनिगरेध
३२५० पमसनिधरेग
३२५१ पगमधसरेनि
३२५२ पमगधसरेनि
३२५३ पमधगसरेनि
३२५४ पमधसगरेनि
३२५५ पमधसनिरेग
३२५६ पगमधनिरेस
३२५७ पमगधनिरेस
३२५८ पमधगनिरेस
३२५९ पमधनिगरेस
३२६० पमधनिसरेग
३२६१ पगमनिसरेध
३२६२ पमगनिसरेध
३२६३ पमनिगसरेध
३२६४ पमनिसगरेध

३२६५ पमनिसधरेग
३२६६ पगमनिधरेस
३२६७ पमगनिधरेस
३२६८ पमनिगधरेस
३२६९ पमनिधगरेस
३२७० पमनिधसरेग
३२७१ पगसमधरेनि
३२७२ पसगमधरेनि
३२७३ पसमगधरेनि
३२७४ पसमधगरेनि
३२७५ पसमधनिरेग
३२७६ पगसधमरेनि
३२७७ पसगधमरेनि
३२७८ पसधगमरेनि
३२७९ पसधमगरेनि
३२८० पसधमनिरेग
३२८१ पगसधनिरेम
३२८२ पसगधनिरेम
३२८३ पसधगनिरेम
३२८४ पसधनिगरेम
३२८५ पसधनिमरेग
३२८६ पगसमनिरेध
३२८७ पसगमनिरेध
३२८८ पसमगनिरेध
३२८९ पसमनिगरेध
३२९० पसमनिधरेग
३२९१ पगसनिमरेध
३२९२ पसगनिमरेध
३२९३ पसनिगमरेध
३२९४ पसनिमगरेध
३२९५ पसनिमधरेग
३२९६ पगसनिधरेम
३२९७ पसगनिधरेम
३२९८ पसनिगधरेम
३२९९ पसनिधगरेम
३३०० पसनिधमरेग
३३०१ पगधमसरेनि
३३०२ पधगमसरेनि
३३०३ पधमगसरेनि

३३०४ पधमसगरेनि
३३०५ पधमसनिरेग
३३०६ पगधसमरेनि
३३०७ पधगसमरेनि
३३०८ पधसगमरेनि
३३०९ पधसमगरेनि
३३१० पधसमनिरेग
३३११ पगधसनिरेम
३३१२ पधगसनिरेम
३३१३ पधसगनिरेम
३३१४ पधसनिगरेम
३३१५ पधसनिमरेग
३३१६ पगधमनिरेस
३३१७ पधगमनिरेस
३३१८ पधमगनिरेस
३३१९ पधमनिगरेस
३३२० पधमनिसरेग
३३२१ पगधनिमरेस
३३२२ पधगनिसरेस
३३२३ पधनिगमरेस
३३२४ पधनिमगरेस
३३२५ पधनिमसरेग
३३२६ पगधनिसरेम
३३२७ पधगनिसरेम
३३२८ पधनिगसरेम
३३२९ पधनिसगरेम
३३३० पधनिसमरेग
३३३१ पगनिमसरेध
३३३२ पनिगमसरेध
३३३३ पनिमगसरेध
३३३४ पनिमसगरेध
३३३५ पनिमसधरेग
३३३६ पगनिसमरेध
३३३७ पनिगसमरेध
३३३८ पनिसगमरेध
३३३९ पनिसमगरेध
३३४० पनिसमधरेग
३३४१ पगनिसधरेम
३३४२ पनिगसधरेम

३३४३ पनिसगधरेम
३३४४ पनिसधगरेम
३३४५ पनिसधमरेग
३३४६ पगनिमधरेस
३३४७ पनिगमधरेस
३३४८ पनिमगधरेस
३३४९ पनिमधगरेस
३३५० पनिमधसरेग
३३५१ पगनिधमरेस
३३५२ पनिगधमरेस
३३५३ पनिधगमरेस
३३५४ पनिधमगरेस
३३५५ पनिधमसरेग
३३५६ पगनिधसरेम
३३५७ पनिगधसरेम
३३५८ पनिधगसरेम
३३५९ पनिधसगरेम
३३६० पनिधसमरेग
३३६१ पगमरेसधनि
३३६२ पमगरेसधनि
३३६३ पमसरेगधनि
३३६४ पमसरेधगनि
३३६५ पमसरेधनिग
३३६६ पगमरेसनिध
३३६७ पमगरेसनिध
३३६८ पमसरेगनिध
३३६९ पमसरेनिगध
३३७० पमसरेनिधग
३३७१ पगमरेधसनि
३३७२ पमगरेधसनि
३३७३ पमधरेगसनि
३३७४ पमधरेसगनि
३३७५ पमधरेसनिग
३३७६ पगमरेधनिस
३३७७ पमगरेधनिस
३३७८ पमधरेगनिस
३३७९ पमधरेनिगस
३३८० पमधरेनिसग
३३८१ पगमरेनिसध
३३८२ पमगरेनिसध
३३८३ पमनिरेगसध
३३८४ पमनिरेसगध
३३८५ पमनिरेसधग
३३८६ पगमरेनिधस
३३८७ पमगरेनिधस
३३८८ पमनिरेगधस
३३८९ पमनिरेधगस
३३९० पमनिरेगधस
३३९१ पगसरेमधनि
३३९२ पसगरेमधनि
३३९३ पसमरेगधनि
३३९४ पसमरेधगनि
३३९५ पसमरेधनिग
३३९६ पगसरेधमनि
३३९७ पसगरेधमनि
३३९८ पसधरेगमनि
३३९९ पसधरेमगनि
३४०० पसधरेमनिग
३४०१ पगसरेधनिम
३४०२ पसगरेधनिम
३४०३ पसधरेगनिम
३४०४ पसधरेनिगम
३४०५ पसधरेनिमग
३४०६ पगसरेमनिध
३४०७ पसगरेमनिध
३४०८ पसमरेगनिध
३४०९ पसमरेनिगध
३४१० पसमरेनिधग
३४११ पगसरेनिमध
३४१२ पसगरेनिमध
३४१३ पसनिरेगमध
३४१४ पसनिरेमगध
३४१५ पसनिरेमधग
३४१६ पगसरेनिधम
३४१७ पसगरेनिधम
३४१८ पसनिरेगधम
३४१९ पसनिरेधगम
३४२० पसनिरेधमग
३४२१ पगधरेमसनि
३४२२ पधगरेमसनि
३४२३ पधमरेगसनि
३४२४ पधमरेसगनि
३४२५ पधमरेसनिग
३४२६ पगधरेसमनि
३४२७ पधगरेसमनि
३४२८ पधसरेगमनि
३४२९ पधसरेमगनि
३४३० पधसरेमनिग
३४३१ पगधरेसनिम
३४३२ पधगरेसनिम
३४३३ पधसरेगनिम
३४३४ पधसरेनिगम
३४३५ पधसरेनिमग
३४३६ पगधरेमनिस
३४३७ पधगरेमनिस
३४३८ पधमरेगनिस
३४३९ पधमरेनिगस
३४४० पधमरेनिसग
३४४१ पगधरेनिमस
३४४२ पधगरेनिमस
३४४३ पधनिरेगमस
३४४४ पधनिरेमगस
३४४५ पधनिरेमसग
३४४६ पगधरेनिसम
३४४७ पधगरेनिसम
३४४८ पधनिरेगसम
३४४९ पधनिरेसगम
३४५० पधनिरेसमग
३४५१ पगनिरेमसध
३४५२ पनिगरेमसध
३४५३ पनिमरेसगध
३४५४ पनिसरेगसध
३४५५ पनिमरेसधग
३४५६ पगनिरेसमध
३४५७ पनिगरेसमध
३४५८ पनिसरेगमध
३४५९ पनिसरेमगध

३४६०	पनिसरेमधग	३४९९	पमधनिगसरे	३५३८	पसनिगधमरे
३४६१	पगनिरेसधम	३५००	पमधनिसगरे	३५३९	पसनिधगमरे
३४६२	पनिगरेसधम	३५०१	पगमनिसधरे	३५४०	पसनिधमगरे
३४६३	पनिसरेगधम	३५०२	पमगनिसधरे	३५४१	पगधमसनिरे
३४६४	पनिसरेधगम	३५०३	पमनिगसधरे	३५४२	पधगमसनिरे
३४६५	पनिसरेधमग	३५०४	पमनिसगधरे	३५४३	पधमगसनिरे
३४६६	पगनिरेमधस	३५०५	पमनिसधगरे	३५४४	पधमसगनिरे
३४६७	पनिगरेमधस	३५०६	पगमनिधसरे	३५४५	पधमसनिगरे
३४६८	पनिमरेगधस	३५०७	पमगनिधसरे	३५४६	पगधसमनिरे
३४६९	पनिमरेधगस	३५०८	पमनिगधसरे	३५४७	पधगसमनिरे
३४७०	पनिमरेधसग	३५०९	पमनिधगसरे	३५४८	पधसगमनिरे
३४७१	पगनिरेधमस	३५१०	पमनिधसगरे	३५४९	पधसमगनिरे
३४७२	पनिगरेधमस	३५११	पगसमधनिरे	३५५०	पधसमनिगरे
३४७३	पनिधरेगमस	३५१२	पसगमधनिरे	३३५१	पगधसनिमरे
३४७४	पनिधरेमगस	३५१३	पसमगधनिरे	३५५२	पधगसनिमरे
३४७५	पनिधरेमसग	३५१४	पसमधगनिरे	३५५३	पधसगनिमरे
३४७६	पगनिरेधसम	३५१५	पसमधनिगरे	३५५४	पधसनिगमरे
३४७७	पनिगरेधसम	३५१६	पगसधमनिरे	३५५५	पधसनिमगरे
३४७८	पनिधरेगसम	३५१७	पसगधमनिरे	३५५६	पगधमनिसरे
३४७९	पनिधरेसगम	३५१८	पसधगमनिरे	३५५७	पधगमनिसरे
३४८०	पनिधरेसमग	३५१९	पसधमगनिरे	३५५८	पधमगनिसरे
३४८१	पगमसधनिरे	३५२०	पसधमनिगरे	३५५९	पधमनिगसरे
३४८२	पमगसधनिरे	३५२१	पगसधनिमरे	३५६०	पधमनिसगरे
३४८३	पमसगनिधरे	३५२२	पसगधनिमरे	३५६१	पगधनिमसरे
३४८४	पमसधगनिरे	३५२३	पसधगनिमरे	३५६२	पधगनिमसरे
३४८५	पमसधनिगरे	३५२४	पसधनिगमरे	३५६३	पधनिगमसरे
३४८६	पगमसनिधरे	३५२५	पसधनिमगरे	३५६४	पधनिमगसरे
३४८७	पमगसनिधरे	३५२६	पगसमनिधरे	३५६५	पधनिमसगरे
३४८८	पमसगनिधरे	३५२७	पसगमनिधरे	३५६६	पगधनिसमरे
३४८९	पमसनिगधरे	३५२८	पसमगनिधरे	३५६७	पधगनिसमरे
३४९०	पमसनिधगरे	३५२९	पसमनिगधरे	३५६८	पधनिगसमरे
३४९१	पगमधसनिरे	३५३०	पसमनिधगरे	३५६९	पधनिसगमरे
३४९२	पमगधसनिरे	३५३१	पगसनिमधरे	३५७०	पधनिसमगरे
३४९३	पमधगसनिरे	३५३२	पसगनिमधरे	३५७१	पगनिमसधरे
३४९४	पमधसगनिरे	३५३३	पसनिगमधरे	३५७२	पनिगमसधरे
३४९५	पमधसनिगरे	३५३४	पसनिमगधरे	३५७३	पनिमगसधरे
३४९६	पगमधनिसरे	३५३५	पसनिमधगरे	३५७४	पनिमसगधरे
३४९७	पमगधनिसरे	३५३६	पगसनिधमरे	३५७५	पनिमसधगरे
३४९८	पमधगनिसरे	३५३७	पसगनिधमरे	३५७६	पगनिसमधरे

३५७७ पनिगसमधरे
३५७८ पनिसगमधरे
३५७९ पनिसमगधरे
३५८० पनिसमधगरे
३५८१ पगनिसधमरे
३५८२ पनिगसधमरे
३५८३ पनिसगधमरे
३५८४ पनिसधगमरे
३५८५ पनिसधमगरे
३५८६ पगनिमधसरे
३५८७ पनिगमधसरे
३५८८ पनिमगधसरे
३५८९ पनिमधगसरे
३५९० पनिमधसगरे
३५९१ पगनिधमसरे
३५९२ पनिगधमसरे
३५९३ पनिधगमसरे
३५९४ पनिधमगसरे
३५९५ पनिधमसगरे
३५९६ पगनिधसमरे
३५९७ पनिगधसमरे
३५९८ पनिधगसमरे
३५९९ पनिधसगमरे
३६०० पनिधसमगरे

ध

३६०१ धरेगमपसनि
३६०२ धरेमगपसनि
३६०३ धरेमपगसनि
३६०४ धरेमपसगनि
३६०५ धरेमपसनिग
३६०६ धरेगमपनिस
३६०७ धरेमगपनिस
३६०८ धरेमपगनिस
३६०९ धरेमपनिगस
३६१० धरेमपनिसग
३६११ धरेगमसपनि
३६१२ धरेमगसपनि
३६१३ धरेमसगपनि
३६१४ धरेमसपगनि
३६१५ धरेमसपनिग
३६१६ धरेगमसनिप
३६१७ धरेमगसनिप
३६१८ धरेमसगनिप
३६१९ धरेमसनिगप
३६२० धरेमसनिपग
३६२१ धरेगमनिपस
३६२२ धरेमगनिपस
३६२३ धरेमनिगपस
३६२४ धरेमनिपगस
३६२५ धरेमनिपसग
३६२६ धरेगमनिसप
३६२७ धरेमगनिसप
३६२८ धरेमनिगसप
३६२९ धरेनिमसगप
३६३० धरेमनिसपग
३६३१ धरेगपमसनि
३६३२ धरेपगमसनि
३६३३ धरेपमगसनि
३६३४ धरेपमसगनि
३६३५ धरेपमसनिग
३६३६ धरेगपसमनि
३६३७ धरेपगसमनि
३६३८ धरेपसगमनि
३६३९ धरेपसमगनि
३६४० धरेपसमनिग
३६४१ धरेगपसनिम
३६४२ धरेपगसनिम
३६४३ धरेपसगनिम
३६४४ धरेपसनिगम
३६४५ धरेपसनिमग
३६४६ धरेगपमनिस
३६४७ धरेपगमनिस
३६४८ धरेपमगनिस
३६४९ धरेपमनिगस
३६५० धरेपमनिसग
३६५१ धरेगपनिमस
३६५२ धरेपगनिमस
३६५३ धरेपनिगमस
३६५४ धरेपनिमगस
३६५५ धरेपनिमसग
३६५६ धरेगपनिसम
३६५७ धरेपगनिसम
३६५८ धरेपनिगसम
३६५९ धरेपनिसगम
३६६० धरेपनिसमग
३६६१ धरेगसमपनि
३६६२ धरेसगमपनि
३६६३ धरेसमगपनि
३६६४ धरेसमपगनि
३६६५ धरेसमपनिग
३६६६ धरेगसपमनि
३६६७ धरेसगपमनि
३६६८ धरेसपगमनि
३६६९ धरेसपमगनि
३६७० धरेसपमनिग
३६७१ धरेगसपनिम
३६७२ धरेसगपनिम
३६७३ धरेसपगनिम
३६७४ धरेसपनिगम
३६७५ धरेसपनिमग
३६७६ धरेगसमनिप
३६७७ धरेसगमनिप
३६७८ धरेसमगनिप
३६७९ धरेसमनिगप
३६८० धरेसमनिपग
३६८१ धरेगसनिमप
३६८२ धरेसगनिमप
३६८३ धरेसनिगमप
३६८४ धरेसनिमगप
३६८५ धरेसनिमपग
३६८६ धरेगसनिपम
३६८७ धरेसगनिपम

३६८८	धरेसनिगपम	३७२७	धमगपरेनिस	३७६६	धगपमरेनिस
३६८९	धरेसनिपगम	३७२८	धमपगरेनिस	३७६७	धपगमरेनिस
३६९०	धरेसनिपमग	३७२९	धमपनिरेगस	३७६८	धपमगरेनिस
३६९१	धरेगनिमपस	३७३०	धमपनिरेसग	३७६९	धपमनिरेगस
३६९२	धरेनिगमपस	३७३१	धगमसरेपनि	३७७०	धपमनिरेसग
३६९३	धरेनिमगपस	३७३२	धमगसरेपनि	३७७१	धगपनिरेमस
३६९४	धरेनिमपगस	३७३३	धमसगरेपनि	३७७२	धपगनिरेमस
३६९५	धरेनिमपसग	३७३४	धमसपरेगनि	३७७३	धपनिगरेमस
३६९६	धरेगनिपमस	३७३५	धमसपरेनिग	३७७४	धपनिमरेगस
३६९७	धरेनिगपमस	३७३६	धगमसरेनिप	३७७५	धपनिमरेसग
३६९८	धरेनिपगमस	३७३७	धमगसरेनिप	३७७६	धगपनिरेसम
३६९९	धरेनिपमगस	३७३८	धमसगरेनिप	३७७७	धपगनिरेसम
३७००	धरेनिपमसग	३७३९	धमसनिरेगप	३७७८	धपनिगरेसम
३७०१	धरेगनिपसम	३७४०	धमसनिरेपग	३७७९	धपनिसरेगम
३७०२	धरेनिगपसम	३७४१	धगमनिरेपस	३७८०	धपनिसरेमग
३७०३	धरेनिपगसम	३७४२	धमगनिरेपस	३७८१	धगसमरेपनि
३७०४	धरेनिपसगम	३७४३	धमनिगरेपस	३७८२	धसगमरेपनि
३७०५	धरेनिपसमग	३७४४	धमनिपरेगस	३७८३	धसमगरेपनि
३७०६	धरेगनिमसप	३७४५	धमनिपरेसग	३७८४	धसमपरेगनि
३७०७	धरेनिगमसप	३७४६	धगमनिरेसप	३७८५	धसमपरेनिग
३७०८	धरेनिमगसप	३७४७	धमगनिरेसप	३७८६	धगसपरेमनि
३७०९	धरेनिमसगप	३७४८	धमनिगरेसप	३७८७	धसगपरेमनि
३७१०	धरेनिमसपग	३७४९	धमनिसरेगप	३७८८	धसपगरेमनि
३७११	धरेगनिसमप	३७५०	धमनिसरेपग	३७८९	धसपमरेगनि
३७१२	धरेनिगसमप	३७५१	धगपमरेसनि	३७९०	धसपमरेनिग
३७१३	धरेनिसगमप	३७५२	धपगमरेसनि	३७९१	धगसपरेनिम
३७१४	धरेनिसमगप	३७५३	धपमगरेसनि	३७९२	धसगपरेनिम
३७१५	धरेनिसमपग	३७५४	धपमसरेगनि	३७९३	धसपगरेनिम
३७१६	धरेगनिसपम	३७५५	धपमसरेनिग	३७९४	धसपनिरेगम
३७१७	धरेनिगसपम	३७५६	धगपसरेमनि	३७९५	धसपनिरेमग
३७१८	धरेनिसगपम	३७५७	धपगसरेमनि	३७९६	धगसमरेनिप
३७१९	धरेनिसपगम	३७५८	धपसगरेमनि	३७९७	धसगमरेनिप
३७२०	धरेनिसपमग	३७५९	धपसमरेगनि	३७९८	धसमगरेनिप
३७२१	धगमपरेसनि	३७६०	धपसमरेनिग	३७९९	धसमनिरेगप
३७२२	धमगपरेसनि	३७६१	धगपसरेनिम	३८००	धसमनिरेपग
३७२३	धमपगरेसनि	३७६२	धपगसरेनिम	३८०१	धगसनिरेमप
३७२४	धमपसरेगनि	३७६३	धपसगरेनिम	३८०२	धसगनिरेमप
३७२५	धमपसरेनिग	३७६४	धपसनिरेगम	३८०३	धसनिगरेमप
३७२६	धगमपरेनिस	३७६५	धपसनिरेमग	३८०४	धसनिमरेगप

३८०५ धसनिमरेपग
३८०६ धगसनिरेपम
३८०७ धसगनिरेपम
३८०८ धसनिगरेपम
३८०९ धसनिपरेगम
३८१० धसनिपरेमग
३८११ धगनिमरेपस
३८१२ धनिगमरेपस
३८१३ धनिमगरेपस
३८१४ धनिमपरेगस
३८१५ धनिमपरेसग
३८१६ धगनिपरेमस
३८१७ धनिगपरेमस
३८१८ धनिपगरेमस
३८१९ धनिपमरेगस
३८२० धनिपमरेसग
३८२१ धगनिपरेसम
३८२२ धनिगपरेसम
३८२३ धनिपगरेसम
३८२४ धनिपसरेगम
३८२५ धनिपसरेमग
३८२६ धगनिमरेसप
३८२७ धनिगमरेसप
३८२८ धनिमगरेसप
३८२९ धनिमसरेगप
३८३० धनिमसरेपग
३८३१ धगनिसरेमप
३८३२ धनिगसरेमप
३८३३ धनिसगरेमप
३८३४ धनिसमरेगप
३८३५ धनिसमरेपग
३८३६ धगनिसरेपम
३८३७ धनिगसरेपम
३८३८ धनिसगरेपम
३८३९ धनिसपरेगम
३८४० धनिसपरेमग
३८४१ धगरेमपसनि
३८४२ धमरेगपसनि
३८४३ धमरेपगसनि
३८४४ धमरेपसगनि
३८४५ धमरेपसनिग
३८४६ धगरेमपनिस
३८४७ धमरेगपनिस
३८४८ धमरेपगनिस
३८४९ धमरेपनिगस
३८५० धमरेपनिसग
३८५१ धगरेमसपनि
३८५२ धमरेगसपनि
३८५३ धमरेसगपनि
३८५४ धमरेसपगनि
३८५५ धमरेसपनिग
३८५६ धगरेमसनिप
३८५७ धमरेगसनिप
३८५८ धमरेसगनिप
३८५९ धमरेसनिगप
३८६० धमरेसनिपग
३८६१ धगरेमनिपस
३८६२ धमरेगनिपस
३८६३ धमरेनिगपस
३८६४ धमरेनिपगस
३८६५ धमरेनिपसग
३८६६ धगरेमनिसप
३८६७ धमरेगनिसप
३८६८ धमरेनिगसप
३८६९ धमरेनिसगप
३८७० धमरेनिसपग
३८७१ धगरेपमसनि
३८७२ धपरेगमसनि
३८७३ धपरेमगसनि
३८७४ धपरेमसगनि
३८७५ धपरेमसनिग
३८७६ धगरेपसमनि
३८७७ धपरेगसमनि
३८७८ धपरेसगमनि
३८७९ धपरेसमगनि
३८८० धपरेसमनिग
३८८१ धगरेपसनिम
३८८२ धपरेगसनिम
३८८३ धपरेसगनिम
३८८४ धपरेसनिगम
३८८५ धपरेसनिमग
३८८६ धगरेपमनिस
३८८७ धपरेगमनिस
३८८८ धपरेमगनिस
३८८९ धपरेमनिगस
३८९० धपरेमनिसग
३८९१ धगरेपनिमस
३८९२ धपरेगनिमस
३८९३ धपरेनिगमस
३८९४ धपरेनिमगस
३८९५ धपरेनिमसग
३८९६ धगरेपनिसम
३८९७ धपरेगनिसम
३८९८ धपरेनिगसम
३८९९ धपरेनिसगम
३९०० धपरेनिसमग
३९०१ धगरेसमपनि
३९०२ धसरेगमपनि
३९०३ धसरेमगपनि
३९०४ धसरेमपगनि
३९०५ धसरेमपनिग
३९०६ धगरेसपमनि
३९०७ धसरेगपमनि
३९०८ धसरेपगमनि
३९०९ धसरेपमगनि
३९१० धसरेपमनिग
३९११ धगरेसपनिम
३९१२ धसरेगपनिम
३९१३ धसरेपगनिम
३९१४ धसरेपनिगम
३९१५ धसरेपनिमग
३९१६ धगरेसमनिप
३९१७ धसरेगसनिप
३९१८ धसरेमगनिप
३९१९ धसरेमनिगप
३९२० धसरेमनिपग
३९२१ धगरेसनिमप

३९२२ धसरेगनिमप
३९२३ धसरेनिगमप
३९२४ धसरेनिमगप
३९२५ धसरेनिमपग
३९२६ धगरेसनिपम
३९२७ धसरेगनिपम
३९२८ धसरेनिगपम
३९२९ धसरेनिपगम
३९३० धसरेनिपमग
३९३१ धगरेनिमपस
३९३२ धनिरेगमपस
३९३३ धनिरेमगपस
३९३४ धनिरेमपगस
३९३५ धनिरेमपसग
३९३६ धगरेनिपमस
३९३७ धनिरेगपमस
३९३८ धनिरेपगमस
३९३९ धनिरेपमगस
३९४० धनिरेपमसग
३९४१ धगरेनिपसम
३९४२ धनिरेगपसम
३९४३ धनिरेपगसम
३९४४ धनिरेपसगम
३९४५ धनिरेपसमग
३९४६ धगरेनिमसप
३९४७ धनिरेगमसप
३९४८ धनिरेमगसप
३९४९ धनिरेमसगप
३९५० धनिरेमसपग
३९५१ धगरेनिसमप
३९५२ धनिरेगसमप
३९५३ धनिरेसगमप
३९५४ धनिरेसमगप
३९५५ धनिरेसमपग
३९५६ धगरेनिसपम
३९५७ धनिरेगसपम
३९५८ धनिरेसगपम
३९५९ धनिरेसपगम
३९६० धनिरेसपमग
३९६१ धगमपसरेनि
३९६२ धमगपसरेनि
३९६३ धमपगसरेनि
३९६४ धमपसगरेनि
३९६५ धमपसनिरेग
३९६६ धगमपनिरेस
३९६७ धमगपनिरेस
३९६८ धमपगनिरेस
३९६९ धमपनिगरेस
३९७० धमपनिसरेग
३९७१ धगमसपरेनि
३९७२ धमगसपरेनि
३९७३ धमसगपरेनि
३९७४ धमसपगरेनि
३९७५ धमसपनिरेग
३९७६ धगमसनिरेप
३९७७ धमगसनिरेप
३९७८ धमसगनिरेप
३९७९ धमसनिगरेप
३९८० धमसनिपरेग
३९८१ धगमनिपरेस
३९८२ धमगनिपरेस
३९८३ धमनिगपरेस
३९८४ धमनिपगरेस
३९८५ धमनिपसरेग
३९८६ धगमनिसरेप
३९८७ धमगनिसरेप
३९८८ धमनिगसरेप
३९८९ धमनिसगरेप
३९९० धमनिसपरेग
३९९१ धगपमसरेनि
३९९२ धपगमसरेनि
३९९३ धपमगसरेनि
३९९४ धपमसगरेनि
३९९५ धपमसनिरेग
३९९६ धगपसमरेनि
३९९७ धपगसमरेनि
३९९८ धपसगमरेनि
३९९९ धपसमगरेनि
४००० धपसमनिरेग
४००१ धगपसनिरेम
४००२ धपगसनिरेम
४००३ धपसगनिरेम
४००४ धपसनिगरेम
४००५ धपसनिमरेग
४००६ धगपमनिरेस
४००७ धपगमनिरेस
४००८ धपमगनिरेस
४००९ धपमनिगरेस
४०१० धपमनिसरेग
४०११ धगपनिमरेस
४०१२ धपगनिमरेस
४०१३ धपनिगमरेस
४०१४ धपनिमगरेस
४०१५ धपनिमसरेग
४०१६ धगपनिरेसम
४०१७ धपगनिसरेम
४०१८ धपनिगसरेम
४०१९ धपनिसगरेम
४०२० धपनिसमरेग
४०२१ धगसमपरेनि
४०२२ धसगमपरेनि
४०२३ धसमगपरेनि
४०२४ धसमपगरेनि
४०२५ धसमपनिरेग
४०२६ धगसपमरेनि
४०२७ धसगपमरेनि
४०२८ धसपगमरेनि
४०२९ धसपमगरेनि
४०३० धसपमनिरेग
४०३१ धगसपनिरेम
४०३२ धसगपनिरेम
४०३३ धसपगनिरेम
४०३४ धसपनिगरेम
४०३५ धसपनिमरेग
४०३६ धगसमनिरेप
४०३७ धसगमनिरेप
४०३८ धसमगनिरेप

४०३९ धसमनिगरेप
४०४० धसमनिपरेग
४०४१ धगसनिमरेप
४०४२ धसगनिमरेप
४०४३ धसनिगमरेप
४०४४ धसनिमगरेप
४०४५ धसनिमपरेग
४०४६ धगसनिपरेम
४०४७ धसगनिपरेम
४०४८ धसनिगपरेम
४०४९ धसनिपगरेम
४०५० धसनिपमरेग
४०५१ धगनिमपरेस
४०५२ धनिगमपरेस
४०५३ धनिमगपरेस
४०५४ धनिमपगरेस
४०५५ धनिमपसरेग
४०५६ धगनिपमरेस
४०५७ धनिगपमरेस
४०५८ धनिपगमरेस
४०५९ धनिपमगरेस
४०६० धनिपमसरेग
४०६१ धगनिपसरेम
४०६२ धनिगपसरेम
४०६३ धनिपगसरेम
४०६४ धनिपसगरेम
४०६५ धनिपसमरेग
४०६६ धगनिमसरेप
४०६७ धनिगमसरेप
४०६८ धनिमगसरेप
४०६९ धनिमसगरेप
४०७० धनिमसपरेग
४०७१ धगनिसमरेप
४०७२ धनिगसमरेप
४०७३ धनिसगमरेप
४०७४ धनिसमगरेप
४०७५ धनिसमपरेग
४०७६ धगनिसपरेम
४०७७ धनिगसपरेम
४०७८ धनिसगपरेम
४०७९ धनिसपगरेम
४०८० धनिसपमरेग
४०८१ धगमरेपसनि
४०८२ धमगरेपसनि
४०८३ धमपरेगसनि
४०८४ धमपरेसगनि
४०८५ धमपरेसनिग
४०८६ धगमरेपनिस
४०८७ धमगरेपनिस
४०८८ धमपरेगनिस
४०८९ धमपरेनिगस
४०९० धमपरेनिसग
४०९१ धगमरेसपनि
४०९२ धमगरेसपनि
४०९३ धमसरेगपनि
४०९४ धमसरेपगनि
४०९५ धमसरेपनिग
४०९६ धगमरेसनिप
४०९७ धमगरेसनिप
४०९८ धमसरेगनिप
४०९९ धमसरेनिगप
४१०० धमसरेनिपग
४१०१ धगमरेनिपस
४१०२ धमगरेनिपस
४१०३ धमनिरेगपस
४१०४ धमनिरेपगस
४१०५ धमनिरेपसग
४१०६ धगमरेनिसप
४१०७ धमगरेनिसप
४१०८ धमनिरेगसप
४१०९ धमनिरेसगप
४११० धमनिरेसपग
४१११ धगपरेमसनि
४११२ धपगरेमसनि
४११३ धपमरेगसनि
४११४ धपमरेसगनि
४११५ धपमरेसनिग
४११६ धगपरेसमनि
४११७ धपगरेसमनि
४११८ धपसरेगमनि
४११९ धपसरेमगनि
४१२० धपसरेमनिग
४१२१ धगपरेसनिम
४१२२ धपगरेसनिम
४१२३ धपसरेगनिम
४१२४ धपसरेनिगम
४१२५ धपसरेनिमग
४१२६ धगपरेमनिस
४१२७ धपगरेमनिस
४१२८ धपमरेगनिस
४१२९ धपमरेनिगस
४१३० धपमरेनिसग
४१३१ धगपरेनिमस
४१३२ धपगरेनिमस
४१३३ धपनिरेगमस
४१३४ धपनिरेमगस
४१३५ धपनिरेमसग
४१३६ धगपरेनिसम
४१३७ धपगरेनिसम
४१३८ धपरेनिगसम
४१३९ धपनिरेसगम
४१४० धपनिरेसमग
४१४१ धगसरेमपनि
४१४२ धसगरेमपनि
४१४३ धसमरेगपनि
४१४४ धसमरेपगनि
४१४५ धसमरेपनिग
४१४६ धगसरेपमनि
४१४७ धसगरेपमनि
४१४८ धसपरेगमनि
४१४९ धसपरेमगनि
४१५० धसपरेमनिग
४१५१ धगसरेपनिम
४१५२ धसगरेपनिम
४१५३ धसपरेगनिम
४१५४ धसपरेनिगम
४१५५ धसपरेनिमग

४१५६	धगसरेमनिप	४१९५	धनिसरेमपग	४२३४	धपमसगनिरे
४१५७	धसगरेमनिप	४१९६	धगनिरेसपम	४२३५	धपमसनिगरे
४१५८	धसमरेगनिप	४१९७	धनिगरेसपम	४२३६	धगपसमनिरे
४१५९	धसमरेनिगप	४१९८	धनिसरेगपम	४२३७	धपगसमनिरे
४१६०	धसमरेनिपग	४१९९	धनिसरेपगम	४२३८	धपसगमनिरे
४१६१	धगसरेनिमप	४२००	धनिसरेपमग	४२३९	धपसमगनिरे
४१६२	धसगरेनिमप	४२०१	धगमपसनिरे	४२४०	धपसमनिगरे
४१६३	धसनिरेगमप	४२०२	धमगपसनिरे	४२४१	धगपसनिमरे
४१६४	धसनिरेमगप	४२०३	धमपगसनिरे	४२४२	धपगसनिमरे
४१६५	धसरेनिमपग	४२०४	धमपसगनिरे	४२४३	धपसगनिमरे
४१६६	धगसरेनिपम	४२०५	धमपसनिगरे	४२४४	धपसनिगमरे
४१६७	धसगरेनिपम	४२०६	धगमपनिसरे	४२४५	धपसनिमगरे
४१६८	धसनिरेगपम	४२०७	धमगपनिसरे	४२४६	धगपमनिसरे
४१६९	धसनिरेपगम	४२०८	धमपगनिसरे	४२४७	धपगमनिसरे
४१७०	धसनिरेपमग	४२०९	धमपनिगसरे	४२४८	धपमगनिसरे
४१७१	धगनिरेमपस	४२१०	धमपनिसगरे	४२४९	धपमनिगसरे
४१७२	धनिगरेमपस	४२११	धगमसपनिरे	४२५०	धपमनिसगरे
४१७३	धनिमरेगपस	४२१२	धमगसपनिरे	४२५१	धगपनिमसरे
४१७४	धनिमरेपगस	४२१३	धमसगपनिरे	४२५२	धपगनिमसरे
४१७५	धनिमरेपसग	४२१४	धमसपगनिरे	४२५३	धपनिगमसरे
४१७६	धगनिरेपमस	४२१५	धमसपनिगरे	४२५४	धपनिमगसरे
४१७७	धनिगरेपमस	४२१६	धगमसनिपरे	४२५५	धपनिमसगरे
४१७८	धनिपरेगमस	४२१७	धमगसनिपरे	४२५६	धगपनिसमरे
४१७९	धनिपरेमगस	४२१८	धमसगनिपरे	४२५७	धपगनिसमरे
४१८०	धनिपरेमसग	४२१९	धमसनिगपरे	४२५८	धपनिगमसरे
४१८१	धगनिरेपसम	४२२०	धमसनिपगरे	४२५९	धपनिसगमरे
४१८२	धनिगरेपसम	४२२१	धगमनिपसरे	४२६०	धपनिसमगरे
४१८३	धनिपरेगसम	४२२२	धमगनिपसरे	४२६१	धगसमपनिरे
४१८४	धनिपरेसगम	४२२३	धमनिगपसरे	४२६२	धसगमपनिरे
४१८५	धनिपरेसमग	४२२४	धमनिपगसरे	४२६३	धसमगपनिरे
४१८६	धगनिरेमसप	४२२५	धमनिपसगरे	४२६४	धसमपगनिरे
४१८७	धनिगरेमसप	४२२६	धगमनिसपरे	४२६५	धसमपनिगरे
४१८८	धनिमरेगसप	४२२७	धमगनिसपरे	४२६६	धगसपमनिरे
४१८९	धनिमरेसगप	४२२८	धमनिगसपरे	४२६७	धसगपमनिरे
४१९०	धनिमरेसपग	४२२९	धमनिसगपरे	४२६८	धसपगमनिरे
४१९१	धगनिरेसमप	४२३०	धमनिसपगरे	४२६९	धसपमगनिरे
४१९२	धनिगरेसमप	४२३१	धगपमसनिरे	४२७०	धसपमनिगरे
४१९३	धनिसरेगमप	४२३२	धपगमसनिरे	४२७१	धगसपनिमरे
४१९४	धनिसरेमगप	४२३३	धपमगसनिरे	४२७२	धसगपनिमरे

४२७३ धसपगनिमरे
४२७४ धसपनिगमरे
४२७५ धसपनिमगरे
४२७६ धगसमनिपरे
४२७७ धसगमनिपरे
४२७८ धसमगनिपरे
४२७९ धसमनिगपरे
४२८० धसमनिपगरे
४२८१ धगसनिमपरे
४२८२ धसगनिमपरे
४२८३ धसनिगमपरे
४२८४ धसनिमगपरे
४२८५ धसनिमपगरे
४२८६ धगसनिपमरे
४२८७ धसगनिपमरे
४२८८ धसनिगपमरे
४२८९ धसनिपगमरे
४२९० धसनिपमगरे
४२९१ धगनिमपसरे
४२९२ धनिगमपसरे
४२९३ धनिमगपसरे
४२९४ धनिमपगसरे
४२९५ धनिमपसगरे
४२९६ धगनिपमसरे
४२९७ धनिगपमसरे
४२९८ धनिपगमसरे
४२९९ धनिपमगसरे
४३०० धनिपमसगरे
४३०१ धगनिपसमरे
४३०२ धनिगपसमरे
४३०३ धनिपगसमरे
४३०४ धनिपसगमरे
४३०५ धनिपसमगरे
४३०६ धगनिमसपरे
४३०७ धनिगमसपरे
४३०८ धनिमगसपरे
४३०९ धनिमसगपरे
४३१० धनिमसपगरे
४३११ धगनिसमपरे
४३१२ धनिगसमपरे
४३१३ धनिसगमपरे
४३१४ धनिसमगपरे
४३१५ धनिसमपगरे
४३१६ धगनिसपमरे
४३१७ धनिगसपमरे
४३१८ धनिसगपमरे
४३१९ धनिसपगमरे
४३२० धनिसपमगरे

नि

४३२१ निरेगमपधस
४३२२ निरेमगपधस
४३२३ निरेमपगधस
४३२४ निरेमपधगस
४३२५ निरेमपधसग
४३२६ निरेगमपसध
४३२७ निरेमगपसध
४३२८ निरेमपगसध
४३२९ निरेमपसगध
४३३० निरेमपसधग
४३३१ निरेगमधपस
४३३२ निरेमगधपस
४३३३ निरेमधगपस
४३३४ निरेमधपगस
४३३५ निरेमधपसग
४३३६ निरेगमधसप
४३३७ निरेमगधसप
४३३८ निरेमधगसप
४३३९ निरेमधसगप
४३४० निरेमधसपग
४३४१ निरेगमसपध
४३४२ निरेमगसपध
४३४३ निरेमसगपध
४३४४ निरेमसपगध
४३४५ निरेमसपधग
४३४६ निरेगमसधप
४३४७ निरेमगसधप
४३४८ निरेमसगधप
४३४९ निरेमसधगप
४३५० निरेमसधपग
४३५१ निरेगपमधस
४३५२ निरेपगमधस
४३५३ निरेपमगधस
४३५४ निरेपमधगस
४३५५ निरेपमधसग
४३५६ निरेगपधमस
४३५७ निरेपगधमस
४३५८ निरेपधगमस
४३५९ निरेपधमगस
४३६० निरेपधमसग
४३६१ निरेगपधसम
४३६२ निरेपगधसम
४३६३ निरेपधगसम
४३६४ निरेपधसगम
४३६५ निरेपधसमग
४३६६ निरेगपमसध
४३६७ निरेपगमसध
४३६८ निरेपमगसध
४३६९ निरेपमसगध
४३७० निरेपमसधग
४३७१ निरेगपसमध
४३७२ निरेपगसमध
४३७३ निरेपसगमध
४३७४ निरेपसमगध
४३७५ निरेपसमधग
४३७६ निरेगपसधम
४३७७ निरेपगसधम
४३७८ निरेपसगधम
४३७९ निरेपसधगम
४३८० निरेपसधमग

४३८१	निरेगधमपस	४४२०	निरेसपमधग	४४५९	निमधसरेगप
४३८२	निरेधगमपस	४४२१	निरेगसपधम	४४६०	निमधसरेपग
४३८३	निरेधमगपस	४४२२	निरेसगपधम	४४६१	निगमसरेपध
४३८४	निरेधमपगस	४४२३	निरेसपगधम	४४६२	निमगसरेपध
४३८५	निरेधमपसग	४४२४	निरेसपधगम	४४६३	निमसगरेपध
४३८६	निरेगधपमस	४४२५	निरेसपधमग	४४६४	निमसपरेगध
४३८७	निरेधगपमस	४४२६	निरेगसमधप	४४६५	निमसपरेधग
४३८८	निरेधपगमस	४४२७	निरेसगमधप	४४६६	निगमसरेधप
४३८९	निरेधपमगस	४४२८	निरेसमगधप	४४६७	निमगसरेधप
४३९०	निरेधपमसग	४४२९	निरेसमधगप	४४६८	निमसगरेधप
४३९१	निरेगधपसम	४४३०	निरेसमधपग	४४६९	निमसधरेगप
४३९२	निरेधगपसम •	४४३१	निरेगसधमप	४४७०	निमसधरेपग
४३९३	निरेधपगसम	४४३२	निरेसगधमप	४४७१	निगपमरेधस
४३९४	निरेधपसगम	४४३३	निरेसधगमप	४४७२	निपगमरेधस
४३९५	निरेधपसमग	४४३४	निरेसधमगप	४४७३	निपमगरेधस
४३९६	निरेगधमसप	४४३५	निरेसधमपग	४४७४	निपमधरेगस
४३९७	निरेधगमसप	४४३६	निरेगसधपम	४४७५	निपमधरेसग
४३९८	निरेधमगसप	४४३७	निरेसगधपम	४४७६	निगपधरेमस
४३९९	निरेधमसगप	४४३८	निरेसधगपम	४४७७	निपगधरेमस
४४००	निरेधमसपग	४४३९	निरेसधपगम	४४७८	निपधगरेमस
४४०१	निरेगधसमप	४४४०	निरेसधपमग	४४७९	निपधमरेगस
४४०२	निरेधगसमप	४४४१	निगमपरेधस	४४८०	निपधमरेसग
४४०३	निरेधसगमप	४४४२	निमगपरेधस	४४८१	निगपधरेसम
४४०४	निरेधसमगप	४४४३	निमपगरेधस	४४८२	निपगधरेसम
४४०५	निरेधसमपग	४४४४	निमपधरेगस	४४८३	निपधगरेसम
४४०६	निरेगधसपम	४४४५	निमपधरेसग	४४८४	निपधसरेगम
४४०७	निरेधगसपम	४४४६	निगमपरेसध	४४८५	निपधसरेमग
४४०८	निरेधसगपम	४४४७	निमगपरेसध	४४८६	निगपमरेसध
४४०९	निरेधसपगम	४४४८	निमपगरेसध	४४८७	निपगमरेसध
४४१०	निरेधसपमग	४४४९	निमपसरेगध	४४८८	निपमगरेसध
४४११	निरेगसमपध	४४५०	निमपसरेधग	४४८९	निपमसरेगध
४४१२	निरेसगमपध	४४५१	निगमधरेपस	४४९०	निपमसरेधग
४४१३	निरेसमगपध	४४५२	निमगधरेपस	४४९१	निगपसरेमध
४४१४	निरेसमपगध	४४५३	निमधगरेपस	४४९२	निपगसरेमध
४४१५	निरेसमपधग	४४५४	निमधपरेगस	४४९३	निपसगरेमध
४४१६	निरेगसपमध	४४५५	निमधपरेसग	४४९४	निपसमरेगध
४४१७	निरेसगपमध	४४५६	निगमधरेसप	४४९५	निपसमरेधग
४४१८	निरेसपगमध	४४५७	निमगधरेसप	४४९६	निगपसरेधम
४४१९	निरेसपमगध	४४५८	निमधगरेसप	४४९७	निपगसरेधम

४४९८ निपसगरेधम
४४९९ निपसधरेगम
४५०० निपसधरेमग
४५०१ निगधमरेपस
४५०२ निधगमरेपस
४५०३ निधमगरेपस
४५०४ निधमपरेगस
४५०५ निधमपरेसग
४५०६ निगधपरेमस
४५०७ निधगपरेमस
४५०८ निधपगरेमस
४५०९ निधपमरेगस
४५१० निधपमरेसग
४५११ निगधपरेसम
४५१२ निधगपरेसम
४५१३ निधपगरेसम
४५१४ निधपसरेगम
४५१५ निधपसरेमग
४५१६ निगधमरेसप
४५१७ निधगमरेसप
४५१८ निधमगरेसप
४५१९ निधमसरेगप
४५२० निधमसरेपग
४५२१ निगधसरेमप
४५२२ निधगसरेमप
४५२३ निधसगरेमप
४५२४ निधसमरेगप
४५२५ निधसमरेपग
४५२६ निगधसरेपम
४५२७ निधगसरेपम
४५२८ निधसगरेपम
४५२९ निधसपरेगम
४५३० निधसपरेमग
४५३१ निगसमरेपध
४५३२ निसगमरेपध
४५३३ निसमगरेपध
४५३४ निसमपरेगध
४५३५ निसमपरेधग
४५३६ निगसपरेमध
४५३७ निसगपरेमध
४५३८ निसपगरेमध
४५३९ निसपमरेगध
४५४० निसपमरेधग
४५४१ निगसपरेधम
४५४२ निसगपरेधम
४५४३ निसपगरेधम
४५४४ निसपधरेगम
४५४५ निसपधरेमग
४५४६ निगसमरेधप
४५४७ निसगमरेधप
४५४८ निसमगरेधप
४५४९ निसमधरेगप
४५५० निसमधरेपग
४५५१ निगसधरेमप
४५५२ निसगधरेमप
४५५३ निसधगरेमप
४५५४ निसधमरेगप
४५५५ निसधमरेपग
४५५६ निगसधरेपम
४५५७ निसगधरेपम
४५५८ निसधगरेपम
४५५९ निसधपरेगम
४५६० निसधपरेमग
४५६१ निगरेमपधस
४५६२ निमरेगपधस
४५६३ निमरेपगधस
४५६४ निमरेपधगस
४५६५ निमरेपधसग
४५६६ निगरेमपसध
४५६७ निमरेगपसध
४५६८ निमरेपगसध
४५६९ निमरेपसगध
४५७० निमरेपसधग
४५७१ निगरेमधपस
४५७२ निमरेगधपस
४५७३ निमरेधगपस
४५७४ निमरेधपगस
४५७५ निमरेधपसग
४५७६ निगरेमधसप
४५७७ निमरेगधसप
४५७८ निमरेधगसप
४५७९ निमरेधसगप
४५८० निमरेधसपग
४५८१ निगरेमसपध
४५८२ निमरेगसपध
४५८३ निमरेसगपध
४५८४ निमरेसपगध
४५८५ निमरेसपधग
४५८६ निगरेमसधप
४५८७ निमरेगसधप
४५८८ निमरेसगधप
४५८९ निमरेसधगप
४५९० निमरेसधपग
४५९१ निगरेपमधस
४५९२ निपरेगमधस
४५९३ निपरेमगधस
४५९४ निपरेमधगस
४५९५ निपरेमधसग
४५९६ निगरेपधमस
४५९७ निपरेगधमस
४५९८ निपरेधगमस
४५९९ निपरेधमगस
४६०० निपरेधमसग
४६०१ निगरेपधसम
४६०२ निपरेगधसम
४६०३ निपरेधगसम
४६०४ निपरेधसगम
४६०५ निपरेधसमग
४६०६ निगरेपमसध
४६०७ निपरेगमसध
४६०८ निपरेमगसध
४६०९ निपरेमसगध
४६१० निपरेमसधग
४६११ निगरेपसमध
४६१२ निपरेगसमध
४६१३ निपरेसगमध
४६१४ निपरेसमगध

४६१५	निपरेसमधग	४६५४	निसरेमपगध	४६९३	निमधगपरेस
४६१६	निगरेपसधम	४६५५	निसरेमपधग	४६९४	निमधपगरेस
४६१७	निपरेगसधम	४६५६	निगरेसपमध	४६९५	निमधपसरेग
४६१८	निपरेसगधम	४६५७	निसरेगपमध	४६९६	निगमधसरेप
४६१९	निपरेसधगम	४६५८	निसरेपगमध	४६९७	निमगधसरेप
४६२०	निपरेसधमग	४६५९	निसरेपमगध	४६९८	निमधगसरेप
४६२१	निगरेधमपस	४६६०	निसरेपमधग	४६९९	निमधसगरेप
४६२२	निधरेगमपस	४६६१	निगरेसपधम	४७००	निमधसपरेग
४६२३	निधरेमगपस	४६६२	निसरेगपधम	४७०१	निगमसपरेध
४६२४	निधरेमपगस	४६६३	निसरेपगधम	४७०२	निमगसपरेध
४६२५	निधरेमपसग	४६६४	निसरेपधगम	४७०३	निमसगपरेध
४६२६	निगरेधपमस	४६६५	निसरेपधमग	४७०४	निमसपगरेध
४६२७	निधरेगपमस	४६६६	निगरेसमधप	४७०५	निमसपधरेग
४६२८	निधरेपगमस	४६६७	निसरेगमधप	४७०६	निगमसधरेप
४६२९	निधरेपमगस	४६६८	निसरेसगधप	४७०७	निमगसधरेप
४६३०	निधरेपमसग	४६६९	निसरेमधगप	४७०८	निमसगधरेप
४६३१	निगरेधपसम	४६७०	निसरेसधपग	४७०९	निमसधगरेप
४६३२	निधरेगपसम	४६७१	निगरेसधमप	४७१०	निमसधपरेग
४६३३	निधरेपगसम	४६७२	निसरेगधमप	४७११	निगपमधरेस
४६३४	निधरेपसगम	४६७३	निसरेधगमप	४७१२	निपगमधरेस
४६३५	निधरेपसमग	४६७४	निसरेधमगप	४७१३	निपमगधरेस
४६३६	निगरेधमसप	४६७५	निसरेधमपग	४७१४	निपमधगरेस
४६३७	निधरेगमसप	४६७६	निगरेसधपम	४७१५	निपमधसरेग
४६३८	निधरेमगसप	४६७७	निसरेगधपम	४७१६	निगपधमरेस
४६३९	निधरेमसगप	४६७८	निसरेधगपम	४७१७	निपगधमरेस
४६४०	निधरेमसपग	४६७९	निसरेधपगम	४७१८	निपधगमरेस
४६४१	निगरेधसमप	४६८०	निसरेधपमग	४७१९	निपधमगरेस
४६४२	निधरेगसमप	४६८१	निगमपधरेस	४७२०	निपधमसरेग
४६४३	निधरेसगमप	४६८२	निमगपधरेस	४७२१	निगपधसरेम
४६४४	निधरेसमगप	४६८३	निमपगधरेस	४७२२	निपगधसरेम
४६४५	निधरेसमपग	४६८४	निमपधगरेस	४७२३	निपधगसरेम
४६४६	निगरेधसपम	४६८५	निमपधसरेग	४७२४	निपधसगरेम
४६४७	निधरेगसपम	४६८६	निगमपसरेध	४७२५	निपधसमरेग
४६४८	निधरेसगपम	४६८७	निमगपसरेध	४७२६	निगपमसरेध
४६४९	निधरेसपगम	४६८८	निमपगसरेध	४७२७	निपगमसरेध
४६५०	निधरेसपमग	४६८९	निमपसगरेध	४७२८	निपमगसरेध
४६५१	निगरेसमपध	४६९०	निमपसधरेग	४७२९	निपमसगरेध
४६५२	निसरेगमपध	४६९१	निगमसधपरेस	४७३०	निपमसधरेग
४६५३	निसरेमगपध	४६९२	निमगधपरेस	४७३१	निगपसमरेध

४७३२	निपगसमरेध	४७७१	निगसमपरेध	४८१०	निमपरेसधग
४७३३	निपसगमरेध	४७७२	निसगमपरेध	४८११	निगमरेधपस
४७३४	निपसमगरेध	४७७३	निसमगपरेध	४८१२	निमगरेधपस
४७३५	निपसमधरेग	४७७४	निसमपगरेध	४८१३	निमधरेगपस
४७३६	निगपसधरेम	४७७५	निसमपधरेग	४८१४	निमधरेपगस
४७३७	निपगसधरेम	४७७६	निगसपमरेध	४८१५	निमधरेपसग
४७३८	निपसगधरेम	४७७७	निसगपमरेध	४८१६	निगमरेधसप
४७३९	निपसधगरेम	४७७८	निसपगमरेध	४८१७	निमगरेधसप
४७४०	निपसधमरेग	४७७९	निसपमगरेध	४८१८	निमधरेगसप
४७४१	निगधमपरेस	४७८०	निसपमधरेग	४८१९	निमधरेसगप
४७४२	निधगमपरेस	४७८१	निगसपधरेम	४८२०	निमधरेसपग
४७४३	निधमगपरेस	४७८२	निसगपधरेम	४८२१	निगमरेसपध
४७४४	निधमपगरेस	४७८३	निसपगधरेम	४८२२	निमगरेसपध
४७४५	निधमपसरेग	४७८४	निसपधगरेम	४८२३	निमसरेगपध
४७४६	निगधपमरेस	४७८५	निसपधसरेग	४८२४	निमसरेपगध
४७४७	निधगपमरेस	४७८६	निगसमधरेप	४८२५	निमसरेपधग
४७४८	निधपगमरेस	४७८७	निसगमधरेप	४८२६	निगमरेसधप
४७४९	निधपमगरेस	४७८८	निसमगधरेप	४८२७	निमगरेसधप
४७५०	निधपमसरेग	४७८९	निसमधगरेप	४८२८	निमसरेगधप
४७५१	निगधपसरेम	४७९०	निसमधपरेग	४८२९	निमसरेधगप
४७५२	निधगपसरेम	४७९१	निगसधमरेप	४८३०	निमसरेधपग
४७५३	निधपगसरेम	४७९२	निसगधमरेप	४८३१	निगपरेमधस
४७५४	निधपसगरेम	४७९३	निसधगमरेप	४८३२	निपगरेमधस
४७५५	निधपसमरेग	४७९४	निसधमगरेप	४८३३	निपमरेगधस
४७५६	निगधमसरेप	४७९५	निसधमपरेग	४८३४	निपमरेधगस
४७५७	निधगमसरेप	४७९६	निगसधपरेम	४८३५	निपमरेधसग
४७५८	निधमगसरेप	४७९७	निसगधपरेम	४८३६	निगपरेधमस
४७५९	निधमसगरेप	४७९८	निसधगपरेम	४८३७	निपगरेधमस
४७६०	निधमसपरेग	४७९९	निसधपगरेम	४८३८	निपधरेगमस
४७६१	निगधसमरेप	४८००	निसधपमरेग	४८३९	निपधरेमगस
४७६२	निधगसमरेप	४८०१	निगमरेपधस	४८४०	निपधरेमसग
४७६३	निधसगमरेप	४८०२	निमगरेपधस	४८४१	निगपरेधसम
४७६४	निधसमगरेप	४८०३	निमपरेगधस	४८४२	निपगरेधसम
४७६५	निधसमपरेग	४८०४	निमपरेधगस	४८४३	निपधरेगसम
४७६६	निगधसपरेम	४८०५	निमपरेधसग	४८४४	निपधरेसगम
४७६७	निधगसपरेम	४८०६	निगमरेपसध	४८४५	निपधरेसमग
४७६८	निधसगपरेम	४८०७	निमगरेपसध	४८४६	निगपरेमसध
४७६९	निधसपगरेम	४८०८	निमपरेगसध	४८४७	निपगरेमसध
४७७०	निधसपमरेग	४८०९	निमपरेसगध	४८४८	निपमरेगसध

४८४९	निपमरेसगध	४८८८	निधसरेगपम	४९२७	निमगपसधरे
४८५०	निपमरेसधग	४८८९	निधसरेपगम	४९२८	निमपगसधरे
४८५१	निगपरेसमध	४८९०	निधसरेपमग	४९२९	निमपसगधरे
४८५२	निपगरेसमध	४८९१	निगसरेमपध	४९३०	निमपसधगरे
४८५३	निपसरेगमध	४८९२	निसगरेमपध	४९३१	निगमधपसरे
४८५४	निपसरेमगध	४८९३	निसमरेगपध	४९३२	निमगधपसरे
४८५५	निपसरेमधग	४८९४	निसमरेपगध	४९३३	निमधगपसरे
४८५६	निगपरेसधम	४८९५	निसमरेपधग	४९३४	निमधपगसरे
४८५७	निपगरेसधम	४८९६	निगसरेपमध	४९३५	निमधपसगरे
४८५८	निपसरेगधम	४८९७	निसगरेपमध	४९३६	निगमधसपरे
४८५९	निपसरेधगम	४८९८	निसपरेगमध	४९३७	निगमधसपरे
४८६०	निपसरेधमग	४८९९	निसपरेमगध	४९३८	निमधगसपरे
४८६१	निगधरेमपस	४९००	निसपरेधमग	४९३९	निमधसगपरे
४८६२	निधगरेमपस	४९०१	निगसरेपधम	४९४०	निमधसपगरे
४८६३	निधमरेगपस	४९०२	निसगरेपधम	४९४१	निगमसपधरे
४८६४	निधमरेपगस	४९०३	निसपरेगधम	४९४२	निमगसपधरे
४८६५	निधमरेपसग	४९०४	निसपरेधगम	४९४३	निमसगपधरे
४८६६	निगधरेपमस	४९०५	निसपरेधमग	४९४४	निमसपगधरे
४८६७	निधगरेपमस	४९०६	निगसरेमधप	४९४५	निमसपधगरे
४८६८	निधपरेगमस	४९०७	निसगरेमधप	४९४६	निगमसधपरे
४८६९	निधपरेमगस	४९०८	निसमरेगधप	४९४७	निमगसधपरे
४८७०	निधपरेमसग	४९०९	निसमरेधगप	४९४८	निमसगधपरे
४८७१	निगधरेपसम	४९१०	निसमरेधपग	४९४९	निमसधगपरे
४८७२	निधगरेपसम	४९११	निगसरेधमप	४९५०	निमसधपगरे
४८७३	निधपरेगसम	४९१२	निसगरेधमप	४९५१	निगपमधसरे
४८७४	निधपरेसगम	४९१३	निसधरेगमप	४९५२	निपगमधसरे
४८७५	निधपरेसमग	४९१४	निसधरेमगप	४९५३	निपमगधसरे
४८७६	निगधरेमसप	४९१५	निसधरेमपग	४९५४	निपमधगसरे
४८७७	निधगरेमसप	४९१६	निगसरेधपम	४९५५	निपमधसगरे
४८७८	निधमरेगसप	४९१७	निसगरेधमप	४९५६	निगपधमसरे
४८७९	निधमरेसगप	४९१८	निसधरेगपम	४९५७	निपगधमसरे
४८८०	निधमरेसपग	४९१९	निसधरेपगम	४९५८	निपधगमसरे
४८८१	निगधरेसमप	४९२०	निसधरेपमग	४९५९	निपधमगसरे
४८८२	निधगरेसमप	४८२१	निगमपधसरे	४९६०	निपधमसगरे
४८८३	निधसरेगमप	४९२२	निमगपधसरे	४९६१	निगपधसमरे
४८८४	निसधरेगमप	४९२३	निमपगधसरे	४९६२	निपगधसमरे
४८८५	निधसरेमपग	४९२४	निमपधगसरे	४९६३	निपधगसमरे
४८८६	निगधरेसपम	४९२५	निमपधसगरे	४९६४	निपधसगमरे
४८८७	निधगरेसपम	४९२६	निगमपसधरे	४९६५	निपधसमगरे

४९६६	निगपमसधरे	४९९१	निगधपसमरे	५०१६	निगसपमधरे
४९६७	निपगमसधरे	४९९२	निधगपसमरे	५०१७	निसगपमधरे
४९६८	निपमगसधरे	४९९३	निधपगसमरे	५०१८	निसपगमधरे
४९६९	निपमसगधरे	४९९४	निधपसगमरे	५०१९	निसपमगधरे
४९७०	निपमसधगरे	४९९५	निधपसमगरे	५०२०	निसपमधगरे
४९७१	निगपसमधरे	४९९६	निगधमसपरे	५०२१	निगसपधमरे
४९७२	निपगसमधरे	४९९७	निधगमसपरे	५०२२	निसगपधमरे
४९७३	निपसगमधरे	४९९८	निधमगसपरे	५०२३	निसपगधमरे
४९७४	निपसमगधरे	४९९९	निधमसगपरे	५०२४	निसपधगमरे
४९७५	निपसमधगरे	५०००	निधमसपगरे	५०२५	निसपधमगरे
४९७६	निगपसधमरे	५००१	निगधसमपरे	५०२६	निगसमधपरे
४९७७	निपगसधमरे	५००२	निधगसमपरे	५०२७	निसगमधपरे
४९७८	निपसगधमरे	५००३	निधसगमपरे	५०२८	निसमगधपरे
४९७९	निपसधगमरे	५००४	निधसमगपरे	५०२९	निसमधगपरे
४९८०	निपसधमगरे	५००५	निधसमपगरे	५०३०	निसमधपगरे
४९८१	निगधमपसरे	५००६	निगधसपमरे	५०३१	निगसधमपरे
४९८२	निधगमपसरे	५००७	निधगसपमरे	५०३२	निसगधमपरे
४९८३	निधमगपसरे	५००८	निधसगपमरे	५०३३	निसधगमपरे
४९८४	निधमपगसरे	५००९	निधसपगमरे	५०३४	निसधमगपरे
४९८५	निधमपसगरे	५०१०	निधसपमगरे	५०३५	निसधमपगरे
४९८६	निगधपमसरे	५०११	निगसमपधरे	५०३६	निगसधपमरे
४९८७	निधगपमसरे	५०१२	निसगमपधरे	५०३७	निसगधपमरे
४९८८	निधपगमसरे	५०१३	निसमगपधरे	५०३८	निसधगपमरे
४९८९	निधपमगसरे	५०१४	निसमपगधरे	५०३९	निसधपगमरे
४९९०	निधपमसगरे	५०१५	निसमपधगरे	५०४०	निसधपमगरे

॥ इति सात स्वरों की तान के प्रस्तारभेद संपूर्णम् ॥



स्वर प्रस्तार से पल्टे बनाने की विधि



ऊपर स्वर प्रस्तार मय गणित के बताया जा चुका है, लीजिये अब आपको वह तरकीब बताई जाती है, जिसके द्वारा आप स्वयं, लाखो प्रकार के अलंकृत पल्टे तैयार कर सकते है। यह रीति नीचे लिखे अनुसार बहुत ध्यान पूर्वक पढ़ने और मनन करने से मालूम होगी। पल्टे बनाने का यह गूढ़ नियम अन्य किसी सङ्गीत ग्रन्थ मे आपको नहीं मिलेगा, इस लेख से आपको मालूम हो जायगा कि सङ्गीत कला किस प्रकार अथाह है।

केवल एक स्वर प्रस्तार ही हजारों पल्टे बनाने की रीतिः—

सरे और रेस प्रस्तारों से पल्टे बनाने के लिये सरे प्रस्तार को सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां, मे एक-एक स्वर पीछे छोड़कर आगे आरोह की तरफ बढ़ते जाना चाहिये, इसी प्रकार फिर एक-एक स्वर आगे छोड़कर अवरोह करना चाहिये।

जैसे—सारे, रेग, गम, मप, पध, धनि, निसां। इस प्रकार आरोह करें।

सानि, निध, धप, पम, मग, गरे, रेसा। अवरोह इस प्रकार करें।
अब इसी पल्टे को दूसरी कल्पनानुसार जैसेः—

रेसा, गरे, मग, पम, धप, निध, सांनि। आरोह—
निसां, धनि, पध, मप, गम, रेग, सारे॥ अवरोह—

फिर 'सारे' इन दो स्वरो को भिन्न-भिन्न कल्पनानुसार अलंकृत करके पुनः पल्टों को अलकृत करें। जैसे—

(१) सारेरेरेरे, रेगगगग, गममममम, मपपपप, पधधधध, धनिनिनिनि, निसांसांसांसां।
(२) रेऽरेसासासा, गऽगरेरेरे, मऽमगगग, पऽपममम।
(३) साऽरेऽरेंरें, रेऽगऽगग, गऽमऽमम, मऽपऽपप।
(४) सारेरेरे, रेगगग, गममम, मपपप, पधधध।
(५) सारेरे, रेगग, गमम, मपप, पधध, धनिनि, निसांसां।
(६) सासारेरे, रेरेगग, गगमम, ममपप, पपधध, धधनिनि, निनिसांसा।
(७) सासासासारेरेरेरे, रेरेरेरेगगगग, गगगगमममम, ममममपपपप।
(८) रेरेसासा, गगरेरे, ममगग, पपमम, धधपप, निनिधध, सांसांनिनि।
(९) रेरेरेरेसाऽसा, गगगगरेऽरे, ममममगऽग, पपपपमऽम, धधधधपऽप।

इसी प्रकार आरोह अवरोह करना चाहिये।

इसी प्रकार एक-एक प्रस्तार से अपनी कल्पनानुसार चतुर सङ्गीतज्ञ स्वयं ही रचना करके अभ्यास कर सकते है। आगे लिखी हुई रीति को ध्यान पूर्वक बार-बार पढ़ कर मनन करने से समझ मे आजायगा। तीसरे स्वर गान्धार तक के ६ प्रस्तार होते हैं,

उनमें से दो एक प्रस्तारों के पल्टे बनाने की रीति समझता हूँ, वही रीति हर प्रस्तारों में काम में लाइये।

सा रे ग म प ध नि सां इस प्रकार पहिले काग़ज़ पर सात स्वर लिखकर फिर स्वरों के पल्टे बनाने की कल्पना करें।

प्रथम प्रस्तारों को बनावें। जैसे सारे×ग (२×३) अर्थात् ६ प्रकार के स्वर प्रस्तार गंधार तक सारेग, गरेसा, सागरे, गसारे, रेसाग, रेगसा। इन्हीं ६ प्रस्तारों से अलग-अलग एक-एक प्रस्तार के पल्टे बनाने चाहिये, फिर एक-एक पल्टे को कल्पनानुसार हज़ारों तरह से अलंकृत करना चाहिये।

प्रस्तार "सारेग" का पल्टा बनाने में सारेग के समान गति में एक-एक स्वर पीछे छोड़कर आगे आरोह की तरफ बढ़ना चाहिये, फिर आगे का एक-एक स्वर छोड़कर अवरोह करना चाहिये। जैसेः—

आरोह—सारेग, रेगम, गमप, मपध, पधनि, धनिसां।
अवरोह-सांनिध, निधप, धपम, पमग, मगरे, गरेसा॥

तीसरे, (सागरे) प्रस्तार के समान ही पल्टा बनाने में जिस प्रकार सा और ग के बीच में रे पड़ता है, इसी प्रकार आगे भी समान गति से आरोह—अवरोह करना चाहिये। जैसे—

सागरे, रेमग, गपम, मधप, पनिध, धसांनि। आरोह-अवरोह करना चाहिये।

इसी प्रकार छटवां प्रस्तार "रेगसा" भी ऊपर बतलाये अनुसार ही बैठाना चाहिये, जैसा कि 'सागरे' प्रस्तार पल्टा बनाने में समझाया है। यथाः—

रेगसा, गमरे, मपग, पधम, धनिप, निसांध। आरोह-अवरोह करना चाहिये।

प्रस्तारों से पल्टा बनाने के पश्चात् फिर एक-एक पल्टे को हज़ारों, लाखों प्रकार से कल्पनानुसार अलंकृत कर सकते हैं। जैसेः—

सारेग, रेगम, गमप, मपध, को अलंकृत किया तो—

(१) सारेरेग, रेगगगम, गमममप, मपपपध। आरोह-अवरोह करना चाहिये।
(२) साऽरेगगगग, रेऽगममम, गऽमपपपप, मऽपधधधध। " "
(३) सारेसागऽग, रेगरेमऽम, गमगपऽप, मपमधऽध। " "
(४) रेऽरेगगसाऽ, गऽगममरेऽ, मऽमपपगऽ,ऽपऽपधधमऽ " "
(५) सासागगरेरे, रेरेममगग, गगपपमम, ममधधपप, पपनिनिधध, धधसांसांनिनि।

इस प्रकार लिखकर कहां तक समझाया जावे। यदि तमाम उम्र भी कल्पनानुसार लिखा जाय, तो भी पूरा होना असम्भव है।

मध्यम तक के २४ प्रस्तारों से पल्टे बनाने की भी वही रीति है, जैसे पीछे समझाई गई है।

मध्यम के कुछ प्रस्तार—

१ सारेगम २ गमरेसा ३ मरेगसा ४ सामगरे ५ मसागरे ६ गरेमसा।

पहिला प्रस्तार सारेगम का पल्टा बनाना—जैसे

(१) सारेगम　रेगमप　गमपध　मपधनि　पधनिसां। फिर इसका अवरोह करें।

दूसरा प्रस्तार गमरेसा का पल्टा बनाना—

(२) गमरेसा　मपगरे　पधमग　धनिपम　निसांधप।　"　"　"

तीसरा प्रस्तार मरेगसा का पल्टा बनाना—

(३) मरेगसा　पगमरे　धमपग　निपधम　सांधनिप।　"　"　"

चौथा प्रस्तार सामगरे का पल्टा बनाना—

(४) सामगरे　रेपमग　गधपम　मनिधप　पसांनिध।　"　"　"

पांचवां प्रस्तार मसागरे का पल्टा बनाना—

(५) मसागरे　परेमग　धगपम　निमधप　सांपनिध।　"　"　"

छठवां प्रस्तार गरेमसा का पल्टा बनाना—

(६) गरेमसा　मगपरे　पमधग　धपनिम　निधसांप।　"　"　"

अब गमरेसा वाले दूसरे प्रस्तार के पल्टे को अलंकृत करके बतलाया जाता है।

पहिली कल्पना—

गऽमरेरेसासा मऽपगगरेरे पऽधममगग धऽनिपपमम निऽसांधधपप। आरोह-अवरोह करें।

दूसरी कल्पना—

गगममरेरेसासा ममपपगगरेरे पपधधममगग धधनिनिपपमम निनिसांसांधधपप।

तीसरी कल्पना—

गगगगमऽमरेरेरेसाऽसा　ममममपऽगगगगऽरे　पपपपधऽधममममगऽग धधधधनिऽनिपपपपमऽम।

अब 'सारेगम' वाले पहिले प्रस्तार के पल्टे को अलंकृत करें।

पहिली कल्पना—

सासारेरेगगमम रेरेगगममपप गगममपपधध।　आरोह-अवरोह करें।

दूसरी कल्पना—

साऽसारेरेरेरे गऽगममममम रेऽरेगगगग मऽमपपपप गऽगममममम पऽपधधधध।　"

तीसरी कल्पना—

सारेसारेसारेगम रेगरेगरेगमप गमगममममपध मपमपमपधनि पधपधपधनिसां।　"

चौथी कल्पना—

सारेगरेसारेगम रेगमगरेगमप, गमपमगमपध, मपधपमपधनि, पधनिधपधनिसां।　"

पंचम स्वर में १२० प्रस्तार हैं। उनमें से दो-चार प्रस्तारों के पल्टे बनाने की व अलंकृत करने की रीति बताते हैं।

पंचम के प्रस्तार—१ सापरेगम, २ पसारेगम, ३ परेगमसा, ४ सारेगमप। जैसे आरोह को उल्टा पढ़ने से अवरोह हो जाता है, उसी प्रकार प्रत्येक पल्टों को उल्टा पढ़ने से अवरोह होगा।

पहिला प्रस्तार सापरेगम का पल्टा—

सापरेगम रेधगमप गनिमपध मसांपधनि। आरोह अवरोह करें।

दूसरा प्रस्तार पसारेगम का पल्टा—

पसारेगम धरेगमप, निगमपध सांमपधनि। "

तीसरा प्रस्तार परेगमसा का पल्टा—

परेगमसा धगमपरे निमपधग सांपधनिम। "

चौथा प्रस्तार सारेगमप का पल्टा—

सारेगमप रेगमपध गमपधनि मपधनिसां। "

अब सापरेगम के पहिले प्रस्तार को अलंकृत करके बताते हैं।

पहिली कल्पना—

सापसाप रेरेगम, रेधरेध गगमप, गनिगनि ममपध, मसांमसां पपधनि। अब इसका अवरोह करें।

दूसरी कल्पना—

सांपरेगरेगम, रेधगमगमप, गनिमपमपध, मसांपधपधनि।

तीसरी कल्पना—

सासापपरेगम, रेरेधधगमप, गगनिनिमपध, ममसांसांपधनि।

इसी प्रकार अनेक कल्पनायें करके हजारों-लाखों पल्टों को बनाकर अलंकृत कर सकते हैं। विषय बहुत ही गूढ़ है, कोई कहां तक अभ्यास करेगा। सङ्गीत की थाह नहीं, यथार्थ में यह कला अनन्त है। सङ्गीत सिद्ध करने में एक जन्म की तो बात ही क्या? अनेक जन्मों मे भी सङ्गीत का पूर्ण सिद्ध होना असम्भव है। यह कार्य चिन्ता रहित मनुष्यों तथा योगियों का है, जो कि स्वतन्त्रता पूर्वक ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए इन सब बातों को अभ्यास करके सिद्ध कर सकते हैं।

ऊपर समझाये हुए प्रस्तारों व पल्टों को प्रत्येक राग-रागिनियों में उनके वर्णानुसार व नियमानुसार उपयोग करना चाहिये। जैसे—सारेग, रेगम, गमप, मपध, गमप, मपध, धनिसां। किसी पल्टे को राग मालकोंस में अर्थात् औड़व-औड़व में उपयोग करना चाहे तो राग मालकोंस के आरोह, अवरोह के अनुसार उन्हीं स्वरों मे वह पल्टा प्रयोग कर सकते हैं।

जैसे:—सारेग, रेगम, गमप, मपध, पधनि, धनिसां। यह सम्पूर्ण जाति में शुद्ध स्वरों के पल्टे हैं।

राग मालकौंस के वर्ग औडव-औडव में रे, प, वर्ज्य करके तथा ग ध नि कोमल करके उपरोक्त पल्टों को इस प्रकार लेंगे:—

(१) सागम, गमध, मधनि, धनिसां।

(२) सासा गग, मम, गग मम धध, मम धध निनि, धध निनि सांसां।

(३) सागमध, गमधनि, मधनिसां।

(४) साग साग मम धध गग धध निनि मध मध निनि सांसां।

इसी प्रकार पल्टों का राग-रागनियों के नियमानुसार व तालानुसार मात्राबद्ध करके भी उपयोग कर सकते हैं! जैसे ताल त्रिताला में १६ मात्रा होती हैं, इसकी १॥ आवृत्ति में कोई तान या पल्टा मात्रा बद्ध करना है, तो सोलह डेवढ़े २४ मात्रा में डेढ़ आवृत्ति हो जायगी। दो आवृत्ति में ३२मात्रा लगेंगी। इसी प्रकार और भी समझ लीजिये।

उदाहरण आठ मात्रा में बद्ध करने का—दो स्वर बराबर एक मात्रा के—

साग मग,मध मध निध निसां मग माऽ।

चार स्वर बराबर एक मात्रा के—

सासागग ममगग ममधध ममधध निनिधध निनिसांसां ममगग सासाऽऽ

उदाहरण १६ मात्रा का—

साग मऽ गम धऽ मध निऽ धनि सांऽ गम धनि सांगं सांनि गम धम गसा निसा।

इसमे एक मात्रा में दो-दो स्वर हैं।

इसी प्रकार राग रागनियों के नियमानुसार व तालानुसार बहुत से पल्टों को मात्रा बद्ध करके उपयोग कर सकते हैं।





तानपूरा द्वारा स्वर-साधन



[श्री घनश्यामदासजी सङ्गीताचार्य]

अब तम्बूरा के नियमानुसार चार तारों का प्रस्तार अभ्यासार्थ लिखा जाता है कि तम्बूरा द्वारा किस प्रकार से स्वराभ्यास करना चाहिये। स्वर प्रस्तारों तथा पल्टों से गायनशालाओं के विद्यार्थियों को भी अधिक लाभ हो सकता है। प्रत्येक गायनशाला में 'सङ्गीत' मासिक पत्र मँगाकर शिक्षक गण विद्यार्थियों को अभ्यास कराके लाभ उठा सकते हैं।

स्वर साधन तानपूरा पर अति उत्तम होता है। किसी सङ्गीतज्ञ के पास रोजाना बैठकर कोमल, शुद्ध, तीव्र स्वरों सहित स्वरों का उचित बोध कर सकते है। हारमोनियम द्वारा भी स्वरों का अनुभव हो सकता है, क्योंकि हारमोनियम में भी, कोमल व तीव्र स्वर नियत रहते हैं, किन्तु स्वतन्त्रता पूर्वक स्वरों का सच्चा बोध तम्बूरा द्वारा सीना ब सीना कोई सङ्गीतज्ञ ही करा सकता है।

तम्बूरा मे षडज, मध्यम, पंचम और टीप अर्थात् जोड़ की षडज मिलाकर चार तार रहते है। यही चार तार कण्ठ में स्वरों को मजबूत बनाते हैं। तम्बूरा में षडज, मध्यम, पंचम ये तीन स्वर सात स्वरों के बीच में तीन खम्भों के समान हैं। इन तीन खम्भों के बीच में बाकी चार स्वर रे, ग, ध, नि सङ्गीतज्ञ कुछ काल में स्वयं अनुभव करा देते है।

तम्बूरा में प्रथम सा, प, सां, के आरोह-अवरोह का उच्चारण करना चाहिये फिर, सा, म, प, सां के आरोह-अवरोह का उच्चारण करना चाहिये। अथवा शुद्ध सात स्वरों के आरोह-अवरोह का अभ्यास करना चाहिये। फिर सात स्वरों को मय कोमल, शुद्ध, तीव्र स्वरों के विना किसी वाद्य के केवल कण्ठ से ही उच्चारण करना चाहिये। इस प्रकार दस थाटों का उचित बोध करना परम आवश्यक है।

स्वर साधन के लिये तम्बूरा के चार तारों के प्रस्तार

सा रे ग म प ध नि सां

प्रथम—सा, प, सां के ६ प्रस्तार—

सा प सां। सां प सा। सा सां प। सां सा प। प सा सां। प सां सा।

फिर चार तारों के २४ प्रस्तार—

सा म प सां। सां प म सा। प म सां सा। प म सा सां। सा सां प| म। सां सा प म।
म प सा सां। म प सां सा। सा प म सां। सा सां म प। सां सा म प। म सा प सां।
म सां प सा। प सा म सां। प सां म सा। सां म प सा। प सां सा म। प सा सां म।
सा प सां म। सां प सा म। सा म सां प। सां म सा प। म सां सा प। म सा सां प।

इतना स्वराभ्यास करने के पश्चात् तथा कोमल, शुद्ध तीव्र स्वरों का बोध होने के बाद स्वर प्रस्तारों व पल्टों का अभ्यास दस थाटों में करना चाहिये। राग-रागनियों के वर्णानुसार स्वर प्रस्तारो का व पल्टो का अभ्यास भी करना चाहिये। ऐसी पद्धति से सीखने वाले सज्जन ही सङ्गीत में कुछ सफलता प्राप्त कर सकते हैं। अर्थात् सरलता पूर्वक प्रत्येक राग-रागनियां गा-बजा और समझ सकते है। ताल, स्वर का उचित बोध होने पर किसी भी गायक की नई चीज आसानी से सीख सकते हैं।

अभ्यास करने की विधिः—

गले से शुद्ध खटका सहित तान प्राप्त करने के वास्ते एक-एक मात्रा में दो चार स्वर बोलकर अभ्यास करना चाहिये।

१ २ ३ १ २ ३ अथवा १ २ ३
जैसे-सा, प, सां और सासा पप सांसां सासासासा पपपप सांसांसांसां
आ आ आ— अअ अअ अअ — अअअअ अअअअ अअअअ
बारम्बार आरोह-अवरोह करे।

१ २ ३ ४ और १ २ ३ ४ अथवा १ २ ३ ४
सा रे, ग, म सासा रेरे गग मम सासासासा रेरेरेरे गगगग मममम
आ आ आ आ — अअ अअ अअ अअ अअअअ अअअअ अअअअ अअअअ

इस प्रकार से स्वराभ्यास करने मे तान पल्टों के अन्दर कण्ठ से शुद्ध तैयार खटका निकलने लगता है। खटका का अभ्यास करते समय आ, ई, ओ ऊ ए, इन अक्षरों में से उच्चारण करके खटका लेना चाहिये।

अभ्यासार्थ आगे १४ पल्टे और दिये जाते है।

अभ्यासार्थ १४ पल्टे

सा रे ग म प ध नि सां

१—सागरेम, रेमगप, गपमध, मधपनि, पनिधसां ।
सांधनिप, निपधम, धमपग, पगमरे, मरेगसा ॥

२—सागसागसागरेम, रेमरेमरेमगप, गपगपगपमध, मधमधमधपनि, पनिपनिपनिधसां ।
सांधनिपनिपनिप, निपधमधमधम, धमपगपगपग, पगमरेमरेमरे, मरेगसागसागसा ॥

३—मसारेग, परेगम, धगमप, निमपध, सांपधनि ।
निधपसां, धपमनि, पमगध, मगरेप, गरेसाम ॥

४—ममसासारेगरेग, पपरेरेगमगम, धधगगमपमप, निनिममपधपध, सांसांपपधनिधनि ।
निधनिधपपसांसां,. धपधपममनिनि, पमपमगगधध, मगमगरेरेपप, गरेगरेसासामम ॥

५—रेपसामग, गधरेपम, मनिगधप, पसांमनिध । -
धनिमसांप, पधगनिम, मपरेधग, गमसापरे ॥

६—रेरेपपसासाममग, गगधधरेरेपपम, ममनिनिगगधधप, पपसांसांममनिनिध ।
धनिनिममसांसांपप, पधधगगनिनिमम, मपपरेरेधधगग, गममसासापपरेरे ॥

७—परेमसाग, धगपरेम, निमधगप, सांपनिमध ।
धमनिपसां, पगधमनि, मरेपगध, गसामरेप ॥

८—पपरेरेममसामसाग, धधगगपरेपरेम, निनिममधगधगप, सांसांपपनिमनिमध ।
धमनिमनिपपसांसां. पगधगधममनिनि, मरेपरेपगगधध, गसामसामरेरेपप ॥

९—पसाधरेपगम, धरेनिगधमप, निगसांमनिपध ।
धपनिमसांगनि, पमधगनिरेध, मगपरेधसाप ॥

१०—सासासासा, मममम, पपपप, सांसांसांसां । सांसांसांसां, पपपप, मममम सासासासा ।

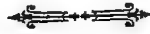
११—सासासासा, सांसांसांसां । सांसांसांसां, सासासासा ॥

१२—पसाधरेपपगगम, धरेनिगधधमपप, निगसामनिनिपपध ।
धपपनिनिसासागनि, पममधधगनिरेध, मगगपपरेधसाप ॥

१३—पसारेगमध, धरेगमपनि, निगमपधसां । सांधपमगनि निपमगरेध, धमगरेसाप ।

१४—पसापसारेरेगगममधध, धरेधरेगगममपपनिनि, निगनिगममपपधधसांसां ।
सांसांधधपपममगनिगनि, निनिपपममगगरेधरेध, धधममगगरेरेसापसाप ॥

थाट



"मेलः स्वरसमूहः स्याद्रागव्यंजनशक्तिमान्"

संस्कृत ग्रन्थकार थाट को मेल कहते हैं। थाटों से ही रागों की उत्पत्ति होती है। नाद से स्वर, स्वर से सप्तक, सप्तक से थाट और थाट से राग की उत्पत्ति होती है।

थाट ३६ तथा ७२ प्रकार से कहे गये है। किन्तु उत्तरीय भारत का सङ्गीत १० थाटों के ही आधार पर है। उन दस थाटो का विवरण "अभिनव राग मंजरी" में इस प्रकार दिया है:—

१—थाट बिलावल

शुद्धाःसप्तस्वरा रम्या वादनीयाः प्रयत्नतः।
तेन वादनमात्रेण वेलावली भवेच्छुभा॥

इसमें सभी स्वर शुद्ध हैं—"सा रे ग म प ध नि सां"

२—थाट कल्याण

एवं सति मध्यमाख्यो, भवेत्तीव्रस्तदा स्फुटम्।
कल्याणी रागिणी ज्ञेया, ततो गायक-नायकैः॥

इसमे मध्यम तीव्र, शेष स्वर शुद्ध हैं—"सा रे ग म॑ प ध नि सां"

३—थाट खमाज

शुद्धाः सप्तस्वरास्तेषु, निषादः कोमलो यदा।
वीणायां व्यक्तिमाधत्ते खम्माजाभिधरागिणी॥

इसमें कोमल नि॒ है, बाकी स्वर शुद्ध हैं—"सा रे ग म प ध नि॒ सां"

४—थाट भैरव

शुद्धाः सप्त स्वराः कार्या रिधौ तेषु च कोमलौ।
भैरवाख्यो भवेन्मेलः प्रस्फुटः प्रातरिष्टदः॥

रे॒ ध॒, कोमल है। शेष स्वर शुद्ध है—"सा रे॒ ग म प ध॒ नि सां"

५—थाट पूर्वी

एवं सति मध्यमाख्यो भवेत्तीव्रस्तदा स्वयम् ।
रागिणी पूर्विका भूयात् सायंगेया सुरक्तिदा ॥

रे॒ ध॒, कोमल हैं, म॑ तीव्र शेष स्वर शुद्ध है—"सा रे॒ ग म॑ प ध॒ नि सां"

६—थाट मारवा

एवं सति धैवताख्यस्तीव्रत्वं तत्र याति चेत् ।
मारवा व्यक्तिमाधत्ते परमेल—प्रवेशिका ॥

रे॒, कोमल है, म॑ तीव्र, शेष स्वर शुद्ध हैं—"सा रे॒ ग म॑ प ध नि सां"

७—थाट काफी

शुद्धाः सप्तस्वराः कार्या निगौ तत्र च कोमलौ ।
काफिनामा भुविख्यातो मेलकः संभवेत्स्वयम् ॥

इसमें ग॒ नि॒ कोमल हैं, शेष स्वर शुद्ध है—"सा रे ग॒ म प ध नि॒ सां"

८—थाट आसावरी

एवं सति धैवताख्यः स्वरो मृदुत्वमेति चेत् ।
आसावरीसमुत्पत्तिर्भूयादिति परिस्फुटम् ॥

ग॒ ध॒ नि॒ कोमल, शेष स्वर शुद्ध है—"सा रे ग॒ म प ध॒ नि॒ सां"

९—थाट भैरवी

एवं सति द्वितीयोऽपि स्वरो मृदुत्वमेति चेत् ।
भैरवीं रागिणीं रम्यां, तत्र पश्यन्ति कोविदाः ॥

रे॒ ग॒ ध॒ नि॒ कोमल हैं। शेष स्वर शुद्ध है—"सा रे॒ ग॒ म प ध॒ नि॒ सां"

१०—थाट टोड़ी (तोड़ी)

एवं सति मनी तीव्रौ भवेतां भूरिरक्तिदौ ।
तोड़ीं तत्र विजानन्ति, लक्ष्य-लक्षण-कोविदाः ॥

रे॒ ग॒ ध॒ कोमल हैं, म॑ तीव्र शेष स्वर शुद्ध है—"सा रे॒ ग॒ म॑ प ध॒ नि सां"

इस प्रकार इन १० थाटों से ही समस्त रागों की रचना हुई है, एक-एक थाट से सैकड़ों राग निकल सकते है।

उपरोक्त १० थाटों को दक्षिण के सङ्गीतज्ञ किस प्रकार व्यवहार में लाते हैं और ये दस थाट उनके किस-किस मेल से मिलते हैं, इसका विवरण देखिये:—

कल्याणीमेलकोऽस्माकं तत्रापि स्यात्तथैव च ।
वेलावल्या भवेत्तत्र शंकराभरणाभिधः ॥
खमाज-मेलकोऽस्माकं तत्र कांभोजिनामकः ।
लक्ष्येऽत्र भैरवाख्यातस्त्र मालवगौडकः ॥
मेलः पूर्वीतिसंज्ञोऽत्र तत्र स्यात्कामवर्धनी ।
मारवामेलकोऽस्माकं तत्र स्याद्गमनश्रमः ॥
लक्ष्ये काफीतिसंज्ञोऽसौ तत्र खरहरप्रिया ।
आसावर्याह्वयो स्माकं तत्र स्यान्नट-भैरवी ॥
प्रसिद्धो भैरवीमेलस्तत्र तोड़ीतिसंज्ञितः ।
अस्माकं तोड़िमेलस्तु तत्र पन्तुवरालिका ॥

१—कल्याण थाट से 'कल्याणी मेल' २—विलावल थाट से 'शंकराभरण मेल'
३—खम्माज थाट से 'काम्बोजी मेल' ४—भैरव थाट से 'मायामालव गौड़'
५—पूर्वी थाट से 'कामवर्धनी मेल' ६—मारवा थाट से 'गमनश्रम मेल'
७—काफी थाट से 'खरहरप्रिया मेल' ८—आसावरी थाट से 'नटभैरवी मेल'
९—भैरवी थाट से 'भैरवी मेल' १०—तोड़ी थाट से 'वराली मेल' मिलता है।

इस प्रकार उनके उपरोक्त मेलों से ये थाट मिलते-जुलते हैं।



१० थाट और उनके अन्तर्गत कुछ राग-रागनियों
के
सरगम तथा गायन समय
(लेखक—पं० रामचन्द्र पाठक गायनाचार्य)



१—कल्याणी मेल राग (थाट कल्याण)

१ ईमन कल्याण—समय संध्याकाल (६ से ६ बजे रात्रि तक)

राग स्वरूप—

ग रे नि़रे सा ग रेग पमंग रे प रे सा।

२ भूपाली—समय संध्याकाल (६ बजे से ६ बजे रात्रि तक)

ग रे साध़ सा रेग पग धपग रे सा।

३ शुद्ध कल्याण—समय संध्याकाल (६ से ६ बजे रात्रि तक)

ग रेसा रेसानि़ध़प़ ध़सा रेग पग रे सा।

४ चन्द्रकान्त—समय संध्याकाल (६ से ६ बजे रात्रि तक)

ग रे सा नि़ध़ नि़ध़प़ सा ग रेग धमंग प रे सा।

५ जयत कल्याण—समय संध्याकाल (६ से ६ बजे रात्रि तक)

साग पग पधपग रेसा पग रेसा पग पधग।

६ मालश्री—समय संध्याकाल (६ से ६ बजे रात्रि तक)

सा गप मंग प नि सां निप मंग पग सा।

७ हमीर—समय संध्याकाल (६ से ६ बजे रात्रि तक)

सारेसा गमध सांनिध प मंपधप गमरेसा।

८ केदारा—समय संध्याकाल (६ से ६ बजे रात्रि तक)

साम मप धपमं पधपम पमरेसा।

९ कामोद—समय संध्याकाल (६ से ६ बजे रात्रि तक)

रेप मंप धप गमप गमरेसा।

१० श्याम (श्यामकल्याण)—समय संध्याकाल (६ बजे से ६ बजे तक)

मरे नि़सा रे मंप धप मरे नि़सा।

११ छायानट—समय संध्याकाल (६ से ६ बजे तक)

धप रे ग म प मगमरे सा।

१२ हिन्डोल—समय प्रातःकाल (६ से ६ बजे दिन तक)

ग साध़मं़ध़सा ग मंधनिध मंग सा।

१३ गौड़सारङ्ग—समय दिन तृतीय पहर (१२ बजे से ३ बजे तक)

रेसा गरे मग पमंधप मग रेग प रेसा।

२—बिलावल मेल राग (थाट बिलावल)

१ शुद्ध बिलावल—समय प्रातःकाल (६ बजे से ६ बजे तक)

सारेगम पध निसां निध पम गमरेसा।

२ अल्हैया बिलावल—समय प्रातःकाल (६ बजे से ६ बजे तक)

गरे गप, धनिध सां सां निध निधप मग मरे सा।

३ शुक्र बिलावल—समय प्रातःकाल (६ बजे से ६ बजे तक)

साग गम मप धनिधप मग मरे सा।

४ देवगिरी—समय प्रातःकाल (६ बजे से ६ बजे तक)

निसा धनिधसा रेग मग प मग मरे सा।

५ यमनी बिलावल—समय प्रातःकाल (६ बजे से ६ बजे तक)

सारेग मग पर्मधप मग मरे सा।

६ ककुभ—समय प्रातःकाल (६ बजे से ६ बजे तक)

साग गम पम गरे गमप ध सां धप मपमग मरे सा।

७ नट बिलावल—समय प्रातःकाल (६ बजे से ६ बजे तक)

सा गम पम ग म रे गमप मग मरे सा।

८ लच्छासाख—समय प्रातःकाल (६ बजे से ६ बजे तक)

प मग रेप मग धनिसां निध प मग मरे सा।

६ सरपर्दा—समय प्रातःकाल (६ से ६ बजे तक)

सा रेगम ध प निध निसां निध प मग मरे सा।

१० देशकार—समय दिन द्वितीय प्रहर (६ से १२ बजे तक)

सा ध प गप धसां धप गपधप ग रेसा।

११ मलूहा—समय दिन चतुर्थ प्रहर (३ से ६ बजे तक)

रेसा प मप नि सा गमप गमरे नि सा।

१२ द्वितीय ककुभ—समय संध्याकाल (६ से ६ बजे तक)

रे गमग मरे सा रेसा निधप मप धमग मरे सा।

१३ विहंग—समय संध्याकाल (६ से १२ बजे तक)

निसा गमप निसां नि धप ग मप गमग रेसा।

१४ हेमकल्याण—समय संध्याकाल (६ से ६ बजे तक)

प धप सा रेसा सामगप धप ग मरेसा।

१५ पहाड़ी—समय संध्याकाल तथा वर्षा ऋतु (६ से ६ बजे तक)

ग रेसा ध पध सा गपधप ग रेसाध।

१६ मांड़—समय संध्याकाल (६ सें ६ बजे तक)

साग रेम गप मध पनि धसां, सांध निप धम पग मरे गसा।

१७ दुर्गा—समय संध्याकाल (६ से ६ बजे तक)

प मप धमरे प सांध सांरें पध मरे सा।

१८ शंकरा—समय संध्याकाल (६ से ६ बजे रात्रि तक)

सां निप निध सां निप गपग सा ।

१६ नट—समय रात्रि द्वितीय प्रहर (६ से १२ तक)

सा म ग पगम रेगमप मग मरे सा।

३—खमाज मेल राग (थाट खमाज)

१ खमाज-समय द्वितीय प्रहर रात्रि (६ से १२ बजे रात्रि तक)

नि़सा गमप नि सां सां नि़ध मप ध मग।

२ झिंझोटी-समय संध्याकाल या वर्षाऋतु (६ बजे से ६ बजे तक)

ध़सा रेमग प मग रेसा नि़ध़प़ ।

३ द्वितीय दुर्गा-समय रात्रि द्वितीय प्रहर (६ से १२ बजे तक)

गसा नि़ध़ नि़सा मग मधनि़ध मग सा।

४ तिलंग-समय रात्रि द्वितीय प्रहर या वर्षाऋतु (६ से १२ बजे रात्रि तक)

नि़सा गमप निसां नि़प गमग सा।

५ रागेश्वरी-समय संध्याकाल (६ से ६ बजे रात्रि तक)

रेसा नि़ध़ सा मग मध नि़ ध मग रेसा।

६ खम्बावती-समय संध्याकाल या वर्षाऋतु (६ से ६ बजे रात्रि तक)

रे मपध पधसां नि़धप धम ग म सा।

७ गारा-समय संध्याकाल (६ से ६ बजे रात्रि तक)

रेग़ रेसा ध़नि़ पध़ नि़ सा गम रेग़ रेसा।

८ सोरठी-रात्रि द्वितीय प्रहर या वर्षारितु (६ से १२ बजे तक)

रे मप नि सां नि़ध मप धमरे।

६ देश-समय द्वितीय प्रहर रात्रि या वर्षारितु (६ से १२ बजे तक)

रे मप निधप पधपम गरेग सा।

१० जैजैवन्ती—समय रात्रि द्वितीय प्रहर (६ से १२ बजे तक) तथा वर्षारितु

रेग़रेसा ध़नि़ पध़ नि़सा गम रेग़ रेसा।

११ तिलक कामोद—समय संध्याकाल (६ से ६ बजे रात्रि तक)

प़ नि़ सारेग सा रे पमग सा रेग सा नि़।

४—भैरव मेल राग (थाट भैरव)

१ रागभैरव—समय प्रभात (३ से ६ बजे तक)

सा ग मप ध़ प मग रे़ गमप मग रे़ सा।

२ रामक्री (रामकली)—समय प्रभात (३ से ६ बजे तक)

साग मप धु प मंप धुनि गम रेगा।

३ बंगाल भैरव—समय प्रभात (३ से ६ बजे तक)

धुप मग मरे सा पधु सां धुप ग मरे सा।

४ सौराष्ट्र टंक—समय प्रभात (३ से ६ बजे तक)

गम पम रे सा गम ध मध सां रें सां धुप।

५ प्रभात (प्रभाती)—समय प्रभात (३ से ६ बजे तक)

गमग रे सा रेसा ध निसा ग म धु प मग रे गम मं।

६ शिव भैरव—समय प्रभात (३ से बजे तक)

गम धु प मप गु मरे सा म प निधु प निसां धु प गम रे सा।

७ आनन्द भैरव—समय प्रभात (३ से ६ बजे तक)

मग रे ग पम मगरे सा गम सां ध प मग मरे सा।

८ अहीर भैरव (आभीरी)—समय प्रभात (३ से ६ बजे तक)

म म रे सा रेग म प धुनिध प मप मग मरे सा।

९ गुणक्री (गुणकली)—समय प्रभात (३ से ६ बजे तक)

रे सा धृ सा मरे प धुप मरे पमरे सा।

१० कलिङ्ग राग (कालिंगड़ा)—समय प्रभात (३ से ६ बजे तक)

गम पधु मप मग नि सारेग मग।

११ जोगिया—समय प्रभात (३ से ६ बजे तक)

रेम पधु सां निधुप धुम प धुम रेसा।

१२ विभास—समय प्रभात (३ से ६ बजे तक)

धु प गप ग रेसा गप धु प सां धु प।

१३ मेघरंजनी—समय प्रभात (३ से ६ बजे तक) तथा वर्षा ऋतु।

निरेग म ग रेगम नि सां रें सां म ग रेसा।

५—पूर्वी मेल राग (थाट पूर्वी)

१ पूर्वी—समय दिन चतुर्थ प्रहर (३ से ६ बजे तक)

नि सारेग मग मंप धुप मंग मग रेसा।

२ पूर्या धनाश्री—समय दिन चतुर्थ प्रहर (३ से ६ बजे तक)

निरेग मंप धुप मंग मंरेग धमंग रेसा।

३ जैताश्रीः (जैतश्री)—समय दिन चतुर्थ प्रहर (३ से ६ बजे तक)

निसा गप मंधुप मंग धुप मंग मंग रेसा।

४ परज—समय रात्रि चतुर्थ प्रहर (३ से ६ बजे भोर तक)
सां निधुप मंप धुप गमग रेसा ।

५ श्रीराग—समय दिन चतुर्थ प्रहर (३ से ६ बजे तक)
रे सा मंप धुप नि सां नि धुप मंगरे सा ।

६ गौरी—समय दिन चतुर्थ प्रहर (३ से ६ बजे तक)
सानि धुनि रेग रेमंगरे सारे नि सा ।

७ मालवी—समय दिन चतुर्थ प्रहर (३ से ६ बजे तक)
सां पग पग रेसा सग सग मंधु रेंसां ।

८ त्रिवेणी—समय दिन चतुर्थ प्रहर (३ से ६ बजे तक)
रेसा गपगरे सा रे प धुप सां निधुप गप गरे सा ।

९ टंकी—समय दिन चतुर्थ प्रहर (३ से ६ बजे तक)
ग रेसा रेसा गप धुप सां निधु प गप ग रेसा ।

१० वासन्ती—समय रात्रि चतुर्थ प्रहर (३ से ६ बजे तक) वर्षा ऋतु
साग मंधु रें सां रें निधु प मंग मंग नि मंग मंग रेसा ।

६—मारवा मेल राग (थाट मारवा)

१ मारवा—समय संध्याकाल (६ बजे से ९ बजे तक)
ध मंगरे ग मंगरे सा निध मंध सारे ।

२ पूरिया—समय संध्याकाल (६ बजे से ९ बजे तक)
ग निरेसा निधनि मंग मंध रेसा मंग रेसा ।

३ जैतराग (जयन्त)—समय संध्या (६ बजे से ९ बजे तक)
सा गप ग रेसा ग पग रेग मंधमंग रेसा ।

४ मालीगौरा—समय संध्या (३ बजे से ९ बजे तक)
मंग रे सा नि रेनि प मंग मंध निरेग रेसा ।

५ साजगिरी—समय संध्या (६ बजे से ९ बजे तक)
नि रेग मंग रेसा निध मंध सा रे सा ग म निध मंधमंग पग रेसा

६ वराटी—समय संध्या (६ बजे से ९ बजे तक)
पधग प ध मंग रेग मंग रेस ।

७ ललित—समय चतुर्थ प्रहर रात्रि (३ बजे से ६ बजे तक)
नि रेग म मंध मंम ग मंध निसां रेंनिध मंध मंम ग रेस ।

८ सोहनी—समय रात्रि चतुर्थ प्रहर (३ वजे से ६ वजे भोर तक)

मंध निसां रेंसां निध निसां निध ग ।

९ पंचम—समय रात्रि चतुर्थ प्रहर (३ वजे से ६ वजे भोर तक)

मंध सां निध मंध मंग मंग रेंसां साम ग मंध निध निमंध ।

१० द्वितीय पंचम—समय रात्रि चतुर्थ प्रहर (३ से ६ वजे भोर तक)

ग रेसा निरेग म प मंध मंग मंग रेसा

११ भटियार—समय रात्रि चतुर्थ प्रहर (३ से ६ वजे भोर तक)

स ध प धम पग मंध सां रेंनि ध प म पग रेसा

१२ विभास (द्वितीय)—रात्रि चतुर्थ प्रहर (३ से ६ वजे भोर तक)

नि रेग मंग रेसा गप गपध मंग पग रेसा ।

१३ भंखार—समय रात्रि चतुर्थ प्रहर (३ से ६ वजे भोर तक)

निसा गमंप म पग मंध मग पग रेसा

७—काफी मेल राग (थाट काफी)

१ काफी—समय रात्रि (१२ से ३ वजे तक)

निसा रेग मप धनिसां सांनिध प मग रेसा

२ सैंधवी—समय मध्य रात्रि (१२ से ३ वजे तक)

सा रेमप ध सां निध पमग रेसा

३ सिंदूरा—समय मध्य रात्रि (१२ से ३ वजे तक)

मप निसां रेंगंरेंसां निध प॰ म ग रे सा

४ धनाश्री—समय दिन चतुर्थ प्रहर (३ से ६ वजे तक)

निसा गमप धप निधप ग पग रेसा

५ भीमपलासी—समय दिन चतुर्थ प्रहर (३ से ६ वजे तक)

निसाम गम प निसां निधपम गरेसा

६ धानी—समय सर्वकाल

निसाग मप निसां सांनिप मगसा

७ पटमंजरी—समय रात्रि द्वितीय प्रहर (९ से १२ वजे तक)

निसा रेसा नि धप रेम प धग रेगमगरेसा

८ द्वितीय पटमंजरी—समय रात्रि द्वितीय प्रहर (९ से १२ वजे तक)

साग मग रेसा रेसा निधप रेगस पमग रेसा ।

९ पटदीपिकी—समय रात्रि द्वितीय प्रहर (९ से १२ तक)

पग मग रेसा निसा गम पगम नि धपम गम गरेसा ।

१० हंसकंकणी—समय दिन चतुर्थ प्रहर (३ से ६ बजे तक)

साग मप गुरेसा निसा गु मप प पगु

११ पीलू—समय दिन चतुर्थ प्रहर (३ से ६ बजे तक)

निसा गुरे निसा प मप गु नि सा रेनि धुप।

१२ द्वितीय पीलू—समय दिन चतुर्थ प्रहर (३ से ६ बजे तक)

निसा गुरेसा, निसा निधुप धनिसा गु।

१३ बागेश्वरी—समय मध्य रात्रि (१२ से ३ बजे तक)

सा निधुनि सा मगु मध निध मगरेसा।

१४ शहाना (शहाना बागीश्वरी)—समय मध्य रात्रि (१२ से ३ बजे तक)

निधप मपसां निपमपगु म प गु म रेसा।

१५ सूहा—समय दिन द्वितीय प्रहर (९ से १२ बजे तक)

निसा गुग पनिमप सां निप मप गुम पगुम रेसा।

१६ अपर सूहा—समय दिन द्वितीय प्रहर (९ से १२ बजे तक)

निसा मरे सा निसा गुम पम गुम निप सां धुनिप मप गम रेसा।

१७ सुघराई—समय दिन द्वितीय प्रहर (९ से १२ बजे तक)

धप मरे निसा रे ग म रेसा निपमप गम रेसा।

१८ नायकी कान्हड़ा—समय मध्य रात्रि (१२ से ३ बजे तक)

निप मप सांनिप मप गु मप गुम रेसा।

१९ देवसाख—समय मध्य रात्रि (१२ से ३ बजे तक)

निसा मरे पम निप सा निप मप गुम रेसा।

२० बहार—समय रात्रि द्वितीय प्रहर (९ से १२ बजे तक)

निसागुमपगुम ध निसां निपमप गुम रेसा।

२१ वृन्दावनी सारंग—समय मध्य दिवस (१२ से ३ बजे तक)

निसा रे मप नि सां निप मरे।

२२ मध्यमादि सारङ्ग—समय मध्य दिवस (१२ से ३ बजे तक)

रे मप नि सां निपमरे सा।

२३ सामन्त सारङ्ग—समय मध्य दिवस (१२ से ३ बजे तक)

प मप निप मरे सा रे मप निधप।

२४ शुद्ध सारङ्ग—समय मध्य दिवस (१२ से ३ बजे तक)

सा रेमरे प मंप निप मप मरे सा।

२५ मियां की सारङ्ग—समय मध्य दिवस (१२ से ३ बजे तक)

सा नि॒सा ध॒नि॒ प॒ध॒ नि॒सा रे पमरे सा ।

२६ बड़हंस सारङ्ग—समय मध्य दिवस (१२ से १ बजे तक) या ग्रीष्म ऋतु ।

नि॒पमरे सा रेम प नि॒प निसां नि पम रे सा ।

२७ शुद्ध मल्लार—समय वर्षा ऋतु या जब मेघ लगें ।

सारेम पमप धसां धपम सरेम ।

२८ मेघ राग—समय वर्षा ऋतु ।

रेसा रेसा नि॒प॒ नि॒सा रे मरे प रेम रेसा ।

२९ मियां मल्लार—समय वर्षा ऋतु ।

रेम रे सा नि॒प॒ म॒प॒ नि॒ध॒ नि॒ध॒ नि॒सा प ग॒ म रे सा ।

३० सूर मल्लार—समय वर्षा ऋतु ।

नि॒सा रेम पम नि॒धप निसां नि॒प मरे सा ।

३१ गौड़ मल्लार—समय वर्षा ऋतु ।

सांनि॒प मप धसां नि॒प मप ग॒म रेसा ।

३२ द्वितीय गौड़ मल्लार—समय वर्षा ऋतु ।

रेगरे म गरेसा मपधसां धपमग ।

८—आसावरी मेलराग (थाट आसावरी)

१ आसावरी—समय दिन प्रथम प्रहर (६ बजे से ९ बजे तक)

रे मप नि॒ध॒ प ध॒सां नि॒ध॒ प मप ग॒ रेसा ।

२ जौनपुरी टोड़ी—समय दिन प्रथम प्रहर (६ बजे से ९ बजे तक)

म ध॒ नि॒सां नि॒ ध॒ प मप ग॒ रे सा ।

३ देवगन्धार—समय दिन प्रथम प्रहर (६ बजे से ९ बजे तक)

मप ध॒प सां नि॒सां रेंसां नि॒ध॒प मप नि॒ध॒ प मपग॒ पग॒ रे सा ।

४ द्वितीय देवगंधार—समय दिन प्रथम प्रहर (६ बजे से ९ बजे तक)

रेंमप नि॒ध॒ पसां नि॒ध॒प मपग रेसा ।

५ सिन्ध भैरवी—समय दिन प्रथम प्रहर (६ से ९ बजे तक)

प॒ग॒रेग॒ सारेनि॒सा ध॒प॒ ध॒सा नि॒ध॒प॒ ।

६ देशी—समय दिन प्रथम प्रहर (६ से ९ बजे तक)

रेंमप रेंमपध॒प नि॒ध॒प रेग॒रे नि॒सा ।

७ **षटराग**—समय दिन प्रथम प्रहर (६ से ९ बजे तक)

निसा गुम प धुप मपधुप सांनिधुप मपगम निधुप मपगम गुरेसा ।

८ **कौशिक कानड़ा**—समय मध्य रात्रि (१२ से ३ बजे तक)

निसाम गुम पगु मगुरेसा मधु निसां निधु मधुनिधुम पगु मगु रेसा ।

९ **दरबारी कान्हड़ा**—समय मध्य रात्रि (१२ से ३ बजे तक)

गु रे सा निसा रे मप धु निसां निप मप गु रे सा ।

१० **अड़ाना (अड्डाना)**—समय मध्य रात्रि (१२ से ३ बजे तक)

मप धु सां धुनिप मप गुम रेसा ।

११ **द्वितीय नायकी कान्हड़ा**—समय मध्य रात्रि (१२ से ३ बजे तक)

सा रेप गुम रेसा म प धु निप सां निप मप गुम रे सा ।



९—भैरवी मेल राग (थाट भैरवी)

१ **भैरवी**—समय दिन प्रथम तथा द्वितीय प्रहर (६ से १२ बजे तक)

निसा गुम प धुनिसां निधुपम गु रेसा ।

२ **मालकोष**—समय मध्य रात्रि (१२ से ३ बजे तक)

निसागुम धुनिसां निधुम गुम गुसा ।

३ **शुद्ध आसावरी**—समय प्रथम तथा द्वितीय प्रहर दिन (६ से १२ बजे तक)

रेम पधु सां निधु प मपधुप गु रेसा ।

४ **धनाश्री**—समय दिन चतुर्थ प्रहर (३ से १२ बजे तक)

निसा गुम प निसां निधुपमपगु रेसा ।

५ **विलासखानी तोड़ी**—समय दिन प्रथम द्वितीय प्रहर (६ से १२ बजे तक)

निसा रेसा धुनिसा गु रेगु मगु रेगु रेसा धुनिधुप गु रेगु धुपगु रेगु मगु रेसा ।



१०—तोड़ी मेल राग (थाट तोड़ी)

१ **तोड़ी**—समय दिन प्रथम तथा द्वितीय प्रहर (६ से १२ बजे तक)

धुनिसा रेगु रे सा मंप धुप मंगु रे सा ।

२ **गुर्जरी तोड़ी**—समय दिन प्रथम तथा द्वितीय प्रहर (६ से १२ बजे तक)

निसा रेगु मंधुमंगु निधुमंगु रेगु रे सा ।

३ **मुलतानी**—समय दिन चतुर्थ प्रहर (३ से ६ बजे तक)

निसा मंगु पमंधुप निधुपगु पगु रेसा ।

★ राग-रागनी ★



योऽयं ध्वनिविशेषस्तु स्वरवर्णविभूषितः ।
रंजको जनचित्तानां स रागः कथितो बुधैः ॥

—सङ्गीत दर्पण

स्वरवर्णविशिष्टेन ध्वनिभेदेन वा जनः ।
रंज्यते येन कथितः स रागः सम्मतः सताम् ॥

—सङ्गीत रत्नाकर ।

उन ध्वनियों का खास क्रम (रचनारूप) जो स्वरों और वर्णों (गायन क्रिया) द्वारा सुन्दर बनाया गया हो, तथा जो लोगों के चित्त को प्रसन्न करने वाला हो, उसे विद्वान लोग "राग" कहते हैं।

साधारणतया राग उस गाने या बजाने को कहते हैं, जो अपनी माधुर्यता से प्राणी-मात्र के मन को आकर्षित करे, चाहे वह कण्ठ से गाया जावे या किसी वाद्य-यन्त्र पर बजाया जाये। किन्तु सौंदर्य और आकर्षण रहित गाने-बजाने को राग नहीं कह सकते।

वर्ण—

गानक्रियोच्यते वर्णः स चतुर्धा निरूपितः ।
स्थाय्यारोह्यवरोही च संचारीत्यथलक्षणम् ॥

—सङ्गीत रत्नाकर ।

गायन की प्रत्यक्ष क्रिया (तरीका) को वर्ण कहते है। उसके ४ प्रकार है:—
१-स्थाई, २-आरोही, ३-अवरोही, ४-संचारी।

१-स्थाई पद या गीत के एक ही चरण को बराबर कहने (गाने) को स्थाई कहते हैं।

२-आरोही—षडज स्वर से निषाद की ओर जाने को आरोही कहते है।
जैसे—सा रे ग म प ध नि।

३-अवरोही—निषाद से षडज की ओर वापिस लौटने को अवरोही कहते हैं।
जैसे—नि ध प म ग रे सा।

रागों के भेद (जाति)

आजकल प्रचलित रागों के प्रधान तीन भेद माने गये हैं। औड़व-षाडव और सम्पूर्ण। यही तीन प्रकार की राग-रागनियां प्रचलित हैं, इनकी भी ६ जातियां होती है।

१ औड़व की ३ जातियां—औड़व-औड़व, औड़व-षाड़व, औड़व-सम्पूर्ण ।
२ षाड़व की ३ जातियां—षाड़व-औड़व, षाड़व-षाड़व, षाड़व-सम्पूर्ण ।
३ सम्पूर्ण की ३ जातियां—सम्पूर्ण-सम्पूर्ण, सम्पूर्ण-षाड़व, सम्पूर्ण-औड़व ।

किसी राग की आरोही सम्पूर्ण है और अवरोही औड़व है तो उसे सम्पूर्ण औड़व कहा जायगा, इसी प्रकार आरोही-अवरोही से मिलाकर एक-एक जाति की ३-३ जातियां हो गईं । अब नीचे औड़व और सम्पूर्ण का भेद दिया जाता है:—

१ औड़व—जिस राग मे किन्हीं दो स्वरों को वर्जित करके पॉच ही स्वरों का प्रयोग होता है, उसे औड़व जाति का राग कहते हैं। जैसे—मालकौस, हिंडोल, भूप, भूपाली इत्यादि ।

२ षाड़व—जिस राग में किसी भी १ स्वर को वर्जित करके केवल ६ स्वरों का उपयोग होता हो, उसे षाड़व जाति का राग कहते हैं, जैसे-पूरिया, मारवा, शुद्ध मल्हार इत्यादि ।

३ संपूर्ण—जिस राग में पूरे सातों स्वरों का उपयोग होता हो, उसे सम्पूर्ण जाति का राग कहते हैं । जैसे यमन, पूर्वी, शुद्ध बिलावल इत्यादि किन्तु ध्यान रहे ५ स्वरों से कम के गीत को 'राग' नहीं कह सकते। क्योंकि "औड़व" से कम केवल वेद गायन ही होता है ।

राग सम्बन्धी पारिभाषिक शब्द और उनके अर्थ—

१ वादी—राग में जो स्वर अन्य स्वरों से अधिक उपयोग मे लाया जाता है, तथा जो स्वर राग को निश्चित रूप से प्रकट करता है, वह 'वादी' स्वर कहलाता है । इसी स्वर को जीव स्वर भी कहते हैं। राग में इसका दरजा राजा के समान है ।

२ सम्वादी—वादी स्वर से कम, किन्तु अन्य सब स्वरों से जो अधिक महत्व रखता हो, उसे 'सम्वादी' स्वर कहते हैं। इसका सम्बन्ध वादी स्वर से रहता है, इसलिये इसे मन्त्री का दर्जा प्राप्त है ।

३ अनुवादी—वादी, सम्वादी के अतिरिक्त जो शेष स्वर हैं, इन्हें अनुवादी स्वर कहते है । इन्हें सेवकों की उपमा दी गई है ।

४ विवादी—जिस स्वर के लगाने से राग का रूप बिगड़ जाय, उसे विवादी स्वर कहते हैं । वास्तव में यह स्वर राग का दुश्मन होता है ।

५ ग्रह स्वर—जिस स्वर से राग-रागिनी गाने का प्रारम्भ होता है, उसे 'ग्रह स्वर' कहते हैं ।

६ अंश—जिस पर राग का विस्तार तथा थाट या मेल का प्रकाश होता है, उसे 'अंश' कहते हैं। प्रायः अंश स्वर ही 'वादी' भी होता है ।

७ न्यास—जिस स्वर पर गाना समाप्त होता हो, उसे 'न्यास' कहते हैं। न्यास का अर्थ है, रख देना, छोड़ देना ।

८ अपन्यास—गाने के खण्ड अलग-अलग करके जो स्वर बतलाता है, उसे 'अपन्यास' स्वर कहते हैं ।

९ पकड़—कुछ मुख्य स्वरों का एक समुदाय जिनके द्वारा राग का स्वरूप प्रदर्शित हो जाय, उसे पकड़ कहते हैं।

१० लय—गायन मे काल की गति को लय कहते हैं, लय ३ प्रकार की हैं:—
(१) विलम्बित, (२) मध्य, (३) द्रुत।

(लय का विशेष विवरण आगे ताल अध्याय मे देखिये)

११ स्वर मालिका—किसी राग-रागिनी के स्वरों की ताल चित्र सहित रचना जिसके द्वारा उस राग का स्वरूप दिखाई देने लगे, उसे स्वर मालिका या सरगम कहते हैं।

१२ ध्रुवपद—शुद्ध नाम तो यही है, किन्तु इसका अपभ्रन्श धुरपद या धुर्पद है। ध्रुव का अर्थ है दृढ़ निश्चित, गम्भीर और पद का अर्थ है चरण-चाल। इसलिये ध्रुवपद उस गीत को कहते हैं। जिसकी चाल गम्भीर हो। यह प्राय: चौताले मे गाये जाते हैं और इनमे देवताओं की स्तुति प्रार्थना आदि गायन ही गाये जाते हैं। ध्रुवपद गाने मे तान पल्टे व्यवहार नहीं किये जाते, केवल मींड व गमक का ही प्रयोग हो सकता है।

१३ ख्याल—यह अपने प्राचीन गुणीजनों का गायन है, यह बहुत विलम्बित लय मे गाया जाता है। तान पल्टों का व्यवहार इसमे स्वच्छन्दता से कर सकते हैं।

१४ टप्पा—ख्यालों के बाद यह गाना चला। 'टप्पा' भी हर राग रागिनी में बँधे रहते हैं। आजकल टप्पा का गायन बनारस को छोड़ अन्य स्थानों मे बहुत कम रह गया है।

१५—तराना इसमें कोई शब्द (बोल) ऐसे नहीं रहते, जिनका कुछ अर्थ निकल सके जैसे-तूम, तोम, तना, दिर, दारे, दानी इत्यादि शब्द इस्तेमाल किये जाते है। ये शब्द स्तैमाल करने का कारण कुछ सङ्गीतज्ञ यह बताते हैं कि अमीरखुसरो अरबी के विद्वान थे और ईरानी सङ्गीत भी भली प्रकार जानते थे, किन्तु जब वे हिन्दुस्तान आये तो यहां के संस्कृतमय गीतों को देखकर घबराये। इनको गाने में उन्हे दिक्कत पड़ती थी, इसलिये उन्होंने 'तराना' के गाने ताल और लय मे बांधकर गाने शुरू कर दिये।

१६ तिरवट—इसमें भी तराना की तरह गायन होता है, इसके बोल प्राय: पखावज के होते हैं। यह भी हर एक राग रागिनी मे गाया जा सकता है, किन्तु वर्तमान समय मे इसका प्रचार बहुत कम हो गया है।

१७ रागमाला—उस गीत को कहते हैं, जिसमें कई राग-रागिनियों के स्वर काम में आ जाते हैं। गीत की प्रत्येक लाइन या टुकड़े मे अलग-अलग राग-रागिनी के स्वर होते हैं। देखिये इसी पुस्तक में आगे एक रागमाला की स्वरलिपि है।

१८ ठुमरी—गाने का चलन टप्पों के बाद से आरम्भ हुआ। ठुमरी का गायन पहिले लखनऊ और बनारस से निकला। इसलिये उधर इसके गाने का रिवाज अधिक है।

१६ ग़ज़ल—उर्दू, फ़ारसी की कविता का नाम है, जिसे लय मे बांधकर भी गाते हैं। इसमे मनमाने तान-पल्टे भी लगाए जा सकते है। इसमे किसी राग-रागिनी की बन्दिश नहीं होती, क्योंकि इसके गाने मे केवल खूबसूरती की तरफ गवैये का ध्यान रहता है।

२० दादरा—ठुमरियों की चाल के गीत है, लेकिन दादरा की बन्दिश ठुमरी से छोटी होती है। दादरा अधिकतर द्रुतलय मे ही गाये जाते है।

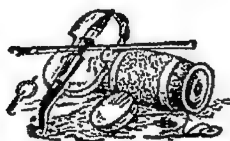
२१ होली या फाग—यह मौसमी गीत है। वसन्त पञ्चमी से लेकर फाल्गुन की पूर्णिमा (होली) तक इसे गाते है। इसका प्रचार उत्तर प्रदेश और बिहार मे अधिक है। इसके गीतों में प्रायः राधाकृष्ण की होली खेलने का वर्णन अधिक रहता है। होली गाने मे चाचर, त्रिताल और कहरवा ताले उपयोग में अधिक आती है।

२२ चैती—चैत के महिने का गीत है। विरह वर्णन के गीत इसमे गाये जाते हैं। इसकी भाषा भोजपुरिया रहती है, इससे मालूम होता है कि यह गीत आरा और छपरा की तरफ से निकला है।

२३ कजली—बरसाती गीत है। आषाढ़ की पूर्णिमा से लेकर कृष्णाष्टमी तक इसे गाते है। इसके गीतों मे वर्षा ऋतु वर्णन, विरह वर्णन रहता है। मिर्जापुर जिले में इसका प्रचार अधिक है।

२४ मांड—मारवाड़ी गीत है, किन्तु अब इधर भी गाया जाता है।

२५ सोहर, बन्ना—बच्चा पैदा होते समय 'सोहर' और विवाह के समय 'बन्ना' गाये जाते हैं। यह महिलाओं के गीत है, इनका प्रचार अधिकतर उ० प्र० मे है।



६ राग और ३० रागनी

भारतीय संगीत में मुख्य ६ राग और ३० रागनी माने गये हैं, इनके अतिरिक्त राग परिवार बहुत विस्तृत है। जिसका विवरण आगे दिया जायगा।

६ राग नाम	रागनियों के नाम
१ भैरव	१–भैरवी २–वराटी ३–मधुमाधवी ४–सैंधवी ५–बङ्गाली
२ मालकोष	१–तोड़ी २–गौरी ३–गुणकली ४–खम्भावती ५–ककुभ
३ हिंडोल	१–रामकली २–देशाख्यी ३–ललित ४–विलावल ५–पटमंजरी
४ दीपक	१–देशी २–कुमोदिनी ३–नट ४–केदारा ५–कान्हरा
५ श्रीराग	१–मालश्री २–आसावरी ३–धनाश्री ४–बसन्त ५–मारू
६ मेघ	१–टङ्क २–मल्हार ३–गुर्जरी ४–भूपाली ५–देशकारी

अब प्रत्येक राग का विवरण और उसका स्वरूप दिया जाता है:—

१—राग भैरव

वादी स्वर धैवत, सम्वादी रिषभ

इस राग में रे, ध कोमल और बाकी स्वर शुद्ध हैं। इसकी जाति सम्पूर्ण अथवा औडव-सम्पूर्ण है, क्योंकि कभी-कभी आरोही में रे, छोड़ दिया जाता है। गाने का समय दिन का प्रथम प्रहर (शरद ऋतु) है।

आरोहावरोह—सा रे ग म प ध नि सां=सां नि ध प म ग रे सा।

(अथवा)—सा ग म प नि सां=सां नि ध प म ग रे सा।

पकड़—"सा ग मप ध प"।

*** शास्त्रीय निर्णय ***

सगौ मपौ धपौ मगौ रिगौ मपौ मगौ रिसौ।
भैरवो नित्यपूर्णः स्याद्धैवतांशः प्रभातगः॥ (अभिनवरागमंजरी)

आलाप— (स्वर प्रस्तार)

(१) सा ग मप ध प मगरे सा गमप मगरे सा ग मपधप सा मपमगरे सा निस धप निधप सारे सा मग मगरे रे सा निसा रेरे सा रे सानिधप मपध परे सा।

(२) मग मगरे सा निध पसा निसा पमगरे रे रे सा सारेसा ।
(३) मगरे सा पमगरे सा ध प मगरेसा ध प मगरे रे सा ।

राग भैरव की एक गत सरगम (तीन ताल मात्रा १६)

	०	३	×	२
स्थायी	सा सा म ग	म प प प	ध ध प प	म ग रे सा
	ग रे सा म	ग रे सा नि	ध ध ध प	नि नि सा सा
अन्तरा	ध ध म ध	प सां सां सां	सां रें रें रें	सां नि सां सां
	सां रें सां नि	ध प नि ध	प म ग प	म ग रे सा

भैरव राग-प्रभाव

प्राचीन गुणियों का कहना है कि इस राग को विशुद्ध रूप में गाने से विना बैल के कोल्हू का चलना, संक्रामक ज्वर से आरोग्य होना शिर-पीड़ा दूर होना इत्यादि—फल पाये जाते हैं।

भैरव राग की ५ रागनी

(१) भैरवी, (२) वराटी, (३) मधुमाधवी, (४) सैंधवी, (५) बङ्गाली।

२—राग मालकौंस

वादी स्वर—मध्यम, सम्वादी षडज

इस राग में रिषभ और पंचम वर्जित होने से इसकी औड़व जाति है। ग ध नि इसमे कोमल लगेंगे। गायन समय रात्रि का चौथा प्रहर (शिशिर ऋतु) है।

आरोहावरोह—नि सा ग म ध नि सां=सां नि ध म ग म ग सा।
पकड़ (स्वरूप)-मग, मधनिध, म ग सा।

शास्त्रीय निर्णय

निसौ गमौ धनी सश्च सनी धमौ गमौ गसौ।
मालकोशोऽरिपः प्रोक्तो मध्यमांशो निशीथगः॥

आलाप (स्वर प्रस्तार)

(१) साम मग मगसा निधनि साम मग गमधमग मगसा।
(२) धनिसाम गम धम निधम गमधनि सांध निध म मगसा।
(३) गमध मधनिसां गंसांनिध गंनिधम गमधमधनिसां।
(४) धनिसांधनिसां मंगंमं गंसां सांनिधमगसा निधनिसा गम सांनिध निध मगसा।

गत—सरगम मालकौंस (तीनताल)

स्थाई—	ध	नि	ध	म	ग	सा	ध	नि	सा	सा	म	म	म	ग	म	ग
	म	ग	म	ध	नि	सां	नि	ध	सां	नि	ध	नि	ध	म	सां	नि
अन्तरा—	म	ग	म	ध	नि	सां	सां	सां	ध	नि	सां	सां	गं	मं	गं	सां
	मं	गं	सां	गं	सां	नि	ध	म	सां	नि	ध	नि	ध	म	सां	नि

राग प्रभाव

इस राग को शुद्ध रूप में गाने से पत्थर गल जाता है, मूर्च्छागत वायु का दमन होकर तुरन्त आनन्द लाभ प्राप्त होता है।

मालकौंस की ५ रागिनी

(१) तोड़ी, (२) गौरी, (३) गुणकली, (४) खम्भावती, (५) ककुभ।

३—राग हिंडोल

वादी धैवत, सम्वादी गंधार

इस राग मे मध्यम तीव्र (मं) है और रे, प वर्जित हैं। इसीलिये इसकी औड़व जाति है। बाकी सब स्वर शुद्ध लगेंगे।

गायन समय—दिन का प्रथम प्रहर (१० बजे) बसन्त ऋतु।
आरोहावरोह—सा ग मं ध नि सां। सां नि ध मं ग सा॥
पकड़—सा ग मं ध नि ध मं ग सा।

* शास्त्रीय निर्णय *

गसौ धमौ धसौ गश्च मधौ निधौ मगौ च सः।
हिन्डोलो धैवतांशः स्यात् प्रथमे यामके दिने॥

—अभिनव रागमंजरी।

आलाप (स्वर प्रस्तार)

(१) सा धसा मंगसा गसा गमंग सा सा निध मंधसा गमंगसा।
(२) साध मंधमंग मंधसा सागमंग सा सागमंध धधमंग मंधनिध मंग धमं गगसा।
(३) सासागग मंमंग मंधसांसां निध निधमंग मंगसा।
(४) मंग सांनिनि धध मंमं गग मंगसा मंग धमंगसा।

हिंडोल राग की गत सरगम (झपताल)

स्थाई-	ग	ग	सा	सा	सा	धृ	धृ	सा	सा	सा
	सा	ग	मं	ध	नि	ध	मं	ग	ग	सा
	म	सा	ग	ग	ग	मं	ध	नि	ध	मं
	नि	ध	मं	नि	ध	मं	ग	मं	ग	सा
अन्तरा-	ग	ग	मं	ध	मं	सां	सां	सां	सां	सां
	सां	सां	गं	गं	मं	गं	गं	सां	सां	सां
	सां	नि	ध	नि	ध	मं	ग	मं	ध	सां
	नि	ध	मं	नि	ध	मं	ग	मं	ग	सा

हिंडोल राग का प्रभाव

शुद्ध रूप में यह राग गाने से शिर पीड़ा निवारण, शोक मोह का नाश इन फलों की प्राप्ति होती है तथा हिंडोला घूमने लगता है।

हिंडोल की ५ रागिनी

(१) रामकली (२) देशाची (३) ललित (४) चिलावल (५) पटमंजरी।

४-राग दीपक

वादी गंधार, सम्वादी धैवत

इस राग में मध्यम तीव्र लगा कर निषाद वर्जित करते हैं। शेष स्वर शुद्ध हैं। ६ स्वरों का राग होने के कारण इसकी षाड़व जाति है। गायन समय—रात्रि का प्रथम प्रहर है, किन्तु बसन्त ऋतु में इसे हर समय गा सकते हैं।

राग दीपक में मतभेद—सं० रत्नाकर के मत से दीपक राग सम्पूर्ण और सङ्गीत पारिजात के मत से औड़व सम्पूर्ण है। यथा:—

सम्पूर्णो दीपको जातो भिन्नकैशिकमध्यमात ।
गपाल्पः सग्रहो मान्तः संकीर्णो दीप्तमध्यमः ॥

—संगीत रत्नाकर

आरोहे मनिवर्ज्यः स्याद्दीपको मालवोत्थितः ।
गान्धारोद्ग्राहसंयुक्तः सन्यासांशविभूषितः ॥

—सङ्गीत पारिजात

'नाद विनोद' ग्रंथ ने इसमे निषाद वर्जित माना है और मध्यम तीव्र यथाः—

गांधारांश–ग्रह–न्याम पूर्णो ज्योतिः स्वरूपकः ।
संध्याकाले प्रगीयन्ते दीपकस्यप्रकाशिताः ॥

—नाद विनोद

इसी ग्रन्थ के आधार पर दीपक राग का राग विवरण दिया जाता है।

आरोहावरोह—सा रे ग मं प ध सां। सां ध प मं ग रे सा ॥

आलाप (स्वर प्रस्तार)

(१) सासारेग गरेगरे गमं पपग पधध पधपध पमंगसा ।
(२) धग मंपरेसा गमंपग गमं गमंग पमंगमंगसा।
(३) सांधमंग पमं पधसांध पगमं धसा मंपधसा गरेसागसा ।
(४) सांरेंसां गंरेंसां मंगंमंगंसांगं मंगंरेंसां पंमंगंरें सांध पमंगसा ।
(५) गरेगमं सागरेग पमंरेग धपगमंध धसांरेंसां धपमंगरेसा ।

दीपक राग की गत (सरगम) झपताल, मात्रा १०

	×		२			०		३		
स्थाई	ग	ध	प	मं	प	मं	प	ग	मं	प
	ध	ग	रे	सा	रे	सा	रे	ग	मं	प
अन्तरा	प	प	मं	ध	प	ध	प	सां	सां	सां
	ध	ध	ग	मं	प	ग	रे	सा	रे	ग

दीपक राग का प्रभाव—

इस राग को शुद्ध रूप में समय पर गाने से स्वतः दीपक का जल उठना, संक्रामक पीड़ाओं की निवृत्ति इत्यादि फल ग्रन्थो मे कहे गये हैं। कहते है सङ्गीताचार्य तानसेन जी ने अकबर बादशाह के अधिक आग्रह पर इस राग को गाया तो उनका ही शरीर अग्नि की लपटों से झुलस गया था, पीछे यह अग्नि मेघ राग द्वारा शान्त की गई।

दीपक राग की पांच रागिनी

(१) देसी (२) कुमोदिनी (३) नट (४) केदारा (५) कान्हरा

५—श्री राग

वादी रिषभ, सम्वादी पंचम, जाति औड़व-सम्पूर्ण

इस राग मे रे, ध कोमल और मध्यम तीव्र लगता है। आरोही मे ग, ध वर्जित हैं। गायन समय-सूर्यास्त के बाद (हेमन्त ऋतु)

आरोहावरोह—सा रे मं प नि सां। सां नि ध प मं ग रे सा ॥

पकड़—सा रे रे सा पमंगरे गरे रे सा।

※ शास्त्रीय निर्णय ※

रिसौ मपौ धपौ निश्च सनी धपौ मगौ रिसौ।
श्रीरागो धगहीनः स्यात्आरोहे रिषभांशकः ॥

आलाप (स्वर प्रस्तार)

१—सा रेरेसा मंप प मंपधुमंप मंगरे मंगरे गरे सा निरेसा।
२—सा निसा गरे मंगरे पमंगरे धमंगरे गरे सा निरेसा सा।
३—सारेरेसा गरेसा मंगरेसा पमं धुप मंगरे मंगरेसा निरेसा।
४—मंपधुपनिनिसा पनिसा निसा रेसा मंगरेसा धुमंगरेसा गरेसा निरेसा।
५—पपधु मंपनि सांगंरें रेंनिधु निधुप मगरे गरे सानिरेसा।

श्रीराग की गत (सरगम) तीनताल, मात्रा १६

स्थाई	रे	रे	सा	ग	रे	-	सा	धु	मं	प	मं	रे	ग	रे	-	सा
अन्तरा	प	प	धु	प	नि	नि	सां	सां	नि	सां	रें	सां	रें	-	सा	सा

राग प्रभाव

इस राग को गाने से अत्यन्त शान्ति प्राप्त होती है। शास्त्रों में लिखा है कि इस राग को उचित समय में शुद्ध रूप से गाया जावे तो सूखे वृक्ष भी हरे हो जाते है।

श्रीराग की पांच रागिनी

(१) मालश्री (२) आसावरी (३) धनाश्री (४) बसन्त (५) मारू।



६—मेघ राग

वादी षड़ज, संवादी पंचम, जाति औड़व

इस राग मे ग ध वर्जित करके निषाद कोमल लगाते हैं।
गायन समय—रात्रि का चौथा प्रहर, वर्षा ऋतु में हर समय।
आरोहावरोह—सा रे म प नि सां। सां नि प म रे सा।
पकड़—रेम रेसा निप निसा रेम रेप निसां निप रेम रेमपमरे सा।

शास्त्रीय निर्णय

रिमौ रिसौ निपौ निसौ रिमौ रिपौ रिमौ रिसौ ।
ऋषभान्दोलितो मेघः सपसम्वादमण्डितः ॥

—अभिनव राग मंजरी

स्वर प्रस्तार (आलाप)

१—रेरेमरे पमप रेमप सानिसा निसारे सा मरेसा पमरेसा ।
२—मरेमप निप सांनिप रेमप निपरेमप निसारेमप ।
३—पमरे मरेमप निपमरेमप सांनिपमरेमप मरेसा ।
४—सांरेंसां निसांरे सांपनिसांरेंसां मपनिसां रेंमंरेंसां पंमंरेंसां ।
५—सांरेंसांनिप मपनिसां निपमपरेमप मपनिप निपमरेसा ।

मेघ राग की गत (सरगम) एकताल, मात्रा १२

	×		०		।		०		।		०	
स्थाई	सां	सां	सां	नि	प	रे	रे	म	रे	सा	रे	सा
	नि	सा	रे	म	प	नि	सां	नि	प	नि	म	प
अन्तरा	प	नि	म	प	नि	सां	रें	रें	मं	रें	सां	सां
	सां	सां	सां	नि	प	रे	रे	म	रे	सा	रे	सा

कोई-कोई सङ्गीतज्ञ इसमे किंचित तीव्र निषाद का प्रयोग भी करते है ।

राग प्रभाव

शुद्ध भाव में इसे गाने से वर्षा होना, क्षयरोग का नाश, मोह का दूर होना इत्यादि फलों की प्राप्ति हो सकती है ।

मेघ राग की ५ रागिनी

(१) टंक (२) मल्हार (३) गुर्जरी (४) भूपाली (५) देशकारी ।

——

राग परिवार

६ राग, ३० रागनी, ४८ पुत्र, ४८ पुत्रवधू

(लेखक—प्रोफेसर इनायत खा)

६ राग	भैरव	मालकोष	हिन्डोल	दीपक	श्री	मेघ
प्रत्येक राग की ५-५ रागनी	१ भैरवी	तोड़ी	रामकली	देसी	मालश्री	टङ्क
	२ वराटी	गौरी	देशाखी	कुमोदिनी	आसावरी	मल्हार
	३ मधुमाधवी	गुणकली	ललित	नट	धनाश्री	गुर्जरी
	४ सैंधवी	खम्भावती	बिलावल	केदारा	वसन्त	भूपाली
	५ बंगाली	ककुभ	पटमंजरी	कान्हरा	मारू	देशकारी
प्रत्येक राग के ८-८ पुत्रों के नाम	हरक	मारू	चन्द्रविम्ब	कँवल	मालव	जलन्धर
	दिनकीपूर्वी	मेवाड़	मगल	कुन्तल	गौड़	सारङ्ग
	माधो	बड़हंस	शोभा	कलंग	गुणसागर	नटनारायण
	सुहू	प्रबल	आनन्द	चमक	गुम्बर	शंकराभरन
	बलन्दे	चन्द्रक	विनोद	कुसुम	गंभीर	कल्याण
	मधु	नन्द	प्रधान	राम	शंकर	गजधर
	थलक	भँवर	गौरा	लेहल	बेहागड़ा	गंधार
	पंचम	खोखर	विभास	हमाल	सिन्धु	शहाना
८-८ पुत्र वधुओं के नाम	सूहा	धनाश्री	लीलावती	मंगल गूजरी	विजया	केटनाट
	बिलावली	मालश्री	केरवी	जैजैवन्ती	दयावती	गावदी
	सोरठी	जैतश्री	जयती	मालगूजरी	कुन्जी	कदमनाट
	खम्भारी	सुघराई	पूरवी	भोपाली	सोहनी	बिहारी
	अंदाही	दुर्गा	पारवती	मनोहरी	सरदा	मांजा
	वहलगुजरी	गांधारी	त्रिवेणी	अहीरी	चेमा	परज
	पटुमंजरी	भीमपलासी	देवगिरी	ईमन	शशिरेखा	गटमंजरी
	मीरदी	कामोदी	सरस्वती	हमीर	सदासी	शुधनाट

श्रीयुत कन्नोमल जी का एक लेख "माधुरी" मे प्रकाशित हुआ था, जिसमे ६ राग और ३० रागनियों के नक्शे बड़े महत्व पूर्ण ढङ्ग से लिखे है, पाठको के लाभार्थ वे नक्शे यहां दिये जाते है ।

साहित्य-गूढ़ार्थ-रागमाला के छः रागों का नक्शा

संख्या	राग	राग की उत्पत्ति	राग-प्रधान स्वर	गाने का समय		राग का प्रभाव	साहित्य-गूढ़ार्थ		रस	किस विषय की चीजें इस राग में गानी चाहिये
				ऋतु	समय		नायक	नायिका		
१	भैरव	महादेव जी का मुख	धैवत स्वर	शरद	प्रातःकाल	कोल्हू का चलने लगना	धीरोदात्त	स्वीया	शांत देवादि विषय रति	शान्त रस सम्बन्धी अथवा देवादि विषयक
२	मालकोष	महादेव जी का कंठ	षड्ज स्वर	शिशिर	रात्रि का चौथा प्रहर	पाषाण का पिघलना	दक्षिण	स्वीया	संभोग श्रंगार	संभोग श्रंगार रस की चीजें
३	हिंडोल	ब्रह्मा का शरीर	धैवत स्वर	बसन्त	दिन का पहला प्रहर	हिंडोला घूमने लगना	शठ	प्रौढ़ा पारकीया	विप्रलंभपूर्व राग श्रंगार	विप्रलंभ पूर्वराग श्रंगार की चीजें
४	दीपक	सूर्य के नेत्र	षड्ज स्वर	ग्रीष्म	मध्याह्न काल	दीपक जल उठना	शठ	स्वीया मध्या प्रौढ यौवना	संभोग श्रंगार	संभोग श्रंगार विषय की चीजें
५	श्रीराग	देवताओं से उत्पत्ति	धैवत स्वर	हेमन्त	दिन का चौथा भाग	सूखे वृक्ष को हरा कर देना	धीरप्रशान्त	कन्यका	विप्रलंभ श्रंगार	विप्रलंभ श्रंगार के विषय की चीजें
६	मेघमल्हार	आकाश	षड्ज स्वर	वर्षा	रात्रि का चौथा भाग	बादलों से जल बरसना	धीरप्रशान्त	परकीया कन्यका	विप्रलंभ श्रंगार	विप्रलभ श्रंगार के विषय की चीजें

साहित्य-गूढ़ार्थ-रागमाला की ३० रागनियां

राग	रागनी	प्रधानस्वर	गाने का समय		साहित्य-गूढ़ार्थ			किस विषय की चीजे इन रागनियो मे गानी चाहिये
			ऋतु	समय	नायक	नायिका	रस	
भैरव	भैरवी	मध्यम	शरद	प्रातःकाल	अनुकूल	प्रगल्भा गाढ़तारुण्या प्रोपितभर्तृका	शान्ति-देवादि विषय-रति	जो रस इस रागनी का है उसी की चीजें गानी चाहिये
	वराटी	षड्ज	,,	दिन का अन्तिम भाग	अनुकूल	सामान्य प्रौढ़ा स्वाधीन-भर्तृका	संभोग श्रृङ्गार	
	मधुमाधवी	,,	,,	दिन का प्रथम भाग	धीरोदात्त	स्वीया मध्या प्ररूढ़स्मरा	,,	,,
	सैंधवी	,,	,,	दिन का चतुर्थ भाग	धृष्ट	स्वीया-प्रगल्भा अधीरा-खंडिता	विप्रलंभ श्रृङ्गार	,,
	बङ्गाली	,,	,,	,,	धीरोदात्त	प्रगल्भा-प्रोपितभर्तृका अभिसारिका	,,	,,
मालकोप	टोड़ी	षड्ज	शिशिर	मध्यान्ह-काल	धीरप्रशांत	परकीया-कन्या मदयौवना	विप्रलंभ श्रृंगार	,,
	गौरी	,,	,,	दिन का चौथा भाग	धीरललित	स्वीया मध्या प्रौढ़ यौवना प्रोपित भर्तृका	,,	,,
	गुणकली	,,	,,	दिन का प्रथम भाग	धीरोदात्त	मुग्धा मानमृदुअभिसारिका स्वीया विरहोत्कंठिता	,,	,,
	खम्भावती	,,	,,	रात्रि का तीसरा भाग	धीरललित	सामान्यवासका-सज्जा	,,	,,
	कुकुम्भिका	,,	,,	रात्रि का चौथा भाग	,,	सामान्या समस्त रस कोविदा	संभोग श्रृङ्गार	,,

हिंदोल	रामकली	षड्ज	बसन्त	रात्रिका चौथा भाग	धीरोदात्त	कांताभिसारिका कन्या	विप्रलंभ-श्रंगार	,,
	देशाखी	गांधार	,,	दिन का प्रथम भाग	,,	कन्याभिसारिका	सम्भोग-श्रंगार	,,
	ललिता	धैवत	,,	,,	अनुकूल	अभिसारिका प्रौढ़ा	,,	,,
	बिलावल	,,	,,	,,	धीरोदात्त	प्रौढ़ा अभिसारिका	विप्रलंभ-श्रंगार	,,
	पटमंजरी	पंचम	,,	रात्रि का दूसरा भाग	,,	स्वकीया प्रोपितभर्तृका	,,	,,
दीपक	देशी	षड्ज	ग्रीष्म	मध्यान्ह-काल	धीरोदात्त	प्ररूढ़स्तराभिसारिका	सम्भोग-श्रंगार	,,
	कुमोदिनी	धैवत	,,	,,	,,	प्ररूढ़ यौवनाभिसारिका	विप्रलंभ-श्रंगार	,,
	नट	षड्ज	,,	दिनका चतुर्थ भाग	अनुकूल	स्वाधीन भर्तृका परकीया कन्या	सम्भोग-श्रंगार	,,
	केदारा	निषाद	,,	मध्यान्ह-काल	धीरप्रशांत	स्वीया-प्रोषितभर्तृका	विप्रलंभ-श्रंगार	,,
	कान्हरा	,,	,,	रात्रिका प्रथम भाग	धृष्ट	प्रगल्भा अधीरा प्रोषित भर्तृका	विप्रलंभ-श्रंगार	,,
श्रीराग	मालश्री	षड्ज	शरद्	मध्यान्ह-काल	धीरोदात्त	विप्रलब्धा अभिसारिका	विप्रलंभ-श्रंगार	,,
	मारू	,,	हेमन्त	दिनका चौथा भाग	,,	प्रगल्भा वासकसज्जा	,,	,,
	धनाश्री	,,	,,	मध्यान्ह-काल	,,	मुग्धा-मानमृदुविरहोत्कंठिता	,,	,,
	बसन्त	,,	बसन्त	दिनका दूसरा भाग	,,	मध्याभिसारिका	,,	,,
	आसावरी	धैवत	हेमन्त	मध्यान्ह-काल	,,	सामान्या श्वेताभिसारिका	,,	,,
मेघ	टङ्क	षड्ज	वर्षा	,, रात्रि	अनुकूल	स्वीया-मध्या विरहोत्कंठिता	विप्रलंभ-श्रंगार	,,
	मल्हार	धैवत	,,	रात्रिके पिछले ३ भाग	,,	स्वीया-मध्या प्रोषितभर्तृका	,,	,,
	गुर्जरी	ऋषभ	,,	रात्रि	शठ	सामान्या खण्डिता	,,	,,
	भूपाली	षड्ज	,,	प्रातःकाल	,,	प्रगल्भा, श्वेताभिसारिका, वासकसज्जा	,,	,,
	विभास	,,	,,	रात्रि का चौथा भाग	अनुकूल	प्रगल्भा, गढातारुण्या स्वाधीन भर्तृका	,,	,,

४८४ राग-रागिनियों के नाम और सरगम

[यह राग उर्दू की प्राचीन पुस्तक 'मिनकार मूसीकार' से दिये जा रहे हैं, जिसके लेखक प्रोफेसर इनायतखां साहेब हैं। इनमें से कुछ रागों के स्वरों में आजकल मतभेद पाया जाता है]

नं०	राग नाम	आरोही	अवरोही
१	अल्हैया बिलावल	सा रे ग प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
२	अड़ाना कान्हरा	सा रे ग॒ ग म प नि॒ नि सां	सां नि नि॒ प म ग ग॒ रे सा
३	आनन्द भैरवी	सा रे ग॒ म प ध नि॒ सां	सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा
४	अहीरी	सा रे म प ध सां	सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा
५	आसावरी	सा रे म प ध॒ सां	सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे सा
६	अमृत वाहिन	सा ग॒ म प ध नि॒ सां	सां नि॒ ध॒ म ग॒ रे सा
७	आभीरी	सा ग॒ रे ग॒ म नि॒ सां	सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे सा
८	आभोगी	सा रे ग॒ म ध॒ सां	सां ध॒ म ग॒ रे सा
९	आदि भैरवी	सा ग॒ रे ग॒ म प ध॒ सां	सां ध॒ प म प ग॒ रे सा
१०	आरभी	सा रे म प ध सां	सां नि ध प म ग रे सा
११	आनन्दलीला	सा रे ग म प नि सां	सां नि ध॒ प म ग रे सा
१२	इरकल कामोदी	सा रे ग म प ध नि॒ नि सां	सां नि नि॒ ध प म ग रे सा
१३	उडन चन्द्रिका	सा ग॒ म प नि॒ सां	सां नि॒ प ध प म ग॒ सा
१४	उडन कान्ता	सा रे म प म ध नि॒ सां	सां नि॒ ध प म ध म ग रे सा
१५	उदय चन्द्रिका	सा रे ग॒ म प ध॒ नि॒ सां	सां ध॒ प म रे सा
१६	उदय रवि चन्द्रिका	सा रे ग म ध नि सां	सां नि ध म ग रे सा
१७	उडन जूलित	सा रे ग॒ म॑ ध नि सां	सां नि ध प म॑ ग॒ रे सा
१८	उत्तरी	सा ग म॑ प ध नि॒ सां	सां नि॒ ध म॑ ग सा
१९	कामोद	सा रे ग म म॑ प ध नि सां	सां नि ध प म॑ म ग रे सा
२०	कामोदी	सा रे ग म प ध नि॒ नि सां	सां नि नि॒ ध प म ग रे सा
२१	केदारा	सा रे ग म म॑ प ध नि सां	सां नि ध प म॑ म ग रे सा
२२	केदार गोल	सा रे ग॒ ग म प नि॒ नि सां	सां नि नि॒ ध प म ग रे सा

नं०	नाम राग	आरोही	अवरोही
२३	कमाच्ची	सा ग म प नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
२४	ककुभ	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
२५	कौंसी कान्हरा	सा रे ग॒ म ध नि॒ सां	सां नि॒ ध म ग॒ रे सा
२६	काफी	सा रे ग॒ म प ध नि॒ सां	सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा
२७	कालिङ्गड़ा	सा रे॒ ग म प ध॒ नि सां	सां नि ध॒ प म ग रे॒ सा
२८	कीरवाणी	सा रे ग॒ म प ध॒ नि सां	सां नि ध॒ प म ग॒ रे सा
२९	केदार	सा म ग॒ प नि सां	सां नि प म ग रे सा
३०	करनाटी	सा रे॒ ग॒ म प ध॒ नि॒ सां	सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे॒ सा
३१	कनकाङ्गी	सा रे॒ ग॒ म प ध॒ नि॒ सां	सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे॒ सा
३२	कोकिल पूरिया	सा रे॒ ग॒ म प ध नि सां	सां नि ध प म ग॒ रे॒ सा
३३	काम वर्धिनी	सा रे॒ ग॒ म॑ प ध॒ नि सां	सां नि ध॒ प म॑ ग रे॒ सा
३४	कान्तामणी	सा रे ग म॑ प ध॒ नि॒ सां	सां नि॒ ध॒ प म॑ ग रे सा
३५	कौशल	सा रे ग म॑ प ध नि सां	सां नि ध प म॑ ग रे सा
३६	कान्हरा	सा ग म ध नि सां	सां ध प म ग म रे सा
३७	कान्हड़ा	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध नि प म प ग रे सा
३८	कला भरन	सा रे ग म प ध नि॒ सां	सां ध प ग रे सा
३९	कान्तल वराली	सा म प ध॒ नि॒ ध सां	सां नि॒ ध प म सा
४०	कोकिला वरदानी	सा म ग प ध॒ नि सां	सां नि ध॒ म ग रे सा
४१	कनक वसन्त	सा रे म प नि॒ सां	सां नि॒ प म ग॒ रे म ग॒ सा
४२	कृपावती	सा रे ग॒ प ध॒ सां	सां नि॒ ध॒ प ध॒ म ग॒ रे सा
४३	कन्द्रगोल	सा ग॒ रे ग॒ प म प ध॒ नि॒ सां	सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे सा
४४	कलावती	सा रे॒ ग म प ध नि॒ प सां	सां नि॒ ध नि॒ प म ग रे॒ सा
४५	करंक वराली	सा रे म प नि॒ सां	सां नि॒ ध नि॒ प म ग रे सा

नं०	राग नाम	आरोही	अवरोही
४६	कपि	सा रे ग म प ध नि सां	सां ध प म रे ग म रे सा
४७	कोकिल ध्वनि	सा रे ग म ध नि ध सां	सा नि ध नि प म ग रे ग म ग रे सा
४८	कोलाहल	सा रे ग म प नि ध नि सां	सां नि प ध म ग रे सा
४९	कजंजी	सा नि सा ग रे ग म प ध	प म ग रे सा नि सा
५०	कन्द्रमा	सा ग म ध म नि सां	सां नि म ग रे सा
५१	काकम्भेरी	सा रे ग म प ध सां	सां नि ध प म ग रे सा
५२	कोकिलारू	सा रे ग म प ध सां	सां नि ध प म ग रे सा
५३	कालगारो	सा रे म ग रे ग म प ध नि सां	सां नि प ध नि ध प म ग रे सा
५४	किरनावली	सा रे म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
५५	कल्याण वसन्त	सा म ग प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
५६	कलहंस	सा रे ग म प ध सां	सां नि ध प म ग रे सा
५७	कोकिलापंचमी	सा रे ग प ध नि सां	सां नि ध प मं ग रे सा
५८	कुसुम रंजनी	सा रे मं प ध नि सां	सां नि ध नि प मं ग रे सा
५९	कालमूर्ती	सा ग रे ग मं प सां	सां नि ध प मं ग रे सा
६०	काम रंजनी	सा रे ग रे मं प ध नि सां	सां नि ध मं ग रे ग सा
६१	कलाकान्ती	सा रे ग म प नि ध नि सां	सां नि ध म ग रे सा
६२	कुमुदप्रभा	सा रे ग ध नि सां	सां प मं ग नि सा
६३	कुमुदकी	सा रे ग मं नि सां	सां नि मं ग रे सा
६४	कल्याण केसरी	सा रे ग प ध सां	सां ध मं प मं ग रे सा
६५	क्रिया भरन	सा रे ग मं प नि ध सां	सां नि ध मं ग रे सा
६६	कामकेश	सा म ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग म सा
६७	कोरी	सा रे ग म ध नि सां	सां नि ध म ग रे सा
६८	खम्भावती	सा रे ग म प ध नि नि सां	सां नि नि ध प म ग रे सा

नं०	नाम राग	आरोही	अवरोही
६९	खमाज	सा रे ग ग म प ध नि नि सां	सां नि नि ध प म ग ग रे सा
७०	खट	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
७१	खरहरप्रिया	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
७२	खिला मनोहरी	सा ग म प नि सां	सां नि ध प म ग सा
७३	गारा कान्हड़ा	सा रे ग ग म प ध नि नि सां	सां नि नि ध प म ग ग रे सा
७४	गौड़ मल्हार	सा रे ग म प ध नि नि सां	सां नि नि ध प म ग रे सा
७५	गौड सारङ्ग	सा रे ग म मं प ध नि नि सां	सां नि नि ध प मं म ग रे सा
७६	गूजरी	सा रे ग म मं प ध नि सां	सां नि ध प मं म ग रे सा
७७	गारा	सा रे ग म प ध नि नि सां	सां नि नि ध प म ग रे सा
७८	गान्धारी	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
७९	गान्धारी टोड़ी	सा रे रे ग म मं प ध नि सां	सां नि ध प मं म ग रे रे सा
८०	गानमूर्ती	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
८१	गायक पूरिया	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
८२	गौरी मनोहरी	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
८३	गांगे भूषणी	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
८४	गाम्बोदी	सा रे ग मं प ध नि सां	सां नि ध प मं ग रे सा
८५	गमन शर्मा	सा रे ग मं प ध नि सां	सां नि ध प मं ग रे सा
८६	गन्धक्रिया	सा रे ग रे म प नि ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
८७	गम्भीर बसन्त	सा म ग म रे ग म प निधनिपसा	सां ध प म रे सा
८८	गज वर्धन	सा ग म ध नि सां	सां ध प म ग रे सा
८९	गड़बड़ ध्वनी	सा रे ग म प ध नि सां	सां ध प ग रे सा
९०	गर्वप्रिया	सा नि ग म ध सां	सां नि ध म ग रे सा
९१	गमन भास्कर	सा रे ग प ध प नि सां	सां ध प म ग सा

नं०	राग नाम	आरोही	अवरोही
९२	गर्जना भेरी	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि रे प म ध सा
९३	गम्भीर नाट	सा ग म प नि सां	सां नि प म ग सा
९४	गन्धर्व	सा नि सा ग रे ग म प नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
९५	गौमती	नि सा रे ग मं प ध नि	प मं ग रे सा नि सा
९६	गोवर्धन	ग रे ग प ध सां	सां नि ध नि मं ग रे सा
९७	गमक क्रिया	सा रे ग मं प नि सां	सां नि प मं ग रे सा
९८	गौरी क्रिया	सा ग मं प ध नि सां	सां नि ध नि प मं ग सा
९९	गोल	सा रे म प नि सां	सां नि प म ग म रे ग म रे सा
१००	गतो हृदया	प ध नि प रे ग रे सा नि प	मं प ध नि सां नि प
१०१	गोलीपन्त	सा रे म प नि सां	सां नि ध र म ध म ग रे सा
१०२	चक्रवक	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
१०३	चारुकेशी	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
१०४	चालनाट	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
१०५	चित्त अमीरी	सा रे ग मं प ध नि सां	सां नि ध प मं ग रे सा
१०६	चरण वराली	सा रे ग म ध नि ध सां	सां नि ध म ग रे सा
१०७	चन्द्रका भैरवी	सा ग रे ग म ध नि सां	सां नि ध म ग रे सा
१०८	चेत अन्जनी	सा रे ग रे ग म प ध नि ध नि सां	सां नि ध नि म ग म रे ग रे सा
१०९	चित्रमणी	सा रे म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
११०	चन्द्रज्योति	सा रे ग मं प ध प नि सां	सां नि प ध प मं ग रे सा
१११	चन्द्ररेखा	सा रे ग मं प धसां	सां नि ध मं ग रे सा
११२	चकोरध्वनि	सा रे ग मं प ध नि सां	सां नि मं ग रे सा
११३	चितावती	सा रे मं प ध नि सां	सां नि ध प मं ग रे सा
११४	चतुरञ्जनी	सा मं ग मं प नि सां	सां नि ध नि प ग मं रे सा

नं०	राग नाम	आरोही	अवरोही
११५	छाया	सा रे ग॒ ग म प ध नि॒ नि सां	सां नि नि॒ ध प म ग ग॒ रे सा
११६	छायानट	सा रे ग म प ध नि॒ नि सां	सां नि नि॒ ध प म ग रे सा
११७	जैतश्री	सा रे॒ ग म॑ प ध॒ नि सां	सां नि ध॒ प म॑ ग रे॒ सा
११८	जैत	सा रे॒ ग म॑ प ध॒ नि सां	सां नि ध॒ प म॑ म ग रे॒ सा
११९	जैजैवन्ती	सा रे ग॒ ग म प ध नि॒ नि सां	सां नि नि॒ ध प म ग ग॒ रे सा
१२०	जोगी आसावरी	सा रे॒ म प ध॒ सां	सां नि ध॒ प म ग रे॒ सा
१२१	जौनपुरी टोड़ी	सा रे म प ध॒ सां	सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे सा
१२२	जङ्गला	सा रे ग॒ ग म प ध नि॒ सां	सां नि॒ ध प म ग ग॒ रे सा
१२३	जीलफ	सा रे॒ ग म प ध॒ नि सां	सां नि ध॒ प म ग रे॒ सा
१२४	जोग	सा रे॒ ग म म॑ प ध॒ नि सां	सां नि ध॒ प म॑ ग रे॒ सा
१२५	जिला वर्णनम्	सा रे॒ ग॒ म॑ प ध॒ नि॒ सां	सां नि॒ ध॒ प म॑ ग॒ रे॒ सा
१२६	ज्योति स्वरूपनी	सा रे ग म॑ प ध॒ नि॒ सां	सां नि॒ ध॒ प म॑ ग रे सा
१२७	जोगी बसन्त	सा रे ग म प ध नि सां	ध नि ध प म ग रे सा
१२८	जगत मोहनी	सा ग म प नि सां	सां नि प म ग रे॒ सा
१२९	जोग भैरवी	सा रे ग॒ म प ध॒ सां	सां नि॒ ध॒ प रे सा
१३०	जै मनोहरी	सा रे ग॒ म ध सां	सां नि॒ प म ग॒ रे सा
१३१	जैरमा	सा रे ग म प ध नि॒ सां	सां नि ध प म ग सा
१३२	जलशेखर	सा रे ग म प नि॒ ध नि॒ सां	सां ध प म रे ग रे सा
१३३	जोगी भैरवी	सा ग रे म प ध नि॒ सां	सांनि धप म नि॒ध मगरे मग सा
१३४	जैमन्हू	सा ग म प ध सां	सां नि ध प म॑ ग रे॒ सा
१३५	जनरंजिनी	सा रे ग म प ध नि सां	सां ध प म रे सा
१३६	जिला	सा रे ग॒ ग म प ध नि॒ नि सां	सां नि नि॒ ध प म ग ग॒ रे सा
१३७	झिंझोटी	सा रे ग म प ध नि॒ नि सां	सां नि नि॒ ध प म ग रे सा

नं०	नाम राग	आरोही	अवरोही
१८४	नायकी कान्हरा	सा रे ग ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग ग रे सा
१८५	नौरोज	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
१८६	नट	सा रे ग म प ध नि प नि सां	सां नि प म रे सा
१८७	नाट पूरिया	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
१८८	नट भैरवी	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
१८९	नाग नन्दिनी	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
१९०	नवनीत	सा रे ग मं प ध नि सां	सां नि ध प मं ग रे सा
१९१	नाम नारायणी	सा रे ग मं प ध नि सां	सां नि ध प मं ग रे सा
१९२	नीतमती	सा रे ग मं प ध नि सां	सां नि ध प मं ग रे सा
१९३	नासिका भूषणी	सा रे ग मं प ध नि सां	सां नि ध प मं ग रे सा
१९४	नाग सुरावली	सा ग म प ध सां	सां ध प म ग सा
१९५	नवरस कान्हड़ा	सा ग म प ध प सां	सां नि म ग रे सा
१९६	नेत्र रंजनी	सा रे ग रे म प ध नि सां	सां नि ध म ग सा
१९७	नाद नामक्रिया	सा रे म ग म प ध सां	सां नि ध प म ग रे सा
१९८	नाट मङ्गल	सा ग ग म प ध नि सां	सां नि ध प म रे ग रे सा
१९९	नव मनोहरी	सा रे म ध नि सां	सां नि प म रे सा
२००	नाग वराली	सा नि सा रे म प ध	प म ग रे सा नि सा
२०१	नायकी	सा रे म प ध नि प सां	सां नि ध प म ग रे सा
२०२	नाद तरंजनी	सा रे म प ध प नि सां	सां ध नि प ध म ग रे ग सा
२०३	नारायण गौल	सा रे म प नि ध नि सां	सां नि धं प म ग रे सा
२०४	नीलम परी	सा रे ग म सा ध म प नि सां	सा नि प ध निपम गम रेगरे मग सा
२०५	नवरोज	म ध नि सा रे ग म प	म ग रे सा नि ध सा
२०६	नाग ध्वनि	सा ग रे ग म ग म प प नि ध प नि प ध नि सां	सानिधनिधपमधपमरेगमगरेगसा

नं०	नाम राग	आरोही	अवरोही
२०७	नैपाल	सा रे म ग म प नि सां	सां नि ध प म रे सां
२०८	नावोमन	सा रे ग रे र्म प सां	सां नि ध प र्म ग रे सा
२०९	नागावगी	सा रे ग र्म प सां	सां नि ध प र्म ग रे सा
२१०	पूर्वी	सा रे ग म र्म प धु ध नि सां	सां नि ध धु प र्म म ग रे सा
२११	परज	सा रे ग म र्म प धु ध नि सां	सां नि ध धु प र्म म ग रे सा
२१२	प्रभावती	सा रे ग प धु नि सां	सां नि धु प ग रे सा
२१३	पटमंजरी	सा रे गु म र्म प धु नि नि सां	सां नि नि धु प र्म म गु रे सा
२१४	पंतुवराली	सा रे गु र्म प धु नि सां	सां नि धु प र्म धु र्म गु रे सा
२१५	पावनी	सा रे गु र्म प ध नि सां	सां नि ध प र्म गु रे सा
२१६	प्रदीपक	सा ग म र्म प नि सां	सां नि प र्म र्म ग रे सा
२१७	पंचम	सा रे ग म प धु नि सां	सां नि धु प म गु रे सा
२१८	पहाड़ी	सा रे गु ग म प ध नि नि सां	सां नि नि ध प म ग गु रे सा
२१९	पहाड़ी-कामोदी	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
२२०	पहाड़ी झिंझोटी	सा रे ग म प ध नि नि सां	सां नि नि ध प म ग रे सा
२२१	पीलू	सा रे रे गु ग म प धु नि सां	सां नि धु प म ग गु रे रे सा
२२२	पलाश्री	सा रे गु ग म प धु नि नि सां	सां नि नि ध धु प म गु रे सा
२२३	पुन्नाग वराली	सा रे गु म प धु नि सां	सां नि धु प म गु रे सा
२२४	पन्ना दूती	सा रे म प धु नि सां	सां नि धु प म गु रे सा
२२५	पंघरू	सा र्म ग र्म प नि धु नि सां	सां नि प र्म ग रे सा
२२६	पुष्पललित	सा ग र्म धु नि सां	सां धु प र्म रे सा
२२७	पार्वती	सा म ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग म ग रे स
२२८	पूर्वकालैली	सा रे ग र्म प ध नि प ध नि प सा	सां नि ध प र्म ग रे सा
२२९	पूर्ण चन्द्रिका	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि प ध प म ग म रे सा

नं०	राग नाम	आरोही	अवरोही
२३०	पूर्ण साधन	सा रे ग म प ध	प म ग रे सा नि ध नि सा
२३१	पनहाग तोड़ी.	नि ध नि सा रे ग म प ध नि	ध प म ग रे सा नि ध नि सा
२३२	पल मंजरी	सा ग म ध सां	सां नि ध प म ग रे सा
२३३	पूर्ण कम्बोदी	सा रे ग म प नि सां	सां ध प म ग रे सा
२३४	प्रताप बराली	सा रे म प ध नि ध प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
२३५	पूर्णोदय	सा रे म प ध सां	सां नि प म रे ग रे सा
२३६	परत्रिया	सा रे ग मं प ध नि सां	सानि धनिपमध प मंग रे मंगसारे
२३७	पूर्व होलिका	सा म प ध नि सां	सां नि ध प म सा
२३८	पूर्वी	सा रे ग म प ध नि प सां	सां नि ध प म ग रे सा
२३९	विलावल सरपर्दा	सा रे ग म प ध नि नि सां	सां नि नि ध प म ग रे सा
२४०	बागेश्री कान्हरा	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
२४१	बसन्त	सा रे ग म मं ध ध नि सां	सां नि ध ध प म ग रे सा
२४२	वृन्दावनी सारङ्ग	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
२४३	वहार	सा रे ग म प ध नि नि सां	सां नि नि ध प म ग रे सा
२४४	बरवा	सा रे ग ग म प ध नि नि सां	सां नि नि ध प म ग ग रे सा
२४५	विसवारा	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
२४६	विहाग	सा रे ग म मं प ध नि सां	सां नि ध प मं म ग रे सा
२४७	विहागड़ा	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
२४८	विलावल देवगिरि	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
२४९	वलिहारी	सा रे ग प ध सां	सां नि ध म ग रे सा
२५०	वहावली	सा रे ग प ध सां	सां नि ध प ग ग रे सा
२५१	बोगी	सा रे-म प ध सां	सां ध नि ध प म रे म ग रे सा
२५२	वलाङ्गी	सा ग रे ग म प ध प सां	सां नि ध प म ग रे सां

नं०	नाम राग	आरोही	अवरोही
२५३	वलहस	सा रे म प ध सां	सां नि ध प म रे म ग सा
२५४	वरवर	सा ग म॑ रे गम॑रे ग म॑ ध नि ध सा	सां नि ध म॑ ग रे सा
२५५	विलावल	सा रे ग प ध सां	सां नि नि ध प म ग रे सा
२५६	वरारी	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
२५७	विहारी	सा रे म प ध नि नि सां	सां नि नि ध प म ग रे सा
२५८	वडहन्स	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि नि ध प म ग रे सा
२५९	वागेम्वरी	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
२६०	वलवर्धनी	सा म प सां	सां नि ध प म ग रे सा
२६१	भैरव	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
२६२	भैरवी	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
२६३	भूपरिया	सा रे ग म॑ प ध नि सां	सां नि ध प म॑ ग रे सा
२६४	भीमपलास	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
२६५	भूपाली	सा रे ग प ध सां	सां ध प ग रे सा
२६६	भूदेव क्रिया	सा रे म प ध सां	सां ध प म रे सा
२६७	भालेती	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि म प रे ग
२६८	भुजङ्ग	सा रे सा म ग म नि ध नि सा	सां नि ध म ग रे सा
२६९	भुङ्गला	सा रे ग म प सां	सां नि ध प म रे ग रे सा
२७०	भोगलीला	सा रे ग प ध नि सां	सां नि ध म ग रे सा
२७१	भूपाल पंछी	सा ग रे ग प म ध सां	सां प ध म॑ ग रे सा
२७२	भोलामुखो	सा रे ग म॑ प नि सां	सां नि ध प म॑ ग रे सा
२७३	भुसावली	सा रे ग म॑ प ध सां	सां नि ध प म॑ ग रे सा
२७४	भूपकल्याण	सा रे म प ध सां	सां नि ध प म॑ ग रे सा
२७५	भररंजनी	सा रे ग प ध नि सां	सां नि ध म॑ ग रे सा

नं०	नाम राग	आरोही	अवरोही
२७६	मानमती	सा रे ग रे म प सां	सां ध प म ग रे सा
२७७	भोग चिन्तामणि	सा रे म प ध सां	सां नि ध प म ग रे सा
२७८	भोगी	सा ग म प ध प ध नि सां	सां नि ध प म ध प म ग रे सा
२७९	माड़	सा रे ग म प ध नि नि सां	सां नि नि ध प म ग रे सा
२८०	मनोहरी	सा ग रे ग म प ध सां	सां ध प म ग रे ग सा
२८१	मालश्री	सा ग प ध नि सां	सां नि ध प ग सा
२८२	माली गौर	सा रे ग मं प ध नि सां	सां नि ध प मं ग रे सा
२८३	मियां का कान्हड़ा	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
२८४	मियां की मल्हार	सा रे ग म प ध नि नि सां	सां नि नि ध प म ग रे सा
२८५	मारवा	सा रे ग मं ध नि सां	सां नि ध मं ग रे सा
२८६	मेघ	सा रे ग म प ध नि नि सां	सां नि नि ध प म ग रे सा
२८७	मल्हार	सा रे ग म प ध नि नि सां	सां नि नि ध प म ग रे सा
२८८	मदमावत सारङ्ग	सा रे ग म प नि नि सां	सां नि नि प म ग रे सा
२८९	माँझी	सा रे ग प ध ध नि नि सां	सां नि नि ध ध प म ग रे सा
२९०	मंजर	सा रे ग ग म प ध नि नि सां	सां नि नि ध प म ग ग रे सा
२९१	मुखारी	सा रे प म ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
२९२	मालकोष	सा ग म ध नि सां	सां नि ध म ग सा
२९३	मानवती	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म रे सा
२९४	मायामालो गोल	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
२९५	मार रंजनी	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
२९६	मेज कल्यानी	सा रे ग मं प ध नि सां	सां नि ध प मं ग रे सा
२९७	मगद श्रीराग	सा रे ग म प ध सां	सां नि प ग सा
२९८	मतिसभावली	सा रे ग प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा

नं०	राग नाम	आरोही	अवरोही
२९९	मनरङ्ग	सा रे म प नि सां	सा नि प म ग रे सा
३००	मात कोकिला	सा रे प ध नि सां	सां ध नि ध प रे सा
३०१	मोहन	सा रे ग प ध सां	सां ध प रे ग प रे सा
३०२	मालव	सा रे ग म प नि म ध नि सां	सां नि ध नि प म ग म रे सा
३०३	मेघ जयन्ती	सा रे म ग प ध नि सा	सां प म ग रे सा
३०४	मारू सीमन्त	सा म ग म प ध प सां	सां नि ध प म ग रे सा
३०५	मालनी	सा रे ग म प सां	सां नि ध म ग रे सा
३०६	माधवी	सा रे ग म ध नि ध म प ध नि सा	सां नि प ग रे सा
३०७	सापेच श्री	सा रे ग मं प नि सां	सां नि ध प मं ग मं रे सा
३०८	मन्मतलट	सा नि सा रे ग मं प ध नि सां	सां ध प मं ग रे सा नि सा
३०९	मयूर बसंत	सा रे ग मं प ध नि सां	सा नि प ध नि ध प मं रे मंग रे गसा
३१०	माधवी मनोहरी	सा ग रे ग मं प नि ध नि सां	सां नि ध मं ग मं ग रे सा
३११	मारजयन्ती	सा रे मं प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
३१२	मोहन कल्याण	सा रे ग प ध सां	सां नि ध प मं ग रे सा
३१३	मृगानन्दन	सा रे ग ध नि सां	सां नि ध मं ध ग रे सा
३१४	मेघ रंजनी	सा रे ग प ध नि सां	सां ध प म ग रे सा
३१५	माहुरी	सा म ग म रे ग म प ध नि सा	सां ध प म रे ग म सा
३१६	मंजरी दूसरी	सा रे ग म प नि सां	सां नि ध म ग रे सा
३१७	मात सरस्वती	सा ग मं प ध सां	सां नि ध प म रे सा
३१८	मुलतानी	सा रे ग मं प ध नि सा	सां नि ध प मं ग रे सा
३१९	मारू	सा रे ग म मं प ध नि सां	सां नि ध प मं म ग रे सा
३२०	यदुकुल काम्बोदी	सा रे म प ध सां	सां नि ध प म ग रे सा
३२१	यज्ञप्रिया	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा

नं०	नाम राग	आरोही	अवरोही
३२२	यशप्रिया	सा रे मं प नि सां	सां नि ध प मं ग रे सा
३२३	योगज्योति	सा रे मं प नि ध सां	सां नि ध प मं ग रे सा
३२४	यमन कल्याण	सा रे ग म मं प ध नि सां	सां नि ध प मं म ग रे सा
३२५	रामकली	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
३२६	रामसाख	सा रे ग ग म प ध नि नि सां	सां नि नि ध प म ग ग रे सा
३२७	रामप्रिया	सा रे ग मं प ध नि सां	सां नि ध प मं ग रे सा
३२८	रीतुगोल	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
३२९	रवि चन्द्रिका	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध म ग रे सा
३३०	रात की पूरिया	सा रे ग मं प ध नि सां	सां नि ध प मं ग रे सा
३३१	रतरंगी	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
३३२	रूपवती	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
३३३	रागवर्धनी	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
३३४	रघुप्रिया	सा रे ग मं प ध नि सां	सां नि ध प मं ग रे सा
३३५	रिषिभ प्रिया	सा रे ग मं प ध नि सां	सां नि ध प मं ग रे सा
३३६	रसिक प्रिया	सा रे ग मं प ध नि सां	सां नि ध प मं ग रे सा
३३७	रामललित	सा रे ग म प नि प सां	सां नि ध म प म ग सा
३३८	रुद्रगंधार	सा रे ग रे म प म ध नि सां	सां नि ध म ग सा
३३९	रुद्र पंचम	सा ग म नि ध सां	सां नि ध म ग रे सा
३४०	राग मालिन	सा रे ग म प ध सां	सां ध नि ध प म ग रे सा
३४१	रत्नज्योति	सा ग म प नि सां	सां नि ध ग रे सा
३४२	रघुपति	सा रे ग प ध सां	सां ध प म ग रे सा
३४३	रसावली	सा रे ग म ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
३४४	रत्नमणी	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प ग रे सा

नं०	राग नाम	आरोही	अवरोही
३४५	राम मनोहरी	सा ग म प नि सां	सां नि धु प म ग सा
३४६	रुद्र मंजरी	सा रे ग प नि धु सां	सां नि धु प मं ग रे सा
३४७	रिषिभ वाहिनी	सा रे मं प ध नि सां	सां नि ध मं ग रे सा
३४८	रत्नमती	सा ग मं प मं ध नि सां	सां ध प मं प ग रे सा
३४९	रामक्रिया	सा रे ग म प म धु नि सां	सां नि धु प म ग म सा
३५०	रञ्जनी	सा रे ग मं ध सां	सां नि ध मं ग सा रे सा
३५१	राज कल्याण	सा ग मं ध नि सां	सां नि ध मं ग रे सा
३५२	रती	सा ग रे ग मं प ध नि सां	सां नि ध प मं ग रे सा
३५३	रमा प्रिया	सा रे ग मं प धु नि सां	सां नि धु प मं रे मं ग रे सा
३५४	लाचारी टोडी	सा रे रे ग म प धु नि नि सां	सां नि नि धु प म ग रे रे सा
३५५	ललित	सा रे ग म मं धु नि सां	सां नि धु प मं म ग रे सा
३५६	लंकदहन	सा रे ग ग म प ध नि नि सां	सां नि नि ध प म ग ग रे सा
३५७	लताङ्गी	सा रे ग मं प धु नि सां	सां नि धु प मं ग रे सा
३५८	लतामती	सा रे ग प मं प धु प सां	सां नि धु प मं धु मं ग रे सा
३५९	वेगवाहिनी	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
३६०	वन्शापती	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
३६१	वकला भरन	सा रे ग म प धु नि सां	सां नि धु प म ग रे सा
३६२	वरुन प्रिया	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
३६३	विश्वम्भरी	सा रे ग मं प ध नि सां	सां नि ध प मं ग रे सा
३६४	वाचसपति	सा रे ग मं प ध नि सां	सां नि ध प मं ग रे सा
३६५	बसन्त वराली	सा ग म प धु नि	सां धु प ग रे सा
३६६	वसन्त लीला	सा रे म प ध नि सां	सां नि ध प ग रे सा
३६७	वासिनी	सा रे ग म प नि ध नि सां	सां नि ध म प म ग रे सा

नं०	राग नाम	आरोही	अवरोही
३६८	वन काम्बोदी	सा म ग रे सा म प ध नि सां	सां नि प नि म ग रे सा
३६६	वेदांगिनी	सा ग म प ध नि सां	सां नि ध प ध म ग रे सा
३७०	वीर प्रताप	सा ग म प ध नि	सां नि ध प म ग रे सा
३७१	वसन्त मुखारी	सा ग रे ग म प नि ध नि सां	सां नि ध प म रे सा
३७२	वराली	सा ग रे ग मं प ध नि सां	सां नि ध प मं ग रे सा
३७३	विजय कोकिला	सा रे ग मं प ध सां	सां नि ध प मं ग रे सा
३७४	विलम्बिनी	सा मं ग मं प नि ध नि सां	सां नि ध नि प मं ग सा
३७५	विप्र मन्दिर	सा रे मं प ध नि सां	सां ध प मं ग रे सा
३७६	व्याघ्र नंदन	सा रे ग प ध सां	सां नि ध नि ध प मं ग रे सा
३७७	विभास	सा रे ग प ध सां	सां ध प ग रे सा
३७८	विभिन्नविक्रम	सा रे ग म प ध सां	सां नि ध प रे सा
३७९	सुरावली	सा रे ग म प ध नि नि सां	सां नि नि ध प म ग रे सा
३८०	सिंधु भैरवी	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
३८१	सूहा	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
३८२	सुघराई	सा रे ग म प नि सां	सां नि प म ग रे सा
३८३	सोरठ	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
३८४	साहुली	सा ग म प नि सां	सां नि ध प ग रे सा
३८५	सिन्धू	सा ग रे म प ध नि सां	सां ध प म ग रे ग सा
३८६	सिन्धु धनाश्री	सा रे ग म प नि ध सां	सां नि ध प म ग रे सा
३८७	सिंधवी	नि ध नि सा रे ग म प ध नि	नि ध प म ग रे सा नि ध नि
३८८	सुधनपाल	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध म ग रे ग सा
३८९	सारङ्गराम	सा रे म ध नि प सां	सां नि ध ग रे सा
३९०	सरस्वती मनोहरी	सा रे ग म ध सां	सां नि ध नि प म ग रे सा

नं०	राग नाम	आरोही	अवरोही
३९१	स्वावलम्बी	सा ग म प नि सां	सां नि ध प म ग प ग रे सा
३९२	सर्व पूरिया	सा रे ग प नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
३९३	सरङ्गी	सा रे म प ध नि सां	सां प म ग रे सा
३९४	संजीवनी	सा ग रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
३९५	सरस वाहिनी	सा रे ग रे म प ध नि सां	सां ध प म ग रे सा
३९६	सरस आनन	सा रे ग म ध नि सां	सां नि ध म ग रे सा
३९७	सदाकेसरी	स ग रे ग मं प ध नि सां	सां नि ध मं ग रे सा
३९८	सुनाम बोधनी	सा रे ग मं प सां	सां नि ध प मं ग रे सा
३९९	सम्वन्धनी	सा रे ग मं प ध नि सां	सां प मं ग रे सा रे सा
४००	सिनहारू	सा रे मं प नि सां	सां नि प मं रे ग रे सा
४०१	सिन्धुनी	सा रे सा ग मं प ध नि सां	सां नि ध प मं ग सा
४०२	सारङ्गा	सा रे ग मं प ध नि सां	सां ध प मं रे ग मं रे सा
४०३	सरस कल्याण	सा रे ग मं प ध नि सां	सां नि ध प मं ग मं रे सा
४०४	सुहाना	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग म ग रे सा
४०५	सन्मुख पूर्वा	सा रे ग मं प ध नि सां	सां नि ध प मं ग रे सा
४०६	सरस्वती	सा रे मं प ध नि सां	सां नि ध प मं रे सा
४०७	सिंधड़ा	सा रे ग म प ध नि सा	सां नि ध प म ग रे सा
४०८	सिंधूरा	सा रे ग म प ध नि नि सां	सां नि नि म प ध नि नि सा
४०९	सुहनी	सा रे ग मं ध नि सां	सां नि ध मं ग रे सा
४१०	सोरठ मल्हार	सा रे ग म प ध नि नि सां	सां नि नि ध प म ग रे सा
४११	स्वरपरदा विलावल	सा रे ग म प ध नि नि सां	सां नि नि ध प म ग रे सा
४१२	सोहा कान्हड़ा	सा रे ग म प ध नि नि सां	सां नि नि ध प म ग रे सा
४१३	सावनी	सा रे ग म प ध नि नि सां	सां नि नि ध प म ग रे सा

नं०	नाम राग	आरोही	अवरोही
४१४	सुघराई कान्हड़ा	सा रे ग॒ म प ध नि सां	सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा
४१५	सुधबुध भामिनी	सा रे॒ ग॒ मं प ध नि॒ सां	सां नि॒ ध प मं ग॒ रे॒ सा
४१६	सामेरी	सा रे म प नि॒ सां	सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे सा
४१७	सामेरी मल्हार	सा रे म प नि सां	सां नि ध प॒ म ग रे सा
४१८	सैनावती	सा रे॒ ग॒ म प ध॒ नि॒ सां	सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे॒ सा
४१९	स्वर्णकांत	सा रे॒ ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे॒ सा
४२०	सरसाङ्गी	सा रे ग म प ध॒ नि सां	सां नि ध॒ प म ग रे सा
४२१	सिवलेनी	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
४२२	सालगमऊ	सा रे॒ ग॒ मं प ध॒ नि॒ सां	सां नि॒ ध॒ प मं ग॒ रे॒ सा
४२३	स्वर्णमगनी	सा रे॒ ग॒ म प ध नि सां	सां नि ध प मं ग॒ रे॒ सा
४२४	सुचरित्रा	सा रे ग मं प ध॒ नि॒ सां	सां नि॒ ध॒ प मं ग रे सा
४२५	सिंधुतारंजनी	सा रे॒ ग म ध॒ नि सां	सां नि प ध॒ म ग रे॒ सा
४२६	सारंग नाट	सा रे॒ म प ध॒ सां	सां नि ध॒ प म रे॒ म ग रे॒ सा
४२७	सिंधुरामक्रिया	सा रे॒ म प ध॒ नि ध॒ सां	सां नि प म रे॒ ग रे॒ सा
४२८	सारंगम	सा रे॒ ग म ग प नि ध॒ म प ध॒ नि सां	सां ध॒ म प म ग रे॒ सा
४२९	सर्वमंगल	सा ग म नि॰ ध॒ सां	सां ध॒ प म ग रे॒ सा
४३०	सौराष्ट्र	सा रे म ग म ध॒ नि सां	सां ध प म ग सा
४३१	सर्वमती	सा रे म प ध नि सां	सां नि ध मं ग रे सा
४३२	श्यामलांगी	सा रे ग॒ मं प ध॒ नि॒ सां	सां नि॒ ध॒ प मं ग॒ रे सा
४३३	शुक्ल मंजरी	सा रे॒ ग॒ प ध॒ नि॒ सां	सां नि॒ ध॒ म ग॒ रे॒ सा
४३४	श्यामला	सा ग॒ रे ग॒ मं प ध॒ नि ध॒ सां	सां नि ध॒ प मं ग॒ रे सा
४३५	शंकरा	सा रे ग प ध नि सां	सां नि ध प ग रे सा
४३६	शहाना कान्हरा	सा रे ग॒ म प ध नि सां नि सां	सां नि नि॒ ध प म ग॒ रे सा

नं०	राग नाम	आरोही	अवरोही
४३७	शुद्ध कल्याण	सा रे ग मं प ध नि सां	सां नि ध प मं ग रे सा
४३८	श्याम कल्याण	सा रे ग म मं प ध नि सां	सां नि ध प मं म ग रे सा
४३९	शङ्करा भरन	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
४४०	शाम	सा रे म प ध सां	सां ध प म ग रे सा
४४१	शोकवराली	सारेमगमपमधरेसांमपधनिधसा	सां नि ध म ग रे सा
४४२	शोभापन्त वराली	सा रे ग मं प ध नि सां	सां नि ध प मं ग रे सा
४४३	शुधमुखी	सा ग रे ग म प नि ध सां	सां नि ध म ग रे सा
४४४	शुद्ध नाट	सा ग म प नि ध नि सां	सां नि ध प म रे सा
४४५	शुद्ध सावेरी	सा रे म प ध सां	सां ध प मं रे सा
४४६	शुद्ध क्रिया	सा रे म प ध प नि सां	सां नि ध प म रे ग म रे सा
४४७	शुद्ध देशी	सा रे म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
४४८	शुद्ध सामन्त	सा रे ग म प नि ध सां	सां ध नि प ध म ग रे सा
४४९	शुद्ध धनाश्री	सा ग म प नि सां	सां नि प म ग सा
४५०	शाडवलारू	सा रे म प ध सां	सां नि ध नि प म ग रे सा
४५१	शुद्ध गन्धर्वी	सा रे ग म प ध नि सां	सां ध प म रे सा
४५२	शुद्ध मंगला	सा रे म प ध सां	सां नि ध प म ग रे सा
४५३	शुद्ध भैरवी	सा ग रे म प नि ध नि सां	सां नि ध प म रे ग म रे सा
४५४	शाम मुखारी	सा रे ग म प ध नि सां	सां ध नि ध प म ग सा
४५५	शिव काम्बोदी	सा रे ग म नि सां	सां नि प म ग रे सा
४५६	शुद्ध सारंग	सा रे ग म प ध नि ध सां	सां ध प म रे ग रे सा
४५७	शम्भू क्रिया	सा ग रे म प नि म ग रेमपनिसां	सां नि प नि म ग रे सा
४५८	शुद्ध	सा रे ग मं प नि सां	सां नि प मं ग सा
४५९	शंखारू	सा ग रे ग मं ध नि सां	सां नि प मं ग रे सा

नं०	राग नाम	आरोही	अवरोही
४६०	शन्या मध्यम	सा रे मं प नि ध सां	सां नि ध प मं ग रे सा
४६१	शाम भ्रान्तक	सा ग मं प ध सां	सां नि ध प मं ग रे सा
४६२	शिवेन्द्र मध्यम	सा रे ग मं प ध नि सां	सां नि ध प मं ग रे सा
४६३	श्रुती	सा रे म प नि सां	सां नि ध प म ग प म रे सा
४६४	श्रीललित	सा रे ग रे मं प नि ध प सां	सां नि ध प मं ग रे सा
४६५	श्री राग	सा रे ग मं प ध नि सां	सां नि ध प मं ग रे सा
४६६	श्रीरञ्जनी	सा रे ग म ध नि सां	सां नि ध म ग रे सा
४६७	श्री रागम्	सा रे म प नि सां	सां नि प ध नि प म ग रे सा
४६८	श्रानू	सा रे ग मं प ध सां	सां नि ध प मं ग सा
६९	हिन्डोल	सा ग मं ध नि सां	सां नि ध मं ग सा
४७०	हेमकल्याण	सा रे ग म मं प ध नि सां	सां नि ध प मं म ग रे सा
४७१	हर्षचन्द्रिका	सा रे ग प ध सां	सां नि ध प म ग रे सा
४७२	हिमकल्याण	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
४७३	हंसध्वनि	सा रे ग प नि सां	सां नि प ग रे सा
४७४	हन्वावती	सा रे ग मं प ध नि सां	सां नि ध प मं ग रे सा
४७५	हनुमत तोड़ी	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
४७६	हटकाम्बेरी	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
४७७	हरी काम्बोदी	सा रे ग म प ध नि सां	सां नि ध प म ग रे सा
४७८	हिंडोल बसन्त	सा रे म प ध नि ध सां	सां नि ध प म ध म ग रे सा
४७९	हेमक्रिया	सा रे ग म प ध नि सां	सां ध प म रे ग म रे सा
४८०	हेमवर्धनी	सा रे म प नि सां	सां नि ध प म ध म ग रे सा
४८१	हरीनाट	सा म ग म प ध नि सां	सां नि प ध नि प म ग सा
४८२	हम्स नाद	सा रे ग मं नि सां	सां नि प मं रे सा
४८३	हम्स नन्दा	सा रे मं प ध नि सां	सां नि ध नि प मं रे सा
४८४	हंस कंकणी	सा ग म प नि सां	सां नि ध प म ग रे सा

राग-रागनियों का प्रकृति से सम्बन्ध

[लेखक—सङ्गीताचार्य घनश्यामदास जी]



जिस प्रकार समयानुसार वात, पित्त, कफ की अथवा ६ ऋतुओं की गति वदलती रहती है, उसी प्रकार शरीर के अन्दर भी दिन-रात्रि मे ६ ऋतुये व वात, पित्त, कफ की प्रकृति वदलती रहती है। उन्हीं परिवर्तित गतियों के अनुसार प्राचीन सङ्गीतज्ञ ६ ऋतुओं के वास्ते ६ राग नियत कर गये हैं तथा बहुत विचार करके समय-समय के वास्ते वात, पित्त, कफ के स्वरो का शोधन करके अनेक और भी राग-रागनियां नियत कर गये है। प्राचीन आचार्यों द्वारा मुख्य ६ राग ३० रागनियां, ४८ उपराग और ४८ उपरागिनी, इस प्रकार सब मिलाकर १३२ राग-रागनियां नियत हैं। इनके अतिरिक्त सङ्गीतज्ञों ने और भी सैकडों राग-रागनियां उन्हीं मुख्य १३२ राग-रागनियों मे से एक दूसरे मे मिश्रित करके वना लिये है, और उनके नाम भी कल्पनानुसार अलग-अलग रख लिये है। जैसे—दरवारी-कान्हरा, मियां की मल्हार, भटियार, जीवनपुरी, मुलतानी, विलासखानी टोडी, लाचारी टोड़ी, सरपर्दा, हुसैनी कान्हडा, लक्ष्मी-टोडी, छाया टोडी इत्यादि ऐसे सैकडों नाम रख लिये है। किन्तु प्राचीन आचार्यों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण से १३२ राग-रागनियां ही नियत है। जिनमे कि समय-समय के वास्ते वात, पित्त, कफ के स्वरो का विज्ञान द्वारा शोधन करके राग-रागनियों के अन्दर वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी और वर्ग नियत है। राग रागनियों में "पूर्व राग-रागनियां" और "उत्तर राग-रागनियां" ऐसे दो भेद माने है।

पूर्व राग-रागनियो को १२ वजे दिन से १२ वजे रात्रि तक गाते वजाते हैं और उत्तर राग-रागनियां १२ वजे रात्रि से १२ वजे दिन तक गाई वजाई जाती है। इसी प्रकार सप्तक भी दो भागों मे विभाजित है। सा, रे, ग, म ये चार स्वर सप्तक के पूर्वाङ्ग और प, ध, नि, सां ये सप्तक के उत्तराङ्ग स्वर कहलाते हैं। पूर्व राग-रागनियो का वादी स्वर नियमानुसार सप्तक के पूर्वाङ्ग मे रहना चाहिये, और उत्तर राग-रागनियो का वादी स्वर सप्तक के उत्तरांग मे होना चाहिये। पूर्व और उत्तर राग-रागनियो के नियमानुसार वादी स्वर केवल एकही स्वर होता है, अर्थात् पूर्व राग-रागनियां का वादी स्वर राग-रागनियों के नियमानुसार ही पूर्व के चार स्वर सा, रे, ग, म में से कोई एक रहता है। इसी प्रकार उत्तर राग-रागनियो का वादी प, ध, नि, सां मे से नियमानुसार कोई भी एक स्वर रहता है। राग-रागनियो मे भी वात, पित्त, कफ की प्रकृति का प्रभाव रहता है।

पित्त प्रकृति राग-रागनियों का वादी स्वर पित्त प्रकृति का ही रहता है,जो पित्त का प्रभाव भी रखता है। इसमे वहुधा कफ प्रकृति के शीताङ्ग स्वर वर्जित रहते है, पित्त प्रकृति की राग-रागनियां उत्साहवर्धक होती है।

इसी प्रकार कफ प्रकृति के राग-रागनियों का वादी स्वर कफ प्रकृति का प्रभाव रखने वाला होता है, दूसरी प्रकृति के स्वर इसमें वर्ज्य रहते हैं। (किन्तु कहीं-कहीं वर्जित नहीं भी रहते) जैसे राग भैरव का वर्ग संपूर्ण है, अर्थात् आरोह-अवरोह में सभी स्वर लगते हैं, किन्तु वादी स्वर कफ का प्रभाव रखने वाली कोमल धैवत सप्तक के उत्तराङ्ग में नियत है और संवादी स्वर भी कफ प्रकृति का प्रभाव रखने वाली कोमल ऋषभ है। कफ प्रकृति की राग-रागनियां शांतिकारक होती हैं, इसी प्रकार बात प्रकृति के राग-रागनियों का भी नियम है। बात प्रकृति के राग-रागनियो का वादी स्वर बात प्रकृति का प्रभाव रखने वाला ही होगा। नीचे ६ ऋतुओं और ६ रागों का नक़शा देकर विवरण सहित ६ रागों के लक्षण समझाये गये हैं। पढ़ने से मालूम होंगे कि रागों में भिन्न-भिन्न कौन से लक्षण हैं।

१२ महिनों में ६ ऋतुओं की गति		२४ घण्टे अर्थात् दिन, रात्रि में ६ ऋतुओं की व बात, पित्त, कफ की गति							
महिने	ऋतु	समय	बजे से	बजे	समय तक	ऋतु	प्रकृति	प्रधान स्वर	६ ऋतुओं के राग
चैत्र, वैशाख	बसन्त	प्रातः	७	११	दिन तक	बसन्त	कफ (पित्त)	रिषभ, षड्ज	हिंडोल
जेष्ठ, आपाढ़	ग्रीष्म	दिन	११	३	दिन तक	ग्रीष्म	पित्त	षड्ज, गान्धार	दीपक
श्रावण, भादों	वर्षा	दिन	३	७	शाम तक	वर्षा	बात	निषाद	मेघ
क्वार, कार्तिक	शरद	शाम	७	११	रात्रि तक	शरद	(बात) पित्त	गान्धार, धैवत	मालकोष
अगहन, पौष	हेमन्त	रात्रि	११	३	रात्रि तक	हेमन्त	कफ	पंचम	श्री राग
माघ, फाल्गुन	शिशिर	रात्रि	३	७	सवेरे तक	शिशिर	कफ (बात)	मध्यम, रिषभ, धैवत	भैरव

उपरोक्त नक्शे में पाठकगण ६ ऋतुओ के प्रधान स्वरो को ही प्रत्येक रागो के वादी, संवादी स्वर न समझ लें, क्यो कि स्वरों के खाने के ही सामने राग लिखे हुये है, नक्शे मे केवल स्वरों की भिन्न-भिन्न प्रकृति ही बतलाई है। राग-रागनियो के वादी, संवादी स्वर राग-रागनियो के नियमानुसार ही नियत रहते है, जैसा कि पहिले बता चुका हूं।

२४ घण्टे, अर्थात् दिन रात्रि में वात पित्त कफ की गति .

सवेरे·········कफ	३ बजे रात्रि से	६ बजे दिन तक, कफ
दोपहर··········· पित्त	६ बजे दिन से	३ बजे दिन तक, पित्त
शाम··········· वात	३ ,, ,,	६ बजे रात्रि तक, वात
अर्धरात्रि·········पित्त	६ बजे रात्रि से	३ बजे रात्रि तक, पित्त

सङ्गीत के विचारशील पाठको को ऋतु और रागों के सम्बन्ध मे यह शंका अवश्य ही उत्पन्न होगी कि भैरव राग तो सब जगह शरद ऋतु का बतलाते है। यह तो ठीक है, किन्तु सूर्योदय के पहिले शरद ऋतु आप किसी शास्त्र मे नहीं पायेंगे। सूर्योदय के पहिले अर्थात् रात्रि के तीसरे चौथे प्रहर मे हेमन्त और शिशिरऋतु शास्त्रो मे मानी है। भैरव राग प्रातःकाल का अवश्य है, किंतु प्रातःकाल शरद रितु नहीं मानी। इसलिये नियमानुसार भैरव राग शिशिर रितु का है, क्योकि प्रातःकाल शिशिर रितु मानी है, शरद रितु नहीं। सूर्योदय के पहिले प्रातःकाल का उत्तर राग निश्चित है, क्योकि भैरव राग का वादी स्वर सप्तक के उत्तराङ्ग मे कफ प्रकृति का शीताङ्ग स्वर कोमल धैवत नियत है तथा संवादी स्वर भी कफ प्रकृति का प्रभाव रखने वाली कोमल रिषभ है, सारांश यह है कि इस राग के वादी, संवादी स्वर शीताङ्ग हैं इसलिये सूर्योदय के प्रथम प्रातःकाल का अर्थात् शिशिर रितु का यह राग है।

इसी प्रकार हिंडोल राग को भी रात्रि के तीसरे प्रहर में गुणीजन व कई संगीत ग्रन्थ बताते है। रात्रि का तीसरा प्रहर शास्त्रों मे हेमन्त रितु का माना है। इस राग मे कफ प्रकृति के शीताङ्ग स्वर बिल्कुल ही नहीं है। इस राग का वादी स्वर वात प्रकृति का प्रभाव रखने वाली शुद्ध धैवत है और संवादी स्वर भी पित्त प्रकृति की शुद्ध गांधार है। इसलिये नियमानुसार यह राग बसंत रितु का है। रात्रि के तीसरे प्रहर हेमन्त रितु के होने के कोई भी लक्षण इस राग मे नहीं मिलते। इस राग का वादी स्वर सप्तक के उत्तराङ्ग मे शुद्ध धैवत है, इसलिये इस राग को उत्तर राग माना है।

श्रीराग को भी इसी तरह दिन के चौथे प्रहर और हेमन्त रितु का बतलाते है। दिन का चौथा या तीसरा प्रहर हेमन्त रितु शास्त्रों मे है ही नहीं! शास्त्र सम्मति से हेमन्त रितु रात्रि के तीसरे प्रहर मे मानी गई है। इसलिये श्रीराग, रात्रि के तीसरे प्रहर (हेमन्त रितु) का है। क्योकि इस राग का वादी स्वर भी कफ प्रकृति का प्रभाव रखने वाला पंचम है और वह भी सप्तक के उत्तराङ्ग मे है। तथा संवादी स्वर भी कफ प्रकृति की कोमल रिषभ है अर्थात् इस राग के लक्षण कफ प्रकृति के ही हैं, शीताङ्ग स्वर वादी-संवादी है। सप्तक के उत्तराङ्ग मे वादी स्वर पंचम भी नियत है, इसलिये श्रीराग निश्चय ही हेमन्त रितु का उत्तर राग है, न कि दिन के चौथे प्रहर का। दिन के चौथे प्रहर मे तो वर्षा रितु मानी है, अतः यहां पर मेघराग ही हो सक्ता है,

श्री राग नहीं। मेघराग का वादी स्वर बात प्रकृति का प्रभाव रखने वाला शुद्ध ऋषभ है, और संवादी स्वर भी बात का ही प्रभाव रखने वाला शुद्ध धैवत है। जिस प्रकार वर्षा ऋतु में वात प्रकृति प्रधान रहती है, उसी प्रकार इस मेघ राग में भी प्रधान स्वर अर्थात् वादी, संवादी बात प्रकृति के ही शुद्ध धैवत, या शुद्ध ऋषभ प्रधान स्वर हैं। यह राग पूर्व रागों में है, क्यों कि इस राग का वादी स्वर ऋषभ सप्तक के पूर्वाङ्ग में नियत है।

वैसे अपनी-अपनी तबियत से कोई कुछ भी मानें या वादी सम्वादी स्वरों की जगह दूसरे ही वादी संवादी स्वर नियत करदें, किन्तु राग के लक्षणों के अनुसार तथा प्रकृति व शास्त्रों के अनुसार प्रमाणित नहीं हो सकते। प्राचीन आचार्यों ने हमारे लिये काट छांट करने की जगह ही नहीं छोड़ी कि हम कुछ भी इधर-उधर कर सकें यदि करते भी हैं तो फिर,ये राग-रागनियाँ प्रकृति से, ऋतुओं से व शास्त्रों से मेल नहीं खातीं।

दीपक राग का समय कई पुस्तकों में तथा गायकजनों द्वारा, दिन के दोपहर का सुना है। बिलकुल ठीक है दिन के दोपहर ही को ग्रीष्म ऋतु मानी है, तथा इस राग का वादी स्वर भी पित्त प्रकृति का तीव्र मध्यम है और संवादी स्वर भी पित्त प्रकृति का षड्ज है, जिसका ग्रह रवि है, इसलिये यह राग ग्रीष्म ऋतु का है। वादी स्वर तीव्र मध्यम होने से व सप्तक के पूर्वाङ्ग में होने से, पूर्व राग माना है, तथा सप्तक के मध्य स्थान में वादी स्वर रहने से ही इसे मध्यान्ह का राग माना है।

इसी प्रकार राग मालकौंस का वादी स्वर भी कफ प्रकृति का प्रभाव रखने वाला शुद्ध मध्यम है, जो कि सप्तक के पूर्वाङ्ग या मध्य स्थान में नियत है। इसका संवादी स्वर, पित्त प्रकृति के प्रभाव वाला षड्ज है। केवल एक स्वर शुद्ध मध्यम ही कफ प्रकृति का प्रभाव रखने वाला इस राग में प्रधान है और संवादी स्वर पित्त प्रकृति का है। मन्त्री स्वर पित्त प्रकृति का होने से इस राग में अधिक शीतांश नहीं है, अर्थात् यह राग माद्-दिल और मधुर है। इसका वादी स्वर मध्यम भी सप्तक के मध्य स्थान में व पूर्वाङ्ग मे है। इन सब संयोगों के कारण नियमानुसार मालकौंस राग, शरद् ऋतु का पूर्व राग ही माना जायगा, न कि हेमन्त या शिशिर ऋतु का। सप्तक के मध्य में वादी स्वर मध्यम होने से यह राग अर्ध रात्रि का पूर्व राग है, जिस प्रकार दीपक राग। दीपक राग का वादी स्वर भी सप्तक के मध्य स्थान में तीव्र मध्यम है। इसीलिये दीपक राग भी दिन के मध्य स्थान में नियत है। रात्रि का पहिला, दूसरा प्रहर शरद ऋतु का माना है अतः मालकौंस राग शरद ऋतु का पूर्व राग है, इसमें कोई संदेह नहीं।

इसके अतिरिक्त कुछ पाठकों को यह शंका भी अवश्य उत्पन्न होगी कि बहुत सी राग-रागनियों के वादी स्वर पित्त प्रकृति के षडज व गंधार हैं, और रात्रि के पहिले व दूसरे प्रहर में अर्थात् शरद ऋतु में गाये जाते हैं, जैसे-पूरिया, यमन, कल्याण, भूप, खम्माज, जिला, झिंझोटी, पूर्वी, विहागडा, विहाग इत्यादि राग-रागनियों का वादी स्वर पित्त प्रकृति का गांधार प्रधान है और शरद् ऋतु में गाते बजाते हैं। यह ठीक ही है, जिस प्रकार वैद्यक शास्त्र में बताया है कि रात्रि के दूसरे प्रहर में पित्त प्रकृति प्रधान हो जाती है, ठीक उसी प्रकार रात्रि में पित्त प्रकृति के दूसरे प्रहर के वास्ते पित्त प्रकृति के वादी स्वर वाले उपराग वा उपरागनियां प्राचीन काल से नियत हैं। सोरठ, देस, दुर्गा इत्यादि बहुत सी राग-रागनियों का वादी स्वर बात प्रकृति का शुद्ध ऋषभ है तथा सप्तक के पूर्वाङ्ग

बात प्रकृति का शुद्ध ऋषभ है तथा सप्तक के पूर्वाङ्ग मे है, इसी से ये पूर्व राग रागनियो मे माने है। बहुत सी राग रागनियो का वादी स्वर मध्यम है, जैसे-केदारा, छायानट, मालकौंस इत्यादि। इनका वादी स्वर मध्यम सप्तक के पूर्वाङ्ग में होने से ये पूर्व राग-रागनियाँ मानी गई है। पूर्व राग-रागनियो में विशेष कर पित्त, बात के स्वरों का अधिक उपयोग होता है।

उत्तर राग-रागनियों मे अधिकतर शीताङ्ग स्वरो का अर्थात् कफ-बात की प्रकृति रखने वाले स्वरो का ही अधिक उपयोग होता है।

दिन रात्रि मे बात, पित्त, कफ की गति पहले पृष्ठो मे बताई जा चुकी है। जिस प्रकार ६ ऋतुये स्थाई रूप से है, उसी प्रकार ६ राग भी। बात, पित्त, कफ के भेद उपभेदो के वास्ते उपराग उपरागनियां और रागनियां समय समय के वास्ते हमारे प्राचीन आचार्य बात, पित्त, कफ के स्वरो का शोधन करके नियत कर गये है। समय समय पर राग-रागनियो के गाने बजाने या सुनने से बात, पित्त, कफ के दोष शान्त रहते है, क्योकि राग-रागनियो के स्वरों का प्रभाव हृदय पर उत्तम पड़ता है तथा चित्त को शांति मिलती है। शांति मिलने से चित्त एकाग्र रहता है। यही कारण है कि चित्त की एकाग्रता और शांति स्वास्थ्य को उत्तम, प्रभावशाली बनाती है तथा राग-रागनियो द्वारा बहुत से रोग शान्त हो जाते है।

सङ्गीत और रस

नवरसों की पूर्ति भी सङ्गीत द्वारा भली भांति हो सकती है, क्योकि स्वरो के अन्दर नवरसो का प्रभाव भी बात, पित्त, कफ की प्रकृति के अनुसार भरा हुआ है। स्वर व्यवस्था का एक कोष्ठक नीचे दिया है, जिससे स्वरों सहित बात, पित्त, कफ गुणग्रह और नवरस भली भांति समझ मे आजायेगे।

नाम स्वर	निवास	प्रकृति	गुण	ग्रह	वर्ण	रस	नव रस
षड्ज	मोर के कण्ठ स्वर में	पित्त	सत्व	रवि	सप्त रङ्ग	कटु	अद्भुत, वीर, रौद्र
ऋषभ	पपीहा ” ”	बात, कफ	”	चन्द्र	श्वेत	लवण	” ” ”
गान्धार	बकरा ” ”	पित्त	तमः	मङ्गल	गौर रक्त	तिक्त	करुणा
मध्यम	कौआ ” ”	बात, पित्त, कफ	रजः	बुध	हरित	कटु, मधुर	हास्य-शृङ्गार
पञ्चम	कोयल ” ”	कफ	सत्व	गुरु	पीत	मधुर	” ”
धैवत	घोड़ा ” ”	बात, कफ	रजः	शुक्र	श्याम	अम्ल	वीभत्स, भयानक
निषाद	हाथी ” ”	बात	तमः	शनि	कृष्ण	कषाय	करुणा

विवरण—

अचल स्वर षड्ज केवल पित्त प्रकृति का है, इसका ग्रह रवि और गुण सत्व है। ऋषभ स्वर वात, कफ का प्रभाव रखता है। शुद्ध ऋषभ मे वात की प्रकृति और कोमल ऋषभ में कफ की प्रकृति है। इसका ग्रह चन्द्र, गुण सत्व है।

गांधार केवल पित्त प्रकृति का स्वर है, चाहे वह कोमल हो या शुद्ध. इसका गुण तमः और ग्रह मंगल है।

मध्यम की वात, पित्त, कफ की प्रकृति है। शुद्ध मध्यम में कफ की और तीव्र मध्यम में वात, पित्त की प्रकृति है। ग्रह बुध, गुण रजः है।

पंचम मे केवल कफ की प्रकृति है। यह स्वर अचल है, इसका ग्रह गुरु, गुण सत्व है।

धैवत वात, कफ की प्रकृति का स्वर है, शुद्ध धैवत वात का प्रभाव रखती है और कोमल कफ का। ग्रह शुक्र और गुण रजः है।

निषाद केवल वात प्रकृति का स्वर है, चाहे वह कोमल हो या शुद्ध। इसका ग्रह शनि और गुण तमः है।

किसी भी काव्य या पद को आप बिहागड़ा, बिहाग, खमाज, यमन कल्याण, भूप इत्यादि पित्त प्रकृति के प्रभाव रखने वाले राग-रागनियों के अन्दर गाते-गाते फिर एकदम से भैरव, कालिंगड़ा, जोगिया, परज, विभास इत्यादि कफ प्रकृति के राग-रागनियों में वही पद गाने लगें तो क्षणमात्र मे ही गाने वाले का तथा श्रोताओं का भाव बदल जायगा। गाने का पद चाहे शृङ्गार रस से पूर्ण ही क्यों न हो, किन्तु कफ प्रकृति के राग-रागनियां उस पद का शृङ्गार रस दूर करके अपना शीतांग प्रभाव अवश्य डाल देंगे। अर्थात् श्रोतागण और गवैये को स्वयं वही पद रीना-भीना शीताङ्ग स्वर मे डूबा हुआ मालूम होगा। इसी प्रकार चाहे रौद्र, भयानक रस का पद क्यों न हो, किन्तु पित्त प्रकृति के राग-रागनियों मे गाने से वही पद शृङ्गारस के समान उत्साह बढ़ाने वाला मालूम होगा। इसी प्रकार वात प्रकृति के राग-रागनियों को भी जानिये।

वात, पित्त, कफ के स्वरों के ही कारण राग-रागनियों में अलग-अलग प्रभाव भरा हुआ है तथा प्राचीन ६ रागों की विचित्र शक्ति अभीतक सुनने मे आती है।

———

पिंगल सार

[लेखक—पंडित रामचन्द्र पाठक गायनाचार्य]

सङ्गीत शास्त्र को जानने के लिये पिंगल की भी आवश्यकता होती है क्यों कि इस शास्त्र का छन्दों से सम्बन्ध है और छन्दो के ज्ञान के लिये पिंगल अनिवार्य है।

किसी भी शास्त्र के दो प्रधान विभाग माने गये हैं—एक पद्य साहित्य तथा दूसरा गद्य-साहित्य। प्रथम अर्थात् पद्य-साहित्य से ही सङ्गीत शास्त्र का सम्बन्ध है, द्वितीय से नहीं अतः सङ्गीत-शास्त्र के ज्ञाता को पद्य-साहित्य से ही काम लेना है, इसलिये पिंगल का साधारण ज्ञान उसके लिये अनिवार्य है।

पिंगल का प्रधान अङ्ग छंद है। छन्दों का ही निर्णय करना पिंगल का काम है। छन्दों के भी बहुत से भेद किये गये है। जैसे—चौपाई, दोहा, कवित्त, तोमर प्रतिभा, विष्णुपद, गीतिका, सरसी, ख्याल इत्यादि।

कवित्त छन्द को ध्रुपद (चौताला) तथा दोहा सोरठा को ठुमरी (तिताला) इत्यादि कहते हैं। इसी प्रकार और-और छन्दों के तथा भिन्न-भिन्न तालो के गायन होते है। सुगायक इनका पूर्ण ज्ञान रखते है।

इन छन्दों का पूर्णज्ञान पिंगल की किसी भी स्वाधीन पुस्तक से प्राप्त किया जा सकता है। यहां केवल संकेत मात्र बता देना ही पर्याप्त है।

छन्दों मे वर्ण, मात्रा तथा गण की आवश्यकता होती है। अतएव इन्हीं का परिचय कर लेना यहां पर्याप्त होगा।

वर्ण—

हिन्दी तथा संस्कृत के अक्षरों को वर्ण कहते है। जैसे—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ तथा क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, इत्यादि।*

मात्रा—

उपर्युक्त वर्णों के उच्चारण काल को मात्रा कहते है। हिन्दी तथा संस्कृत में दो प्रकार की मात्रायें होती है, 'लघु' तथा गुरु।

जिस वर्ण के उच्चारण मे बहुत कम समय लगता है, उसको 'लघुवर्ण' कहते हैं। जैसे—अ, इ, उ, क, कि, कु इत्यादि।

जिस वर्ण के उच्चारण मे विशेष समय लगता है, उसको 'गुरुवर्ण' कहते हैं। जैसे—आ, ई, ऊ, का, की, कू इत्यादि।

लघुवर्ण तथा गुरुवर्ण के द्योतक चिन्ह इस प्रकार हैं—लघुवर्ण । गुरुवर्ण S

* हिन्दी की वर्णमाला मे 'ड' 'ढ़' 'अं' 'अः' का भी समावेश रहता है, इस तरह हिन्दी मे ४८ वर्ण हैं।

गण—

तीन-तीन वर्ण मिलकर एक 'गण' की रचना करते है। हिन्दी मे आठ गण माने गये है। उनके नाम तथा लक्षण इस प्रकार है:—

संख्या	गण नाम	गण रूप	संकेत नाम	उदाहरण
१	मगण	S S S	म	मायावी
२	नगण	I I I	न	नलिन
३	भगण	S I I	भ	भारत
४	यगण	I S S	य	यकाई
५	जगण	I S I	ज	जवान
६	रगण	S I S	र	रोहिणी
७	सगण	I I S	स	सरला
८	तगण	S S I	त	तंबूल

जिस गण मे तीनों गुरु हो, उसे **मगण** कहते है। इसी तरह जिसमे तीनों लघु हो, उसे **नगण** कहते हैं। एक गुरु, दो लघु को **भगण**, एक लघु दो गुरु को **यगण**, एक लघु, एक गुरु और एक लघु को **जगण**, एक गुरु, एक लघु और एक गुरु को **रगण**, दो लघु एक गुरु को **सगण** और दो गुरु एक लघु को **तगण** समझना चाहिये। इसके लिये एक सूत्र प्रसिद्ध है:—

"यमाताराजभानसलगम्"

इसमें जिस गण को निकालना हो, उसके तीन अक्षरों को गिनकर देख लेना चाहिये कि कौन से अक्षर लघु है और कौन-कौन से गुरु। जैसे यदि यगण को मालूम करना हो तो 'यमाता' तक गिनकर देखा गया कि प्रथम लघु है तथा दूसरे तीसरे अक्षर गुरु हैं—इसी तरह 'नगण' में देखा जाता है कि उसके साथ तीनों अक्षर लघु हैं तथा 'मगण' के साथ तीनों अक्षर गुरु है। यथा:—

आदिमध्यावसानेषु भजसा यान्ति गौरवम्।
यरता लाघवं यान्ति मनौ तु गुरुलाघवम्॥

अर्थात् आदि गुरु भगण, मध्य जगण, अन्त गुरु सगण आदि लघु यगण, मध्य लघु रगण, अन्त लघु तगण, तीनों गुरु मगण तथा तीनों लघु नगण।

संगीत विज्ञान

(लेखक— वैद्यराज एस० पी० जैन 'गोयलीय')

संसार के सभी कार्य विज्ञान के आधार पर चलते है, विद्यायें सभी विज्ञान का रास्ता दिखलाने वाली है। इन विद्याओ मे से एक सङ्गीत विद्या भी है।

संगीत वह विद्या है, जिस पर मनुष्य तो क्या पशु पक्षी भी मोहित हो जाते है। प्राचीन काल के संगीत विद्या जानने वाले बडी-बडी जगह मान पाते थे, इस विद्या की बदौलत आज तक उनका नाम सुनहरे अक्षरो मे लिखा जाता है।

अब प्रश्न यह है कि वर्तमान समय मे इस विद्या को पूर्णतया जानने वाले कम क्यो मिलते है ? इसका खास कारण है, अज्ञान !

प्रथम तो जो शिक्षक शिक्षा देते हैं, वह स्वयम् ही इस विद्या का पूर्ण मर्म नहीं जानते। ये शिक्षक केवल उदर पूर्ति को ही अपना कर्तव्य पालन समझते है, कभी इस बात का विचार भी नहीं करते कि हम स्वयम् कितने विद्वान है, हम विद्यार्थी को कहाँ तक विद्या दे सकते है, हमारी शिक्षा के बाद उसको कहाँ उच्च कोटि की शिक्षा मिल सकती है और कैसे उसका आदर्श जीवन बन सकता है ?

दूसरी बात यह है कि विद्यार्थी भी आजकल ऐसे है कि उनको अपनी उन्नति हानि, लाभ का कोई विचार नहीं है। विद्यार्थी का क्या कर्तव्य है, इसे वे लोग भली प्रकार नहीं समझ सकते।

एक साधारण सी बात है जो कि सभी समझ सकते है, वह यह कि गुरु जब शिष्यों के सामने या साथ बैठ कर शराब, भङ्ग, गाँजा, चरस आदि नशा सेवन करते है तो शिष्यो पर उसका क्या असर पडता है ? और यह चीजे गले की आवाज को खोलने वाली है या नष्ट करने वाली ?

हमने खुद सुना है और देखा भी है कि ७५ प्रतिशत गवैये ऐसे मिलेगे जिनको किसी न किसी नशे की इल्लत लगी हुई है। यह सब गुरुजनों का दोष है। यदि गुरु किसी विशेष संगत से खराब हो भी जायें तो उनको चाहिए कि अपना असर शिष्यो पर न पडने दें।

संगीत विद्या दो प्रकार की है। एक गाना, दूसरी बजाना। जो मनुष्य दोनो प्रकार की विद्या जानते है, वही संगीत-कला का सुख भोग सकते हैं। अतः हम यह बतलाना चाहते है कि संगीत विद्या के विद्यार्थियों को क्या करना चाहिए, कैसे रहना चाहिए, जिससे वे पूर्ण ज्ञाता बन सकें।

१-शुद्ध आचरण, २-शिक्षा प्रणाली, ३-स्वास्थ्य, ४-कार्यक्रम।

१—आचरण ही मनुष्य की उन्नति का पहिला रास्ता है। नशा न करना, बुरी संगति मे न रहना, वीर्य की रक्षा करना और अपने मन को बुरे कार्यों के प्रति वश मे रखना ही शुद्ध आचरण कहलाता है।

२–शिक्षा प्रणाली समझना गुरुजनों का ही कर्तव्य होता है, किन्तु सच्चे गुरुओं की तो इस कलियुग में कमी ही है, इसलिए नवयुवकों को अपना कर्तव्य खुद निश्चित कर लेना चाहिए, जिससे उनकी पूर्णतया उन्नति हो सके। यदि केवल सा रे ग म सीख कर वह दो चार चीजें गाना और बजाना सीख लेंगे तो उसका कोई परिणाम न होगा। विद्यार्थी को नियम पूर्वक आदि से अन्त तक सीखना चाहिए। सरगम सभी सीखनी चाहिए। साथ–साथ गाना, बजाना, ताल, स्वर सभी बातो का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। सरगम पूर्णतया सीखने पर गायन सीखना अत्यन्त सरल हो जाता है।

३–स्वास्थ्य का विचार आजकल विरले ही विद्यार्थी रखते है। स्वास्थ्य तो जीवन की जड़ है, इसीसे सुख प्राप्त होता है, संगीत के विद्यार्थियों को अपने स्वास्थ्य की अवश्य रक्षा करनी चाहिए। ब्रह्मचर्य तो मुख्य है ही, किंतु व्यायाम भी करना चाहिए। तेल, घी की चीज खाकर पानी मत पीओ, ठण्डा दूध मत पीओ, पान मे जर्दा मत खाओ और यदि कारण–वश खाते हो तो उसकी पीक बराबर थूकते रहो, निगलो नहीं। पान मे सुपारी बहुत कम खाओ और पान भी कम खाओ, खटाई मत खाओ, यदि कभी इच्छा हो तो नीबू खाओ। अचार बिलकुल मत खाओ, यदि कभी खाओ भी तो बिना तेल का। दही बहुत कम खाओ, लालमिर्च बहुत कम खाओ, सर्दी–गर्मी से बचो, विषय–भोग से बचो, यदि किसी समय न बच सको तो कम से कम दो घन्टे बाद तक पानी न पीओ।

काली मिर्च, लौंग, जायफल का सेवन करो। काली मिर्च और मिश्री आवाज ो साफ करती है। खांसी को भी मत बढ़ाओ, क्योंकि संगीत के विद्यार्थियों का आधार फेफड़ा ही है, अपने फेफड़े की सदैव रक्षा करो।

ठण्डे जल से प्रति दिन स्नान करो, कपड़े साफ पहिनो, दुर्गन्ध से बचो और कोई कार्य ऐसा न करो जिससे स्वास्थ्य मे किसी प्रकार की खराबी उपस्थित हो।

४—कार्य क्रम ठीक रक्खो, स्वर–साधन का समय प्रातःकाल से अच्छा कोई नहीं है। सायंकाल को भी स्वर साधना की जा सकती है किन्तु प्रातःकाल जैसी नहीं। भोजन करने के बाद कभी मत गाओ, जब तक कि भोजन हजम न हो जाये। गाते हुए पानी कभी मत पीओ।

५—वाद्ययन्त्रो के बजाने का समय भी निश्चित रक्खो। समय निश्चित कर चुकने पर कार्यक्रम ठीक समय पर होना चाहिये। जो लोग अपने समय का मूल्य समझते है, वे संसार मे सुखी रहते हैं।

अन्त में एक बात और याद रखने योग्य है, जो महाशय चाहें इसकी पूर्णतया परीक्षा करके देखलें:—

पानी के कुए मे मुँह झुकाकर गाना, मिट्टी के खाली घड़े में मुँह डालकर गाना, बन्द मकान में गाना, बियाबान जङ्गल में हवा के रुख से गाना, धीरे–धीरे आवाज बढ़ाना और एकान्त में गाना लाभदायक होता है।

गायकों के लिये उपयोगी बातें

(लेखक— प० फीरोज फ्रामजी, सगीत-शास्त्री)



प्रथम हर एक गायक को इसका विचार करना चाहिये कि अपने गाने मे किसी प्रकार का दोप न होवे, क्योंकि मधुर आवाज और अच्छा ज्ञान होने पर भी यदि अङ्ग-विक्षेपादि दोष गायन मे दिखाई देंगे तो श्रोताओ मे हँसी होगी, अतएव गाने मे जो दोष आते हैं उनका निरीक्षण करके उनको निकाल देने का प्रयत्न करना चाहिये ।

प्राचीन ग्रन्थकारों ने भी गायको के गुणावगुण के सम्बन्ध मे बहुत कुछ लिखा है, उसमे से केवल आवश्यक भाग हम नीचे प्रकाशित करते है ।

गायक दोप विचार

(१) रसहीन और दातो को पीस कर गाना, (२) चेहरा भयानक दिखाई पड़े ऐसा गाना, (३) तुम्बे के समान मुँह फुलाके गाना, (४) सूत्कार करके गाना, (५) कण्ठ को टेढ़ा करके गाना, (६) डर के साथ गाना, (७) चेहरे और गर्दन की नसों को फुलाकर गाना, (८) बकरे के समान स्वर का उच्चारण करना, (९) कम्पयुक्त गाना, (१०) गाल पर या कान पर हाथ रखके गाना, (११) बेसुरा गाना, (१२) बेताल गाना, (१३) स्वर और वर्ण का उच्चारण बराबर न करना, (१४) हाथ पाव पटक कर गाना, (१५) लय की तरफ ध्यान न रखना, (१६) नाक में से आवाज निकाल कर गाना, (१७) राग के नियम से न गाना, (१८) राग विद्वेषी स्वरों को लेकर गाना, (१९) गाते समय आंख मींचना, (२०) स्वरों के उचित स्थान से हटकर गाना, जहां आवाज की पहुंच नहीं है वहां, यानी निरस और चिल्ला कर गाना, इत्यादि ।

गायक गुण विचार

(१) हर एक गाने वाले को गाना शुरू करने से पहिले जितने वाद्यों की आवश्यकता होती है, उन वाद्यो को स्वर मे ठीक मिलाना चाहिये । क्योंकि गायन मे मधुर और सुस्वर कण्ठ की जितनी आवश्यकता है, उतनी ही आवश्यकता गायन के साथ बजाने वाले वाद्यों को स्वर मे मिलाने की है । गायक का कण्ठ कितना ही मधुर हो, परन्तु जिस स्वर मे वह गाता हो उस स्वर मे यदि वाद्य न मिला हो तो सब गाना बेसुरा लगता है और सुनने या सुनाने मे आनन्द नहीं आता । गायक के साथ बहुधा एक या दो तम्बूरे तथा तबला या मृदङ्ग रहता है, उनके अलावा आजकल हारमोनियम भी रखने का प्रचार है, किन्तु तार वाद्यो जैसा गुण हारमोनियम मे नहीं ।

(२) स्वर, श्रुति, छन्द पदाक्षर इनको ठीक रीति से कहा जावे, यानी हरेक स्वर अपनी-अपनी जगह पर ठीक लगाना चाहिए और पद अक्षर का मेल ठीक रहना चाहिये ।

(३) मन्द्र, मध्य व तार स्थानो मे आवाज़ को यथायोग्य लगाना चाहिए यानी आवाज़ का ठीक-ठीक उच्चारण होना चाहिये।

(४) आवाज मे गम्भीरता होनी चाहिये और निःशंक होकर गाना चाहिये।

(५) गाने में जो कोई गीत या प्रबन्ध हो, उसके पदों का अर्थानुरूप स्पष्ट रीति से उच्चारण करना चाहिये।

(६) तार सप्तक के स्वरो में जो अक्षर कहा जावेगा उसका उच्चारण स्पष्ट होना चाहिये, यानी अपनी आवाज सहज सफाई से जिस स्वर तक ऊँची जा सकती है उस स्वर तक गाना उचित है।

(७) द्रुत, मध्य और विलम्बित जो तीन प्रकार की लयकारी है, उसमें प्रवीण होना चाहिये और उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित स्वरों को अच्छी तरह से प्रस्तार करके दिखलाना आवश्यक है।

(८) गाने में जहां-जहां सम की जगह हो, वहां पर ठीक सम आनी चाहिये।

(९) जहां मृदुवर्ण के स्वर आवें वहां उनका मृदुता के साथ उच्चारण होना चाहिये।

(१०) गाने मे स्वर, वर्ण-पद जो कुछ आवेंगे उनको ऐसी मधुर रीति से गाना चाहिये कि सुनने वालों को भी आनन्द प्राप्त हो।

ऊपर लिखे हुए १० गुण ग्रहण किया हुआ जो गाने वाला होगा उसको नाद-विद्या का पूर्ण ज्ञानी कहा जा सकता है और वह सब सुखों को अनुभव करता हुआ नादयोग का साधन करते-करते अपार भवसागर से सहज ही पार हो जाता है, इस वास्ते हर एक गाने वाले को गुण-ग्रहण करते हुए अवगुणों का त्याग करना चाहिये, इससे इस लोक और परलोक मे हित होगा।



दूसरा अध्याय

— शास्त्रीय स्वरलिपियां —

पूर्वी — (झपताल, मात्रा १०)

शब्दकार—भक्त कवि श्रीनन्ददास जी  स्वर०—चम्पकलाल सी० नायक 'संगीत विशारद'

छोटो सो कन्हैया एक मुरली मधुर छोटी, छोटे-छोटे ग्वाल बाल छोटी पाग सिरकी।
छोटे से कुण्डल कान मुनिजन के छूटे ध्यान, छोटे पट, छोटी लट, छोटी अलकन की॥
छोटी सी लकुटी हाथ छोटे बच्छ लिये साथ, छोटे से बनेरी कान्ह आईं गोपी घर-घर की।
'नन्ददास' प्रभु छोटे, भेद भाव छोटे मोटे, खायौ है माखन शोभा, देखो ये बदन की॥

स्थाई—

×		२			०		३		
प	म॑	ग	–	म॑	ग	रे॒	सा	–	सा
छो	टो	सो	ऽ	क	न्है	या	ए	ऽ	क
नि़	रे॒	ग	म॑	प	ध॒प	म॑	ग	म	ग
मु	र	ली	ऽ	म	धुऽ	र	छो	ऽ	टी
प	प	म॑	ग	म॑	ध॒	नि	ध॒	प	म
छो	टे	छो	ऽ	टे	ग्वा	ल	बा	ऽ	ल
प	म॑	ग	रे॒	ग	ध॒	पम॑	ग	म	ग
छो	टी	पा	ऽ	ग	सि	ऽऽ	र	ऽ	की

अन्तरा—

ग	ग	म॑	ध॒	पध॒	नि	सां	सां	–	सां
छो	टे	से	ऽ	कुंऽ	ड	ल	का	ऽ	न
नि	रें॒	गं	रें॒	सां	नि	सां	नि	ध॒	प
मु	नि	ज	न	के	छू	टे	ध्या	ऽ	न
म॑	ग	म॑	–	ध॒	नि	रें॒सां	नि	ध॒	प
छो	टे	प	ऽ	ट	छो	टीऽ	ल	ऽ	ट
म॑	प	ध॒	म॑	प	प	म॑	ग	म	ग
छो	टी	अ	ऽ	ल	क	ऽ	न	ऽ	की

संचारी—

सा	सा	प	–	प	प	प	ध॒	–	प
छो	टी	सी	ऽ	ल	कु	टि	हा	ऽ	थ

मं	मं	ध॒	–	ध॒	नि	ध॒	प	–	प
छो	टे	ब	ऽ	च्छ	लि	ये	सा	ऽ	थ
मं	ध॒	प	–	मं	प	मं	ग	म	ग
छो	टे	से	ऽ	व	ने	री	का	ऽ	न्ह
नि़	रे॒	ग	रे॒	ग	मं	ग	रे॒	सा	सा
आ	ईं	गो	ऽ	पी	घ	र	घ	र	की
मं	ग	मं	ध॒	मंध॒	सां	सां	सां	–	सां
न	न्द	दा	ऽ	ऽऽ	प्र	भु	छो	ऽ	टे
नि	रें॒	गं	रें॒	गं	मं	गं	रें॒	सां	सां
भे	द	भा	ऽ	व	छो	टे	मो	ऽ	टे
गं	रें॒	सां	-रें॒	सां	नि	सां	नि	ध॒	प
खा	यो	है	ऽ	मा	ख	न	शो	ऽ	भा
मं	प	ध॒	मं	प	प	मं	ग	म	ग
दे	खो	ये	ऽ	व	द	ऽ	न	ऽ	की



(तीनताल, मध्यलय)

[शब्दकार और स्वरकार–श्री० बाबूलाल सारस्वत]

स्थाई—धन जोबन दिन चार का मूरख भजले हरि का नाम रे।
अन्तरा–अन्त समय कोई काम न आवे मात पिता सुत तेरे,
फिर सोचे क्या होय रे॥ धन जोबन०॥

आरोह—सारे गप धसां। अवरोह—सांध पग रेसा।
पकड़—गरे, साध़, सारेग, पग धपग रेसा।

स्थाई—

०				३				×				२			
सां	सां	ध	प	ग	रे	सा	रे	प	–	ग	रे	ग	प	ध	ध
ध	न	जो	ऽ	ब	न	दि	न	चा	ऽ	र	का	मू	ऽ	र	ख
ध	प	ग	रे	ध	प	ध	प	सां	–	–	ध	सांसां	धप	गरे	सारे
भ	ज	ले	ऽ	ह	रि	का	ऽ	ना	ऽ	ऽ	म	रेऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ

अन्तरा—

प	ग	रे	सा	प	प	ध	प	सां	—	—	सां	सां	रें	सां	—
अं	ऽ	त	स	म	य	को	ई	का	ऽ	म	न	आ	ऽ	वे	ऽ
सां	ध	सां	ध	सां	—	रे	—	सां	रें	गं	रे	सां	—	ध	प
मा	ऽ	त	पि	ता	ऽ	सु	त	ते	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
ध	प	ग	रे	ग	प	ध	प	सां	—	—	ध	सांसां	धप	गरे	सारे
फि	र	सो	ऽ	चे	ऽ	क्या	ऽ	हो	ऽ	ऽ	य	रेऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ

राग विवरण—

भूपाली राग कल्याण थाट से उत्पन्न होता है। इसका वादी स्वर गन्धार और सम्वादी धैवत है। तीव्र म और नि दोनों वर्जित है। बाकी स्वर शुद्ध है। इसकी जाति औड़व तथा गायन काल रात्रि का प्रथम प्रहर है।

जलधार केदारा —— (झपताल, मात्रा १०)

शब्दकार—श्री गोविन्द वल्लभ पन्त * स्वरकार—मास्टर भोगी लाल नरोत्तमदास

प्रियतम नहीं आत, पीड़ा नहीं जात, सहकर विरह-ताप, सूख्यो गात।
उन बिन नहीं भात, सुख की कोऊ बात, बीतत न दिन हाय! कटती न रात॥

स्थाई—

३		×			२		०		
म	रे	प	—	प	ध	प	म	प	म
प्रि	य	त	ऽ	म	न	हीं	आ	ऽ	त
प	प	सां	—	रें	सां	ध	ध	प	प
पी	ऽ	ड़ा	ऽ	न	हीं	ऽ	जा	ऽ	त
ध	ध	ध	प	प	म	म	रे	रे	सा
स	ह	क	र	वि	र	ह	ता	ऽ	प
सा	-	प	—	प	मप	धनि	सांरें	सांनि	धप
सू	ऽ	ख्यो	ऽ	ऽ	गाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	तऽ

अन्तरा—

प	प	नि	ध	सां	सां	रें	सां	—	सां
उ	न	बि	न	न	हीं	ऽ	भा	ऽ	त

सां	ध	सां	–	रे	सां	ध	ध	नि	प
सु	ख	की	ऽ	को	ऊ	ऽ	बा	ऽ	त
म	म	रे	सा	रे	सा	सा	ध	नि	प
वी	ऽ	त	त	न	दि	न	हा	ऽ	य
म	रे	प	–	प	मप	धनि	सारे	सांनि	धप
कु	ट	ती	ऽ	न	राऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	तऽ

शहाना (झपताल मात्रा १०)

रेकर्ड "कमला" झरिया * स्वरलिपिकारः—श्री मोतीलाल जी

झूमत आवे मोहन मतवाले। देखो सखी वाके ढङ्ग निराले॥
चपला नयन दोऊ चाल अति चंचल, वो नन्दलाले दो जग उजियाले।
मुख मुरलीधर अधर बजावत, श्याम सुन्दर काली कमलिया वाले॥

स्थाई—

×		२			०		३			×		२			०		३		
ग	–	रे	–	सा	रे	म	प	–	ध	सां	सां	नि	ध	म	मप	धप	मग	रेसा	रे
झू	ऽ	म	ऽ	त	आ	ऽ	वे	ऽ	मो	ह	न	म	ऽ	त	वा	ऽ	ले	ऽ	ऽ
नि	–	सां	–	रे	नि	सां	नि	प	ध	सां	सां	नि	ध	म	गप	धप	मग	रेसा	रे
दे	ऽ	खो	ऽ	स	खी	ऽ	वा	ऽ	के	ढं	ऽ	ग	ऽ	नि	रा	ऽ	ले	ऽ	ऽ

अन्तरा—

म	प	प	नि	नि	सां	सा	सां	–	सां	नि	सां	नि	रे	सां	नि	सां	नि	प	ध
च	प	ला	ऽ	न	य	न	दो	ऽ	ऊ	चा	ल	अ	ऽ	ति	चं	ऽ	च	ऽ	ल
नि	–	सां	–	रें	नि	सां	नि	प	ध	सा	सां	नि	ध	म	मप	धप	मग	रेसा	रे
वो	ऽ	न	ऽ	न्द	ला	ऽ	ले	ऽ	दो	ज	ग	उ	ऽ	जि	या	ऽ	ले	ऽ	ऽ

दूसरा अन्तरा भी इसी प्रकार गाइये।

तान—(१) पम गम पध निसां गंरे सानि धप मग रेसा निसा

" (२) मप निध पध पम गरे सारे गम पप मप धप
निध सांनि धप मग रेसा

" (३) सारे गम गरे सा सारे गम पम गरे सा सारे गम पध पम गरे सा गरे सा

केदारा (ताल धमार, मात्रा १४)

शब्दकार—अज्ञात *   स्वरलिपिकार—श्री० केदार वल्लभ जोशी

गुलाल रंग डारोरी ऐसो सुघर खिलारी भर अबीर कुमकुम मारी।
ऐसे खिलारी सङ्ग होरी न खेलूंगी, पकर बहियां अँगिया दई फारी॥
एक हाथ अबीर एक हाथ पिचकारी लिये एक नाचत एक गावत दे-दे तारी।
अद्भुत मची है फाग मोहन घर देखन आये सब बृज नर-नारी॥

—ooo—

स्थाई—

×			०		।		०			।		।	
क	धे	टे	धे	टे	धा	S	ग	दि	न	ति	न	ता	S
ध	ध	प	प	म	प	प	म	म	ग	म	ग	म	ग
डा	S	S	रो	S	री	S	S	S	S	ऐ	S	सो	S
	ध	ध	प	प	प	प	मग	म	रे	नि	रे	सा	सा
सु	घ	S	र	S	S	S	खिS	ला	S	S	S	री	S
सा	सा	सा	सा	म	गम	ग	मंप	मं	प	मं	ध	नि	सांरें
भ	र	S	अ	बी	SS	र	कुS	म	S	कु	S	म	SS
सां	नि	ध	म	ध	प	म	म	म	मग	मं	प	मं	प
मा	S	S	S	S	री	S	गु	ला	Sल	रं	S	ग	S

अन्तरा—

प	प	सां	नि	सां	सां	सां	सां	सां	नि	सां	सां	सां	सां
ऐ	S	से	S	S	S	S	खि	ला	री	सं	S	ग	S
नि	नि	ध	नि	ध	नि	रें	सां	नि	ध	मं	ध	प	-
हो	S	S	री	S	S	S	न	खे	S	लूं	S	गी	S
म	म	ग	मं	प	प	प	मं	प	प	धनि	ध	रेंसां	रें
प	क	र	ब	हि	यां	S	अँ	गि	S	याS	S	दई	S
सां	नि	ध	मं	ध	प	म	म	म	मग	मं	प	मं	प
फा	S	S	S	S	री	S	गु	ला	लS	रं	S	ग	S

संचारी—

म	मम	म	ग		र्म	प		प	म	मम	म	ग	ग	र्म	प
ए	कहा	थ	अ		बी	ऽ		र	ए	कहा	थ	वि	च	का	री
प	प	प	म		ग	मम		ग	र्म	प	प	प	प	र्म	प
लि	ये	ऽ	ए		क	गाव		त	ए	ऽ	क	ना	ऽ	च	त
नि	धनि	सां	नि		ध	मध		प	म	म	ग	र्म	प	र्म	प
देऽ	ऽदे	ऽ	ऽ		ऽ	ताऽ		री	गु	ला	ल	रं	ऽ	ग	ऽ

आभोग—

पप	सां	सां	सां		सां	सा		सा	सां	सां	सां	नि	ध	नि	सां
अद्‌	भु	त	म		ची	है		ऽ	फाऽ	ऽ	ग	मो	ऽ	ह	न
नि	ध	प	म		म	म		ग	र्म	प	प	नि	ध	नि	ध
घ	र	ऽ	दे		ऽ	ख		न	आ	ऽ	ये	स	ऽ	ध	ऽ
नि	सां	सां	नि		ध	मंध		प	म	म	ग	र्म	प	र्म	प
बृ	ज	ऽ	न		र	नाऽ		री	गु	ला	ल	रं	ऽ	ग	ऽ

मालकोश (तीनताल, मात्रा १६)

शब्दकार—श्रीयुत "चांद" ★ स्वरकार—बा० आदित्यनारायणसिंह

सा ग़ म ध़ नि़

(इस राग मे ग ध नि कोमल और रे प, वर्जित है)

स्थाई—ऐसे क्यों बोले दादुरवा मोरे पिया के बैन ?

तजूँ प्रान बेगि मोहि अति सतावे, बीते सगरी रैन तरफत बेचैन ॥ ऐसे० ॥

अन्तरा-घड़ी पल छिन मोहि आन सतावे, 'चांद' पिया बिन नींद न आवे।

देखो आली पिया किन बिरमायो. कौन सौतिन संग लागे नयन ॥ ऐसे० ॥

गत सरगम

०				३				×				२			
ग़	म	सा	सा	नि़	सा	ध़	नि़	सा	सा	म	म	म	म	ध़	म
ग़	ग़	म	म	ध़	म	ध़	नि़	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां

नि	नि	नि	नि	नि	नि	नि	नि	ध	नि	सां	नि	ध	म	ध	म
ग	ग	म	म	ध	म	ध	नि	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां
नि	नि	नि	नि	नि	नि	नि	नि	ध	नि	सां	नि	ध	ध	म	म
सां	नि	सां	मं	गं	मं	सां	सां	नि	सां	ध	नि	सां	सां	सां	सां
नि	नि	नि	नि	नि	नि	नि	नि	ध	नि	सां	नि	ध	म	ध	म

स्थाई—

०				३				×				२			
ग	म	सा	सा	नि	सा	ध	नि	सा	सा	म	म	–	म	ध	म
क्यों	बो	ले	दा	दुर	वा	मो	रे	पि	या	के	बै	ऽ	न	ऐ	से
	बो	ले	दा	दुर	वा	मो	रे	पि	या	के	बै	ऽ	न	त	जूं

अन्तरा—

ग	ग	म	म	ध	म	ध	नि	सां	सां	सां	सां	–	सां	सां	सां
प्रा	ऽ	न	बे	ऽ	गि	मो	हि	अ	ति	स	ता	ऽ	वे	बी	ते
नि	नि	नि	नि	–	नि	नि	नि	ध	नि	सां	नि	ध	म	ध	म
स	ग	री	रै	ऽ	न	त	र	फ	त	बे	चै	ऽ	न	ऐ	से
ग	ग	म	–	ध	म	ध	नि	सां	–	सां	सां	सां	–	सां	–
घ	री	प	ल	छि	न	मो	हि	आ	ऽ	न	स	ता	ऽ	वे	ऽ
नि	–	नि	नि	नि	–	नि	नि	ध	नि	सां	नि	ध	ध	म	म
चां	ऽ	द	पि	या	ऽ	बि	न	नीं	ऽ	द	न	आ	ऽ	वे	ऽ
सां	नि	सां	मं	गं	मं	सां	सां	नि	सां	ध	नि	सां	–	सां	–
दे	ऽ	खो	ऽ	आ	ली	पि	या	कि	न	बि	र	मा	ऽ	यो	ऽ
नि	–	नि	नि	नि	नि	नि	नि	ध	नि	सां	नि	नि	म	ध	म
कौ	ऽ	न	सौ	ति	न	सं	ग	ला	ऽ	गे	न	य	न	ऐ	से

टुकड़ा बांट तिहाई सम से—

		सा म - धुम	गुम सासा निसा धुनि
		पिया केवै एन ऐसे	क्योंवो लेदा दुरवा मोरे
सा म - धुम	गुम सासा निसा धुनि	सा	
पिया केवै एन ऐसे	क्योंवो लेदा दुरवा मोरे	पि	

तिहाई टुकड़ा, खाली से—

ग म सा -	गुम सासा निसा धुनि	सा म - धुम	गुम सासा निसा धुनि
क्यों बो ले दा	क्योंवो लेदा दुरवा मोरे	पिया केवै एन ऐसे	क्योंवो लेदा दुरवा मोरे
सा म - धुम	गुम सासा निसा धुनि	सा	
पिया केवै एन ऐसे	क्योंवो लेदा दुरवा मोरे	पि	

तिहाई सम से—

		सा म - धुम	गुग मम धुम धुनि
		पिया केवै एन तजूं	प्राआ नवे एगि मोहि
सां - सां -	नि - नि -	धुनि सांनि धुम धुम	गुम सासा निसा धुनि
आति सता आवे चीते	सग रीरै एन तर	फत वेचै ऐन ऐसे	क्योंवो लेदा दुरवा ऐसे
गुम सासा निसा धुनि	गुम सासा निसा धुनि	सा	
क्योंवो लेदा दुरवा मोरे	क्योंवो लेदा-दुरवा मोरे	पि	

'वन्देमातरम्' गान

मिश्र छाया ———————— (एक ताल, मात्रा १२)

शब्दकार—"अज्ञात"  स्वरकार—श्री "नीलू बाबू"

वन्देमातरम्

सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम् शस्य श्यामलाम् मातरम् वन्देमातरम्
शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम् त्रिंश कोटि कण्ठ कलकल निनाद-कराले,
फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम् द्वित्रिंश-कोटि भुजै धृत-खर कल वाले,
सुहासिनीम् सुमधुर भाषणीम् के बोले मा तुमि अवले ? बहुबल धारिणीम्
सुखदाम् वरदाम् मातरम् नमामि तारिणीम् रिपुदलवारिणीम् मातरम्
वन्देमातरम् वन्देमातरम्
श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम् धरणीम् भरणीम् मातरम्
वन्देमातरम्

×		०		२		०		३		४	
नि	-	सां	-	निसां	रें	नि॒	-	-	ध	प	-
ब	ऽ	न्दे	ऽ	एए	ए	ऽ	ए	ऽ	ए	ऽ	ऽ
रे	ग	म	प	ध	-	म	-	गरे	ग	रे	सा
मा	आ	आ	आ	आ	ऽ	त	ऽ	रअ	अ	अ	अम्
ग	ग	म	-	ग	रे	ग	रे	सा	-	-	-
सु	ज	ला	ऽ	आ	आम्	सु	फ	ला	ऽ	ऽ	अम्
रे	रे	म	-	ग	प	-	मं	प	-	-	-
म	ल	य	ऽ	ज	शी	ऽ	त	ला	ऽ	ऽ	आम्
म	-	प	नि	-	-	सां	-	-	-	-	-
श	ऽ	स्य	श्या	ऽ	म	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	आम्
सां	-	सां	निसां	रें	-	नि॒	-	ध	प	-	-
मा	ऽ	त	रअ	अ	ऽ	अ	ऽ	अ	अ	ऽ	अम्
म	-	प	नि	-	नि	-	सां	नि	सां	नि	सां
शु	ऽ	भ्र	ज्यो	त्स	ना	ऽ	पु	ल	कि	त	या
-	नि	सां	-	-	-	नि॒	-	नि॒	ध	नि॒	प
ऽ	मि	नि	ऽ	ऽ	इम्	फु	ऽ	ल्ल	कु	सु	मि
ध	-	नि॒	रें	सां	रे	नि॒	-	ध	प	-	-
त	ऽ	द्रु	म	द	ल	शो	ऽ	भि	नी	ऽ	म्
म	म	-	ग	म	-	-	ग	रे	-	-	-
सु	हा	ऽ	सि	नी	ऽ	ऽ	ई	ई	ई	ऽ	इम्
रे	ग	म	प	म	-	-	ग	रे	-	-	-
सु	म	धु	र	भा	-	ऽ	षि	नी	ऽ	ऽ	इम्
म	प	सां	-	-	-	म	प	सां	-	-	-
सु	ख	दा	ऽ	ऽ	आम्	व	र	दा	ऽ	ऽ	आम्
सां	-	सां	निसां	रें	-	नि॒	-	ध	प	-	-
मा	ऽ	त	रअ	अ	ऽ	अ	ऽ	अ	अ	ऽ	अम्

म	–	म	म	–	म	म	–	म	प	प	प
त्रि	ऽ	श	को	ऽ	टि	क	ऽ	एठ	क	ल	क
प	प	प	–	प	प	पध	धनि	–	ध	–	–
ल	नि	ना	ऽ	द	क	राआ	आआ	ऽ	ले	ऽ	ऽ
सां	सां	–	नि	सां	–	सां	–	नि	नि	नि	–
छि	त्रिं	–	श	को	ऽ	टि	ऽ	मु	ज	ए	ऽ
नि	ध	ध	ध	ध	नि	पध	नि	–	ध	–	–
धृ	त	ख	र	क	ल	वाआ	आ	ऽ	ले	ऽ	ऽ
सां	–	नि	सां	–	–	नि	–	नि	ध	प	नि
के	ऽ	बो	ले	ऽ	ऽ	मा	ऽ	तु	मि	अ	ब
ध	–	–	सां	नि	सां	नि	सां	–	नि	सां	–
ले	ऽ	ऽ	ब	हु	ब	ल	धा	ऽ	रि	णी	म्
नि	नि	–	ध	नि	–	प	ध	–	–	–	–
न	मा	ऽ	मि	ता	ऽ	रि	णी	ऽ	ऽ	ऽ	म्
ध	ध	ध	ध	नि	–	ध	प	–	–	–	–
रि	पु	द	ल	वा	ऽ	रि	णी	ऽ	ऽ	ऽ	म्
म	ग	रे	सा	–	–	म	–	ग	म	–	ग
मा	आ	त	र	ऽ	म्	श्या	ऽ	म	ला	ऽ	आ
रे	–	ग	–	रे	सा	–	–	रे	–	रे	म
आ	म्	सा	ऽ	र	ला	ऽ	म्	सुष	ऽ	मि	ता
–	ग	प	–	र्म	प	–	–	–	–	म	प
ऽ	आम्	भू	ऽ	षि	ता	ऽ	ऽ	ऽ	म्	ध	र
सां	–	–	–	म	प	सां	–	–	–	सां	–
नी	ऽ	ऽ	इम्	भ	र	नी	ऽ	ऽ	म्	मा	ऽ
सां	निसां	रें	–	नि	–	ध	प	–	–	–	–
त	रअ	अ	ऽ	अ	ऽ	अ	अ	ऽ	ऽ	ऽ	म्

सिंधा — (तीनताल, मात्रा १६)

(शब्दकार व स्वरकार—श्री० केदारनाथ 'बेकल')

स्थाई—श्याम दरस को नैन तरस गये, पल-पल युग सम बीत रहे।
काक उड़ावत दिवस कटत है, गिन-गिन तारे रैन कटे॥
अन्तरा—इतना सन्देसवा कोई हमारा, निरमोही से जाय कहो।
चरण शरण की बांह गहो नहिं, "बेकल" छिन में प्राण तजे॥

×				०				३				२			
नि॒	–	सा	सा	रे	सा	रे	–	ग॒	–	ग॒	–	रे	सा	रे	–
श्या	ऽ	म	द	र	स	को	ऽ	नै	ऽ	न	त	र	स	ग	ये
नि॒	नि॒	नि॒	नि॒	ध	ध	प	प	म	–	ग॒	ग॒	रे	–	–	–
प	ल	प	ल	यु	ग	स	म	बी	ऽ	त	र	हे	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	सां	नि॒	सां	–	रें	रे	सां	सां	नि॒	नि॒	ध	ध	प	म
का	ऽ	क	उ	ड़ा	ऽ	व	त	दि	व	स	क	ट	त	है	ऽ
नि॒	नि॒	नि॒	नि॒	ध	–	प	–	म	–	ग॒	ग॒	रे	–	–	–
गि	न	गि	न	ता	ऽ	रे	ऽ	रै	ऽ	न	क	टे	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

म	म	प	प	नि	नि	नि	नि	सां	–	सां	सां	सां	–	सां	–
इ	त	ना	स	न्दे	स	वा	ऽ	को	ऽ	ई	ह	मा	ऽ	रा	ऽ
नि	नि	सां	–	रें	–	सां	–	नि॒	–	ध	–	प	प	–	–
नि	र	मो	ऽ	ही	ऽ	से	ऽ	जा	ऽ	य	क	हो	ऽ	ऽ	ऽ
प	प	सां	नि॒	सां	–	रें	–	सां	–	नि॒	नि॒	ध	–	प	म
च	र	ण	श	र	ण	की	ऽ	बां	ह	ग	हो	न	ऽ	हिं	ऽ
नि॒	नि॒	नि॒	नि॒	ध	–	प	–	म	–	ग॒	–	रे	–	–	–
बे	ऽ	क	ल	छि	न	में	ऽ	प्रा	ऽ	ण	त	जे	ऽ	ऽ	ऽ

यह काफी थाट की सम्पूर्ण रागिनी है। इसमें गांधार कोमल और निषाद दोनों लगते हैं। बाकी स्वर शुद्ध है।

बागेश्वरी (त्रिताल)

शब्दकार—पं० द्वारिकाप्रसाद तिवारी ★ स्वरकार—श्री त्रिभुवन लाल गुप्त

नाहक पनघट घेरे कान्हा ।
गागर फोरे बाह मरोरे । छेड़त सांझ सवेरे कान्हा ॥ नाहक……॥१॥
मात यशोदा को बतरै हों । रार करत बरजोरे कान्हा ॥ नाहक……॥२॥
और कहों मैं नन्दबबा सों । 'विप्र' लरत सुत तोरे कान्हा ॥ नाहक……॥३॥



स्थाई—

०				३				×				२			
सां	-	नि॒	नि॒	ध	पम	प	प	ग॒	-	रे	सा	रे	नि॒	सा	-
ना	ऽ	ह	क	प	नऽ	घ	ट	घे	ऽ	रे	ऽ	का	ऽ	न्हा	ऽ

अन्तरा—

नि॒	सा	ग॒	म	सागम	प	प	-	ग॒	म	प	-	म	ग॒	रे	सा
गा	ऽ	ग	र	फोऽऽ	ऽ	रे	ऽ	बां	ऽ	ह	ऽ	म	रो	ऽ	रे
सां	-	नि॒	नि॒	ध	पम	प	प	ग॒	-	रे	सा	रे	नि॒	सा	-
छे	ऽ	ड	त	सां	ऽऽ	झ	स	वे	ऽ	रे	ऽ	का	ऽ	न्हा	ऽ

शेष अन्तरे भी इसी प्रकार बजेंगे ।

यह काफी थाट का राग है, इसका वादी स्वर मध्यम और संवादी षड्ज है । रात्रि के दूसरे प्रहर में इसे गाते हैं । आरोही में पंचम वर्जित है, केवल अवरोही में ही पंचम लगेगा । ग, नि कोमल हैं ।

तानें—

(१) नि॒सामग॒ मधनि॒सां नि॒धमग॒ मग॒रेसा
(२) नि॒सामग॒ मधनि॒सां मंग॒ंरेंसां नि॒धमग॒ मग॒रेसा
(३) नि॒सामग॒ मधनि॒सां मंग॒ंरेंसां नि॒धमध नि॒सांरेंसां नि॒धमग॒ मग॒रेसा
(४) नि॒सांमंग॒ं रेंसांनि॒सां रेंरेंसांनि॒ धनि॒रेंरें सांनि॒धप मग॒रेसा
(५) सारेंसां नि॒सांनि॒ धनि॒ध प,धप मपम ग॒मग॒ रेग॒रे सारेग॒म धनि॒सारें सांनि॒धप मग॒रेसा



(तीनताल, मात्रा १६)

शब्दकार—श्री कबीरजी * स्वरलिपिकार—उस्ताद् विवेकदास गुप्त

बीत गये दिन भजन बिना रे।
बाल अवस्था खेल गँवाई, जब जवानि तब मान किया रे ॥
काहे कारन मूल गँवायो, अजहु न मिटी तेरे मन की तृषा रे।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, पार उतर गये सन्त जना रे ॥

स्थायी—

×				२				०				३			
प	पर्म	प	–	धु	प	मंप	धु	मंप	म	रे	–	सा	रे	सा	सा
बी	ऽऽ	ऽ	त	ग	ये	ऽदि	न	भ	ज	न	बि	ना	ऽ	रे	ऽ

अन्तरा—

ग	गर्म	प	–	धु	प	धु	सां	सां	सां	सां	सां	रें	गं	रें	सां
बा	ऽऽ	ल	अ	व	ऽ	स्था	ऽ	खे	ऽ	ल	गँ	वा	ऽ	थी	ऽ
नि	सां	नि	प	धु	प	धु	सां	नि	धुप	मंप	मंप	रे	रे	गुरे	सा
ज	ब	ज	वा	ऽ	नि	त	ब	मा	ऽ	न	कि	या	ऽ	रे	ऽ

संचारी—

प	मंग	रे	रे	सा	रे	सा	नि	नि	प	धु	सा	रे	ग	गर्म	प
का	ऽऽ	हे	ऽ	का	ऽ	र	न	मू	ऽ	ल	गँ	वा	ऽ	यो	ऽ
धु	प	धु	सांनि	धुप	धु	प	–	मंग	ग	प	ग	ग	रे	ग	गर्म
अ	ज	हु	न	मि	टी	ते	रे	ऽम	न	की	तृ	षा	ऽ	रे	ऽ

आभोग—

प	मंप	धु	प	धु	ंधु	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	सां
क	ह	त	क	बी	ऽ	र	सु	नो	ऽ	भा	ई	सा	ऽ	धो	ऽ
रें	गं	पंमं	गं	रें	गं	रें	सां	नि	प	मंप	ग	रे	रे	रे	सा
पा	ऽ	र	उ	त	र	ग	ये	सं	ऽ	त	ज	ना	ऽ	रे	ऽ

त्रिवेणी की जाति षाड़व-षाड़व है, आरोह मे निषाद व अवरोह में धैवत वर्जित है। कोई-कोई आचार्य औड़व-षाड़व मानकर मध्यम वर्जित करते है, परन्तु मध्यम स्वर तीव्र लगाकर पंचम की ओर से लेना होगा, जैसे सितार पर मींड़। रे ध कोमल होकर म तीव्र ग नि शुद्ध स्वर लगेंगे। वादी स्वर पंचम होकर सम्वादी स्वर षड्ज है। गाने का समय बसन्त ऋतु का चौथा प्रहर है। यह रागिनी शुद्ध संकीर्ण है, देशकार गौरी पूर्वी से मिश्रित होने से राग मे अवरोह करते समय रे अन्श स्वर के रूप मे लगेगा।

राग-देश (ताल दादरा)

स्वरकार और शब्दकार-श्री बाबूलाल सारस्वत

स्थाई—काहे रोकत डगर प्यारे नन्दलाल मोरे।
पनियां भरन घर से निकसी,
अन्तरा-डगर बीच घेरे, छीन लियो गले को हार।
मांगत नाहीं देरे ॥

स्थाई—

×			०			×			०		
नि	-	नि	सां	ध़ि	ध	प	ध	प	ग	प	म
का	ऽ	हे	रो	क	त	ड	ग	र	प्या	ऽ	रे
गरे	ग	रे	सा	नि़	सा	नि़सा	रेम	पम	ग	रे	सा
नऽ	ऽ	न्द	ला	ऽ	ल	मोऽ	ऽऽ	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ

अन्तरा—

रे	रे	रे	म	म	म	प	प	प	नि़	ध	प
प	नि	यां	भ	र	न	घ	र	से	नि	क	सी
नि	नि	नि	नि	सां	सां	पनि	सांरें	सांरें	नि़	ध	प
ड	ग	र	बी	ऽ	च	घेऽ	ऽऽ	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ
रें	रें	रें	रें	-	रें	मं	-	गं	सां	रे	सां
छी	न	लि	यो	ऽ	ग	ले	ऽ	को	हा	ऽ	र
प	नि	नि	नि	सां	सां	पनि	सांरें	सांरे	नि़	ध	प
मां	ग	त	ना	ऽ	हिं	देऽ	ऽऽ	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ

आरोह-अवरोह—सा रे म प नि सां। सां नि़ ध प म ग रे ग सा ॥
रे, वादी और प सम्वादी स्वर हैं।

राग तिलंग (तीन ताल)

शब्दकार—"अज्ञात" * स्वरकार—पं० केशवगणेश ढेकणे

यह खमाज थाट का राग है, इस राग के आरोह तथा अवरोह में रिषभ तथा धैवत स्वर वर्ज्य है इसलिये इस राग की जाति औड़व है तथापि कभी-कभी रिषभ स्वर का उपयोग होता हुआ अवरोह मे अकसर पाया जाता है। इस राग का वादी स्वर गन्धार होकर सम्वादी स्वर निषाद होता है, यह राग रात्रि के दूसरे प्रहर मे गाया जाता है।

राग का आरोह तथा अवरोह स्वरूप- सा ग म प, नि सां, सां ऩि प, म ग सा।
राग-वाचक मुख्य स्वर— सा ग म प, ऩि प, ग म ग, ऩिसा।

गीत—

सजन तुम काहे को प्रीत लगाई।
प्रीत लगाय परम दुख दीनों, प्रीत भई दुखदाई॥

स्थाई—

×				२				०				३			
								ग	म	प	सां	सांऩि	पऩिप	गमप	म
								का	हे	को	ऽ	प्रीऽ	ऽऽऽ	तऽऽ	ल
ग	ग	ग	सागम	ग	ग	सा	–	ग	म	प	ऩि	प	निसां	निसां	रें
गा	ऽ	ऽ	ऽऽऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ	स	ऽ	ज	ऽ	ऽ	नऽ	ऽऽ	ऽ
नि	सां	प	ऩि	म	प	ग	म								
ऽ	ऽ	तु	ऽ	ऽ	ऽ	म	ऽ								

अन्तरा—

								ग	म	पऩि	प	प	सां	सां	निसां
								प्री	ऽ	तऽ	ल	गा	ऽ	य	पऽ
प	नि	सां	रें	नि	सां	सांऩि	पमगम	सा	सा	ग	म	प	ऩिप	पनि	नि
र	म	दु	ख	दी	ऽ	नोंऽ	ऽऽऽऽ	प्री	ऽ	त	भ	ई	ऽऽ	दुऽ	ख
नि	सां	ऩि	प	प	ऩि	पम	गम								
दा	ऽ	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽऽ	ऽऽ								

तानें—

६ निसागम पनिसांनि पमगसा ।
३ निसागम पनिसांगं सांनिपनि सांगंसांनि पनिपम गमगसा
३ निसागम पनिसांप निसांपनि सांगमंगं सांनिपम गमगसा
१४ पनिसांप निसांपनि सांमपनि मपनिम पनिगम पगमप गमपम गमनिसा गमपनि सांनिपनि गमगसा ।
१५ सांगंसांनि सांनिपनि पनिपम पमगम गमगसा गसानिसा गमपनि सांगमंगं सांनिपम गमगसा ।
१४ गंमगंरे सांनिसारें सांनिपम गमगसा निसामग पमनिप सांनिगंसां निपमप गमपसां निपमप गमगसा ।
१४ सांनिपम गमगसा गंसांनिप मगमग सांगंमंगं सांनिपम गमगसा निसागम पनिसांगं मंगंसांनि पमगसा ।

(उपरोक्त चार चार अन्तर एक-एक मात्रा से बढ़ेंगे)

जिस मात्रा से तान आरम्भ होगी उस मात्रा का अङ्क तान के आगे शुरू मे दे दिया है ! गाना जिस मात्रा से शुरू होता है उसके पीछे की मात्रा पर तान समाप्त होगी ।

दरबारी —(रूपक, मात्रा ७)

स्वरकार श्रीयुत 'सिन्हा'' ★ शब्दकार-श्री० दिगुलाल जैन

जयति जय-जय माँ सरस्वती, जयति वीणा धारिनी ।
जयति पद्मासना माता, जयति शुभ वर दायिनी ॥
जगत का कल्याण कर माँ, तुम हो विघ्न विनाशिनी ।
कमल आसन छोड़ दे माँ, देख मेरी दुर्दशा ॥
शान्ति का दरिया बहादे, फिर से जग मे जननी ।

स्थाई—

×			२		३		×			२		३	
सा	रे	-	॑रे	सा	रे	प	ग	-	म	रे	-	सा	-
ज	य	ति	ज	य	ज	य	माँ	ऽ	स	र	ऽ	स्व	ति
सा	म	-	प	म	नि	प	मं	-	म	प	-	-	-
ज	य	ति	वी	ऽ	णा	ऽ	धा	ऽ	रि	नी	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

म	-	प	ध	-	नि	-	सां	-	सां	रें	नि	सा	-
ज	य	ति	प	ऽ	द्मा	ऽ	स	ना	ऽ	मा	ऽ	ता	ऽ
ध	नि	सां	रें	-	गं	-	ध	-	नि	सां	-	-	-
ज	य	ति	शु	भ	व	र	दा	ऽ	यि	नी	ऽ	ऽ	ऽ

प	रें	रें	रें	सां	रें	पं	गं	–	मं	रें	रें	सां	–
ज	ग	त	का	ऽ	क	लु	या	ऽ	रा	क	र	माँ	ऽ
म	म	म	प	–	नि	प	ग	–	म	प	–	–	–
तु	म	हो	वि	ऽ	ध्न -	वि	ना	ऽ	शि	नी	ऽ	ऽ	ऽ

नोट—शेष पद अन्तरे की तरह बजेंगे।

राग-भूपाल ——— (चौताल)

शब्दकार—श्री० द्विजमोहन  स्वरकार—श्री० शेषनाथ शर्मा 'शील'

छायी शिव शीष गङ्ग।
गौरी गणराज नन्दि, भैरव सह नाचें चण्डि,
बाजे डमरू-मृदङ्ग, छायी शिव शीर्ष गङ्ग।
पिंगल लट लम्बी छोरि, कोचिला कलिहारी घोरि,
पीवें हरि कहि सुभङ्ग, छायी शिव शीष गङ्ग॥
सुमिरे अघ ओघ जाये, परसे विपदा नसाए,
"मोहन" मन हो-अनन्द, छायी शिव शीष गङ्ग।

स्थाई—

×		०		२		०		३		४	
ध	–	प	–	ग	रे	ग	प	ग	रे	सा	रे
छा	ऽ	यी	ऽ	शि	व	शी	ष	ग	ऽ	ऽ	ङ्ग

अन्तरा—

ग	–	प	–	ध	प	सां	–	सां	सां	–	सां
गौ	ऽ	री	ऽ	ग	ण	रा	ऽ	ज	न	ऽ	न्दि
ध	–	सां	सां	रें	सां	धसां	रेंगं	रें	सां	ध	प
भै	ऽ	र	व	स	ह	ना	ऽ	चैं	च	ऽ	ण्डि
ध	–	प	–	ग	रे	ग	प	ग	रे	सा	रे
बा	ऽ	जे	ऽ	ड	म	रू	ऽ	मृ	द	ऽ	ङ्ग

शेष अन्तरे भी इसी प्रकार बजेंगे।

राग विवरण—

म, नि, इस राग में नहीं लगेंगे। बाकी सब शुद्ध स्वर है। ग, ध वादी सम्वादी स्वर हैं। यही स्वर इस राग को मनोहर बना देते है। इस राग को गाते समय देशकार से बचाना चाहिये, क्योंकि दोनों मे बहुत कुछ समानता है।

आसावरी —— (तीनताल)

शब्दकार—स्वामी ब्रह्मानन्द जी * स्वरकार—श्री० मनोहर दामोदर डम्बेकर

जगत मे जीवन दो दिन का ।
हरिनाम सुमिर सुखधाम जगत मे जीवन दो दिन का ॥
अन्तरा—पाप कपट कर माया जोरी, गर्व करे धन का ।
सभी छोड़कर चला मुसाफिर, वास हुआ वन का ॥
यह संसार सुपन माया है, मेला पल छिन का ।
"ब्रह्मानन्द" भजन कर बन्दे ! नाथ निरंजन का ॥

——*——

×				२				०				३			
									रे	म	म	प	–	सां	नि॒
									जी	व	न	दो	ऽ	दि	न
ध॒	प	म	ध॒	प	म	ग॒	रे	सा	रे	म	म	प	–	सां	नि॒
का	ऽ	ऽ	ज	ग	त	मे	ऽ	ऽ	जी	व	न	दो	ऽ	दि	न
ध॒	–	प	–	–	–	म	म	प	–	प	सां	नि॒	ध॒	प	म
का	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ह	रि	ना	ऽ	म	सु	मि	र	सु	ख
मप	ध॒	म	प	ग॒	ग॒	रे	सा	–	रे	म	म	प	–	सां	नि॒
धाऽ	ऽ	म	ज	ग	त	मे	ऽ	ऽ	जी	व	न	दो	ऽ	दि	न
ध॒	–	प	–												
का	ऽ	ऽ	ऽ												

इसका अन्तरा खाली से शुरू होता है, अतः खाली तक ४ मात्रा ठहर कर फिर अन्तरा उठाइये ।

अन्तरा—

								म	–	म	म	प	प	ध॒	ध॒
								पा	ऽ	प	क	प	ट	क	र
सां	–	सां	–	सांरें	गुंरें	–	–	सां	–	सां	सां	सां	–	रे	रें
मा	ऽ	या	ऽ	जोऽ	ड़ीऽ	ऽ	ऽ	ग	ऽ	र्व	क	रे	ऽ	ध	न
सांरें	सांनि॒	ध॒	प	–	–	–	–	प	गं॒	–	सां	–	सां	रे	रें
काऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स	भी	ऽ	छो	ऽ	ड़	क	र
नि॒	सां	–	नि॒	ध॒	–	प	प	म	–	म	म	म	–	प	प
च	ला	ऽ	मु	सा	ऽ	फि	र	वा	ऽ	स	हु	आ	ऽ	व	न

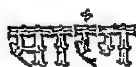
धु	प	म	धु	प	म	गु	रे	सा	रे	म	म	प	–	सां	नि
का	ऽ	ऽ	ज	ग	त	मे	ऽ	ऽ	जी	व	न	दो	ऽ	दि	न
धु	–	प	धु	प	म	गु	रे								
का	ऽ	ऽ	ज	ग	त	मे	ऽ	शेष अन्तरे भी इसी प्रकार हैं।							

राग परिचय—

इसका वर्ग औड़व सम्पूर्ण है, पर कई गुणिजन इसको सम्पूर्ण भी मानते हैं। इसके आरोह में ग नि वर्ज्य हैं और अवरोह में सम्पूर्ण स्वर हैं। इसमें ग धु नि कोमल और बाकी स्वर शुद्ध हैं। धु वादी और ग सम्वादी है।

इसकी स्थाई का आरम्भ बहुधा 'रे' स्वर से होता है और अन्तरे का उठान 'ममपधु सां' ऐसा होगा।

इसकी पकड़ "रे म प नि धु प" ऐसी है। मध्य और तार सप्तकों में इसकी गति विशेष है। दिन के एक बजे तक इसे गाते हैं।


सारंग ——————(तीनताल, मात्रा १६)

स्वरकार— प्रो० माधोप्रसाद श्रीवास्तव "भाई"



प्रेषक बा० केशवदेव टंडन

राग परिचय—

यह औडव जाति का राग है। इसमे गंधार और धैवत स्वर वर्जित हैं। आरोह में शुद्ध और अवरोह में कोमल ऐसे दोनों निषाद प्रयोग मे लाये गये हैं और बाकी सभी शुद्ध स्वर लगते हैं। पंचम वादी और रिषभ सम्वादी है, मध्य और तार सप्तकों में इसकी गति अधिक है। इसके गाने का समय दोपहर के दो बजे तक है।

आरोह-अवरोह—नि़ सा रे म प नि सां—सां नि प म रे सा।

पकड़—नि नि – प म रे सा – नि़ सा रे – म रे – प म रे – नि़ सा।

* भजन *

स्थाई—निरधन के धन राम हमारे।

अन्तरा–(१) चोर न लेहि घटत नहिं कबहूँ, गाढ़े आवत काम हमारे। निरधन०।

(२) जल नहिं बोरै अगिन नहिं जारे, हैं ऐसे हरिनाम हमारे॥ निरधन०॥

[प्रो० बेनी प्रसाद श्रीवास्तव 'भाई' की बन्दिश-पद्धति के अनुसार]

स्थाई—

०				२				×				३			
रे	म	रे	म	प	–	प	प	मप	सां	नि	पम	रे	–	नि़	सा
नि	र	ध	न	के	ऽ	ध	न	राऽ	ऽ	म	हऽ	मा	ऽ	रे	ऽ

अन्तरा (१)

रे - म प	म रे सा सा	नि़ नि़ नि़ नि़	सा सा सा सा
चो ऽ र न	ले ऽ हि घ	ट त न हिं	क व हूँ ऽ
रे - म रेम	प प म प	मप सां त्रि पम	रे - नि़ सा
गा ऽ ढे ऽऽ	आ ऽ व त	काऽ ऽ म हऽ	मा ऽ रे ऽ

अन्तरा (२)

नि़ नि़ नि नि़	सा - सा सा	रे म रे म	प - म प
ज ल न हिं	वो ऽ रे अ	गि न न हिं	जा ऽ रे ऽ
त्रिनि पम रेम पनि	सांनि पम म प	मप सा त्रि पम	रे - नि़ सा
हैऽ ऽऽ गेऽ ऽऽ	सेऽ ऽऽ ह रि	नाऽ ऽ म हऽ	मा ऽ रे ऽ

स्थाई की तानें—

सारे मप निसां रेंसां	त्रिप मप मरे सारे	मप सां त्रि पम	रे - नि़ सा
आऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	राऽ ऽ म हऽ	मा ऽ रे ऽ
रे म रे म	प - प प	निसां रेंसा त्रिप मप	मरे सारे मप निसां
नि र ध न	के ऽ ध न	आऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
	सारे मप	निसां रेंसां त्रिप मप	मरे सारे मप निसां
	आऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
सारे मप निसां रेंमं	रेंसां त्रिप मप रेसां	मप सां त्रि पम	रे - नि़ सा
आऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	राऽ ऽ म हऽ	मा ऽ रे ऽ
निसां रेम रेसां त्रिप	मप निसां त्रिप मप		
आऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ		
रे म रे म	प - सारे मप	निसां रेंमं रेंसां त्रिप	मप निसां त्रिप मप
नि र ध न	के ऽ आऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ

अन्तरा-नं० १ की तानें—

रे - म प	म रे सा सा	निसा रेम पत्रि मप	रेंसां त्रिप मरे सारे
नि र ध न	ले ऽ हिं घ	आऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ

		पनि मप निसां रेंमं	रेसां निप मरे सारे
		आऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
		निसा रेम सारे मप	मप निसां पनि सांरे
		आऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
रे – म रेम	प प म प	प सां नि पम	रे – नि सा
गा ऽ ढे ऽऽ	आ ऽ व त	काऽ ऽ म हऽ	मा ऽ रे ऽ

अन्तरा–नं० २ की तानें—

नि नि नि नि	सा सा सा सा	निसा रेम सारे मप	मप निसां पनि सांरें
ज ल न हिं	बो ऽ रे अ	आऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
		निसा मरे पम निप	सांनि पनि पम रेसा
		आऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
नि नि नि नि	सा सा सा सा	पम निप सांनि पनि	पम पम रेम रेसा
ज ल न हिं	बो ऽ रे अ	आऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
निनि पम रेम पनि	सांनि पम म प	मप सां नि पम	रे – नि सा
हैऽ ऽऽ ऐऽ ऽऽ	सेऽ ऽऽ ह रि	नाऽ ऽ म हऽ	मा ऽ रे ऽ

दून स्थाई—

रे म रे म	प – प प	मपसां निप– रे– निसा	रेम रेम प– पप
नि र ध न	के ऽ ध न	राऽऽ महऽ माऽ रेऽ	निर धन केऽ धन
रेम रेम प– पप	रेम रेम प– पप	मप सां नि पम	रे – नि सा
निर धन केऽ धन	निर धन केऽ धन	राऽ ऽ म हऽ	मा ऽ रे ऽ

दून अन्तरा नं० १—

रे म रे म	प – प प	मपसां निपम रे– निसा	रे– मप मरे सासा
नि र ध न	के ऽ ध न	राऽऽ महऽ माऽ रेऽ	चोऽ रन लेऽ हिय
निनि निनि सासा सासा	प– मरेम पप मप	मपसां निपम रे– निसा	रेम रेम प– निसा
टत नहीं कच हूंऽ	गाऽ ढ़ेऽऽ आऽ वत	काऽऽ महऽ माऽ रेऽ	निर धन केऽ रेऽ
रेम रेम प– निसा	रेम रेम प– पप	मप सां नि पम	रे – नि सा
निर धन केऽ रेऽ	निर धन केऽ धन	राऽ ऽ म हऽ	मा ऽ रे ऽ

दून अन्तरा नं० २ तिहाई के साथ

रे म रे म	प – प प	पमसां निपम रे– निसा	निनि निनि सासा सासा
नि र ध न	के ऽ ध न	राऽऽ महऽ माऽ रेऽ	जल नहीं थोऽ रेअ
रेम रेम पप मप	निनिपम रेमपनि सानिपम मप	मरेमारे मपनिसा रेंसानिप मपमरे	सारेमप निसा मरेसारे मपनिसा
गिन नहिं जाऽ रेऽ	हैंऽऽऽ ऐऽऽऽ सेऽऽऽ हरि	नाऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ	ऽऽऽऽ ऽऽ नाऽऽऽ ऽऽऽऽ
रेंसानिप मपमरे सारेमप निसा	मरेसारे मपनिसा रेंसानिप मपमरे	मप सां नि मप	रे – नि सा
ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽ	नाऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ	नाऽ ऽ म हऽ	मा ऽ रे ऽ

सारंग ••••••••••••••••••(एकताल, मात्रा १२)

शब्दकार—'अज्ञात' ★ स्वरकार—उस्ताद विवेकदास गुप्त, नैपाल

चलो तो बताऊँ बिहारी जी, म्हारे फूली केसर क्यारी।
अति सुन्दर बहु अमोलक, रङ्ग रङ्गीले हो वारी॥
यों मत जानो झूँठ कहै, मोहन सौंह तिहारी।
बृजनिधि तुमसे नेह लगी, प्रीति पुरातन यारी॥

स्थाई—

×		०		२		०		३		४	
रे	रे	प	म	रे	–	सा	रे	सां	–	नि	प
च	लो	तो	ब	ता	ऽ	ऊँ	बि	हा	ऽ	री	जी
म	रे	सा	नि	सा	रे	रे	रे	प	म	रे	सा
म्हा	ऽ	रे	फू	ली	ऽ	के	ऽ	स	र	क्या	री

अन्तरा—

म	म	प	प	नि	नि	सां	सां	रें	मं	रें	सां
अ	ति	सुं	ऽ	द	र	ब	हु	अ	मो	ल	क
रें	मं	रें	सां	रें	सां	नि	सां	नि	प	म	रे
रं	ऽ	ग	रं	गी	ले	हो	ऽ	वा	ऽ	री	ऽ

संचारी—

नि	सा	रे	म	प	प	नि	प	म	रे	सा	रे
यों	ऽ	म	त	जा	ऽ	नो	झूं	ऽ	ठ	क	है

म	रे	म	प	ऩि	प	नि	सां	ऩि	प	म	रे
मो	ऽ	ह	न	सौं	ऽ	ह	ति	हा	ऽ	ऽ	री

आभोग—

म	म	प	प	नि	सां	नि	सां	प	नि	सां	रें
वृ	ज	नि	धि	तु	म	से	ऽ	ने	ह	ल	गी
नि	सां	रें	सां	निसां	रेमं	रेसां	निसां	निसां	रेंसां	ऩिप	मरे
प्री	ऽ	ति	पु	राऽ	ऽ	त	न	याऽ	ऽ	ऽ	री

सारङ्ग– औड़व जाति ग, ध, वर्जित राग है। वादी स्वर रे, सम्वादी प है। रे शुद्ध म शुद्ध आरोह में नि तीव्र अवरोह मे कोमल लगानी होगी। गाने का समय दिन का मध्य। सारङ्ग चौदह १४ प्रकार के होते है यथाः–शुद्ध सारङ्ग १, वृन्दावनी सारङ्ग २, बड़हंस सारङ्ग ३, मलदहन सारङ्ग ४, सामन्त सारङ्ग ५, धोलिया सारङ्ग ६, सोरठी सारंग ७, सवारी सारङ्ग ८, मदमाद सारङ्ग ९, गौड सारङ्ग १०, सयानक सारङ्ग ११, गोबरारी सारङ्ग १२, लुहसा सारङ्ग १३, लंकदहन सारङ्ग १४।

पूरिया —— (तीनताल, मात्रा १६)

[शब्दकार और स्वरकार प० रामसेवक तिवारी]

स्थाई—पुरिया अस्त समय नित गावे।
अन्तरा–'मारवा' ठाठ सुजन वरणत जिहि, पंचम तजत सुहावे ॥ १ ॥
वादी 'गा' अरु 'नी' सम्वादी, 'सेवक' मन हरषावे ॥ २ ॥
आरोह—सा रे॒ ग मं – ध नि सां। अवरोह—सां नि ध – मं ग रे॒ सा।
पकड़—नि़ रे॒ सा, मं रे॒ ग, नि ध नि रें॒ सां, ग रे॒ सा, नि़ रे॒ सा।

स्थाई—

२				०				३				×			
नि़	सा	रे॒	सा	नि़	–	सा	मं	रे॒ग	रे॒	सा	नि़	सा	–	–	–
पु	रि	या	ऽ	अ	स्	त	स	मय	नि	ऽ	त	गा	ऽ	वे	ऽ
नि़	सा	रे॒	सा	मंग	मंध	मं	ध	मं	सां	नि	सां	निरें॒	सां	नि	मं
पु	रि	या	ऽ	मा	ऽ	र	व	ठा	ऽ	ठ	सु	ज	न	व	र

ग	मं	सां	सा	नि	मं	ध	ग	मं	ग	रे	सा	रेसा	नि	सा	–
ण	त	जि	हि	पं	ऽ	च	म	त	ज	त	सु	हा	ऽ	वे	ऽ

नोट—(१) दूसरा अन्तरा भी इसी प्रकार बजाया जायगा।

(२) इस राग को सोहनी, मारवादि रागो से बचाने मे विशेष सावधानी रखनी चाहिए।



(शूल ताल, मात्रा १०)

शब्दकार और स्वरकार—चौ० लक्ष्मणसिंह 'लाल'

स्थाई—जय जय दुख भंजन गिरधारी !

अन्तरा-जय जय गोपीपति, जय जय करुणानिधि, जय जय राधापति, बनवारी।
जय जय जग बन्दन, जय जय मद खंडन, जय जय मधुसूदन, असुरारी॥
जय जय सुखदायक, जय जय सुरनायक, जय जय प्रतिपालक, कंसाहारी।
दास 'लाल' प्रभु सों यह मागत निशदिन, मम मन तम मेटो, तमहारी॥

स्थाई—

×		०		२		३		०	
सां	ध	प	म	प	प	म	रे	सा	सा
ज	य	ज	य	दु	ख	भं	ऽ	ज	न
ध़	सा	रे	म	प	–	म	प	ध	–
गि	र	धा	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

रे	रे	म	म	प	ध	सां	–	सां	सां
ज	य	ज	य	गो	ऽ	पी	ऽ	प	ति
ध	ध	सा	सां	रे	मं	रे	–	सां	सां
ज	य	ज	य	क	रु	णा	ऽ	नि	धि
प	प	म	म	प	ध	पध	–	पम	रेसा
ज	य	ज	य	रा	ऽ	धा	ऽ	प	ति
ध़	सा	रे	म	प	–	म	प	ध	–
ब	न	वा	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ

राग विवरण—इस रागिनी का औडव वर्ग है। इसमे ग, नि वर्जित हैं। बाकी स्वर शुद्ध है। प, सा वादी सम्वादी है।

राग देस —— (तीनताल)

शब्दकार और स्वरकार—बा० ज्योतीस्वरूप भटनागर बी० ए० (संगीत विशारद)

※ गीत ※

दर्शन नाथ के होंय हमें, तब पड़ि हैं मन को चैन हमारे।
आवें हमारे नाथ यहां, यह राह तकत हैं नैन हमारे॥
भक्त के काज गरुड़ तज दीनों नंगे पांवन दौड़े आये।
भीर पड़ी अब भक्तन पर प्रभु क्यों नहीं सुनते बैन हमारे ?
भक्त पुकारत, तुम नहीं आवत, देश दशा बिगड़ी जाती है।
देदो दर्श 'ज्योति' मन मोहन! थक गये रोवत नैन हमारे॥

×	२	०	३
सासा रेगरे- म पप	नि नि निसांरें- ऩिध	पध म मम प	मपध- पम गरे ग
दर शनSS ना थके	हों य हमेंSS तब	पड़ि हैं मन को	चैSSS नह माS रे

अन्तरा—

म- पप नि नि-	सांसां सांसां सां सां	रें रें रेगं रेंमं	गंरें सांऩि धप ध
भक् तके का जग	रुड़ तज दी नों	नं गे पांS वन	दौS ड़ेS आS ये
			गंरें ऩिध पमग- रेग

नोट—यदि अन्तरा बजाने के बाद फिर अन्तरा बजायें तो 'दौड़े आये' के ऊपर वाली सरगम बजायें, यदि अन्तरे के बाद स्थाई बजायें तो 'दौड़े आये' के नीचे वाली सरगम बजायें।

रागिनी-पटमंजरी —— (तिताला, मात्रा १६)

शब्दकार—श्री सूरदास जी ★ स्वरकार—उस्ताद विवेकदास गुप्त

नैन सलोने श्याम! हरि कब आवहिंगे ?
वे जो देखत राते-राते, फूलन फूले डार।
हरि बिनु फुलझरी सी लागत, झरि-झरि परत अङ्गार।
फूल बीनन ना जाऊं सखीरी! हरि बिन कैसे फूल।
सुनरी सखी, मोहि राम दुहाई, लागत फूल त्रिसूल॥
जबते पनघट जाऊं सखीरी, वा जमुना के तीर।
भरि-भरि यमुना उमड़ि चलत है, इन नैनन के नीर॥
इन नैनन के नीर सखीरी, सेज भई घर नाव।
चाहत जी, ताही पै चढ़िके, हरिजी के ढिग जाव॥
लाल पियारे प्राण हमारे, रहे अधर पर आय।
"सूरदास" प्रभु कृष्णविहारी मिलत नहीं क्यों धाय॥

स्थायी—

×				२				०				३			
प	म	ग	रे	ग	नि़	रे	सा	नि़	रे	ग	म	पम	गरे	मग	सा–
नै	ऽ	ऽ	न	स	लो	ऽ	ने	श्या	ऽ	ऽ	ऽ	मऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
ग	म	प	प	नि	नि	सां	सां	गंसा	निध	निध	पम	धप	मग	पम	गसा
ह	रि	क	न	आ	ऽ	व	हिं	गेऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ

अन्तरा—

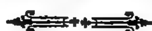
म	म	प	प	नि	नि	सां	सां	प	सां	–	सां	नि	ध	प	–
बे	ऽ	जो	ऽ	दे	ऽ	ख	त	रा	ऽ	ऽ	ते	रा	ऽ	ते	ऽ
नि	ध	प	म	ग	रे	ग	म	प	म	प	म	ग	रे	ग	ग
फू	ऽ	ल	न	फू	ऽ	ले	ऽ	डा	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ
सां	सां	सां	सां	सां	–	सां	सां	प	–	–	प	सां	नि	प	ध
ह	रि	बि	न	फु	ऽ	ल	झ	री	ऽ	सी	ऽ	ला	ऽ	ग	त
म	ग	रे	ग	प	म	गरे	सा	सांनि	धप	निध	पम	धप	मग	पम	गसा
झ	रि	झ	रि	प	र	त	अं	गाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽर

विवरण—पटमंजरी हिंडोल की रागिनी है । पटमंजरी दो प्रकार की हैं। एक सूर-दासी, दूसरी तानसेनी। सूरदासी मे सम्पूर्ण स्वर शुद्ध लगते है और तानसेनी मे ग, नि कोमल लगते हैं। सूरदासी पटमंजरी मे संपूर्ण स्वर शुद्ध लगते हैं, वादी स्वर पंचम, सम्वादी स्वर षड़ज है। वियोग श्रंगार के गाने रखकर अर्धरात्रि में गाने चाहिये।

राग भैरव (ताल कहरवा, मात्रा ८)

शब्दकार—'अज्ञात' * स्वरकार—पं० रामसेवक शर्मोपाध्याय, संगीत भास्कर

मोहन छबि दिखलाय, बँसुरिया दीजे श्याम बजाय।
बन्शी की ध्वनि हृदय समाई, सुधि बुधि रही भुलाय ॥ बँसुरिया० ॥
बन्शी जबसे बजी तुम्हारी, विकल हैं तबसे बृज की नारी।
बिथा सुनाऊँ जिनकी सारी, मुख से निकसत हाय ॥ बँसुरिया० ॥
छेड़त फिरत करत लरकैंयां, छोड़ो गैल छुओ ना बहियां।
जावो बैठ कदम की छहियां। मुख से नैंक लगाय ॥ बँसुरिया० ॥



स्थाई—

×				२				०				३			
सां	म	सा	म	म	म	ग	म	प	-	प	म	ग	म	प	-
मो	ऽ	ह	न	छ	वि	दि	ख	ला	ऽ	य	वँ	सु	रि	या	ऽ
प	धु	प	त्रि	धु	प	म	ग	म	धु	प	म	ग	रे	सा	सा
दी	ऽ	जे	ऽ	श्या	ऽ	म	ब	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	य
धु	-	धु	-	धु	प	म	म	ग	म	म	ग	रे	-	सा	-
बं	ऽ	शी	ऽ	की	ऽ	धु	नि	हृ	द	य	स	मा	ऽ	ई	ऽ
सा	म	सा	म	म	म	ग	म	प	-	प	म	ग	म	प	-
सु	धि	बु	धि	र	ही	ऽ	सु	ला	ऽ	य	वं	सु	रि	या	ऽ
प	धु	प	त्रि	धु	प	म	ग	म	धु	प	म	ग	रे	सा	सा
दी	ऽ	जै	ऽ	श्या	ऽ	म	व	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	य

अन्तरा—

धु	-	धु	-	प	म	प	-	नि	नि	सां	रें	सां	नि	सां	-
बं	ऽ	शी	ऽ	ज	ब	से	ऽ	ब	जी	ऽ	तु	म्हा	ऽ	री	ऽ
धु	धु	धु	धु	प	म	प	-	नि	नि	सां	रें	सां	नि	सां	-
वि	क	ल	हैं	त	व	से	ऽ	बृ	ज	की	ऽ	ना	ऽ	री	ऽ
धु	धु	-	धु	धु	प	म	-	ग	ग	म	ग	रे	-	सा	-
वि	था	ऽ	सु	ना	ऽ	ऊं	ऽ	जि	न	की	ऽ	सा	ऽ	री	ऽ
सा	म	सा	म	म	म	ग	म	प	-	प	म	ग	म	प	-
सु	ख	से	ऽ	नि	क	स	त	हा	ऽ	य	वँ	सु	रि	या	ऽ
प	धु	प	त्रि	धु	प	म	ग	म	धु	प	म	ग	रे	सा	सा
दी	ऽ	जे	ऽ	श्या	ऽ	म	ब	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	य

नोट—कोई-कोई सङ्गीतज्ञ भैरव राग में किंचित कोमल निषाद का प्रयोग करते है, इसी कारण से इस गायन के नोटेशन में मधुरता के लिये किंचित कोमल निषाद का प्रयोग किया है ।

राग हमीर (ताल त्रिताल, मात्रा १६)

[स्वरकार तथा शब्दकार—श्री छत्रपालसिंहजू देव,]

स्थाई—गुनिजन गावत राग हमीर ।
गुनिजन सम्पूरन स्वर थाट मिलावत दोनो मध्यम लागत सुमधुर,
हर्षत सब जन धीर । गावत राग हमीर ॥
अन्तरा—धैवत वादी, रे सम्वादी, आरोहन मे सप्तम वरजत,
कामोदी केदार दिखावत, सा सा म ग प मं ध प नि ध सां रे सां
नि ध प । गावत राग हमीर ॥

×				२				०				३			
				नि	ध	सां	सां	नि	–	मं	प	प	–	ग	म
				गु	नि	ज	न	गा	ऽ	व	त	रा	ऽ	ग	ह
ध	–	–	ध	सां	सां	ध	प	प	–	प	–	ध	ध	प	प
मी	ऽ	ऽ	र	गु	नि	ज	न	सं	ऽ	पू	ऽ	र	न	सु	र
ग	–	म	रे	सा	रे	सा	सा	सा	–	म	ग	प	–	प	प
था	ऽ	ट	मि	ला	ऽ	व	त	दो	ऽ	नो	ऽ	म	ऽ	ध्य	म
नि	ध	सां	रें	सां	सां	ध	ध	सां	सां	गं	गं	मं	रें	सां	रें
ला	ऽ	ग	त	सु	म	धु	र	ह	र	ष	त	स	ब	ज	न
सां	–	नि	–	ध	–	–	प	मंप	नि	ध	नि	प	प	ग	म
धी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	गाऽ	ऽ	व	त	रा	ऽ	ग	ह
ध	–	–	ध												
मी	ऽ	ऽ	र												

नोट—इसका अन्तरा खाली से उठता है।

अन्तरा—

								प	–	प	प	सां	–	सां	–
								धै	ऽ	व	त	वा	ऽ	दी	ऽ
सां	–	सां	–	सां	रें	सां	–	ध	–	ध	–	सां	सां	सां	–
रे	ऽ	सं	ऽ	वा	ऽ	दी	ऽ	आ	ऽ	रो	ऽ	ह	न	मे	ऽ
सां	रें	सां	सां	ध	ध	प	प	मंप	–	प	–	ध	–	प	–
स	ऽ	प्त	म	ब	र	ज	त	का	ऽ	मो	ऽ	दी	ऽ	के	ऽ

ग	–	म	रे	सा	रे	सा	सा	सा	सा	म	ग	प	मं	ध	प
दा	ऽ	रं	दि	खा	ऽ	व	त	(सरगम बोलिये)							
नि	ध	सां	रें	सां	नि	ध	प	मंप	नि	ध	नि	प	प	ग	म
								गा	ऽ	व	त	रा	ऽ	ग	ह
ध	–	–	ध												
मी	ऽ	ऽ	र												

राग विवरण—यह राग सम्पूर्ण जाति का है, इसमें धैवत वादी और गंधार सम्वादी है। इसमें दोनों मध्यम लगती हैं, मगर तीव्र मध्यम का बहुत कम प्रयोग होता है, रात्रि के प्रथम प्रहर में गाया जाता है।

दोहा—दो मध्यम तीवर सभी, धैवत वादी जान।
सम्वादी गन्धार है, राग हमीर बखान॥

चैती (जत-मात्रा १४)

(शब्दकार और स्वरकार—शिवगढ़ नरेश 'महेश' जी)

स्थाई—झुकवन पवन झिकोरे हो रामा, नींद न आवे।
अन्तरा-कोयल कूक हूक सम लागत,
चन्द्र किरन उर जारे हो रामा, नींद न आवे॥१॥
चन्दन खौर और उर जारे,
सौरभ कहर गुजारे हो रामा, नींद न आवे॥२॥
भौंर की भीर भयावनि लागे,
पिय-पिय पपीहा पुकारे हो रामा, नींद न आवे॥३॥
कामिन विकल 'महेश' मनावे,
हृदय असम शर मारे हो रामा, नींद न आवे॥४॥

स्थाई—

×			२				०			३			
पम	रे	–	पम	–	ग	–	म	प	–	ध	–	ऩिध	सांनि
झु	क	ऽ	व	ऽ	न	ऽ	प	व	ऽ	न	ऽ	झि	ऽ
ध	प	ध	पम	ग	रे	–	गरे	ग	रे	धप	–	–	–
को	ऽ	ऽ	रे	ऽ	हो	ऽ	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
मग	पम	–	गम पध	सांनि	धप		पम	ग	रे	रेग	मग	रेसा	ऩिसा
नीं	ऽ	ऽ	द	ऽ	ऽ	न	आ	ऽ	ऽ	वे	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा.

पसगम	–	–	निध	–	सांनि	–	रेंसां	रे	–	सां	–	–	–
को	ऽ	ऽ	य	ऽ	ल	ऽ	कू	ऽ	ऽ	क	ऽ	ऽ	ऽ
रेसां	नि	ध	ध	–	प	–	ध	प	–	म	–	म	–
हू	ऽ	क	स	ऽ	म	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ग	ऽ	त	ऽ
पध	–	–	ध	–	पध	–	ध	धप	–	ध	–	सांनि	–
चं	ऽ	ऽ	द्र	ऽ	कि	ऽ	र	न	ऽ	उ	ऽ	र	ऽ
ध	प	–	पम	ग	रे	–	गरे	ग	रे	धप	–	–	–
जा	ऽ	ऽ	रे	ऽ	हो	ऽ	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
मग	पम	–	गम	पध	नि	धप	पम	ग	रे	रेग	मग	रेसा	निसा
नीं	ऽ	ऽ	द	ऽ	ऽ	न	आ	ऽ	ऽ	वे	ऽ	ऽ	ऽ

भैरवी (ताल दादरा, मात्रा ६)

शब्दकार—'अज्ञात' ★ स्वरकार—सङ्गीतशास्त्री पं० भवानीदत्त जोशी,

हे जग त्राता विश्व विधाता ! हे सुख शान्ति निकेतन हे ।
प्रेम के सिन्धु, दीन के बन्धू ! दुख दारिद्र विनाशन हे ॥
नित्य अखण्ड अनन्त अनादि ! पूरण ब्रह्म सनातन हे ॥ हे जग० ॥
जग आश्रय जगपति जग वंदन ! अनुपम अलख निरंजन हे ।
प्राण सखा त्रिभुवन प्रतिपालक ! जीवन के अवलम्बन हे ॥ हे जग० ॥

स्थाई—

×			०			×			०		
निसा	रे	नि	सा	सा	–	गम	म	म	म	म	–
हेऽ	ज	ग	त्रा	ता	ऽ	वि	श्व	वि	धा	ता	ऽ
म	नि	ध	प	म	ग	रे	सा	नि	सा	–	–
हे	सु	ख	शा	न्ति	नि	के	त	न	हे	ऽ	ऽ

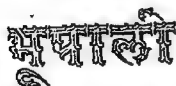
अन्तरा—

म	प	ग	म	ध	नि	सां	सां	सां	रें	सां	–
प्रे	म	के	सि	न्धू	ऽ	दी	न	के	ब	न्धू	ऽ

सांनि	नि	नि	नि	सां	नि	रें	सां	नि	ध	प	–
दु	ख	दा	रि	द्र	वि	ना	ऽ	श	न	हे	ऽ
प	प	नि	ध	म	म	म	म	ध	प	ग	–
नि	त्य	अ	ख	ण्ड	अ	न	न्त	अ	ना	दी	ऽ
म	नि	ध	प	म	ग	ग	सा	नि	सा	–	–
पू	र	ण	ब्र	ह्म	स	ना	त	न	है	ऽ	ऽ

दूसरा अन्तरा भी इसी प्रकार बजेगा।

प्रातःकाल के समय यह प्रार्थना बड़ी सुहावनी मालूम होती है।



(तीनताल, मात्रा १६)

शब्दकार—श्री तुलसीराम जी ✽ स्वरकार—पं० रामसेवक शर्मोपाध्याय 'सङ्गीतभास्कर'

श्री गणेशजी की स्तुति !

गाइये गणपति जगबन्दन ! शङ्कर सुवन भवानी नन्दन।
सिद्धि सदन गज बदन विनायक, कृपासिंधु सुन्दर सब लायक॥

स्थाई—

०				३				×				२			
सां	सां	ध	प	ग	रे	सा	रे	ग	ग	प	ग	ध	प	ग	रे
गा	ऽ	ऽ	इ	ये	ऽ	ग	ण	प	ति	ज	ग	बं	ऽ	द	न
ग	प	ध	सां	रें	सां	ध	प	सां	ध	प	ध	ग	रे	सा	सा
शं	ऽ	क	र	सु	व	न	भ	वा	ऽ	नी	ऽ	नं	ऽ	द	न

अन्तरा—

ग	ग	प	ध	प	सां	सां	सां	ध	ध	सां	रें	गं	रें	सां	ध
सि	ऽ	द्धि	स	द	न	ग	ज	ब	द	न	वि	ना	ऽ	य	क
गं	गं	रें	सां	रें	रें	सां	ध	सां	सां	ध	प	ग	रे	सा	सा
कृ	पा	ऽ	सिं	ऽ	धु	सु	ऽ	द	र	स	ब	ला	ऽ	य	क

भूपाली में वादी स्वर गांधार, सम्वादी धैवत है। इसमें मध्यम और निषाद स्वर वर्जित हैं इसलिये इसकी औडव जाति है। गायन समय रात्रि का प्रथम प्रहर है।

दोहा—आरोही अवरोहि में, स्वर म नि कीन्हे त्याग।
ग ध वादी सम्वादि तें, कह्यौ भुपाली राग॥

राग भैरव (ब्रह्मताल, मात्रा १४)

[स्वकार-प्रोफेसर दोस्त मुहम्मद सिन्धी मा० स० शास्त्री एवं वीणाकार]

गावत ब्रह्मताल चौदश मात्रा, दश घात गुनि कहत ।
धा धीन्नक-धीन्नक धी-धी धीन्क धी धीन धागे तिरकिट ।।
भैरव शिव रूप-शीश जटा, श्वेत वसन प्रिय नैन ।
मुण्ड माल सोहे गरे, सिद्ध रूप सुख दैन ।।
भैरव कोमल रे ध सुर, शुद्ध ग, म, निषाद ।
वादी धैवत स्वर कह्यो, रिषभ सुर सम्वादि ।।

×		०		२		३		०		४		५	
सांनिधु	–	प	धु	रेग	गम	प	गम	धु	प	निधु	धुप	प	धु
गा	ऽ	व	त	ब्र	ऽ	ह्म	ता	ऽ	ल	चौ	ऽ	द	श
रेग	– –	गम	– –	पम	मग	धुप	पम	धु	प	निधु	पम	गरे	सा
मा	ऽ	त्रा	ऽ	द	श	घा	ऽ	त	गु	नि	क	ह	त
पधु	– –	नि	नि	निसा	निसा	रे	सा	रेग	गरे	रेग	–	गम	–
धा	ऽ	धी	न	न	क	धी	न	न	क	धी	ऽ	धी	ऽ
पधु	म	रेग	गम	पधु	–	गम	मप	ग	म	गम	पग	मरे	सा
धी	न	न	क	धी	ऽ	धी	न	धा	गे	ति	र	कि	ट

अन्तरा—

गम	पम	गम	गम	धुप	धुप	नि	नि	धुनि	–	सां	रें	–	सां
भै	ऽ	र	व	शि	व	रू	प	शी	ऽ	श	ज	ऽ	टा
सां	–	सांनिधु	पधु	धुनि	धुनि	सां	सां	पधु	नि	सांनि	निधु	धुप	पम
ऽ	ऽ	श्वे	ऽ	त	ब	स	न	प्रि	ऽ	य	नै	ऽ	न
रेग	मग	प	गम	–	प	निधु	धुप	सां	नि	धु	प	पधु	–
मुं	ऽ	ड	मा	ऽ	ल	सो	ऽ	हे	ऽ	ऽ	ग	रे	ऽ
गम	प	सारे	रेग	गम	मप	मग	पम	धुप	मग	म	रे	–	सा
ऽ	ऽ	सि	ऽ	द्ध	रू	ऽ	प	सु	ख	ऽ	दे	ऽ	न
ग	म	गम	गम	गम	पधु	धुनि	नि	सां	–	–	रें	सां	–
भै	ऽ	र	व	को	ऽ	म	ल	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ध	ऽ

धुनि	--	सां	--	नि	धु	प	धु	ग	म	नि	पधु	-	म
S	S	सु	S	र	शु	S	द्ध	ग	म	नि	पा	S	द
मग	रे	पम	मग	धुप	गम	मप	धुप	निधु	पधु	सां	म	पधु	--
वा	S	दी	S	वै	S	व	त	सु	S	र	क	छो	S
गम	प	रेग	-	मगम	पमप	धु	-	रे	रे	-	नि	-	सा
S	S	रि	S	प	म	सु	S	र	सं	S	वा	S	दि

होरी, खमाज —— (तीनताल)

[स्वरकार और शब्दकार— मास्टर श्यामसुन्दर 'सङ्गीत भूषण']

स्थाई—होरी खेलत कन्हैया झूम-झूम ।
पिचकारी रङ्ग वारी, तकमारी, गिरधारी,
गई भीज सब सारी, मोरी रूम-रूम ॥ होरी खेलत ... ॥
अन्तरा—श्यामसुन्दर ऐसो रसिया, रंगीलो छैला !
करत फिरत बृज घूम-घूम ॥ होरी खेलत ... ।



स्थाई—

														निध	पध
०				३				×				२		होS	रीS
पध	निसां	निध	प	ग	म	गम	पध	नि	सां	नि	सां	नि	सां	नि	सां
खेS	लS	तS	क	न्है	इ	याS	SS	झू	S	म	झू	S	म	पि	च
रें	रें	रें	रें	रें	रें	सां	रें	गं	गं	गं	गं	रें	रें	सां	सां
का	री	रं	ग	वा	री	त	क	मा	री	गि	र	धा	री	ग	ई
गं	गं	गं	गं	गं	मं	गं	मं	रें	मं	गं	रें	नि	सां	निध	पध
भी	ज	स	ब	सा	री	मो	री	रू	S	म	रू	S	म	होS	रीS

अन्तरा—

म	ग	नि	ध	सां	नि	सां	सां	नि	नि	सां	रें	ध	सां	नि	ध
श्या	S	म	सु	द	र	ऐ	सो	र	सि	या	रं	गी	लो	छै	ला
ध	मं	गं	मं	गं	मं	गं	मं	रें	मं	गं	रें	नि	सां	निध	पध
क	र	त	फि	र	त	बृ	ज	घू	S	म	घू	S	म	होS	रीS

राग काफी ——— (तीनताल)

[स्वरकार—श्री विक्रमादित्यसिंह निगम एम० ए० एल-एल० बी०]

स्थाई—देखो मदन मोहन मेरो मन रिझाये।
मधुर-मधुर मुरली कर धर बजाये॥
अन्तरा—बिन्द्रावन की कुञ्ज गलिन मे।
वंसिया बजाये मेरे मन को लुभाये॥

२				०				३				×			
रे	ग॒	रे	म	ग॒	रे	नि॒	सा	रे	ग	म	प	ध	ग	–	म
दे	खो	म	द	न	मो	ह	न	मे	रो	म	न	रि	झा	ऽ	ये
प	नि	सां	रे	नि	सां	नि॒	ध	म	ध	प	नि॒	ध	प	ग	म
म	धु	र	म	धु	र	मु	र	ली	क	र	ध	र	ब	जा	ये

अन्तरा—

म	म	प	–	नि	नि	नि	–	सां	–	सां	सां	रें	नि	सां	–
बिं	द	रा	ऽ	व	न	की	ऽ	कुं	ऽ	ज	ग	लि	न	में	ऽ
प	नि	सां	रें	नि	सां	नि॒	ध	म	ध	प	नि॒	ध	प	ग	म
बं	सि	या	ब	जा	वे	मे	रे	म	न	को	ऽ	ऽ	लु	भा	ये

राग विवरण—

(१) यह सम्पूर्ण राग है। इसमे 'ग' तथा 'नि' कोमल और बाकी शुद्ध स्वर लगते हैं। परन्तु कभी-कभी राग मे सुन्दरता पैदा करने के लिये 'ग' और 'नी' तीव्र स्वरों का भी प्रयोग किया जाता है। ऐसा प्रयोग इस राग मे भी किया गया है। इसमे 'प' वादी तथा 'सा' सम्वादी स्वर है।

(२) गाने का समय रात्रि का दूसरा प्रहर या मध्य-रात्रि है। परन्तु कोई-कोई इसे सर्वकालिक राग मानकर हर समय गाते हैं।

धुपाली ——— (झपताल, मात्रा १०)

स्वरलिपिकार—श्री नन्दलाल शर्मा 'विशारद'

स्थाई—साधे प्रथम स्वर !
साधे रटे ना, जो कोई रटे ताके घट में प्रगट होत, साधे प्रथम स्वर।
अन्तरा—सप्त स्वरन तीन ग्राम, गुणीजन करें बखान।
अवना गवन कीन, विद्या कठिन भेद पावे गुरुन से॥

स्थाई—

×		२			०		३		
सां	ध	रें	रें	सां	ध	प	ग	रे	सा
सा	ऽ	धे	ऽ	प्र	थ	म	स्व	ऽ	र
ध़	सा	रे	रे	ग	रे	रे	सा	–	–
सा	ऽ	धे	ऽ	र	टे	ऽ	ना	ऽ	ऽ
ग	–	प	प	ध	ध	प	ग	रें	सा
जो	ऽ	को	इ	र	टे	ऽ	ता	ऽ	के
सां	ध	प	–	ग	रे	रे	सा	–	सा
घ	ट	में	ऽ	प्र	ग	ट	हो	ऽ	त
सां	ध	रें	रें	सां	ध	प	ग	रे	सा
सा	ऽ	ऽ	धे	प्र	थ	म	स्व	ऽ	र

अन्तरा—

ग	ग	प	ध	सां	ध	ध	सां	–	सां
स	प्त	स्व	रन	ती	ऽ	न	ग्रा	ऽ	म
ध	सां	रें	रेंगं	रें	सां	ध	प	प	प
गु	णि	ज	ऽन	क	रें	ऽ	व	खा	न
धं	गं	रें	–	प	ध	सां	सां	–	सां
अ	व	ना	ऽ	ग	व	न	की	ऽ	न
ध	–	सां	–	रें	गं	रें	सां	–	सां
वि	ऽ	द्या	ऽ	क	ठि	न	भे	ऽ	द
सां	ध	रें	–	सां	ध	प	ग	रे	सा
पा	ऽ	वे	ऽ	गु	रु	न	से	ऽ	ऽ

इसकी जाति औड़व-औड़व है। इसमें म, नि स्वर वर्ज्य है। इसको विप्रलंभ-श्रृङ्गार-रस में गायन करने से बहुत आनन्द प्राप्त होता है।

—

बसन्त-बहार

[तीन ताल—मात्रा १६ थाट—काफी]

[शब्दकार और स्वरकार—मा० मंगलसेन जी गुप्त "मगन"]

स्थाई—मत छेड़ो भ्रमर मोहे वार-बार ! तुम कहा जानत हो हित की सार !!
हौं तो अपने पिया विन निश-दिन ! गूंथत नित अँसुवन सों हार !!

अन्तरा—सकल बन उपवन वाटिका फूली, और फूली केसर क्यारी !
हां टेसू फूले अमवा बौरे।
पिया विन मोहिका सब असार ! मन 'मगन' बस्यो श्री नन्दकुमार !!

×				२				०				३			
नि॒	-	ध	नि	सां	सां	नि	सां	रे	सां	नि॒	प	म	प	ग	म
वा	ऽ	र	बा	ऽ	र	म	त	छे	ऽ	ड़ो	भ्र	म	र	मो	हे
नि॒	-	ध	नि	सां	सां	नि	सां	नि॒	प	म	प	सां	सां	नि॒	प
वा	ऽ	र	बा	ऽ	र	हां	ऽ	हौं	ऽ	तो	ऽ	अ	प	ने	ऽ
ग॒	ग॒	ग॒	म	रे	रे	सा	सा	सा	म	म	म	म	प	ग	म
पि	या	वि	न	नि	श	दि	न	गूँ	ऽ	ध	त	नि	त	अँ	सु
नि॒	नि॒	ध	नि	सां	सां	नि	सां	(अन्तरा खाली से शुरू होगा)							
व	न	सों	हा	ऽ	र	म	त								

अन्तरा—

०				३				×				२			
म	म	प	प	नि॒	ध	नि	नि	सां	-	सां	सां	रें	नि	सां	-
स	क	ल	ब	नो	प	व	न	वा	ऽ	टि	का	फू	ऽ	ली	ऽ
रें	रें	रें	-	सां	-	रें	सां	नि॒	नि॒	ध	नि	सां	सां	नि	सां
औ	र	फू	ऽ	ली	ऽ	के	ऽ	स	र	ऽ	क्या	ऽ	रि	हां	ऽ
नि॒	प	म-	प	सां	-	नि॒	प	ग॒	ग॒	ग॒	म	रे	-	सा	-
टे	ऽ	सू	ऽ	फू	ऽ	ले	ऽ	अ	म	वा	ऽ	बौ	ऽ	रे	ऽ
सा	म	म	म	म	प	ग	म	नि॒	नि॒	ध	नि	सां	सां	नि	सां
पि	या	वि	न	मो	हि	का	ऽ	स	ब	अ	सा	ऽ	र	म	न
रें	रें	रें	रें	मं	रे	सां	-	नि॒	नि॒	ध	नि	सां	सां	नि	सां
म	ग	न	ब	स्यो	ऽ	श्री	ऽ	नं	द	कु	मा	ऽ	र	म	त

भीमपलासी —— (त्रिताल, मध्यलय)

[शब्दकार और स्वरकार—मास्टर बाबूलाल सारस्वत]

स्थाई—देखोरी सखी श्याम मानत नाहीं ।
पनियां भरन कैसे जाऊँरी आली ?
अन्तरा—बीच डगर मोहे घेरत छेरत ।
करत रार कही मानत नाहीं ॥

——*——

स्थाई—

															नि॒
३				×				२				०			दे
ध	प	ग॒	म	प	–	–	प	ग॒	म	प	म	ग॒	रे	सा	–
खो	री	स	खी	श्या	ऽ	ऽ	मे	मा	ऽ	न	त	ना	ऽ	हीं	ऽ
प	प	प	म	प	नि॒	ध	प	ग॒	म	प	म	ग॒	रे	सा	नि॒
	नि	यां	भ	र	न	कै	से	जा	ऽ	ऊँ	री	आ	ऽ	ली	दे

अन्तरा—

प	–	–	प	म	प	ग॒	म	प	–	नि॒	नि॒	सां	–	सां	सां
बी	ऽ	च	ड	ग	र	मो	हे	घे	ऽ	र	त	छे	ऽ	र	त
सां	गं॒	गं॒	रें	–	सां	नि॒	सां	प	नि॒	सां	नि॒	ध	–	प	नि॒
क	र	त	रा	ऽ	र	क	ही	मा	ऽ	न	त	ना	ऽ	हीं	दे

तान नं० १—

ध	प	ग॒	म	प	–	–	प	नि॒सा	ग॒म	पनि॒	सांनि॒	धप	मग॒	रेसा	नि॒
खो	री	स	खी	श्या	ऽ	ऽ	म	आऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	दे

तान नं० २—

ध	प	ग॒	म	प	–	–	प	सांनि॒	धप	मप	नि॒सां	नि॒ध	पम	ग॒रे	नि॒
खो	री	स	खी	श्या	ऽ	ऽ	म	आऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ

तान नं० ३—

ध	प	ग॒	म	प	–	–	प	ग॒ग॒	रेसा	मग॒	रेसा	पप	मग॒	रेसा	नि॒
खो	री	स	खी	श्या	ऽ	ऽ	म	आऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	दे

तान नं० ४

ध	प	ग़	म	पम	ग़म	पनि़	धप	पम	ग़म	पनि़	सां	पनि़	सां–	पनि़	नि़
खो	री	स	खी	आऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	दे

तान नं० ५

ध	प	ग़	म	ग़रे	मग़	पम	धप	नि़ध	सांरें	सांनि़	धप	मप	नि़सां	रेंसां	नि़
खो	री	स	खी	आऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	आऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	दे

आरोह–अवरोह—नि़सा ग़ म पनि़ सां, सांनि़ धप म ग़ रे सा। म वादी, सा सम्वादी है।

—❀—

केदार (तीनताल, मात्रा १६)

स्वरकार— पं० धर्मानन्द त्रिपाठी



शब्दकार— श्री० गोविन्दबल्लभ पन्त

स्थाई—हरि बन-कुंजन मांहि हिराने।
हेरि-हेरि हौं हारि-हारि गई। अजहुँ श्री घनश्याम रिसाने।
अन्तरा–जाऊँ कहां, खोजौं सखि कबलौं, विश्व सुविस्तृत, काल न माने॥
मान गयो जब दासता आई, आये प्रभु मृदु-मृदु मुसकाने॥

स्थायी—

०				३				×				२			
सां	नि	ध	प	मं	प	ध	प	म	–	म	म	ग	म	प	–
ह	रि	ब	न	कुं	ऽ	ज	न	मां	ऽ	हि	हि	रा	ऽ	ने	ऽ
म	–	म	म	म	ध	प	–	म	–	रे	रे	सा	रे	सा	सा
हे	ऽ	रि	हे	ऽ	रि	हौं	ऽ	हा	ऽ	रि	हा	ऽ	रि	ग	ई
नि़	सा	ग	म	प	प	मं	प	ध	नि	सा	रे	सां	नि	ध	प
अ	ज	हुँ	ऽ	श्री	ऽ	घ	न	श्या	ऽ	म	रि	सा	ऽ	ने	ऽ

अन्तरा—

प	–	प	रे	सां	–	सां	–	सां	–	सां	सां	नि	रे	सां	सां
जा	ऽ	ऊँ	क	हां	ऽ	खो	ऽ	जौं	ऽ	स	खि	क	ब	लौं	ऽ
ध	–	ध	ध	ध	–	सां	सां	नि	रे	सा	नि	ध	–	प	–
वि	ऽ	श्व	सु	वि	ऽ	स्तृ	त	का	ऽ	ल	न	मा	ऽ	ने	ऽ

म	-	म	म	म	ध	प	प	ग	म	रे	रे	सा	रे	सा	-
मा	ऽ	न	ग	यो	ऽ	ज	व	दा	ऽ	स	ता	आ	ऽ	ई	ऽ
सां	-	सां	नि	ध	नि	सां	रें	नि	सां	ध	ध	प	-	प	-
आ	ऽ	ए	ऽ	प्र	मु	मृ	दु	मृ	दु	मु	स	का	ऽ	ने	ऽ

अभाली ~~~~~~ (चार ताल, ध्रुपद)

शब्दकार— महात्मा सूरदास ★ स्वरकार— श्री० मास्टर मुरारीलाल

स्थाई—जागिये गोपाल लाल, प्रगट भयो अंशुमाल।
मिट्यो अन्धकार उठो, जननी सुख पाई॥
अन्तरा—मुकलित भये कमल जाल, कुमुद बिन्द्रावन बेहाल।
त्रिविध ताप मिट्यो जाल, तन न नसाई॥

×		०		२		०		३		४	
सां	-	ध॒	ध॒	-	प	प	ग	रे॒	रे॒	सा	सा
	ऽ	गि	ये	ऽ	गो	पा	ऽ	ल	ला	ऽ	ल
	ध॒	सा	सा	रे॒	-	ग	-	प	ग	रे॒	सा
प्र	क	ट	भ	यो	ऽ	अं	ऽ	शु	मा	ऽ	ल
रे॒	ग	प	प	-	ध	ध	-	ग	प	ध	सां
मि	ट्यो	ऽ	अं	ऽ	ध	का	ऽ	र	उ	ठो	ऽ
प	ग	प	ध	प	ध	ध	-	प	-	ग	-
ज	न	नी	ऽ	सु	ख	पा	ऽ	ऽ	ऽ	ई	ऽ
प	प	सां	ध	ध	सां	सां	सां	सां	सां	-	सां
मु	क	लि	त	भ	ये	क	म	ल	जा	ऽ	ल
रें॒	सां	ध॒	सां	रें॒	सां	रें॒	सां	ध॒	प	सां	ध
कु	मु	द	बि	न्द्रा	ऽ	व	न	बे	हा	ऽ	ल
ध॒	ध॒	ध॒	प	-	ध॒	प	ग	-	ग	प	प
त्रि	वि	ध	ता	ऽ	प	मि	ट्यो	ऽ	जा	ऽ	ल
ध॒	प	-	प	ध॒	प	ग	ग	रे॒	-	सा	-
त	न	ऽ	न	ऽ	ऽ	न	सा	ऽ	ऽ	ई	ऽ

इस राग में दोनों धैवत लगेंगे तथा ऋषभ कोमल लगता है, मध्यम और निषाद वर्जित हैं।

मिश्रित काफी..............(तीन ताल)

शब्दकार—श्री० "कबीर" जी  स्वरकार—प्रोफेसर आनन्दस्वरूप तिवारी

स्थायी—पानी में मीन पियासी, मोहि सुन-सुन आवे हांसी ॥
अन्तरा—आतम ज्ञान बिना नर भटकत, कोई मथुरा कोई कासी ।
जैसे मृग नाभी कस्तूरी, वन-वन फिरत उदासी ॥
जल बिच कमल, कमल बिच कलियां, तापर भँवर लुभासी ।
सो मन बसति त्रिलोक भयो सब, जती सती सन्यासी ॥
जाको ध्यान धरत विधि हरिहर, मुनिजन सहस अठासी ।
सो तेरे घट मांहि विराजे, परम पुरुष अविनासी ॥



स्थायी—

														पध	मप
०				३				×				२		पा	ऽ
ग	–	रे	रेम	म	रे	सा	सारे	नि़	–	सा	–	–	–	सा	सा
नी	ऽ	मे	ऽ	मी	ऽ	न	पि	या	ऽ	सी	ऽ	ऽ	ऽ	मो	हे
रे	रे	म	म	प	–	ध	पध	पध	सां	–	–	नि	ध	प	–
सु	न	सु	न	आ	ऽ	व	त	हां	ऽ	ऽ	ऽ	सी	ऽ	पा	ऽ
ध	प	म	प	ग	रे	सा	सारे	नि़	–	सा	–	–	–	–	–
नी	ऽ	में	ऽ	मी	ऽ	न	पि	या	ऽ	सी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

म	–	म	गम	प	–	नि	नि	सां	–	सां	सां	रें	नि	सा	सां
आ	ऽ	त	म	ज्ञा	ऽ	न	बि	ना	ऽ	न	र	भ	ट	क	त
प	रें	रें	रें	नि	–	सां	सां	ध	सां	नि॒	–	ध	प	म	प
को	ई	म	थु	रा	ऽ	को	ई	का	ऽ	सी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	रे	म	–	प	प	नि	–	सां	–	सां	–	रे	नि	ध	प
जै	ऽ	से	ऽ	मृ	ग	ना	ऽ	भी	ऽ	क	ऽ	स्तू	ऽ	री	ऽ
सां	सां	नि॒	नि॒	ध	प	ध	म	पध	नि॒	ध	प	ध	म	प	–
ब	न	ब	न	फि	र	त	उ	दा	ऽ	सी	ऽ	ऽ	ऽ	पा	ऽ

इसमे ग नी कोमल तथा शुद्ध दोनों है, वादी पंचम और संवादी स्वर षडज है ।

शंकरा——————(तीन ताल)

। शब्दकार—"अज्ञात"  स्वरकार—कुमारी राजेश्वरी देवी सक्सेना

स्थायी—जागो-जागो हे अनजान ! हे अनजान, हे नादान ! जागो-जागो हे अनजान !!
अन्तरा-देख-देख सोने की कड़ियां, मत समझो वैभव की लड़ियां।
भोले बन्दी खोले अँखियां ! आखिर है ये भी हथकड़ियां !
बन्धन है जिनकी पहचान ! जागो जागो हे अनजान ! हे अनजान, हे नादान !!

स्थाई—

०				३				×				२			
सां	नि	प	नि	सां	निनि	प	प	सां	निनि	प	प	प	ग	सा	सा
जा	गो	जा	गो	हे	अन	जा	न	हे	अन	जा	न	हे	ना	दा	न

अन्तरा—

सा	–	सा	ग	–	ग	प	–	नि	–	नि	–	सा	सां	सां	–
दे	ऽ	ख	दे	ऽ	ख	सो	ऽ	ने	ऽ	की	ऽ	क	ड़ि	यां	ऽ
गं	गं	सां	सां	नि	–	प	–	ग	ग	प	–	ग	ग	सा	–
म	त	स	म	झो	ऽ	वै	ऽ	भ	व	की	ऽ	ल	ड़ि	यां	ऽ
सा	–	ग	–	प	–	नि	सां	प	–	ग	प	ग	ग	सा	–
भो	ऽ	ले	ऽ	बं	ऽ	दी	ऽ	खो	ऽ	लो	ऽ	अँ	खि	यां	ऽ
सां	गं	सां	सां	नि	–	प	–	नि	–	ग	प	ग	ग	सा	–
आ	ऽ	खि	र	हैं	ऽ	ये	ऽ	भी	ऽ	ह	थ	क	ड़ि	यॉ	ऽ
प	सां	नि	नि	प	–	ग	प	ग	प	ग	प	ग	–	–	सा
बं	ऽ	ध	न	है	ऽ	जि	न	की	ऽ	प	हि	चा	ऽ	ऽ	न

——*——

राग बिलावल——————(तीनताल, मात्रा १६)

शब्दकार—श्री चतुर पण्डित  स्वरकार—पं० रामचन्द्र पाठक गायनाचार्य

मृदु मध्यम तीवर सबहिं, सुर सोहत जेहि मांहि।
ध, ग, वादी संवादि हैं, कहत बिलावल ताहि॥

राग विवरण—यह राग सम्पूर्ण है। इसका वादी धैवत और सम्वादी गन्धार है।
समय प्रभात (७ बजे से १० बजे तक)

राग स्वरूप—सा रे ग म प ध नि सां। सां नि ध प म ग रे सा ।

आलाप–ग, रे, सा, मग, प, मरे, सा, ग, रे, सा, सा, नि़, ध़, प़, ध़, सा, गमपमग, म रे सा। ग, ग, मग, मरे, गप, धनिधप, ध, सां, निध, प, मग, मरे, सा। ध, निसां सांरेंसां, सांरेंगंमं रेंसां, गंमंरेंरेंसां, रेंसां, सां, निध, प, धनिसां, निध, पध, मग, मरेसा।

–गीत–

स्थाई—तब, कहत विलावल भेद 'चतुर' जब मेल मिलावत।
शुद्ध सुरन को, प्रात समय नित प्रथम प्रहर॥
अन्तरा–धैवत वादी गा सम्वादी, अष्ट भेद सब गाय मधुर।

स्थाई—

														सा	सा
×				२				०				३		त	ब
ध	प	म	ग	प	–	नि	नि	सां	–	सां	सां	नि	नि	प	प
क	ह	त	वि	ला	ऽ	व	ल	भे	ऽ	द	च	तु	र	ज	ब
ध	सां	सां	सां	ध	प	म	ग	ग	रे	ग	म	ग	रे	सा	–
मे	ऽ	ल	मि	ला	ऽ	व	त	शु	ऽ	द्ध	सु	र	न	को	ऽ
सा	म	ग	प	प	–	नि	नि	सां	गं	सां	सां	नि	नि	सां	सा
प्रा	ऽ	त	स	मे	ऽ	नि	त	प्र	थ	म	प्र	ह	र	त	ब

अन्तरा—

प	प	नि	नि	सां	–	सां	सां	ध	सां	गं	गं	मं	रें	सां	–
धै	ऽ	व	त	वा	ऽ	दी	ऽ	गा	ऽ	स	म	वा	ऽ	दी	ऽ
गं	मं	पं	गं	मं	रे	सां	सां	ध	सां	सां	नि	ध	नि	सां	सां
अ	ऽ	ष्ट	भे	ऽ	द	स	ब	गा	ऽ	य	म	धु	र	त	ब

रागिनी कुकुभ (रुद्र ताल, मात्रा ११)

शब्दकार–भक्त सूरदास जी ★ स्वकार––मा० विवेकदास

चन्द्र खिलौना लैहों मैया, चन्द्र खिलौना लैहों।
धौरी को पय पान न करिहों, वेनी सिर न गुथैयों॥
मोतिन माल न धरिहों उर पर, अंगुलि कंठ न लैहों॥
जैहों लोट अभी धरणी पर, तेरी गोद न अइहों।
लाल कहैहों नन्दबबा को, तेरो सुत न कहैहों॥
कानलाय कछु कहत यशोदा, दाऊहि नाहिं सुनैहों।
चन्दा हू ते अति सुन्दर तोहि नवल दुलन्हिया ब्यैहों॥
तेरी सौंह मेरी सुन मैया! अब ही ब्याहन जैहों।
'सूरदास' सब सखा बराती, नूतन मङ्गल गैहो॥

स्थाई—

×	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
धाधीन	तादेत	धुंना	केटेताग	धाधीन	तादेत	थुंना	तेटेकेटे	नागदेत	तेटेकता	गदिगन
रेग	रेध़	नि़नि़	साप	धम	पसां	निर	धम	पम	गरे	नि़सा
चंऽ	द्रखि	लौऽ	नालै	ऽहों	ऽमै	ऽया	ऽचं	ऽद्र	खिलौ	ऽना

अन्तरा—

मप	ध-	धनि	सां-	सारें	सांध	निध	पग	मप	गरे	नि़मा
धौरी	कोऽ	पय	पाऽ	नन	करि	होंवे	नीसि	रन	गुऽ	थैहों

——

गौड़ मल्हार (तीन ताल)

शब्दकार—श्री० 'सूरदासजी'  स्वरकार—श्री० मदनलाल वायोलिन मास्टर

स्थाई—निशदिन बरसत नैन हमारे।
सदा रहत वर्षा ऋतु हम पर, जब से श्याम सिधारे॥
अन्तरा—कारो हि कजरा, कारो हि बदरा, कारेहि श्याम हमारे।
अँखियन अंजन थिर न रहत है, कर-कपोल भये कारे॥
किञ्चित पट सूखत नहिं कबहूँ, उर बिच बहत पनारे।
'सूरदास' बृज डुबन चहत है, क्यों नहिं लेत उबारे?



स्थाई—

०				३				×				२			
												रे	ग	म	प
												नि	श	दि	न
ग	म	रे	सा	रे	नि़	सा	सा	म	–	ग	म	रे	ग	म	प
ब	र	स	त	नै	ऽ	न	ह	मा	ऽ	रे	ऽ	नि	श	दि	न
म	रे	प	प	प	प	म	म	ध	सां	ध	प	म	प	मग	म
स	दा	ऽ	र	ह	त	ब	र	षा	ऽ	ऋ	तु	ह	म	ऽप	र
प	नि	सां	रें	नि	सां	धनि	प	म	प	मग	म	रे	ग	म	प
ज	ब	सं	ऽ	श्या	ऽ	म	सि	धा	ऽ	रेऽ	ऽ	नि	श	दि	न

अन्तरा—

प	–	प	प	ध	ध	नि	–	सां	–	सां	सां	नि	रे	सां	–
का	ऽ	रो	हि	क	ज	रा	ऽ	का	ऽ	रो	हि	ब	द	रा	ऽ
–	नि	नि	नि	नि	सां	ध	नि	सां	रें	सां	नि	सां	ध	नि	प
ऽ	का	रे	ऽ	श्या	ऽ	म	ह	मा	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
म	रे	.प	प	प	–	म	प	ध	सा	ध	प	म	प	मग	म
अँ	खि	य	न	अं	ऽ	ज	न	थि	र	न	र	ह	त	हैऽ	ऽ
प	नि	सां	रे	नि	सां	धनि	प	म	प	मग	म	रे	ग	म	प
क	र	क	पो	ऽ	ल	भऽ	ये	का	ऽ	रेऽ	ऽ	नि	श	दि	न

राग परिचय—

इसका सम्पूर्ण वर्ग है, इस राग में सर्व स्वर शुद्ध है। अवरोह में प, स्वर के साथ कोमल नि, का प्रयोग होता है। म, वादी और सा, सम्वादी है। इसमें वर्षा ऋतु का वर्णन होता है। गाने का समय दिन का तीसरा प्रहर है।

आरोही—सा रे म प ध सां।　　अवरोही—सां नि प म प ग म, रे सा।


(तीनताल, मात्रा १६)

(नट भैरवी मेल)

स्वरकार—प० नारायणदत्त जोशी, ए. टी. सी.　　*　　शब्दकार—महाकवि सूरदास जी

ऊधो करमन की गत न्यारी !
सब नदिया जल भर-भर रहियां, सागर किस विधि खारी ?
उज्वल पंख दिये बगुला को, कोयल किस विधि कारी।
सुन्दर नयन दिये मिरगा को, बन-बन फिरत उजारी॥
मूरख राजा राज करत है, पण्डित फिरत भिखारी।
सूर श्याम मिलने की आशा, छिन-छिन बीतत भारी॥

स्थाई—

												२			
												म	प	ध	मप
०				३				×				ऊ	ऽ	धो	ऽ
ग	(ग)	रे	सा	रे	म	प	प	निध	–	प	–	म	प	निध	मप
क	र	म	न	की	ऽ	ग	त	न्याऽ	ऽ	॑री	ऽ	ऊ	ऽ	धो	ऽ

धु	धु	धु	धु	निधु	–	प	मप	गु	मगु	रे	सा	रे	सारे	सा	–
स	ब	न	दि	यां	ऽ	ज	ल	भ	र	भ	र	र	हि	यां	ऽ
सा	रे	म	म	प	धु	सां	रें	गुं	सांरें	निधु	प	म	प	सांधु	मप
सा	ऽ	ग	र	कि	स	वि	धि	खा	ऽ	री	ऽ	ऊ	ऽ	धो	ऽ

अन्तरा—

म	–	म	म	प	–	धु	निधु	निसां	–	सां	सां	रें	सांनि	सां	–
उ	ऽ	ज्व	ल	पं	ऽ	ख	दि	ये	ऽ	ब	गु	ला	ऽ	को	ऽ
निधु	–	प	निधु	निसां	सां	रें	रे	गुं	–	रेंसां	रें	धु	–	प	–
को	ऽ	थ	ल	कि	स	वि	धि	का	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ
नि	–	नि	सां	नि	निधु	धु	मप	मगु	–	रे	सा	रे	–	सा	–
सु	ऽ	न्द	र	न	य	न	दि	ये	ऽ	मि	र	गा	ऽ	को	ऽ
सा	रे	म	म	प	धु	सां	रे	गुं	सांरें	निधु	प	पम	प	सांधु	मप
ब	न	ब	न	फि	र	त	उ	जा	ऽ	री	ऽ	ऊ	ऽ	धो	ऽ
गु	(गु)	रे	सा	रे	म	प	मप	निधु	–	प	–	पम	प	सांधु	मप
क	र	म	न	की	ऽ	ग	त	न्या	ऽ	री	ऽ	ऊ	ऽ	धो	ऽ

नोट—दूसरा अन्तरा भी इसी अन्तरा के समान जानिये।

तान स्थाई—

०				३				×				२			
												म	प	धु	मप
												ऊ	ऽ	धो	ऽ
गु	(गु)	रे	सा	रे	म	प	प	धु	–	प	–	मप	धुप	मगु	रेसा
क	र	म	न	की	ऽ	ग	ति	न्या	ऽ	री	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ऽ
”	”	”	”	”	”	”	”	सारे	मप	धुसां	रेंसां	निधु	पम	गुरे	सा–
”	”	”	”	”	”	”	”	आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
”	”	”	”	”	”	”	”	रेम	पधु	सांरें	गुंरें	सांनि	धुप	मगु	रेसा
”	”	”	”	”	”	”	”	आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

"	"	"	"	"	"	"	"	मप	धसां	रेगं	रेसां	निध	पम	गरे	सा–
"	"	"	"	"	"	"	"	आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
"	"	"	"	"	"	"	"	सारे	मप	धसां	रेंगं	रेसां	धप	मग	रेसा
"	"	"	"	"	"	"	"	आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
"	"	"	"	"	"	"	"	सांरें	गरे	सांनि	धप	मप	धप	मग	रेसा
"	"	"	"	"	"	"	"	आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

राग खमाज (तीन ताल, मात्रा १६)

शब्दकार और स्वरकारः—हलकूप्रसाद फरसोइया 'शिक्षक'

स्थाई—प्यारा हिन्दुस्तान मेरा।
अन्तरा १–मातृ-भूमि यह पितृ भूमि यह। जन्म-भूमि यह, कर्म भूमि यह॥
वारूं तन-मन-प्राण मेरा। प्यारा हिन्दुस्तान मेरा॥
२–शीश झुकाऊं, बलि-बलि जाऊं। प्यारे भारत! सदा मनाऊं॥
हो जाऊं बलिदान, मेरा। प्यारा हिन्दुस्तान मेरा॥

स्थाई—

०				३				×				२			
सां	–	नि	ध	प	मं	ग	मं	प	–	–	रे	गमंप	मंग	रे	सा
प्या	ऽ	रा	ऽ	हिं	ऽ	दु	स्	ता	ऽ	ऽ	न	मे	ऽ	रा	ऽ

अन्तरा—

ग	–	ग	प	–	प	ध	प	सां	–	सां	सां	नि	रें	सां	सां
मा	ऽ	तृ	भू	ऽ	मि	य	ह	पि	ऽ	तृ	भू	ऽ	मि	य	ह
गं	–	गं	प	–	सां	नि	सां	रें	–	सां	नि	ध	नि	प	प
ज	ऽ	न्म	भू	ऽ	मि	य	ह	क	ऽ	र्म	भू	ऽ	मि	य	ह
सां	–	नि	ध	प	मं	ग	मं	प	–	–	मं	गमंप	मंग	रे	सा
वा	ऽ	रूँ	ऽ	त	न	म	न	प्रा	ऽ	ऽ	ण	मे	ऽ	रा	ऽ

दुगुन—

सां	–	नि	ध	सां	निध	पम॑	गम॑	प	–	–	रे	गम॑प	म॑ग	रे	सा
प्या	ऽ	रा	ऽ	प्या	राऽ	हिंऽ	दुस्	ता	ऽ	ऽ	न	मे	ऽ	रा	ऽ
सांऽ	निध	पम॑	गम॑	सां	निध	पम॑	गम॑	सां	–	नि	ध	प	म॑	ग	म॑
प्याऽ	राऽ	हिंऽ	दुस्	प्याऽ	राऽ	हिंऽ	दुस	प्या	ऽ	रा	ऽ	हिं	ऽ	दु	स
सां	–	नि	ध	प	म॑	ग	म॑	प	–	–	रे	गम॑प	म॑ग	रे	सा
प्या	ऽ	रा	ऽ	हिं	ऽ	दु	स	ता	ऽ	ऽ	न	मे	ऽ	रा	ऽ

राग विवरण—यह राग सम्पूर्ण है। म॑ तीव्र, बाकी स्वर शुद्ध है।
पकड़—ग रे, नि़ रे ग, प म॑ ग रे, नि़ रे ग रे नि़ रे सा।

कौशिक ध्वनि — [त्रिताल]

शब्दकार—'अज्ञात'  स्वरलिपिकार—भट्ट मनमोहनराव जी तैलंग

अजहू न आये बालमवा। मोहे उन बिन कल ना परत दिनवा हां। अज० ॥
जब से गये मोरी सुध हू न लीनी, पतियां न भेजी भये जुगवा हां ॥ अज० ॥



स्थाई—

३				×				२				०			नि अ
ध	मग	–	म	ग	–	सा	नि़	ध़	नि़	सा	म	ग	–	–	नि
ज	हूऽ	ऽ	न	आ	ऽ	ये	ऽ	बा	ऽ	ल	म	वा	ऽ	ऽ	अ
ध	मग	–	म	ग	–	सा	नि़	ध़	नि़	सा	गम	ग	–	म	ग
ज	हूऽ	ऽ	न	आ	ऽ	ये	ऽ	बा	ऽ	ल	मऽ	वा	ऽ	मो	हे
म	म	ध	नि	सां	सां	ध	नि	सां	गं	सांनि	सां	नि	म॑ग	–	नि
उ	न	बि	न	क	ल	ना	प	र	त	दिऽ	न	वा	हांऽ	ऽ	अ
ध	मग	–	म	ग	–	सा	नि़	ध़	नि़	सा	म	ग	–	–	–
ज	हूऽ	ऽ	न	आ	ऽ	ये	ऽ	बा	ऽ	ल	म	वा	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

ग	म	ध	नि	सां	–	सां	सां	ध	नि	सां	गं	सां	–	नि	ध
ज	व	से	ग	ये	ऽ	मो	री	सु	ध	हू	न	ली	ऽ	नी	ऽ
मग	म	ध	नि	धनिसां	–	सां	सां	ध	नि	सां	गं	गंसां	गंसां	नि	ध
जऽ	व	से	ग	येऽऽ	ऽ	मो	री	सु	ध	हू	न	लीऽ	ऽऽ	नी	ऽ
ध	नि	सां	गं	निसां	–	नि	ध	मध	निसां	ध	नि	ध	ग	–	नि
प	ति	यां	न	भेऽ	ऽ	जी	भ	येऽ	ऽऽ	जु	ग	वा	हां	ऽ	अ
ध	मग	–	म	ग	–	सा	नि़	ध़	नि़	सा	गम	ग	–	–	नि
ज	हूऽ	ऽ	न	आ	ऽ	ये	ऽ	वा	ऽ	ल	मऽ	वा	ऽ	ऽ	अ
ध	मग	–	ग												
ज	हूऽ	ऽ	न												

तानें	(१)	गम धनि सांगं सांगं	सांनि धम धनि मनि	धम गसा नि़सा, अ
(२)	ज हूऽ ऽ न	गम धनि सांगं सांनि	धम गसा गम धनि	सांनि धम गसा, अ
(३)	ज हूऽ ऽ न	गंगं सांगं सांनि धनि	धम धम गनि धम	धम गम गसा, अ
(४)	ज हूऽ ऽ न	गम धम धनि धनि	सांगं सांनि धनि धम	धम गम गसा, अ
(५)	ज हूऽ ऽ न	मम गम गसा निनि	धनि धम गंगं सांगं	सांनि धम गसा, अ
(६)	ज हूऽ ऽ न	गम गध धम निनि	धसां सांनि गंग सांनि	धम गसा नि़सा, अ
(७)	ज हूऽ ऽ न	गम धध मध निनि	धनि सांसां धनि सांगं	सांनि धम गसा, अ
(८)	ज हूऽ ऽ न	सानि सानि धनि सानि	धंनि धम निध निध	मध निध मध मग
	धम धम गम धम	गम गसा धम धम	गम धम गम गसा	निध निध मध निध
	मध मग धम धम	गम धम गम गसा	सांनि सांनि धनि सानि	धनि धम निध निध
	मध निध मध मग	धम धम गम धम	गम गसा गम धनि	सांनि धम गसा, अ

कौशिक ध्वनि औड्व वर्ग का राग है। इसमे ऋषभ और पंचम वर्ज्य है। बाकी सब स्वर शुद्ध है। इसमें वादी स्वर गन्धार तथा सम्वादी निषाद है। यह सन्ध्या समय का एक अत्यन्त मनोहर एवं मधुर राग है।

———

राग-माला (एक ताल, मात्रा १२)

स्वरकार तथा शब्दकार—श्री० कृष्णशंकर शुक्ल 'संगीत सुधाकर'

स्थाई—भैरव अभिराम राग, भैरवी पुनीत कही।
भीमपलासी सङ्ग लीजै, बागेश्वरि मृदुल भाग॥
अन्तरा—मध्य में बहार आवे, पीलू धुन से सुहावे।
सारङ्ग धर शोभे श्याम, कल्याण कहो अधाग॥

स्वरलिपि

राग नाम	×		०		२		०		३		४	
भैरव	ध॒प	ध॒	प	म	ग	रे॒	रे॒ग	–	ग	म	–	म
	भैऽ	ऽ	र	व	अ	भि	राऽ	ऽ	म	रा	ऽ	ग
भैरवी	ग॒रे॒	ग॒	रे॒	सा	रे॒	सा	ध़॒	नि़॒	सा	ग॒	रे॒	सा
	भैऽ	ऽ	र	वी	ऽ	पु	नी	ऽ	त	क	ही	ऽ
भीमपलासी	नि़॒	सा	सा	मग॒	मग॒	म	प	–	नि॒	पनि॒	सांनि॒	धप
	भी	म	प	लाँ	ऽऽ	स	सं	ऽ	ग	लीऽ	ऽऽ	जेऽ
बागेश्वरी	सां	नि॒	ध	म	ध	नि॒	धनि॒	सांनि॒	धप	मग॒	रेसा	नि॒सा
	बा	ऽ	गे	ऽ	श्व	री	मृऽ	दुऽ	लऽ	भाऽ	ऽऽ	गऽ
अन्तरा—												
बहार	प	–	म	प	ग॒	म	नि॒	ध	नि	सां	नि	सां
	म	ऽ	ध्य	में	ऽ	ब	हा	ऽ	र	आ	ऽ	वे
पीलू	गं॒	रें	सां	नि	सांनि	सां	ध॒	म	निसां	गं॒रें	सांनि	सां
	पी	ऽ	लू	ऽ	धुऽ	न	से	ऽ	सुऽ	हाऽ	ऽऽ	वे
सारङ्ग	म	प	नि	सां	रें	मं	रें	नि	सां	नि॒	–	प
	सा	ऽ	र	ङ्ग	ध	र	शो	ऽ	भे	श्या	ऽ	म
कल्याण	मं	–	ध	–	नि	ध	मंध	मंप	गरे	ग	रे	सा
	क	ऽ	ल्या	ऽ	ण	क	होऽ	ऽऽ	अऽ	धा	ऽ	ग

नोट—१-प्रत्येक लाइन सिर्फ एक राग से सम्बन्ध रखती है।
२-प्रत्येक राग का नोटेशन उसी राग के प्राण स्वरों में दिया है।
३-इस रागमाला में प्रसिद्ध-प्रसिद्ध ८ राग हैं, प्रत्येक राग का अल्प विवरण आगे के पृष्ठ पर दिये हुये दोहों में है।

१-भैरव—भैरव कोमल रिमध सुर, तीख गन्धार निषाद ।
धैवत वादी सुर कह्यो, तासु रिषभ सम्वाद ॥
२-भैरवी—सब कोमल सुर भैरवी, सम्पूरन सुर होइ ।
म स वादी सम्वादि है, सब जो चाहै कोइ ॥
३-भीमपलासी-तीखे रिध कोमल गमनि, आरोहित रिध हीन ।
सम सम्वादी वादिते, भीमपलासी चीन्ह ॥
४-बागेश्वरी-तीवर रि ध कोमल गमनि, मध्यम वादि बखानि ।
षरज जहां सम्वादि है, बागेसरी लखानि ॥
५-बहार—रिध तीवर कोमल निगस उतरत धैवत टार ।
सम सम्वादी वादि है, समझो राग बहार ॥
६-पीलू—कोमल तीवर सबहि सुर, जहँ गावत लग जाइ ।
ग नि वादी सम्वादिते, पीलू राग बताइ ॥
७-सारङ्ग—जब तीखोहि निषाद है, चढ़ते धैवत नाहिं ।
तब यह सारङ्ग राग ही, बिन्द्रावनी कहाय ॥
८-कल्याण—म नि वरजे आरोहि में, तीवर सुर सब जान ।
ध ग सम्वादी वादिते, गावत सुध कल्यान ॥

राग-कान्हड़ा —— (चौताल, मात्रा १२)

(श्री० शेषनाग शर्मा "शील")

	×		०		२		०		३		४	
(१)	प	ध	पम	प	नि	सा	रे	नि	सानि	सा	रेसा	रे
	ग	S	ग	S	गम	प	पम	प	रे	S	सा	S
(२)	सा	रे	म	प	धप	धप	निसां	निसां	रेंगं	रेंसां	रे	रे
	गं	S	गंरे	सांरें	सांनि	सां	धनि	सां	म	S	प	S
	सांनि	सां	धनि	सां	पम	प	गम	प	रे	S	सा	S
(३)	म	प	नि	सां	निध	नि	सारे	गम	ध	–	नि	प
	S	म	निसा	रेग	मग	रेसा	पम	गरे	सानि	सा	रे	म
	गम	पध	पम	ग	पम	प	गरे	ग	गरे	गरे	सानि	सा
	पनि	सांरें	गंरें	सांनि	धप	मप	निसां	रेंसां	धप	मप	मग	रेसा

(४)	प़ ध़	प़म़ प़	नि़सा रे	म रेसा	रे म	पम ग
	मप नि	धप ध	रेसा रे	ग ऽ	ग ऽ	गरे गरे
	मप पध	मप गरे	सानि़ ध़प़	नि़ऽ रेसा	ऽम रेऽ	सानि़ ऽध़
	नि़सा रेग	मप धनि	सांरें सांनि	धप मग	रेंसां निध	पम गरे
	सांनि धप	मग रेसा	निध पम	गरे सानि़	धप मग	रेसा नि़ध़
(५)	प़ ध़	प़म़ प़	नि़ सा	रे नि़	सानि़ सा	रेसा रे
	ग ऽ	ग ऽ	गम प	पम प	सांनि सां	धप मप
	सांनि सां	रेंसां रें	धप मप	सांनि सां	रेंसां रें	गंरें गं
	धप मप	निसां रेंगं	सांरें गंगं	रेंगं मंपं	मंगं पंमं	गंरें सांनि
	पंमं पं	गंमं पं	ध ऽ	प ऽ	निध निसां	रेंसां निसां
	रेंसां रेंगं	रेंगं रेंसां	धनि सांनि	पम गम	गम पम	रेसा नि़सा
(६)	प़ ध़	प़म़ प़	म़प़ ध़नि़	सारे गम	गरे सानि़	ध़प़ ध़नि़
	सारे गरे	सानि़ ध़नि़	सारे सानि़	सा ऽ	मप धनि	सांरें गंमं
	गंरें सांनि	धप धनि	सांरें गंरें	सांनि धनि	सांरें सांनि	सां ऽ
	सारे गम	पध निसां	धनि पम	गरे गम	पध निध	पम गम
	पध पम	प ऽ	रें गं	ऽ गं	रेंसां निध	पम पध
	नि ऽ	रे सा	ऽ रे	पम प	गम प	रे . सा

यह गत राग कान्हरा चौताल पर है। गांधार, निषाद तथा धैवत कोमल हैं, शेष सभी स्वर शुद्ध हैं। गत बहुत पुरानी है, अतः इसमें कान्हरा का रूप कुछ विकृत भी हो गया है, ऐसा प्रतीत होता है। कान्हरा के आरोहावरोह के नियम पर तोलने से गत में किसी दूसरे राग का मिश्रण प्रत्यक्ष हो जाता है। बहुतेरे सङ्गीतज्ञ कान्हरे को संपूर्ण जाति का मानते हैं, परन्तु अवरोह मे ध ग का अल्पत्व रखते हैं, इस दृष्टि से देखने पर प्रमुख गत पर कोई मिश्रण स्वीकार नहीं किया जा सकता। यह चीज हमें आचार्य श्रीयुत रामचरण जी पाराशर से प्राप्त हुई है।

गत-हिंडोल (तीनताल, मात्रा १६)

[स्वरकार बा० आदित्यनरायनसिंह]

स्वर—सा ग मं ध नि ।

×				२				०				३			
ध़	-	सा	-	ग	-	मं	ध	नि	धु	ग	-	मं	ध	सां	-
नि	ध	मं	ग	नि	ध	ग	-	मं	ग	-	सा	-	ग	सा	-

सम से दुगुन बांट

ध़- सा- ग- मंध	निध ग- मंध सां	निध मंग निध ग-	मंग सा- -ग सा

सम से तिहाई बांट

निध मंग निध ग-	मंग -सा -ग सा	सां- -सां -ग सा-	सां- -सा -ग सा-

---

गत-पीलू जङ्गला (त्रिताल)

[स्वरकार श्री० विक्रमादित्यसिंह निगम, एम० ए० एल-एल० बी०]

नोट—यह गत हारमोनियम पर बजेगी। तैयार होने पर यह बड़ी सुन्दर तथा मनोहर मालुम पड़ेगी। अभ्यासी सङ्गीत प्रेमी थोड़ी सी देर मे ही इसे आसानी से निकाल लेंगे।

स्थाई—

×				२				०				३			
सां	-	सां	सां	सां	-	रें	-	सां	-	नि	ध	प	-	ध	-
सां	-	नि	ध	म	-	प	-	ग	-	सा	रे	नि़	-	सा	-

अन्तरा—

प़	-	नि़	नि़	सा	-	ग	-	ग	-	सा	रे	नि़	-	सा	-
प़	-	नि़	नि़	सा	-	ग	-	ग	-	सा	रे	नि़	-	सा	-

राग भीमपलासी (अष्टमंगल ताल, मात्रा २२)

(स्वरकार-श्री० 'चतुर' पंडित)

×	२	३	४	५	६	७	८
						नि़॒ सा	ग॒ म
प – सां नि॒	ध प	नि॒ ध प ध	प ग॒	म प ग॒ –	रे सा	नि़॒ सा	ग॒ म
प – – –							

अन्तरा—

	ग॒ म	प ग॒ म प	सां –	– – गं॒ –	– रें	सां –	पं मं
गं॒ – – रें	सां –	नि॒ ध प ध	प ग॒	म प ग॒ –	– रे	सा –	प म
ग॒ – – रे	सा –	नि़॒ सा ग॒ म	प –	नि़॒ सा ग॒ म	प –	नि़॒ सा	ग॒ म
प							

अष्टमंगल ताल के बोल—

धा ऽ कि ट	त क	धु म कि ट	त क	धे ऽ ता ऽ	त क	ध दि	ग नि
१ २ ३ ४	५ ६	७ ८ ९ १०	११ १२	१३ १४ १५ १६	१७ १८	१९ २०	२१ २२

राग विवरण

भीमपलासी की सम्पूर्ण जाति है। ग॒ नि॒ कोमल बाकी स्वर शुद्ध हैं। पंचम वादी और षड्ज सम्वादी है। यह रागिनी धानी और जयतश्री से मिलकर बनी है।
(यह स्वरलिपि हमें श्री राजाबहादुर छत्रप्रतापसिंह जू देव की कृपा से प्राप्त हुई है)

राग हिंडोल (तीनताल)

स्वरकार—प्रो० बड़े रामदास जी, * शब्दकार—श्री० राजनरायनसिंह

स्थायी—

०	३	×	२
सा ग – ग	मं ध – ध	सां – सां नि	ध नि मं ध
सां नि ध मं	ग मं ध नि	सां ध नि मं	ध ग मं ग

अन्तरा—

सा	सा	सा	ग	ग	ग	मं	ध	नि	सां	-	मं	ध	नि	सां	-
ग	-	सा	ग	-	मं	ग	-	सा	-	मं	मं	ग	ग	सा	सा
नि	नि	ध	ध	मं	ग	मं	ध	नि	सां	ध	नि	मं	ध	ग	मं

जोड़ दून में—

साग -ग साग -ग	मं- मंमं धध मंध	सां- मंध- -ध सां-	धसां निसां मंध गमं
गमं धनि सां- गमं	धनि सां- गमं धनि	सां	

लक्षण—

ईमन ठाट निकारिये, पंचम रिषभ हिंडोल ।
ग, ध संवादी वादि है, क्रम से तान अमोल ॥
तृतीय प्रहर को राग है, उत्तम बाजे साज ।
सरगम अति सुन्दर लगे, गावत है कविराज ॥

——*——

गत-खमाज ——— (तीन ताल)

[श्री० विक्रमादित्यसिंह निगम, एम० ए० एल०-एल० बी०]

			×				२				०				३	
स्थायी—	सा	रे	ग	-	ग	-	ग	-	रे	ग	म	-	म	-	म	-
	म	ग	रे	ग	म	प	ग	म	प	ध	सां	नि॒	ध	प	म	ग
अन्तरा—	सा	रे	नि॒	-	नि॒	-	नि॒	-	ध	प	ध	-	ध	-	ध	-
	प	म	प	-	प	-	प	-	म	ग	म	-	म	-	म	-
	म	ग	रे	ग	म	प	ग	म	प	ध	सां	नि॒	ध	प	म	ग
	सा	रे	नि॒	-	नि॒	-	नि॒	-	ध	प	ध	-	ध	ध	ध	-
	प	म	प	-	प	प	प	-	म	ग	म	-	म	म	म	-
	म	ग	रे	ग	म	प	ग	म	प	ध	सां	नि॒	ध	प	म	ग

तानें—(यह तानें दून में बजेंगी, अर्थात् जिस लय से गत बजेगी उसकी दूनी लय में तानें बजेंगी)

(१)	ग– निसां धनि पध	मप गम रेग सारे	निसां धनि पध मप	गम रेग सारे सारे
(२)	ग– रेग म– गम	प– मप ध– पध	नि– धनि सां– सांरे	सांनि धप मग सारे
(३)	निसा गम पध गम	पध निसां पध सांरें	गंमं गंरें सांनि धप	मग रेसा रेसा सारे
(४)	निसा गरे मग पम	धप निध सांनि रेंसां	निसां धनि पध मप	गम रेग सारे सारे
(५)	निसा गम गम पध	पध निसां निसां गंमं	गंरें सांनि धप सांनि	धप मग रेसा सारे

गत हारमोनियम —— (मध्यलय)

(राग मितभाषिणी, तीन ताल-मात्रा १६)

[स्वरकार पं० नारायण झा एम. एम. एच. एम., गायन वादनाचार्य]

आरोहावरोह स्वरूप—सारेग, म, प, धनिसां । सांनिधप मग, रे, सा ।
मुख्य अङ्ग—सासा, रेरे, गग, मम, प, धनि, प, ध, सां ।

×	२	०	३
	सा नि	सा रेग रेसा रे	सा धनि धप ध
सां ऽ ऽ मंगं	रेंसां निध पमगरे सानि	सा नि ध नि	प ध म प
म ग म प	निध पम गरे सानि		

अन्तरा—

		म प धनि धप	धनि धप नि सां
रे मंगं रें सां	रें नि सां सां	निसां निध प प	गम गरे सा सा
रेग रेसा निध पध	सारे गम गरे सा	रे नि ध नि	प ध म प
म ग म प	निध पम गरे सानि	सा रेग रेसा रे	सा धनि धप ध

तानें—

(१)	निध पग मप गम	रेग रेम गरे सानि	सा रेग रेसा रे	सा धनि धप ध
(२)	सां मंगं रेंसां निध	पम गरे सानि सा	सा रेग रेसा रे	सा धनि धप ध
(३)	सांसां निसां धनि पध	मप गम रेग सानि	सा रेग रेसा रे	सा धनि धप ध
(४)	रेगम धनि पधनिसां रेंगं	सांरेंगंरें सांनिधप मगरेसा सानिसा		सा रेग रेसा रे
	सा धनि धप ध			
(५)	रेंगंरें सांरेंसां निसांनि धनिध	पधप मपम गमग रेसानि		सा रेग रेसा रे
	सा धनि धप ध			
(६)	रेंगं रेंसां धनि धप	रेग रेसा सा नि	सा रेग रेसा रे	सा धनि धप ध
(७)	प सारेंगमं सा पधनिसा	प सारेगम सा सानि	सा रेग रेसा रे	सा धनि धप ध
(८)	मग रेसा पम गरे	धप मग निध पम	सांनि धप रेंसां निध	गंरें सांनि मंगं रेंसां
	मंगं रेंसां निध पसां	निध पम गरे सानि	सा रेग रेसा रे	सा धनि धप ध

(९) गऽगरेसा मऽमगरे पऽपमग धऽधपम निऽनिधप सांऽसांनिध रेंऽरेंसांनि गंऽगंरेंसां सांऽसांरेंगं निऽनिसांरें धऽधनिसां पऽपधनि मऽमपध गऽगमप रेऽरेगम साऽरेग साऽसारेगम पधनिसां साऽसारेगम पधनिसां साऽसारेगम पधनिसां सा सानि। (यह तान २४ मात्रा की है)

(१०)	विहाई	सा रेग रेसा रे	सा धनि धप ध

सा	रेग़ु	रेसा	रे	सा	धनि़	धप	ध	सा	रेग़ु	रेसा	रे	सा	धनि़	धप	ध

उपरोक्त तानें सम से शुरू होंगी और तिहाई खाली से शुरू होगी।

नोट—जिस तान के नीचे घेरी हुई पड़ी रेखा हो, उसे तीन बार घुमाना चाहिये। ऐसा बजाने से २४ मात्रा का हिसाब खूबसूरती के साथ उतरेगा। परन्तु अभ्यास करने के समय बराबर लय में पैर से ठेका देते जाना चाहिये, तभी आसानी से बैठेगा।

राग विवरण—यह सम्पूर्ण जाति का राग है। इसका मेल काफी थाट से है। इसमें ग नि कोमल तथा शुद्ध दोनों लगते है, बाकी स्वर शुद्ध है। गायन वादन का समय मध्य रात्रि है। इसका वादी स्वर प, सम्वादी सा है।

राग मालश्री (तीनताल, मध्यलय)

स्वरकार—प्रोफेसर दोस्त मोहम्मद इब्राहीम सिन्धी

आरोहावरोह—सा ग प – नि – सां। सां नि मंप – ग – सा –॥

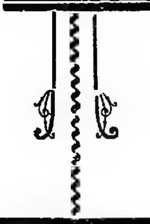
स्थाई—

०				३				×				२			
														सा	सा
सा	–	ग	ग	मंप	–	ग	–	सा	ग	प	ग	प	–	नि	नि
मंप–	–	ग	ग	सा	ग	सा	प	नि	प	ग	मंप	ग	सा	सासा	सा
गग	मंप–	ग	साग	पग	प	निनि	प	गग	साग	प	निप	गप	गसा	–	–

अन्तरा—

														ग	ग
ग	–	मंप–	ग	प	–	नि	नि	प	–	सां	–	सां	–	सां	सां
सां	–	गं	गं	मंपं–	–	गं	–	सां	–	ग	प	सां	–	गग	ग
मंप–	ग	प	निनि	साग	पसां	प	निप	प	सांसां	प	निप	गप	गसा		

यह श्रीराग की अर्धाङ्गिनी है। रिषभ और धैवत वर्जित होने से इसकी जाति षाड्व है। पंचम वादी और षड्ज सम्वादी है। सायंकाल के समय गाई जाती है।



तराना

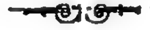
राग-पीलू

[स्वरकार—श्री भास्कर गणेश भिंडे]

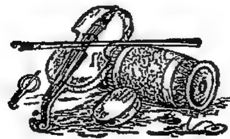


(तीनताल, मात्रा १६)

नादिर दिर दीं तनन देरेना तदारे दानी। नादेरे देरे तनदेरे तोम् तदारे दानी।
दिर दिर दिर तान तन तदियरे नितारे। दींतो दींतो तान् तद्रेदानी ॥ १ ॥



×				२				०				३			
सा	गग	रेंरें	ग	–	रे	सा	रे	नि़	सा	सा	रें	सा	नि़	ध़	प़
ना	दिर	दिर	दीं	ऽ	त	न	न	दे	रे	ना	त	दा	रे	दा	नी
म़	ध़	प़	सा	नि़	ध़	प़	सा	नि़	सा	–	ग	रे	सा	सा	रे
ना	दे	रे	दे	रे	त	न	दे	रे	तों	म	त	दा	रे	दा	नी
सासा	सासा	सासा	ग	–	रे	ग	रे	ग	म	प	म	ग	रे	–	सा
दिर	दिर	दिर	ता	ऽ	न	त	न	त	दि	य	रे	नि	ता	ऽ	रे
ग	–	ग	–	रे	–	सा	–	नि़	सा	–	रें	सा	नि़	ध़	प़
दीं	ऽ	तो	ऽ	दीं	ऽ	तो	ऽ	ता	ऽ	ऽ	न	त	द्रे	दा	नी



तीसरा अध्याय

ताल और कन्सर्ट (CONCERT)

तबला, सितार, बेला, बांसुरी, दिलरुबा, बीन, बैन्जो बजाने की शिक्षा।

कन्सर्ट का अर्थ है 'मेल'। कुछ वाद्य यन्त्र जहां इकट्ठे होकर मिलाकर बजाये जारहे हों, उसे कन्सर्ट पार्टी कहते हैं।

जग में सब गुणिजन कहें, बाजे साढ़े तीन।
खाल ताप अरु फूंक पुनि, अर्धताल स्वरहीन ॥

खाल के बाजे—पखावज, तबला, मृदङ्ग, ढोलक, डमरू, ढोल, खंजरी इत्यादि।

तार के बाजे—सितार, बेला, सुरबहार, दिलरुबा, सरोद, वीणा, रबाब, सुरबीन सरीन्दा, सारङ्गी, बैंजो इत्यादि।

फूंक के बाजे—हारमोनियम, बांसुरी, क्लारनेट, बीन इत्यादि।

झनकार के बाजे—झांझ, करताल, मंजीरा, घूँघरू, घन्टी, कठताल, दण्डाल इत्यादि (ये झनकार के बाजे आधे में माने गये हैं। क्योंकि इनसे स्वर एकसा ही निकलता है, अन्य बाजों की तरह इनमें स्वर बदलने की शक्ति नहीं)

इस प्रकार साढ़ेतीन तरह के बाजे माने गये हैं। हारमोनियम के बारे में आरम्भ में लिखा जा चुका है, अब ताल और कुछ मुख्य-मुख्य बाजों को बजाने की विधि चित्रों सहित दी जाती है।



तालस्तलप्रतिष्ठायामितधातोर्थेजि स्मृतः ।
गीतं वाद्यं तथा नृत्यं यतस्ताले प्रतिष्ठितम् ॥

गीत की शोभा ताल से ही होती है, विना ताल के गाना, बजाना, नाचना तीनों ही फीके रहते हैं। इसलिये कवि, सङ्गीतज्ञ, कीर्तनकार, नृत्यकार इत्यादि सबको ताल का ज्ञान होना अति आवश्यक है। 'ताल काल क्रिया मानम्' के अनुसार 'ताल' समय के माप को कहते हैं, कुछ विशेष मात्राओं के अवकाश मे नियमित की हुई दोनों हाथों के संयोग से अथवा किसी ताल वाद्य (तवला मृदङ्गादि) द्वारा समय के नापने को "ताल" ऐसी सञ्ज्ञा दी है।

सङ्गीतकला में स्वर और राग लक्षण के अलावा ताल, लय और मात्रा का ज्ञान अति आवश्यक है, विना इनके सङ्गीत का परिश्रम बिलकुल व्यर्थ हो जाता है, जिस प्रकार विना व्याकरण जाने भाषा शुद्ध नहीं होती; उसी प्रकार विना ताल के सङ्गीत भी शुद्ध नहीं हो सकता। ताल ही सङ्गीत का प्राण है।

गाने बजाने के साथ ताल देने की आवश्यकता इसलिए हुई कि गाने बजाने वाले का ध्यान राग की तरफ रहता है, और जब उसकी तानों की लहर चलने लगती है तो उस समय मात्राओं की शुमार रखना कठिन हो जाता है। अतः मात्राओं की शुमार रखने के लिए ही "ताल" की आवश्यकता हुई।

ताल के मुख्य अंग

काल—काल का अर्थ है समय और समय के माप या बन्धन का नाम ताल है। समय का बन्धन या माप मात्राओं द्वारा किया जाता है। "काल" के भिन्न-भिन्न मापानुसार भिन्न-भिन्न तालें क़ायम की गई है, किसी ताल में १६ मात्रा का समय बद्ध किया है तो किसी में १४ या १०, ८ या, ७, ६ इत्यादि। अठारह मात्राओ तक समय का भिन्न-भिन्न बन्धन किया है। वैसे तालें २०-२२-२४ मात्राओं की भी मानी गई हैं किन्तु इनमें बहुत से मत पाये जाते है। कोई ताल ८ मात्रा की है उसे दुगुन रूप में करके १६ की मान लेते है। इसी प्रकार ११ मात्रा की ताल २२ मात्रा की बनाली गई है, इत्यादि। ताल की दुगुन चौगुन करने से मात्रायें घटा बढ़ा कर दुगुनी चौगुनी करली जाया करती हैं, किन्तु मुख्य १८ मात्रा तक ही "काल" को बांध कर अनेक तालों की रचना हुई है।

मात्रा—एक सी (लय) मे घड़ी की टक-टक के समान गिनती गिनने को मात्रा कहते हैं, उदाहरणार्थ-एक सैकिंड या 'टक' के समय को १, मात्रा माना जाये तो घड़ी ने चार बार टक, टक, टक, किया तो यह चार मात्रा होगईं। ८ बार टक-टक के समय का नाम "ताल कहरवा" मान लिया, १६ बार 'टक-टक' के समय को तीन ताल का रूप दे दिया, इसी प्रकार बहुत सी तालें मात्राओं से बनाली गईं।

लय विवरण—

लय—समय के किसी भी भाग की समान चाल को लय कहते हैं। एक मात्रा से दूसरी मात्रा कहने में जो बराबर-बराबर समय लगता है, उसे ही "लय" कहते हैं। यानी समय की बराबर चाल को लय कहते हैं। मुख्य लय तीन प्रकार की होती हैं विलम्बित-लय, मध्यलय और द्रुतलय।

विलम्बित लय—विलम्बित का अर्थ है "रुका हुआ" धीरे-धीरे चलने वाला, यानी जिस लय की चाल धीमी हो उसे विलम्बित कहते हैं। इसी को "ठांह" भी कहते हैं।

मध्यलय—मध्य का अर्थ है "बीच" यानी विलम्बित से तेज और द्रुत से धीमी अर्थात् जो न बहुत तेज हो, न बहुत धीमी हो, उसी को "मध्यलय" कहा है।

द्रुतलय—द्रुत का अर्थ है 'तेज' (तीव्र) यानी जो लय मध्यलय से तेज हो उसे "द्रुतलय" या दुगुन कहते हैं। उपरोक्त तीनों लय के अलावा अति विलम्बित और अनुद्रुत लय भी कही जाती हैं। अतिविलम्बित लय "विलम्बित" से भी धीमी होती है और अनुद्रुतलय "द्रुत" से भी दो गुनी तेज चलती है।

कुवाड़ी, आड़ी और वियाड़ीलय

कुवाड़ीलय—मध्यलय से सवाई लय को कुवाड़ी लय कहते हैं।

आड़ीलय—मध्यलय से डेवढ़ीलय को आड़ीलय कहते हैं।

वियाड़ीलय—मध्यलय से पौने दुगुनी लय को वियाड़ी लय कहते हैं।

विशेष विवरण—

२ मात्रा बराबर १ मात्रा के मानने से ३ मात्रा बराबर १॥ मात्रा के होंगी अर्थात् दो डेवढ़े तीन, डेवढ़ीलय या आड़ीलय मानेंगे। और ४ मात्रा की २×२=४ दुगुनलय मानेंगे, ६ मात्रा की महाआड़ी लय मानेंगे क्योंकि ३ मात्रा की आड़ी तो ३×२=६ छै मात्रा की महाआड़ी अर्थात् आड़ी की दुगुनी महाआड़ी लय मानेंगे। ८ मात्रा की २×४=८ चौगुनलय और १६ मात्रा की २×८=१६ अठगुनलय मानते है इसी प्रकार ४ मात्रा बराबर १ मात्रा के मानने से चार सवाम पांच मात्रा की सवाईलय अर्थात् कुवाड़ीलय मानेंगे और ४×१॥=६ मात्रा की आड़ीलय मानेंगे और ४×१¾=७ मात्रा की पौने दो गुनी अर्थात् विआड़ीलय मानेंगे और ८ मात्रा को दुगुन १६ मात्रा चौगुन ३२ की अठगुन लय मानेंगे। कुवाड़ी की दुगुन महा कुवाड़ी, आड़ीलय की दुगुन महाआड़ी, विआड़ी की दुगुन महाविआड़ीलय। दुगुनलय की दुगुन चौगुन लय हुई, और चौगुनलय की दुगुनलय अठगुन की लय कहलाती है। त्रिताला की एक आवृत्ति के अन्दर २४ मात्रा के योग की आड़ीलय मानने से २४×२ अर्थात् ४८ मात्रा की महाआड़ीलय होगी। २० मात्रा की कुवाड़ीलय नियत करने से एक आवृत्ति के अन्दर २०×२=४० मात्रा के योग को महाकुवाड़ी मानेंगे, इत्यादि। इसी प्रकार प्रत्येक तालों को जानिये। सङ्गीत के अभ्यास करने वालों को लयों की गतियों के स्वरूपों का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। इस पुस्तक में आगे २ नक्शे दिये गये है, उनमें तीन लय और उपलयो का उदाहरण भली भांति समझाया गया है।

लय के ग्रह

समातीतऽनागताश्च विषमश्च ग्रहा मताः ।
चत्वारः कथितास्ताले सूक्ष्मदृष्ट्या विचक्षणैः ॥

—सङ्गीत दर्पण

अर्थात्—लय के चार ग्रह माने हैं:—सम, अतीत, अनागत और विषम ।

समग्रह—

गीतादिसमकालस्तु समपाणीः समग्रहः ।
गीतादौ विहते पंचताला वृतिर्विधीयते ॥

अर्थात्—गीत के आरम्भ मे तवलिया या पखावजी गीत की सम के साथ अपना ठेका शुरू करे और गीत की सम के अनुकूल बजावे तो उस जगह को "समग्रह" कहते हैं।

अतीतग्रह—

अतीताख्यो ग्रहो गेयो यः सोऽपाणिरिति स्मृतः ।
पूर्वं ताल प्रवृत्तिः स्यात् पश्चाद्गीतादिरुच्यते ॥

अर्थात्—गीत के आरम्भ के बाद, यदि तवलिया या पखावजी भ्रम से सम निकल जाने पर दूसरे स्थान पर सम समझकर थाप देने लगे तो उसे "अतीतग्रह" कहते हैं।

अनागत या अनाघातग्रह—

अनागतः सविज्ञेयः स एव परिमाणिकः ।
आद्यन्तयो रनियमो विषम ग्रह शब्दभाक् ॥

गीत के शुरू यानी सम के पहिले ही तवलिया या पखावजी भ्रम मे पड़ कर सम समझे और समग्रह से पहिले ही सम की थाप दे तो इस जगह को अनागत या अनाघात ग्रह कहते हैं।

आवृत्ति—आवृत्ति का अर्थ है दुहराना, फेरना यानी कोई ताल एक बार सम की जगह से आरम्भ कर के घूम फिर कर सम पर आ जावे तो उसे १ आवृत्ति कहेगे। इसी प्रकार, २ वार सम आवे तो २ आवृत्ति की कही जायगी। कई एक सङ्गीत ग्रन्थों में इस आवृत्ति शब्द को "आवर्तक" या "आवर्तन" लिखा है वास्तव मे वे अपभ्रन्श रूप हैं। शुद्ध शब्द आवृत्ति है।

मुखड़ा—किसी ताल की खाली से आरम्भ कर के सम तक या सम से खाली तक कोई टुकड़ा बजाने को 'मुखड़ा' कहते है।

मोहरा—किसी बोल के कुछ अक्षर तीन वार बजा कर सम पर आने को मोहरा या तीया कहते है।

लग्गी—तबले के बोलों मे धिनधादि धिनधाड़ा इस प्रकार के अक्षरों को लग्गी कहते हैं।

लड़ी—'धिनातिट धिनान्न' इस प्रकार के अक्षरो को लड़ी कहते हैं।

रेला—तबला या मृदङ्ग बजाने में जिनका हाथ खूब तैयार हो जाता है तब वे एक-एक मात्रा में आठ-आठ अक्षरों के बोल मध्यलय में बजाते हैं, उसे ही रेला कहते हैं।

परन—सम्पूर्ण बोल सम से या और किसी मात्रा से आरम्भ करके दो या तीन आवृत्ति बजाकर आखिरी 'धा' सम पर आ जाय, उसे 'परन' कहते हैं।

साथ करना—गवैया जिस लयकारी में गा रहा हो उसी लयकारी के अनुसार तबला या मृदङ्ग बजाने को 'साथ करना' कहते हैं।

तालों के अन्दर खाली भरी के ताल क्यों रक्खे हैं और सम से क्या लाभ है?

तालानुसार मात्राओं के भाग बना कर मात्राओं का व लय का वज़न, भरी और खाली की तालियों में रख दिया है, अर्थात् मात्राओं के प्रत्येक भाग पर ताल नियत रहते हैं, प्रत्येक भाग में खाली-भरी की तालियां रहने से समय का माप व बन्धन सरल हो जाता है, क्योंकि एक गायन, वादन के अन्दर ताल की सैंकडों आवृत्ति बीत जाती हैं। केवल गिनती ही कोई कहां तक गिने, अतः खाली, भरी की तालियों द्वारा ताल की आवृत्ति का स्वरूप व लय का वज़न हाथ में बैठ जाता है, तथा ताल का उचित अभ्यास होने पर मात्राओं के गिनने की आवश्यकता भी नहीं रहती। उदाहरण के लिये ताल तिताला में एक आवृत्ति का नकशा नीचे दिया जाता है क्योंकि ताल त्रिताला कुछ सरल है।

(प्रचलित ताल त्रिताल—मात्रा १६ भाग ४ ताली ३ खाली १)

ताल	३ भरी ताल	× सम	२ भरी ताल	० खाली ताल
मात्रा	१३, १४, १५, १६	१, २, ३, ४	५, ६, ७, ८	९, १०, ११, १२
बोल	ना धी धी ना	ना धी धी ना	ना धी धी ना	ता ती ती ना

ताल त्रिताल में १६ मात्रा का समय बद्ध किया है और १६ मात्राओं के चार भाग बनाकर प्रत्येक भाग पर एक-एक ताली नियत है। उनमें से तीन भाग भरी तालियों के नियत है और एक भाग खाली की ताली का है। भरी की तालियों में एक ताली सम की प्रधान मानी है। बहुधा करके सम के स्थान से ही गाना, बजाना प्रारम्भ होता है और वहीं पर अन्त होता है। सम का अक्षर दूसरे अक्षरों से झटका देकर जोरदार निकलता है, सम के झटके के साथ ही श्रोताओं का सिर या कोई भी अङ्ग हिल जाता है या मुँह से 'आं' कह देते हैं। ऐसा प्रभाव सम के स्थान में होता है। लय के विश्राम की जगह को 'सम' कहते है और लय का विश्राम प्रत्येक ताल में १ पहिली मात्रा पर हुआ करता है। इसी प्रकार प्रत्येक तालों में तालानुसार मात्राओं के भाग बनाकर खाली, भरी के ताल नियत करके समय का माप हाथ की ताली में बैठने के वास्ते सरल किया है।

नकशा नम्बर ? 'लय' विवरण

ा बोल के चारों भागों में ताल, स्वर में बद्ध करके कुछ लयों मे बतलाय

मात्रा				०			
मात्रा					२		
ठेका							
स्वर	-	-	-		रे	-	-
बोल	ऽ	ऽ	ऽ		थु	ऽ	ऽ
मात्रा					३		
स्वर	-	-	-		ग	-	-
बोल	ऽ	ऽ	ऽ		रा	ऽ	ऽ
मात्रा				४	५		
स्वर	ा	-	म	-	सा	-	रे
बोल	रा	ऽ	ऽ	ऽ	म	ऽ	थु

मात्रा	४	५	६	७	८
स्वर	ग	-	म	सा	-
बोल	रा	ऽ	ऽ	म	ऽ

मात्रा	५	६	७	८	९	१०	११
स्वर	सा	रे	ग	म	सा	रे	ग
बोल	म	थु	रा	ऽ	म	थु	रा

मात्रा	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१
स्वर	सा	रे	ग	म	प	सा	रे	ग	
बोल	म	थु	रा	ऽ	म	म	थु	रा	

मात्रा	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
स्वर	सा	रे	ग	म	प	ध	सा	रे	ग	म
बोल	म	थु	रा	म	थु	रा	म	थु	रा	म

आड़ी कुआड़ी लय मिश्रित—

(	१	२	३	४	५	६	१	२	३
ग	सा	रे	ग	सा	रे	ग	सा	रे	ग
म	म	थु	रा	म	थु	रा	म	थु	रा

(सम्पूर्ण तानें शुद्ध स्वरो मे)

निसां	सांनि	धप	मग	रेसा	मग	रेसा	मग
मपध	निसांनि	रेंसांनि	धनिध	सांनिध	पधप	निधप	गमग
निसां	सांनिसांनि	सांनिधप	सांनिधप	मगरेसा	सारेगम	रेगमप	गमप
धनिसां	सांनिधपम	निधपमग	धपमगरे	पमगरेसा	सारेसारेग	रेगरेगम	गमग

त करें तो ३ स्वर बराबर १ मात्रा मे विलम्बित आड़े बैठेंगे और २ स्वर द्
, अर्थात् सवाई लय को कुआड़ी मानते है, इसलिये ५ स्वर कुआड़े बैठेंगे अ
द्रुतलय मे दुगुन रूप से बैठेंगे।

ों मे काट
म 'वाया'
ायकी के
देता है।
हैं। बिना
विक स्वर
ध्यान से
किन्तु तार
सकता है,
री का स्वर
र यदि दो
वे रेखायें
। तबले मे
लावे, जब
के मिलाने
। जिससे
से रखकर
ना चाहिये
धा न होना
थोड़ा झुका

...ा है तथा सम्पूर्ण शुद्ध स्वरों में कुछ तानों की रचना की है।

लड़ी-'धिन
रेला-तबल
एक मात्रा में आर
परन-सम्पू
आवृत्ति बजाकर
साथ कर
या मृदङ्ग बजाने
तालों के अन्द
तालानुस
खाली की तालि
रहते हैं, प्रत्येक
हो जाता है, क्यों
हैं। केवल गि
ताल की आवृ
उचित अभ्यास
के लिये ताल
त्रिताला कुछ
(प्रचलि

ताल	३	
मात्रा	१३, १	
बोल	ना	

	३							
–	–	–	–	–				विलम्बित अठगुनलय
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ				
	४							
–	म	–	–	–				विलम्बित चौगुनलय
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ				
६	७			८				
–	ग	–	म	–				विलम्बित दुगुनलय
ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ				
९	१०	११	१२					
रे	ग	–	म					विलम्बित आड़ीलय
धु	रा	ऽ	ऽ					
१२	१३	१४	१५	१४				
म	सा	रे	ग	म				मध्यलय
ऽ	म	धु	रा	ऽ				
१५	१६	१७	१८	१९	२०			
प	सा	रे	ग	म	प			द्रुतलय कुवाड़ी
धु	म	धु	रा	ऽ	म			
१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	
प	ध	सा	रे	ग	म	प	ध	द्रुतलय आड़ी
धु	रा	म	धु	रा	म	धु	रा	

ताल

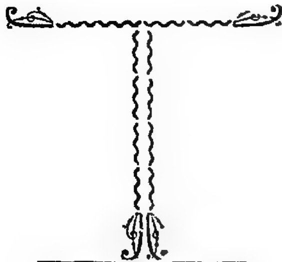
भाग बनाकर
तालियों के नि
ताली सम क्रा
प्रारम्भ होता
देकर जोरदा
भी अङ्क हि
होता है। ल
ताल में १ पा
मात्राओं के
ताली में वै

५	१	२	३	४	५	६	
रे	ग	–	सा	सा	रे	ग	द्रुतलय आड़ी, कुआड़ मिश्रित
धु	रा	ऽ	म	म	धु	रा	

रेसा	सांनि	धप	मग	रेसा	द्रुतलय कुवाड़ी तान
पगम	सारेग	रेगम	गमप	मपध	
मपधनि	मपमप	पमधनि	सांनिधप	मगरेसा	
मपमपध	पधपधनि	धनिधनिसा	सानिसानिध	पमगरेसा	

...गुन विलम्बित। इसी प्रकार ५ स्वर द्रुतलय में कुवाड़े बैठेंगे क्योंकि जब ...र ६ स्वर द्रुतलय में आड़े बैठेंगे, ७ स्वर द्रुतलय में बिआड़े और ८ स्वर

तबला वर्ण परिचय



[श्री० राजनरायनसिंह]



तबला भी मृदङ्ग का दूसरा रूप है, मृदङ्ग को बीच से ही दो हिस्सों में काट दिया गया है। दाहिने हिस्से का नाम 'तबला' और बॉये हिस्से का नाम 'बाया' रक्खा गया है। इसका आविर्भाव थोड़े ही समय से हुआ है, ख्याल की गायकी के साथ प्रायः तबला ही बजता है। मृदङ्ग ध्रुपद ही की कला पर बजता है।

वास्तव मे मृदङ्ग के और तबला के बोलों में विशेष अन्तर दिखलाई देता है। मृदङ्ग के वाम भाग अर्थात् बांये में तो बहुत ही अन्तर पड़ जाता है।

तबला मिलाना—

सबसे प्रथम तबले में जानने योग्य आवश्यक बात उसका मिलाना है। बिना ठीक-ठीक मिले तबले की आवाज दबी सी रहती है। इससे इसके स्वाभाविक स्वर में वास्तविक आनन्द आना असम्भव हो जाता है।

प्रथम कोई तार वाद्य स्वर में मिला कर छेड़ दे, उसी स्वर पर तबला ध्यान से मिलावे। आजकल तो प्रायः हारमोनियम से ही यह काम लिया जाता है, किन्तु तार वाद्य ही से मिलाना बहुत अच्छा होता है। तबला ठीक तार वाद्य ही से मिल सकता है, तबले का स्वर भी पूर्ण है। यहॉ 'पूर्ण' का भाव यह है कि गले की बराबरी का स्वर तबले में होता है। श्रुतियों पर भी तबला मिल सकता है। तबले के केन्द्र पर यदि दो सीधी रेखायें एक दूसरी को समकोण पर काटती हुई खींची जावे तो जहां वे रेखाये वृत्ताकार किनारे को काटेंगी, वे ही स्थान घाट के नाम से पुकारे जावेंगे। तबले मे मुख्य चार ही घाट होते हैं। इस प्रकार किसी एक घाट को तार वाद्य से मिलावे, जब यह घाट मिल जावे तो इसके सामने का दूसरा घाट मिलावे। चारों घाटों के मिलाने के बाद चारों कोनिक घाटों को हथौडी की हल्की चोटों से मिलाना चाहिये।

बहुत से लोग एक सिरे से दूसरे सिरे तक सब घाट मिला ले जाते हैं। जिससे तबले में डेबढ़ लग जाता है और फिर उसे मिलाने मे बड़ी कठिनाई पडती है।

तबले का अभ्यास—

दूसरी बात यह भी कम आवश्यक नहीं है कि तबला कहां और कैसे रखकर अभ्यास करना चाहिये, दो गैंडुरियों पर तबला और बांया इस प्रकार रखना चाहिये कि तबला कुछ आगे झुका हुआ हो। अधिक झुका हुआ तथा एक दम सीधा न होना चाहिये। क्योंकि ऐसी दोनों ही दशा मे हाथ टेढ़े पड़ेंगे। बांये को तबले की ओर थोडा झुका

रहना चाहिये। तवला तो विना गेंडुरी के भी वजाया जा सकता है, किन्तु बांये मे विना गेंडुरी के 'ठस' आवाज, विना आंस की निकलती है। जिससे लय में अन्तर पडने की सम्भावना रहती है, तथा वॉया इधर-उधर हिलता भी रहता है, जिससे हाथ वैठता नहीं।

ऐसे ही तवला रखकर, दाहिना पैर पीछे की तरफ मोड़कर वीरासन से वैठना चाहिये। बांये पैर के बांई ओर वांया रहे और दांई ओर दाहिना। इस आसन से तबला अपने काबू में रहता है। ये बातें ध्यान से समझकर ही अभ्यास करना चाहिये। इन्हीं पर सङ्गीत की उत्तम कलायें अवलम्वित हैं। वहुत से लोग पालथी मार कर पूजा करने की तरह बैठते हैं। इस आसन से वैठकर बजाने में जरवें असन्तोषजनक पड़ती हैं। इसी कारण लय ओछी पड़ती है और गवैये को यह मालूम होता है कि कोई पीछे से खींच रहा है।

ऐसा देखा गया है कि आरम्भ में जैसे हाथ तवले पर रक्खा जाता है, कुछ काल अभ्यास के उपरान्त भी वैसा ही रहता है।

यदि किसी गुणी ने हाथ रखवा दिया तो हाथ सुन्दर पड़ता है। नहीं तो अपने मन से या औरो को देखकर कुढङ्गा हाथ रक्खा जाता है, फिर इस विद्या के तत्वों को जानने पर भी वह भद्दा ही प्रतीत होता है। अच्छे गुरु के शिष्य को तवला उठाते ही देखकर कहा जा सकता है कि कैसा वजायेगा। इसलिये बहुत उत्तम हो कि किसी गुणी से हाथ रखने का तरीका समझलें।

तवला के दस वर्णों का दोहा—

धा दिन तेरे तिन ना क धी, ता किन कत्त विचारि।
तवला के दस वोल ये, इनको लेहु सुधारि॥

दाहिने हाथ के बोल

(१) 'ता'—पांचों अँगुलियों को सीधी करके अनामिका को बीच से ऐसा मोड़े कि एक हिस्सा दूसरे हिस्से के साथ समकोण बनावे। अब इसी तरह उङ्गली टेढ़ी करके [दूसरी उङ्गलियां टेढ़ी न होने पावें] हाथ को ढीला करके जोरदार जरव मारना चाहिये। ताकि हाथ तवले पर किसी लचीली वस्तु की तरह पड़े। टेढ़ी उङ्गली (अनामिका) स्याही के किनारे के आधोंआध ही पर पड़नी चाहिए। अँगूठा चांटी के नीचे,तर्जनी तथा मध्यमा घाट वाली सीधी लकीर के वामार्द्ध मे सीधी पड़े। कनिष्ठका बाहर की चांटी से कुछ आगे पड़े। इस प्रकार पांचों उङ्गलियों के जरव से "ता" निकलता है। वहुत से लोग कनिष्ठका (चौथी अँगुली) को दुम की तरह उठाये रहते हैं, वह बहुत भद्दा मालूम होता है। इसे मुद्रा दोष कहते हैं, जो गुणियों का भारी शत्रु है।

इस प्रकार जरब मारने से "ता" निकलता है। लेकिन यह टुकड़ा परन इत्यादि के ही बजाने में आता है। ठेका के लिये यह "ता" काफी नहीं है, अतः तर्जनी को सीधा चांटी पर मारना चाहिये और सव उङ्गलियां अपने स्थान पर ही रहेंगी। ऐसा "ता" ठेके मे वजाया जाता है।

कभी-कभी सव उङ्गलियां सीधी करके और कनिष्टका ही को कुछ नीचे करके सीधे हाथ से जरव मारते हैं तो वहुत ही सुन्दर "ता" निकलता है इसको ठेका वजाते

बजाते कहीं दम लेने के लिये भी लगा देते हैं। यथा "उठान" के लिए भी बजाते हैं। सच तो यह है कि तबले का प्रधान बोल यही समझा जाता है।

(२) ना—ता और ना मे विशेष अन्तर नहीं है, बहुधा "ना" बोलो के अन्त में आया करता है जिससे यह एक अलग ही अक्षर हो गया, नहीं तो दोनों एक ही तरह तबले से निकाले जाते है। "ता" तो प्रायः बोलों के प्रारम्भ मे या स्वतन्त्र ही आता है। सीधी उङ्गलियों वाला "ता" "ना" नहीं हो सकता है। एक प्रकार का "न" जो बहुत ही सूक्ष्मकाल मे आता है वह दूसरी उङ्गलियो के ही सहारे निकलता है और उन बोलों को तैयारी में बजाते समय हाथ से उपरोक्त "ना" नहीं निकल सकता।

लेख बड़ा होने की सम्भावना से उनका लिखना उचित नहीं समझता हूं।

(३) तेटे या तेरे—पहले की तरह फिर सब उङ्गलियां सीधी करें। मध्यमा और अनामिका को जुटा कर स्याही के बीचो बीच सीधी किन्तु दाबती हुई जरब मारनी चाहिये। तुरन्त ही तर्जनी से उसी स्थान पर तथा उसी तरह से दबी हुई जरब मारनी चाहिए। दोनों मिलाकर 'तेटे' होता है। इन अक्षरों का भी अलग-अलग प्रयोग होता है। इस बात का विशेष ध्यान रहे कि दोनों उङ्गलियों की जरबें ठीक एक के बाद दूसरी पड़ें, यह बोल आगे चलकर बड़ा विस्तार करेगा। इसकी व्यापकता तबला तथा मृदङ्ग मे बराबर ही है। अतः इसको ध्यान से समझकर बजाना चाहिये।

बनारस मे इस वर्ण को एक और प्रकार से निकालते हैं। जो रेला इत्यादि के बजाने मे बहुत उत्तम तथा बजाने वाले को अवकाश देने वाला है। इसका बोल लय से सटा हुआ होता है। पिछली बार 'अखिल भारतवर्षीय सङ्गीत सम्मेलन' में बनारस के श्री मौलवीराम जी ने इसी बोल को इस प्रकार बजाया कि मालुम होता था तबला वही तानें कर रहा है जो गवैया अपने गले से।

(४) दिं या तुन—पांचों उङ्गलियों को सीधी करके स्याही के आधे भाग तक जरब मारकर हाथ उठालें तो दिं निकलता है। इसमे बड़ी आंस होती है। यह बोल भी तबला, मृदङ्ग दोनों मे बराबर काम करता है, इसमें कुछ जोरदार गमक तथा गूँज की आवाज निकलती है।

(५) तिं—यह ठेके का स्वतन्त्र बोल है, इसका अस्तित्व परन् टुकड़ा इत्यादि मे नहीं मिलता।

यह उसी प्रकार निकलेगा जैसे चांटी पर 'का' "ता" निकलता है। अन्तर केवल इतना ही होगा कि इसकी जरब चांटी से कुछ आगे पड़ती है।

बांये हाथ के बोल—

(६) घी, घ, या ग,—बांये हाथ की सब उङ्गलियों को सीधी करके जरब (जैसे दाहिने तुन्न वाली जरब मारी जाती है) मार कर हाथ उठा लेने से जो शब्द होता है 'घ' कहते हैं। उसी को कहीं घी, घ, या ग, भी कहते हैं। किन्तु वह वर्ण इस प्रकार परन टुकड़ा इत्यादि ही में बजते हैं। ठेका बजाते समय इनकी सूरत भिन्न हो जाती है।

मृदङ्ग में केवल इसी प्रकार यह वर्ण बजाया जाता है। बांये के बीच में सब उङ्गलियां सीधी करके इस प्रकार रक्खे कि कनिष्ठका और कलाई की एक सीधी लकीर बन जावे। अब इस कलाई और गद्दी वाले जोड़ से बांये को दबाये और सब उङ्गलियों में खम देकर उनके सिरे से जरब मारे तो ठेके वाला 'घ' निकलता है, कहीं-कहीं देहातों में इस शब्द को घुटना भी कहते सुना गया है।

(७) क-उङ्गलियां सीधी करके मुंदी जरब मारी जाती है। इस जरब से आंस वाली आवाज निकलती है। यह मुंदे पल्लों को बजाने में अधिक काम आता है। घ, का ही दूसरा रूप इसे समझना चाहिये, किन्तु यह अपनी उपयोगिता से स्वतन्त्र वर्ण होगया है। इसका प्रयोग मृदङ्ग मे भी होता है।

(८) कत्त-'क' का उपरूप है, यह अधिक जोरदार है। क अधिकतर और बोलों के साथ ही आता है। किंतु यह स्वतन्त्र ही अधिक आता है। जरब ऐसी मारी जाती है जिससे मालुम हो कि 'त' भी साथ में बज गया, परन्तु वास्तव में एक ही जरब पड़े। यह बोल कुछ हाथ ढीला करके झटके के साथ तबले मे निकाला जाता है।

(९) किन्-क की हालत में सब उङ्गलियां रखकर तर्जनी को ऊपर उठावे और अँगूठे से कसता हुआ पृष्ठ भाग से जरब मारे तो यह बोल निकलता है। यह कम बजता है।

दोनों हाथों का एक ही साथ का बोल

(१०) घ-ता दाहिने हाथ का और घी बांये हाथ का एक ही साथ बजाया जाय तो 'धा' होता है। यह बोल सम द्योतक है। चीजों का ताल जब इस पर पड़ता है तो तबले का वाद्य अधिक उत्तम प्रतीत होता है। 'ध' का महत्व तबले और मृदङ्ग दोनों ही में समान रूप से पाया जाता है।

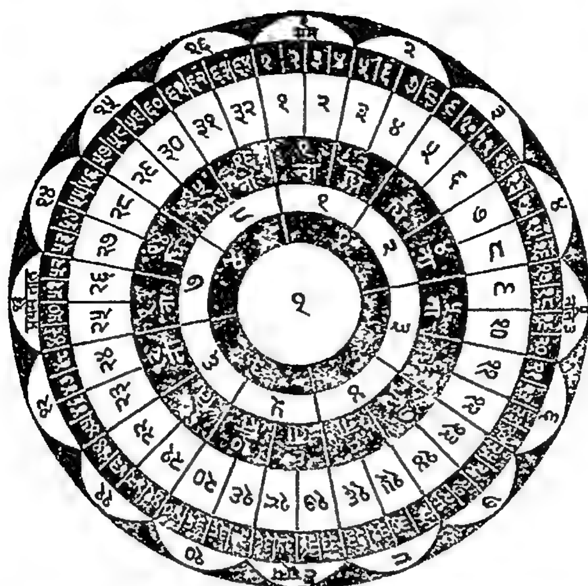
ऊपर के बोल केवल हाथों को ही बदलने के लिये बनाये गये हैं। इनके अलावा इन्हीं वर्णों को साथ जोड़कर इनके विस्तार रूप में और संक्षिप्त रूप में कुछ ऐसे बोल हैं, जिनकी बन्दिश स्वयं सिद्धि की तरह है और वे ही वाद्य के बोल हैं। उन्हीं की लय का प्रस्तार किया जाता है। जैसे तड़ान, 'धित्ता' इत्यादि। यहां एक प्रारम्भिक बोल जो कि श्रीमान् प० श्यामसुन्दर जी गायनाचार्य के अनुज ने सबसे प्रथम मुझे बतलाया था, लिखना आवश्यक समझता हूं।

(बोल, ताल ३ मात्रा १६)

(धा, तेरे, ता, दिं या तुं)

सम				दूसरी ताल				खाली				तीसरी ताल			
×				२				०				३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
धा	धा	तिं	ट्टी	धा	धा	तु	न्ना	ता	ता	ति	ट्टी	धा	धा	तु	न्ना

केवल इसी एक-एक बोल के अभ्यास से सब वर्ण आसानी से निकलने लगते हैं। इसका अभ्यास सन्तोष पूर्वक करे तो अभ्यासी को बड़ी सफलता मिले!



तीन ताल

लेखक—मास्टर श्यामसुन्दर 'सङ्गीत भूषण'

यह ठेका लगभग सभी ठेकों मे अधिक प्रयोगों में आता है। उस्ताद लोग भी सबसे पहिले इसी ठेके को सिखाते हैं। जितनी लग्गियां अभ्यास के लिये सिखाई जाती है, वे सब तीनताल के वजन पर होती है। गुणीजनों का कहना है कि इस ताल के साधन और अभ्यास के उपरांत और सभी प्राचीन तालें आसान हो जाती हैं।

तीन ताल का स्वरूप शास्त्रों मे इस प्रकार मिलता है । ऽ । (लघु गुरु लघु) अर्थात् चार आठ चार, जिससे आशय यह है कि यह ताल तीन टुकड़ों से मिलकर बनी है। पहला टुकड़ा चार मात्रा का, दूसरा आठ मात्रा का और तीसरा फिर चार मात्रा का, इस तरह यह १६ मात्रा का माना जाता है। प्रत्येक टुकड़े की पहिली मात्रा पर उनकी विभक्ति दिखाने के लिये ताली लगाई जाती है। जिनको पहिली ताली (सम) दूसरी ताली और तीसरी ताली कहते है। परन्तु उस्तादों का प्रचलित किया हुआ यह कायदा व्यवहार में आता है कि ताल का जो टुकड़ा और सब टुकड़ों की अपेक्षा बड़ा होता है उसको दो भागों मे बांट कर उस स्थान पर खाली का संकेत रख देते है। इसीलिये तीनताल का आगे दिया हुआ चित्र व्यवहार मे आता है:—

सम				दूसरी ताली				खाली				तीसरी ताली			
×				२				०				३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

आगे तबले में तीन ताल बजाने के कुछ क़ायदे दिये जाते है। ज्यों-ज्यों गवैया की लय तेज़ होती जाती है, ठेके के बोल भी संक्षिप्त होते जाते हैं। इसलिए हमनें विलम्बित मध्य तथा द्रुत तीनों लयों में योग्य ठेके दिये है। उन्हीं ठेकों के नीचे कुछ मुखड़े, टुकड़े, तिए, परन इत्यादि भी लिखे है जो उन्हीं मात्राओं से लगेंगे जिनके नीचे वे लिखे हुए हैं।

	×				२				०				३			
मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
विलंबित	धा	धिं	धिं	धा	धाधा	तिरकिट	धिं	धा	ता	तिं	तिं	ना	धाधा	तिरकिट	धिं	धा
मध्य	धा	धिं	धिं	ना	तागे	धिं	धिं	ना	ता	तिं	तिं	ना	तागे	धिं	धिं	ना
द्रुत	ना	धिं	धिं	ना	ना	धिं	धिं	ना	ना	तिं	तिं	ना	ना	धिं	धिं	ना

दुगुन के काम—मुखड़ा खाली से

०				३				×
धाधा	तूना	तिरकिट	तकतिर	किटतक	तिकट	तकतक	तिरकिट	धा
धागे	तिता	कत्तक	तिरकिट	तागे	धिन	नधि	नन	धा
धिना	तूना	किटतक	तातिर	किटतक	तिरकिट	तकधिर	किटतक	धा

मुखड़ा सम से

×				२				०			
धेत्	धेत्	धिट	धिट	कृधा	किट	तागे	तिट	कता	ताधा	–न	धा–
तिकतिक	तिनगिन	तिकतिक	तिनगिन	धाधा	क्ड़ां	धाधा	तूना	धा	क्ड़ां	धाधा	तूना

३			
धागे	तिट	गिद्	गिन
धा	क्ड़ां	धाधा	तूना

तीये खाली से

०				३				×
धीना	तिरकिट	धा	धीना	तिरकिट	धा	धीना	तिरकिट	धा
धाधा	क्ड़ां	धा	धाधा	क्ड़ां	धा	धाधा	क्ड़ां	धा
क्ड़ां	धातिर	धा	क्ड़ां	धातिर	धा	क्ड़ां	धातिर	धा

तोड़ा सम से तीन वार

×	२	०	३
धीट धातिर किटधा तिरकिट	धा ऽ धीट धातिर	किट धा तिरकिट धाऽ	धीट धातिर धिटधा तिरकि
धा (सम का)			

त्रिताल की परनें

धागे नधा तिरकिट धिन	गिन धागे तिना कत्ता	तागे नता तिरकिट तिन	गिन धागे तिना कत्ताटा
धीक धीना तिरकिट धीना	धीना तिरकिट धिक गिन	तीकतीना तिरकिट तीक	धीना तिरकिट धिन गिन
धातिर किटतक धातिर किटतक	धातिर किटतक तूना कत्ता	तातिर किटतक तातिर किटतक	धातिर किटतक तूना कत्ता
धातिर किटधिं नागे धिन	गिन धागे तिना कत्ता	तातिर किटधि नागे धिन	गिन धागे तिना कत्ता

परन त्रिताल नं० २ (लेखक श्री० 'चक्रवर्ती')

×				२			
धातिर	किटतक	धातिर	किटतक	धातिर	किटतक	तूना	किडनग
०				३			
तातिर	किटतक	तातिर	किटतक	धातिर	किटतक	तूना	किडनग

नं० ३

×				२			
धागे	नधा	तिरकिड	धिन	धिन	धागे	नधा	तिरकिड
०				३			
तागे	नधा	तिरकिड	तिन	धिन	धागे	नधा	तिरकिड

नं० ४

×				२			
धाधा	ऽधा	तिरकिड	तकता	धिड़ान्	धाधा	तूना	किडनग
०				३			
तिरकिड	तकता	तिरकिड	नगतक	धिड़ान्	तकधि	ड़ानत्त	धिड़ान

नं० ५

×				२			
धिधि	तिरकिट	धिटतिट	धिनतिट	कधिट	धानधा	तिटकता	गदिगिन
०				३			
त्रित्तागि	न्नधि	त्तगिन्न	धित्ता	कड़धान	धाऽ	तिटकत	गदिगिन

नं० ६

×			
धिनकधि	नकधिन	धातिरकिट	धिनकधिन
२			
तिरकिडनगतक	तिरकिटधिनक	धातिरकिटतक	तूनाकिडनग
०			
तिनकति	नकतिन	तातिरकिट	तिनकतिन
३			
तिरकिडनगतक	तिरकिटतिनक	धातिरकिटतट	तूनाकिटनग

नं० ७

×				२			
धातीं	ऽधा	तिरकिड	धाती	धातिर	किडधा	तूना	किडनग
०				३			
तिरकिड	नगतक	तिरकिड	धाती	धातिर	किडधा	तूना	किडनग

नं० ८ आड़ीलय

×				२			
धाऽ	धिनक	तकिट	धिनक	धातिरकिट	धिकिट	धिन	गदिगिन
०				३			
नगन	नगन	तगन	तगन	धातिरकिट	धिकिट	धिन	गदिगिन

यह कुछ परनें जो ऊपर बताई गई हैं, इनकी पूर्णतया तैयारी होजाने से तबला बजाने मे कोई अड़चन नहीं पड़ती। अब खाली से (आठ मात्रा से) और सम से कुछ तीये नीचे लिखता हूँ।

तीया त्रिताल नं० १ खाली से

०				३			
कत्तक	तिरकिट	धा	कत्तक	तिरकिट	धा	कत्तक	तिरकिट

तीया नं० २

०			
धातिरकिटतक	तातिरकिटतक	तक्डां	धाधातिडान
३			
किटतक	तक्डांधा	धातिरकिटतक	तक्ड़ान्

तीया नं० १ सम से

×				२			
धिटतिट	घिडनग	तकधि	ड़ानतक	धा	आ	धिटतिट	धिडनग
०				३			
तकधि	ड़ानतक	धा	आ	धिटतिट	घिडनग	तकधि	ड़ानतक

तीया नं० २

×	२	०	३
धा गिन गदि गिन	धा धा गदि गिन	गदि गिन धा धा	गदि गिन गदि गिन

सोलह मात्रा के अन्य जितने भी ठेके है। उन्हे त्रिताले के अनुयायी ही समझना चाहिये, नीचे सोलह मात्रा वाले कुछ ठेके और दिये जाते है।

ताल (ठेका) जल त्रिताल

मात्रा १६, ताली ३, खाली १, भाग ४

×				२				०				३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
धा	ऽक्ड	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	क्ड	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं

इस ठेके को "तिलवाडा" भी कहते हैं। इसे अति विलम्वित लय में वजाना चाहिये।

ताल (ठेका) ठुमरी

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
धा	ऽधीं	ऽक्ड	धिं	धागे	धाधीं	ऽक्ड	तिं	तां	ऽधीं	ऽक्ड	धिं	धाऽ	क्डधीं	ऽक्ड	धिं

कोई-कोई इसे पंजावी ठेका कहते है।

तीन ताल के मुखड़े और टुकड़े (श्री भगवतसरन मेरठ)

मुखड़ा तीन ताल

×	२	०	३
धी ना तक तूना	किट तक ता तिर	किट तक तिर किट	तक ता तिर किट
धा ऽ तिर किट	तक ता तिर किट	धा ऽ तिर किट	तक ता तिर किट

टुकड़े तीन ताल (१)

×	२	०	३
धा धा ति ट्टे	धा धा तू ना	ता ता ति ट्टे	धा धा तू ना
धा धा तिर किट	धा धा तू ना	ता ता तिर किट	धा धा तू ना

(२)

× धा तिर घिड़ तक	२ धिर धिर घिड़ नक	० धा तिर घिड़ नक	३ तू ना किड नग
तिर तिर किड नग	तिर तिर किड नग	धा तिर घिड़ नघ	तू ना किड नग

(३)

× घिड़ नग ना तिट	२ घिड़ नग तिग नग	० तिट घिड नग तिट	३ घिड नग तिग नग
धा घिड नग धा	घिड नग तिग नग	धिर धिर धिर धिर	घिड़ नग तिग नक

(१) गत १६ मात्रा

× धातृक धिनक धिन	२ तक धिन तूना कत	० ता तृक तिनक तिन	३ तक धिन तूना तक

(२) गत ३२ मात्रा

× धा तृक धिनक धिन	२ तक धिन तूना कत	० तक धिन तक धिन	३ तक धिन तूना कत
ता तृक तिनक तिन	तक धिन तूना कत	तक धिन तक धिन	तक धिन तूना कत

(३) गत १६ मात्रा

× धागे धिन धिन धागे	२ धिन धागे किन किन	० तागे किन किन धागे	३ धिन धागे धिन धिन

(४) सिर्फ आठ मात्रा का टुकड़ा—खाली से सम तक

० दीं दीं तकिट तकिट	३ धातृक धाकिट कत गदिगिन	× धा ....

(१) आड़ीलय

× धाऽ धिनक तनिक धिनक	२ धातिरकित धिकिट धिन गदिगिन

०				३			
नगन	नगन	तकिट	धिनक	धातिरकिट	धिकिट	धिन	, गदिगन

(२) ऊपर वाली आड़ की दून

×				२			
धाऽगधि	नकधिन	तकिटधि	नकधिन	धातिरकिट	धातिटगिन	धिनगिन	गदिगिन
०				३			
नगनन	गननक	तकिटधि	नकधिन	धातिरकिट	धातिटगिन	धिनधिन	गदिगिन

[३]

२	०	३	×
धाऽतिट धाधातिट	धिड़ नग दींऽ तक	तागे तिर किट तक	धिन कधि नक धिन
२	०	३	
धेधे नाना धिंऽतक	धाऽधिड नगतिर किटतक तिन	धिरधिर किटतक तातिर किटतक	

[४]

×	२	०
धिध् धिध्तृक धिध्	धिट धिटकिड़ धातिट	कत्ता घेघे तिटकत्ता
३		
घेघे तिट कत्ता गदिगिन		

चौताला मात्रा १२

यह गम्भीर और मस्त ठेका है। इसे ध्रुपद का ठेका भी कहते हैं। देवताओं की स्तुति, प्रार्थना आदि इसी ठेके में बांधकर बजाई जाती है। वास्तव में यह मृदङ्ग का ठेका है किन्तु वर्तमान समय मे तबला में भी इसे खूब बजाने लगे है!

३ प्रकार के बोलों का नक्शा

चौताला मात्रा १२

	×		०		२		०		३		४	
मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	६	१०	११	१२
बोल (१)	धा	धा	दिन	ता	किट	धा	दिन	ता	तिट	कत	गदि	गिन
,, (२)	धिन	धा	धा	धिन	ता	कत	तग	तिन	ता	तिट	कत	गद
,, (३)	धा	धिन	नक	तृक	तिन	तक	धिन	धिन	तृक	तिट	कत	कड़ान

१—मोहरा सम से सम तक

×		०		२	
धागेतेटे	तागेतेटे	किटकधि	किटधागे	तेटेधागे	तूनाकत्ता
०		३		४	×
गदिगन	धातृक	तेटेगदि	गनधा	तृकटत	गदिगन (धा)

२—मोहरा सातवीं मात्रा की खाली से दूसरी आवृत्ति की सम तक

०		३		४	
धीनधीन	धागेतेटे	तागेतेटे	तागेतेटे	तिटकट	गदिगन
×		०		२	
धागेतूना	धागेतूना	तृकधित्	धागेतूना	किडनग	त्रकनग
०		३		४	×
गदिगन	धाक्डान्	धा	धाक्ड़ान्	धा	धाक्ड़ान् (धा)

३—रेला सम से सम तक

×		०	
धिनकधिनकतिट	धागेतेटेधागेतेटे	तिनकतिनकतिन्	तागेतेटेतागेतेटे
२		०	
धागेनागेतूनाकत्ता	त्रकधीनत्रकधीन	धागेनागेतूनाकत्ता	किडनगतूनाकत्ता
३		४	
त्रकतागेतेटेतागे	धिनकधिनकधागे	तिनकतिनकतागे	किटक्डांकिटक्डां

४—तिहैया चौताले का (पांचवीं मात्रा से सक तक)

२		०		३		४		×
तिटकत	गदिगन	धा	तिटिकत	गदिगन	धा	तिटकत	गदिगन	(धा)

५—परन २ आवृत्ति, सम से सम तक (चौताला)

× धूमकेटे	धूमकेटे	० केटेकेटे	धूमकेटे	२ केटेकेटे	धूमकेटे	० केटेधूम	केटेकेटे	
३ धूमकेटे	धूमकेटे	४ केटतक	धूमकेटे	× धूमकेटे	कत्ताता	० धूमकेटे	केटेधाके	
२ टेधाकेटे	केटेकेटे	० धूमकेटे	तक्डां	३ धा	तक्डां	४ धा	तक्डां	× (धा)

इस प्रकार २४ मात्रा में २ आवृत्ति करके दूसरी सम (× धा) पर आ जाओ।

परन (पांचवीं मात्रा से आरम्भ करके)

२ धकिटत	काऽकिट	० त्रकधूम	त्रकधूम	३ तकिटत	काऽकिट	४ तकतक	तिरकिट
× किटकिट	धागेतिट	० त्रकदिन	तूनाकिट	२ गदिगिन	धागेदिन	० दिनदिन	त्रकधीन
३ त्रकधीन	धा	४ त्रकधीन	त्रकधीन	× (धा			

परन तीसरी मात्रा (खाली) से

० धगिन्न	तगिन्न	२ तागेनागे	तूनाकत्ता	० तगिन्न	धगिन्न
३ तागेनागे	तूनाकत्ता	४ तागेतेटे	तागेतेटे	× धागेनागे	तूनाकत्ता
० धिधनक	कडानधा	२ त्रकधूम	कडानधा	० धिन्नक	किटकिट
३ तिन्नक	किटकिट	४ तकाकिट	गदिगन	× (धा)	

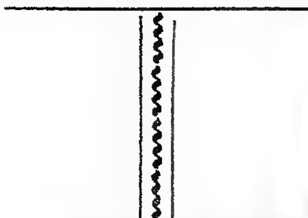
परन ग्यारहवीं मात्रा (भरी) से

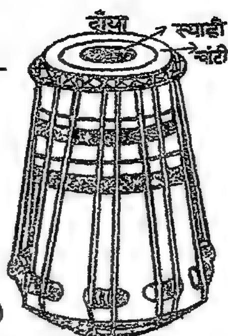
४ धागेतिर	तिरकिट	× धागेनागे	तूनाकत्ता	० तागेतिर	तिरकिट	२ धागेनागे	तूनाकधा
० त्रकधिन	त्रकधिन	३ धागेनागे	तूनाकत्ता	४ त्रकधिन	त्रकधिन	× (धा)	

परन सम से सम तक ३ आवृत्ति की (मात्रा ३६)

× धिरकिट	धिरकिट	० धागेनागे	तूनाकत्ता	२ तिरकिट	तिरकिट
० तागेनागे	तूनाकत्ता	३ त्रकधिन	नागेदिन	४ किटकिट	धागेधिन
× धागेधागे	तागेनागे	० तेटेकेटे	गदिगन	२ तागेनागे	तागेनागे
० तिटकत	गदिगन	३ धागेनागे	गदिगन	४ त्रकधूम	त्रकधूम
× धगिन्न	त्रकधूम	० गदिगादि	धागेतूम	२ तागेतूम	तक्डान
० धा	धागेतूम	३ तक्डान	धा	४ धागेतूम तक्डान्	× (धा)

एकताल मात्रा १२







(ले०-श्रीयुत, भट्ट पद्मनाभ चक्रवर्ती)

एक ताल को संस्कृत में 'वर्णयति' इस नाम से कहा है। 'एक ताल' उस ताल का नाम है जो कि तबले पर बजाई जाती है। पखावज पर बजने वाली बारह मात्रा की ताल को चौताला कहते हैं। वास्तव में नाम भी चौताला ही ठीक है, क्योंकि "चार हैं ताल जिसमें" और एकताल कहें तो इसमें एकताल तो है ही नहीं, अतः यह भी स्पष्ट है कि एक ताल वाला कोई अन्य ठेका अवश्य है, अस्तु ('एकताल) ध्रुवपद (धुरपद) में नियुक्त है यानी इसकी उत्पत्ति धुरपद ताल से हुई है, ऐसा प्रमाण भी कहीं-कहीं मिलता है।

मैंने भी कुछ खोज करने के पश्चात् एक प्राचीन ग्रन्थ में देखा तो केवल इतना ही मिला कि ध्रुवपद-(धुरपद) की उत्पत्ति "निसार" ताल से हुई है, किन्तु यह पता नहीं लगा कि निसार ताल है भी या नहीं, अगर है तो इसका क्या स्वरूप है।

एकताल धुरपद में स्थिर है। इसका प्रमाण निम्न लिखित शिखरिणी गम्भीर वाणी से दे रही है। यथाः—

"चतुस्तालोलोके विदित इह यो द्वादश कला। स शास्त्रेत्पुक्तोवा, वर्णयंति-किरशंक सुधियः॥ लघू यत्रादौ द्वौ, तदनुकथितं तद्रुतयुगं, निघाताश्चत्वारो, ध्रुवपद नियक्तो विजयते"।

ठेका एक ताल मात्रा १२

×		०		२		०		३		४	
धी	धी	ना	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धी	त्रक	धी	ना
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

प्रकार नं० २ एक ताल

×		०		२		०	
धीक्ड़	धिंधिं	धागधाग	धिनधिन	तीक्ड़	तीना	तिरकिटतूना	किड़नग
३		४					
धातिरकिट	धिनधिन	तातिरकिट	धिनधिन				

मुखड़ा सम से नं० १

× कत्ति नानाकिट	० धिंतिरकिट धिंधिं	२ नकधिं नानाकिट	० धांकिट नकधिं
३ नानाकिट धाकिट	४ नकधिं नानाकिट		

मुखड़ा नं० २

× किटतक गदिगिन	० धिङनग धिनधिन	२ धिनधागे नधागेन	० धाकिट धिनधागे
३ नधागेन धाकिट	४ धिनधागे नधागेन		

मुखड़ा नं० ३ खाली से (तीसरी मात्रा से)

० धिटतिट धिड़नग	२ तकधि ड़ानतक	० धा तकधि	३ ड़ानतक धा	४ तकधि डानतक

मुखड़ा नं० ४, तीसरी मात्रा से

० धातिरकिटतक तातिरकिटतक	२ तूना किडनग	० धिड़ान्न धिड़नग
३ तकधिडानतक धातकधिड़ा	४ नतकधातक धिड़ानतक	

परन नं० १

× धिनधिन धागेतिरकिट	० धिनधिन धिनधिन	२ धिनधिन धागेतिरकिट
० तिनधिन तागेतिरकिट	३ धिनधिन धिनधिन	४ धिनधिन धागेतिरकिट

परन नं० २

× धातिरकिटतक धिटतिटधिडनग	० धातिरकिटतक धातिरकिटतक	२ धातिरकिटतक
धिटतिटधिडनग	० तातिरकिटतक धिटतिटधिडनग	३ धातिरकिटतक

धातिरकिटतक	४ धातिरकिटतक धिटतिटघिडनग	

परन नं० ३

× धागेतिट गदिगिन	० धागेतिट धागेतिट	२ धागेतिट गदिगिन
० तागेतिट गदिगिन	३ धागेतिट धागेतिट	४ धागेतिट गदिगिन

परन नं० ४

× धिटधागे नधातिरकिड	० धिटधिट घिडनग	२ धिटधागे नधातिरकिट
० तिटधागेनधातिरकिड	३ धिटधिट घिडनग	४ धिटधागे नधातिरकिट

परन नं० ५

× धागेतिट गदिगिन	० धागेनागे तूनाकत्ता	२ धागेनागे तूनाकत्ता
० त ागेतिट गदिगिन	३ धागेनागे तूनाकत्ता	४ धागेनागे तूनाकत्ता

परन नम्बर ५ की दून करके बजाने में अच्छी लगेगी। इनकी दून इस प्रकार करनी चाहिये कि एक खाने का बोल एक मात्रा में आजाय।

× धागेतिटगदिगन धागेनागेतूनाकत्ता	० धागेनागेतूनाकत्ता तागेतिटगदिगन
२ धागेनागेतूनाकत्ता धागेनागेतूनाकत्ता	० धागेतिटगदिगिन धागेनागेतूनाकत्ता
३ धागेनागेतूनाकत्ता तागेतिटगदिगिन	४ धागेनागेतूनाकत्ता धागेनागेतूनाकत्ता

इसी प्रकार नं० ३ को भी कर लेनी चाहिये। परन में ठेका की २ आवृत्ति आ जाती हैं।

परन नं० ६ आड़ीलय—

× धाऽगेनधा	धाधागेना	० धाधा	धिनधा	२ धागेतिट	गदिगन
० तागेनताऽ	त्तागेन	३ ताता	तिनता	४ धागेधाऽ	ध्धागेन

तीया सम से नं० १

× धागेतिट	गदिगिन	० तागेतिट	किड़ान्	२ धागेधातिट	गदिगन
० तागेतिट	किड़ान्	३ धागेतिट	गदिगिन	४ तागेतिट	किड़ान्

तिया नं० २

× तक	तूना	० किडनग	तिरकिड	२ नगतक	तिरकिड	० धात्तक
३ तिरकिडधा		४ त्तक	तिरकिड	यह तिया अति विलम्बित लय में सातवीं मात्रा से दून मे आ जाता है।		

तिया नं० ३

× कत्	तूना	० किडनग	तिरकिड	२ तकधि	ड़ानतक	० धाऽतकधि
३ ड़ानतक	धाऽ	४ तकधि	ड़ानतक			

अब यहां एकताले का अद्धा ठेका दिया जाता है।

अद्धा ठेका एकताला

× धार्ति	धाग	० तीना	कर्त्ति	× धाग	धीना

यह छै मात्रा मे है, इसलिये इस पर ताल चिन्ह दादरे के लगाये गये हैं। एक-एक अक्षर की मात्रा करके एकताले की ताल-काल पाठक स्वयं लगालें।

———

झपताल मात्रा १०

ठेका झपताल

	×		२			०		३		
मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
बोल	धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना

इस ताल को संस्कृत में "उद्विरोद्द ताल" कहते हैं। बहुत से मनुष्य इसी ताल को झंपा, गजझंपा इत्यादि नामों से भी पुकारते हैं। इसके प्रकारादि आगे दिये जाते हैं।

प्रकार नं० १

×		२			०		३		
धी	नाना	धीक्ड़	धीधी	नाना	ती	नाना	धीक्ड़	धीधी	नाना

प्रकार नं० २

×		२			०		३		
धि	धिताकता	धीक्ड़	धिंधि	धिताकता	ति	तिंताकता	धिक्ड़	धिंधि	धिताकता

मुखड़ा खाली से नं० १

०		३			×
तातिं	ताताति‍न्ना	ताताति‌तिं	ताकिडनगतक	तिरकिड	धिं

मुखड़ा खाली से नं० २

०		३		
धिटतिटघिडनग	धातिरकिटतक	तूनाकिडनग	तातिरकिडतक	तकघिड़ानतक

मुखड़ा सम से नं० ३

×		२		
ताताति‍रकिड	तातिरकिडतक	तिरकिडतकता	तिरकिडघेत्	धाऽ
०		३		
तिरकिडतकता	तिरकिडघेत्	धाऽ	तिरकिडतकता	तिरकिडघेत्

यहां 'घेत्' यह अक्षर तबले पर (दाहिने पर) केवल तर्जनी से स्याही के बीच में खिसलमा मारने से निकलता है। इसके साथ डग्गा अवश्य बजाना चाहिये।

मुखड़ा सम से तीया सहित नं० ४

× धाकिटतक	धाकिटतक	२ धातिरकिटतक	तातिरकिटतक	तक्ड़ां	
० धाधातिर	किटतकतक	३ किटतक्ड़ानधा	धातिरकिटतक	तक्ड़ां	× (धा)

इस परनान्तरगत मुखडे मे "धाकिटतक" यह इस प्रकार निकालना चाहिये—"धा" पूर्व विधि से दाहिने वांये मे मिलाकर निकालिये यह बोल डग्गे पर नहीं निकलेगा। इसे तबले (दाहिने) की स्याही पर मध्यमा, अनामिका दोनों से ही तिट्टी की "ति" के समान निकालना चाहिये और "ट" "तिट्टी" की 'टी' के समान निकलेगा। 'तक' इस शब्द मे त, यह अलग तबले की स्याही पर नहीं निकलेगा। 'तक' ये दोनों अक्षर मिलाकर एक ही बोल समझना चाहिये। 'धाकिट' बजाने के पश्चात् डग्गे पर तिरकिट की "की" के समान थाप मारने मे 'तक' यह बोल निकल आता है और इन्हे इसी प्रकार से ही निकालना चाहिये।

परन (बोल) नं० १

× धागे	तिट	२ धागे	धागे	तिट	० तागे	तिट	३ धागे	धागे	तिट

इस परन को भी दून करके बजाना चाहिये। मात्रा और ताल काल भी दून के हिसाब से लगा लेना चाहिये, अथवा निम्नलिखित परन नं० २ के हिसाब से दून कर लेना उचित होगा।

परन नं० २

× धातिरकिट	धागेनधागे	२ तूनाकत्ता धिनधागे तूनाकत्ता	० तातिरकिट	तागेनतागे
३ तूनाकत्ता	धिनधागे	तूनाकत्ता		

परन बोल नं० ३

× धागेतिट गदगिन	२ धागेतिट धागेतिट गदगिन	० तागेतिट तदिगिन	३ धागेतिटधागेतिट	गदिगिन

दून—

× धागेतिटगदिगिन	धागेतिटधागेतिट

२		
गदिगिनतागेतिट	गदिगिनधागेतिट	धागेतिटगदिगिन

०	
धागेतिटगदिगिन	धागेतिटधागेतिट

३		
गदिगिनतागेतिट	गदिगिनधागेतिट	धागेतिटगदिगिन

परन नं० ४

×	२	०	३
धिधि तड़ान्	धरधिरकत् धिरधिरकत् तिट	घिड नग	तक धिनतक घेघेतक
×	२	०	
घिडतूना किडनग	तकधिन तकधिन धाऽ	तकधिन तकधिन	
३			
धाऽ तकधिन तकधिन			

यहां 'तकधिन' मे धिन स्याही का निकालिए। यह परन दो आवृत्ति की है। किन्तु इसकी इतनी तैयारी होनी चाहिए कि दून में आजाय।

तीया सम से नं० १

×	२
गदिगिन धातिरकिटतक	गदिगिन धातिरकिटतक नगधिरकिटतक
०	३
किटतकनग धिरकिटतकधा	गदिगिन धातिरकिटतक नगधिरकिटतक

तीया खाली से

०	३
धगत्त किटधा तिटकतागदिगिन	धाऽतिटकता गदिगिनधा तिटकतागदिगिन

यह तीया विलम्बित लय में ही खाली से आता है। अन्यथा सम से ही आवेगा।

यहां तिटकता में ता, यह चांटी पर न निकालकर थाप के समान निकालने की कोशिश करें। दस मात्रा में एक ठेका इसी का अनुयायी है, एवं बजाने के काम में भी आता है, अतः उसे भी यहां लिखना उचित है।

ठेका सूलफाक्ता

मात्रा १०, ताल ३, खाली २, भाग ५

०		०		२		३		०	
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
धी	धी	धागे	तिरकिट	तू	ना	ता	धी	धी	ना

इस ठेके की और झपताल के ठेके की मात्रा तो दस-दस ही हैं, किन्तु चाल और ताल के बोलों मे अन्तर है, इस ठेके को विलम्बित लय के हिसाब से लिखा गया है, अतः तू, के आगे अवग्रह है। द्रुतादि लयों मे अवग्रह का लोप कर देना चाहिए। झपताल का अद्धा ठेका निम्नलिखित, परिकल्पित ही समझ लेना चाहिए।

ठेका अद्धा झपताल

मात्रा ५, ताल १, खाली १, भाग २

०		२		
१	२	३	४	५
धीना	धीना	क्ता	तीना	तीना

इसे खाली से ही उठाना ठीक है। एवं इसी प्रकार से ताल लगाई गई है। किन्तु सम से उठाने में भी हर्ज नहीं है।



आड़ा चौताला

ठेका आड़ा चौताल—

मात्रा १४, ताल ४, काल ३, भाग ७

×		२		०		३		०		४		०	
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
धी	धी	धागे	तिरकिट	तू	ना	क	त्ता	धी	धी	ना	धी	धी	ना

प्रकार १—आड़ा चौताला

×		२		०		३	
किटतक	गदिगिन	घिडनग	घिनघिन	घिनधागे	नधागेन	धाऽ	किट
०		४		०			
घिनधागे	नधागेन	धाऽ	किट	घिनधागे	नधागेन		

प्रकार—२

× धिनतिट धिनधा	२ कधेत्ता धिनतूना	० किडनगतिरकिड धाधातिरकिड	३ धिटधागे नधातिरकिड
० धाऽ ध्धिटधागे	४ नधातिरकिड धाऽ	० ध्धिटधागे नधातिरकिड	

अगर खाली से मुखड़ा लगाने हों तो आठ मात्रा के बाद ६ वीं मात्रा से अर्थात् दूसरी खाली से दादरे के तरह मुखड़ा लग्गी तीया लगा देने चाहिये, एवं निम्नलिखित प्रकार से भी समझने चाहिये।

० धाकिटतक धाकिटतक	४ धाऽ घेघेनाना	० घेघेनाना धाकिटतक

मुखड़ा—

० धिरधिरकत धाऽ	४ तागेनाना नानानाना	० तिटकता गदिगिन

आड़ा चौताला की परन भी दीपचन्दी के समान बन जाती है, यथा—

× धाधाध्धा तिरकिटतकत्ता	२ तकधिडानधा धिटतिटधिडनग
० तकधिड़ानतक तूनाकत्	३ तिरकिडनगतागेनतक तकधिड़ानतक

ये त्रिताले की सोलह मात्रा की भी परन होगई, इसे त्रिताले में आनन्द से वजा सकते हैं। और पिछली दो मात्रा से निम्नलिखित तीया मारने से १४ मात्रा की हो जाती है।

० धाऽ तिरकिडनगतागेनतक	४ तकधिड़ानतक धाऽ	० तिरकिडनगतागेनतक तकधिड़ानतक

परन नं० २

× धागेतिट गदिगिन	२ नागेतिरकिड तूनाकत्ता	० तागेतिट धागेनधा	
३ तिरकिटधिन गदिगिन	० धाऽतिरकिटधिन	४ गदिगिन धाऽ	० तिरकिटधिन गदिगिन

परन नं० ३

×		२		०	
धातिरकिट	धिकिटधिन	धातिरकिटतक	तातिरकिटतक	तिरकिडनगतक	तिरकिडधाती

३		०		४		०	
धातिरकिडधा	तीधातिरकिड	धाऽ	धातिरकिटधा	तीधातिरकिड	धाऽ	धातिरकिडधा	तीधातिरकिड

परन नं० ४

×		२		०		३	
धाऽघेघे	नकधिन	धिटघेघे	नकधिन	तकतक	धिनतक	धिटघेघे	नकधिन

०		४		०
धिऽ	धिटघेघे	नकधिन	धाऽ	धिट घेघे नकधिन

इसमें तीया दीपचन्दी के लगा सकते हैं, जो कि आगे दिये जारहे हैं।



दीपचन्दी मात्रा १४

यह होली का प्रसिद्ध ठेका है, इसमें १४ मात्रा हैं। ३ भरी और १ खाली।

×			२				०			३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
धा	धिं	ऽ	धा	गे	तिं	ऽ	ता	तिं	ऽ	धा	धा	धिं	ऽ

प्रकार नं० २

×			२				०			३			
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	तिं	तिं	धा	धा	धिं	धिं

प्रकार नं० ३

×			२				०			३			
धाग	धिन	धिन	धाग	धाग	धिन	धिन	धाग	तिन	धिन	धाग	धाग	धिन	धिन

मुखड़ा नं० १ खाली

०			३			
तागे	तूना	किडनग	तातिर	किडनग	तिरकिडनग	तातिरकिड

इस मुखड़े में तिरकिट नग, तातिरकिड यह डेढ़ लय में आना चाहिए।

मुखड़ा नं० २ खाली से

०			३			
तागेतूनाकिडनग	तिरकिडनग	तातिरकिड	धाऽ	त्तातिरकिड	धाऽ	त्तातिरकिड

परन नं० १

×			२			
धातिर	किटतक	धिन	धातिर	किटतक	तूना	किडनग
०			३			
तातिर	किटतक	तिन	धातिर	किटतक	तूना	किडनग

परन नं० २

×			२			
कऽ	तूना	किडनग	तिरकिड	नगधिर	किटतक	धाती
०			३			
किड़ान	धाऽ	धाती	किड़ान	धाऽ	धाती	किड़ान

परन नं० ३

×			२			
धागेनिधा	तिरकिडधिन	धिनधागे	नधातिरकिड	तागेनता	तिरकिडतिन	धिनधागे
०			३			
नधातिरकिड	धाऽ	धिनधागे	नधातिरकिड	धाऽ	धिनधागे	नधातिरकिड

परन नं० ४

×			२			
धिनकधि	नकधिन	धातिरकिडधि	नकधिन	तिरकिडनगतक	तिरकिडधिनक	धातिरकिटतक
०			३			
तूनाकिडनग	धाऽ	धातिरकिटतक	तूनाकिडनग	धाऽ	धातिरक्रिटतक	तूनाकिडनग

तीया नं० १ खाली से

०			३			
धातिरकिटतक	तक्ड़ां	धाधातिर	किटतक्रतक्र	क्ड़ांधा	धातिरक्रिटतक	तक्ड़ांधा

तीया नं० २ खाली से

०			३			
तत्ता	तिरकिटधी	नानाधी	धीनाना	धाऽधी	नानाधा	धीनाना

तीया सम से नं० ३

×			२			
धागेतिट	गदिगिन	नागेतिट	किड़ान	धाऽ	धागेतिट	गदिगिन
०			३			
नागेतिट	किड़ान	धाऽ	धागेतिट	गदिगिन	नागेतिट	किड़ान्

दीपचन्दी का अद्धा ठेका

×			२			
धी	ना	धी	ना	ती	ती	ना

* ताल झूमरा *

ठेका झूमरा

मात्रा १४ ताल ३ काल १ भाग ४

×			२				०			३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
धी	धी	नक	धी	धी	धागे	तिरकिट	ती	ती	नक	धी	धी	धागे	तिरकिट

धमार

धमार पखावज की ताल है, किंतु तबले में भी यह प्रचलित हो गई है।

मात्रा १४ ताल २ खाली १ भाग ३

×					०					२			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क	धि	ट	धि	ट	धा	ऽ	क	ति	ट	ति	ट	ता	ऽ

धमार में बहुधा खाली (काल) देखने में कम ही आते हैं, कहीं-कहीं है और कहीं-कहीं नहीं। जिस पक्ष में काल (खाली) नहीं है, उस पक्ष में इस प्रकार जानना चाहिए—

×					२					३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क	धि	ट	धि	ट	धा	ऽ	क	ति	ट	ति	ट	ता	ऽ

ठेका रूपक

माात्रा ७ ताल २ काल १ भाग ३

०			२		३	
१	२	३	४	५	६	७
तिं	ऽ	त्रक	धिं	ऽ	धा	गे

यह ठेका खाली से शुरू होता है। इसमे 'त्रक' यह अक्षर दाहिने तबले की स्याही पर निकालना चाहिये। मध्यमा अनामिका इन दोनों जुडी हुई उङ्गलियों के आगे के पोरुओ से त्र, यह अक्षर निकालना चाहिये। क, यह अक्षर तर्जनी से वहीं पर (स्याही पर) मारने से निकल आता है। किन्तु इतना स्मरण रहे कि दोनों अक्षर हलके हाथ से और अति शीघ्र निकालने चाहिये। इसी प्रकार एक दूसरा ठेका और भी है। जिसे "पश्तो" इस नाम से व्यवहार में लाते हैं, वह इस प्रकार हैः—

ठेका पश्तो मात्रा ७

×			२		०	
१	२	३	४	५	६	७
त	क	धिं	धा	धा	तिं	ऽ

ठेका गज़ल कव्वाली

मात्रा ८ ताल २ काल १ भाग ४

×		२		०		३	
१	२	३	४	५	६	७	८
धिंध	धा	धा	तिं	ता	धिंध	धा	धिं

इस ठेके में अगर परन लगानी हों तो त्रिताले की लगा सकते हैं।

ताल धुमाली

"धुमाली" के ठेके को ही लावनी का ठेका भी कहते हैं। इस ताल को संस्कृत में "त्रिपुटा" नाम से कहा है। इसकी मात्रा आठ होती हैं।

ठेका धुमाली—

मात्रा ८ ताल ३ काल १ भाग ४

×		२		०		३	
धा	धिं	धा	तिं	तक	धिं	धागे	तिरकिट

इस ठेके मे त्रिताले की ही परन (बोल) लगाने चाहिये। जो परनें छोटी है, वे एक ही आवृत्ति मे आ जावेंगी और जो बड़ी है, उन्हें दो आवृत्ति में बजाना चाहिये।

इसके अतिरिक्त आठ मात्रा का "भजन" का ठेका एक और है। यह ठेका बहुधा हरिकथान्तर्गत भजनों में एवं साधारण भजनो में भी बजाया जाता है। जो इस प्रकार है:—

ताल भजन

मात्रा ८ ताल ३ काल १ भाग ४

×		२		०		३	
धिन	ताधी	नधि	नक	तिन	ताधी	नधि	नक
१	२	३	४	५	६	७	८

इस ठेके में भी त्रिताल के परन लगाने चाहिये। ८ मात्रा के पश्चात अब चार मात्रा वाला कहरवा लिखता हूँ।

ठेका कहरवा

मात्रा ४ ताल ३ काल १ भाग ४

×		०	
धागे	नति	नक	धिन
१	२	३	४

*खड़ नं० १

×		०	
धिनतिट	धिनतूना	किनतिट	धिनतूना

खड़ नं० २

×		०	
धागेनक	नकधिन	तागेनक	नकधिन

* खड़—अन्य तालों मे जिस प्रकार 'परन्' होती है उसी प्रकार कहरवा में 'खड़' होती हैं। अतः इसे परन का ही उपनाम समझिये।

रवड़ नं० ३

× धाधेग्	धातिनक	० तातेग्	धाधिनक

रवड़ नं० ४

× धेतिट	ताघेघेनाना	० केतिट	ताघेघेनाना

रवड़ नं० ५

× धाघिडनग	धिनतूनाकिट	० ताघिडनग	धिनतूनाकिट

रवड़ नं० ६

× धागेनधि	नकधिन	० तागेनति	नकधिन

रवड़ नं० ७

× धिनधागे	नधिनक	० तिनतागे	नधिनक

रवड़ नं० ८

× धिनतिट	धिनधाड़ा	० किनतिट	धिनधाड़ा

रवड़ नं० ९

× धीधीना	तिरकिटधीना	० धाधेग्धेग्	धीनाना
तातीना	तिरकिटतीना	ताधेग्धेग्	धीनाना

(उपरोक्त रवड़ दो आवृत्ति की है)

तोड़ा नं० १

× धागेतिट	कतागदि	० गिनकता	गदिगिन

तोड़ा नं० २

×		०	
किनतागे	नानाकिन	किनकिन	तागेनाना

तोड़ा नं० २ को रवड़ लगाने के पश्चात् ४-६ बार लगाकर पुनः तोड़ा नं० १ लगाकर पूर्व लय के ठेके को ही पकड़ लेना चाहिए।

ताल दादरा, मात्रा ६

दादरे की तालादि युक्त आकृति के दो भेद कहे गए है। पूर्व पक्ष मे तीन-तीन मात्रा के दो भाग किये हैं और उत्तर पक्ष मे दो-दो मात्रा के तीन भाग किए है। पूर्वपक्षी इसका स्वरूप निम्नलिखित बताते है।

×			०			×			०		
१	२	३	४	५	६	धा	धि	न्ना	धा	ति	न्ना

उत्तर पक्षी इस प्रकार मानते हैं।

।		×		०		।		×		०	
१	२	३	४	५	६	धा	धी	ना	धा	ती	ना

इस तरह दो-दो मात्रा के तीन भाग रखते है। साथ ही काल और ताल मे भी अन्तर पड़ जाता है। दादरा वास्तव मे एकताले का ही अङ्ग है। जब एकताले मे दो-दो मात्रे के भाग हैं, तव इसमे भी अवश्य होने चाहिये। दादरे को अगर खण्ड जाति मे सम्मिलित करना है तो उत्तर पक्षियो का ही मत ग्राह्य होगा। अन्यथा इस जाति से प्रथक पूर्वपक्षी मत को मान लें। "संगीत रत्नाकर" मे तीसरा मत प्रगट किया है। रत्नाकर के लेखक ने पहले दो मात्रे का भाग बताया है अर्थात् नभ-द्रुत कहा है और दूसरे भाग मे चार मात्रा हैं। अर्थात् सरल-लघु कहा है। यथाः—

"भाषायामिह दादरेति विदितस्तालोऽस्ति यः षट्कला
सस्पष्टं यतिलग्न इत्यभि धया रत्नाकरे वर्तते ?
पूर्वं यत्र नभस्ततश्च सरलो द्वावेवधातौ स्मृतौ
गीतेषु प्रचलत्सु योऽति मधुरं मार्दङ्गिकैर्वाद्यते" ॥

।		×				।		×			
१	२	३	४	५	६	धी	धी	ता	धा	ती	ना
नभ		सरल				नभ		सरल			

इस स्वरूप से 'खाली' इस ठेके में नहीं है "द्वावेव घातोस्मृतौ" अनेकत्र प्रमाणेन। और जाति में भी अन्तर मान सकते है, क्योंकि खण्ड जाति का यह उदाहरण नहीं है। अस्तु, शास्त्रार्थ तो अत्यधिक है, किन्तु लेख के विस्तृत होने के भय से लिखने में असमर्थ हूँ। अब आप लोगों के सन्मुख तीनों मत रख दिये गये है, जो भी अभिलाषित हो उसे लेकर कार्य करें। हां, रत्नाकरकार का मत प्राचीन होने से हम आर्य कह सकते हैं! किन्तु ज्यादातर उपयोग में नहीं आता है। अब दादरे के प्रकार मुखड़ा लग्गी (परन) इत्यादि लिखता हूँ। दादरे में (बोल) को लग्गी कहते हैं, यहां दादरे के मुखड़ों आदि में ताल काल और भाग उत्तरपक्षी के हिसाब से लगाऊँगा, क्योंकि मेरी समझ में उत्तर पक्ष ही ठीक बैठता है।

ठेका दादरा—

मात्रा ६ ताल २ खाली १ भाग ३

। १	२	× ३	४	० ५	६	। धा	धी	× ना	धा	० ती	ना

प्रकार—१

। धाकिट	धिंधि	× नागे	धाकिट	० तिंतिं	नागे

प्रकार—२

। धाकिट	धिंधि	× नानाकिट	ताकिट	० तिंतिं	नानाकिट

मुखड़ा सम से

। तकतूना	किडनगतिरकिट	× नगतकतिरकिड	धात्तक	० तिरकिडधा	त्तकतिरकिड

मुखड़ा तीया सहित

। तिरकिडनगता	तिरकिडतकधिड़ान	× तकतिरकिड	धात्तकधिड़ातक
० तिरकिडधात्तक	घिड़नतकतिरकिड		

लग्गी दादरा १

। धाग	धिन	× धिन	धाग	० तिन	धिन

लग्गी दादरा २

׀ धाधिड नगधिन	× तूनाकिट ताधिड़	० नगधिन तूनाकिट

लग्गी ३

׀ घिडनक घिडनग	× घिटतिट घिडनक	० तकघि ड़ानतक

लग्गी ४

׀ घिघिनक घिघिनक	× घिनतूना क्डिनग	० तकघि ड़ानतक

लग्गी ५

׀ घिडान्न घिडनग	× घिनतक तिरकिड	० धाऽ	׀ घेघेता घेघेता	× घेघेता घेघेता	० घिडान्न घिडनक

इस परन को भी दो आवृत्ति में बजाना चाहिये। तैयारी के पश्चात् एक आवृत्ति में बजाने से अत्यन्त खूबसूरती आ जाती है।

तीया दादरा १

׀ धिनधिन धागेतिरकिट	× तककिन नतक	० क्डिानतक क्डिान

तीया दादरा २

׀ घिडान्न घिडनक	× धिनतूना किडनग	० घिडनग घिडनग
׀ धा घिडनग	× धिनतूना किडनग	० घिडनग घिडनग

उपरोक्त परन भी दो आवृत्ति की है, किन्तु एक आवृत्ति मे ही बजानी चाहिये।

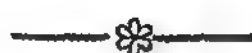
ठेका नकटा दादरा	׀ धा धि	× नके धा	२ त्ति नके

इसी ताल का दूसरा भेद

×	०
धाध्धिनके	तात्तिनके

ठेका भड़ौवा दादरा

×		०	
तक	धिन्नक	तक	तिन्नक



तीया

गदि	गिन	धा	गदि	गिन	धा	गदि	गिन	धा
१	२	३	४	५	६	७	८	६

इस तीये को प्रत्येक ताल में बैठाने की रीति

जब यह तीया किसी ताल में लगाना हो तो पहिले उस ताल की मात्राओं को सम से सम तक गिन लीजिये। जितनी मात्रा हों उनमें से इस तीये की ६ मात्रा घटा दीजिये, जो संख्या बाकी बचे, उतनी ही मात्रा छोड़कर इसे आरम्भ कर देना चाहिये इस प्रकार उपरोक्त तीया का अन्तिम 'धा' सम पर आ जायगा। जैसे तीनताल (मात्रा १६) की सम से सम तक १७ मात्रा होती है, उनमें से उपरोक्त तीया की ६ मात्रा घटा दी गईं तो ८ बाकी बचे, बस! तिताला में ८ मात्रा छोड़कर यह तीया शुरू किया जायगा। इसी प्रकार अन्य तालों में भी इसे आसानी से बैठा सकते हैं। उदाहरणार्थ कुछ तालों में उपरोक्त तीया लगाकर बताया जाता है:-

तीनताल मात्रा १६ में तीया बैठाने की रीति

	×				२				०				३				×
बोल	ना	धी	धी	ना	ना	धी	धी	ना	ता	ती	ती	ना	ना	धी	धी	ना	दूसरी सम
मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	६	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	
तीया	८ मात्रा छोड़कर………………								गदि	गिन	धा	गदि	गिन	धा	गदि	गिन	(धा)

एकताल मात्रा १२ में तीया।

	×		०		२		०		३		४		×
बोल	धी	धी	ना	तृक	तू	ना	क	त्ता	धी	तृक	धी	ना	दूसरी सम
मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	
तीया	··	······	······	······	गदि	गिन	धा	गदि	गिन	धा	गदि	गिन	(धा)

इसी प्रकार ४ मात्रा छोड़कर १२ मात्रा की सभी तालों में इसे बजा सकते हैं।

झपताल मात्रा १०

	×		२			०		३			×
बोल	धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना	दूसरी सम
मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	
तीया	······	·····	गदि	गिन	धा	गदि	गिन	धा	गदि	गिन	(धा)

दीपचन्दी मात्रा १४

	×			२				०			३				×
बोल	धा	धी	ना	धा	धा	धी	ना	ता	ती	ना	धा	धा	धी	ना	दूसरी सम
मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	
तीया	·········	·····	·····				गदि	गिन	धा	गदि	गिन	धा	गदि	गिन	(धा)

इसी प्रकार ६ मात्रा छोड़कर १४ मात्रा की सभी तालों में इसे ले सकते हैं।

ताल कहरवा मात्रा ८

	×				०				×
बोल	धा	गी	ना	ती	ना	गे	धि	न	
मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	
तीया	गदि	गिन	धा	गदि	गिन	धा	गदि	गिन	(धा)

कहरवा या अन्य ८ मात्रा की ताल में तो यह तीया सही बैठेगा ही। सम से आरम्भ कर दीजिये दूसरी सम पर जा डटेगा।

उदाहरण के लिये यह ताले काफी हैं, इसी प्रकार चाहे जिस ताल में यह तीया लिया जा सकता है। जो तालें ८ मात्रा से कम की हैं उनमें भी इसे ले सकते हैं। उसका भी दो-एक उदाहरण दिया जाता है जैसे, ताल दादरा (मात्रा ६) सम से सम तक मात्रा ७ की है और यह तीया ६ मात्रा का है तो दो मात्रा पहिले ही से इसे आरम्भ करदो:—

यह दादरा २ आवृत्ति में दिखाया गया है।

	×			०			×			०			
बोल	धा	धी	ना	ता	ती	ना	धा	धी	ना	ता	ती	ना	×
मात्रा	१	२	३	४	५	६	१	२	३	४	५	६	
तीया					गदि	गिन	धा	गदि	गिन	धा	गदि	गिन	(धा)

ताल रूपक २ आवृत्ति में

	×		२		०			×		२		०			
बोल	धीन्	तृक	धी	ना	ती	ती	ना	धीन्	तृक	धी	ना	ती	ती	ना	×
मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	१	२	३	४	५	६	७	
तीया							गदि	गिन	धा	गदि	गिन	धा	गदि	गिन	(धा)

---

७ मात्रा से १६ मात्रा तक की तिहाई

अब इस लेख में ७ मात्रा से लगा कर १६ मात्रा तक की तिहाई दी जाती है गुणीजन इनको प्रत्येक ताल में बैठा सकते है, ध्यान रहे कि प्रत्येक तिहाई सम से सम तक की है अतः आरम्भ की सम और आखिरी सम दोनों की मात्रा इनमे शामिल हैं, इसलिए १ मात्रा सब मे बढ़ी हुई है। मान लीजिए १७ मात्रा की तिहाई है, तो उसे आप १६ मात्रा वाली ताल में सम से आरम्भ करके बैठाइये, बिलकुल ठीक बैठेगी, क्योंकि १७ वीं मात्रा दूसरी सम का "धा" होगा, अतः जिस ताल में भी आप इनमें से कोई तिहाई लगाना चाहें पहिले उस ताल की मात्रा गिन लीजिये, और १ मात्रा अधिक की तिहाई उसमे लगा दीजिए, ठीक बैठेगी।

तिहाई ७ मात्रा की (इसे ६ मात्रा की तालों में लगाइये)

×						×
तिटकतगदिगिन	धाआ	आतिटकत	गदिगनधा	आआ	तिटकतगदिगन	धा

तिहाई ८ मात्रा की (७ मात्रा की तालों में लगाइये)

×
तेटेकतागदिगिन धाक्ड़ां धातेटेकता गदिगन धाक्ड़ां
×
तेटेकतागदिगिन धाक्ड़ां धा

तिहाई ६ मात्रा की (८ मात्रा वाली तालों के लिये)

× ×
धिनधिन केटेतक्ड़ां धा धिनधिन केटेतक्ड़ां धा धिनधिन केटेतक्ड़ां धा

तिहाई १० मात्रा की (६ मात्रा वाली तालों के लिये)

× ×
धिट्ट गदिगन धा आ धिट्ट गदिगन धा धिट्ट गदिगन धा

तिहाई ११ मात्रा की (१० मात्रा की तालों के लिये)

× ×
त्रकधिन गदिगन धा त्रकधिन त्रकधिन गदिगन धा त्रकधिन त्रकधिन गदिगन धा

तिहाई १२ मात्रा की (११ मात्रा की तालों के लिये)

×
तिटकता गदिगन धाकड़ान धा तिटकता गदिगन
×
धाकड़ान धा तिटकता गदिगिन धाकड़ान धा

तिहाई १३ मात्रा की (१२ मात्रा की तालों के लिये)

×
धिनक धिनक त्रकधिन धा आ धिनक धिनक
×
त्रकधिन धा धिनक धिनक त्रकधिन धा

तिहाई १४ मात्रा की (१३ मात्रा की तालों के लिये)

×
तिटकत गदिगन किटकिट धा ऽ तिटकत गदिगन
×
किटकिट धा ऽ तिटकत गदिगन किटकिट धा

तिहाई १५ मात्रा की

× तकिट	धकिट	क्डान	गदिगिन	धा	तकिट	धकिट	क्डान
गदिगिन	धा	तकिट	धकिट	क्डान	गदिगिन	× धा	

तिहाई १६ मात्रा की

× तकिटत	काकिट	धिनगिन	नकिधिन	धा	आ
तकिटत	काकिट	धिनधिन	तकिधिन	धा	
तकिटत	काकिट	धिनधिन	तकिधिन	× धा	

तिहाई १७ मात्रा की

× धिटकिट	धिन्नक	तिटकत	गदिगिन	धा	ऽ
धिटकिट	धिन्नक	तिटकत	गदिगिन	धा	ऽ
धिटकिट	धिन्नक	तिटकत	गदिगिन	× धा	ऽ

तिहाई १८ मात्रा की

× धूमकिट	धूमकिट	तकाकिट	गदिगिन	धिधनक	धा
धूमकिट	धूमकिट	तकाकिट	गदिगिन	धिधनक	धा
धूमकिट	धूमकिट	तकाकिट	गदिगिन	धिधनक	× धा

तिहाई १९ मात्रा की

× तागेतेटे	नागेतेटे	त्रकधिन	क्डांक्डां	त्रकधिन	धा	ऽ
तागेतेटे	नागेतेटे	त्रकधिन	क्डांक्डां	त्रकधिन	धा	
तागेतेटे	नागेतेटे	त्रकधिन	क्डांक्डां	त्रकधिन	× धा	

गुप्त तालों के बोल

प्राचीन ग्रन्थों में ३६० तालों की व्याख्या मिलती है, किन्तु आजकल सब तालें प्रचलित न होकर कुछ खास-खास तालें तीनताल, चारताल, एकताल, झपताल, रूपकताल, आड़ा-चौताला, दीपचन्दी, कहरवा, दादरा इत्यादि अधिक काम मे आती हैं। जिनका विवरण पिछले कुछ पृष्ठों मे पाठक देख चुके है, अब प्राचीन ग्रन्थों मे से कुछ गुप्त तालें दी जाती हैं।

१—सरस्वती ताल, भाग ५ मात्रा १८

×				२		३				४				५			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
धा	ऽ	धि	न्ना	धे	न	के	टे	धे	न	धा	गे	ते	टे	धा	गे	तु	न्ना

२—शंखताल, मात्रा १३ भाग ४

×				२				३			४	
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
धी	त्रक	धि	न्ना	ता	तु	न्ना	केटे	धा	गदि	गन	तु	न्ना

३—निशोरुक ताल, मात्रा ९ भाग ३

×				२				३
१	२	३	४	५	६	७	८	९
धि	न्ना	किट	तक	धुम	केटे	तके	तेट	का

४—गजलीला ताल, मात्रा १८ भाग ५

×				२				३				४				५	
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
धा	केटे	धे	त्ता	ता	तेरे	धिन	नग	गिद	तक	घेघे	तेटे	धुम	केटे	गदि	गन	तेटे	कत

५—विष्णु ताल, मात्रा १७ भाग ४

×				०				२				३				
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
धा	गे	धागे	तेटे	ता	गे	तागे	तेटे	तेटे	कत	गदि	गन	ता	देत	थु	न्ना	कत

६—जयमंगल ताल, मात्रा १४ भाग ४

×				०				३		४			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
धि	त्ता	तेटे	कत	त	दित्	थु	न्ना	केते	तक	तु	न्ना	गदि	गन

७–चूड़ामणि ताल, मात्रा १७ भाग ५

×	२	३	४	५
धा क त	तु न्ना	धी धी ना त्रक	ना धी धी ना	धी त्रक धी ना

८—गार्गीपंचक ताल, मात्रा १५ भाग ६

×	२	३	४	५	६
१ २ ३	४ ५ ६ ७	८ ९	१० ११	१२ १३	१४ १५
धा धी न्ना	तु न्ना त क	धुम किट	तिट कत	धा त्रक	गदि गन

९–नन्दी ताल, मात्रा २४ भाग ७

(नीचे की तालों में बोलों के नीचे परन भी देदी गई हैं।)

×	२	३	४	५	६	०
धा ऽ क त्त	ते टे	दि ग	दि ग क त	धी धि न्ना त्रिक	ता ऽ तु न्ना	त्रिक धी धि न्ना
१ २ ३ ४	५ ६	७ ८	९ १० ११ १२	१३ १४ १५ १६	१७ १८ १९ २०	२१ २२ २३ २४
तकटिधुमकिट	त किट	तकाकिट	धुमकिट धिड़ान	त किट तका किट	धुमकिट तक धूम	किट तक थुँ गा
तकिटतकाकिट	किड नग	धित्त	तिट कत गिद् गिन	धा धा तिट कत	गिद् गिन धा धा	तिटकतगिदगिन

१०–अर्जुन ताल, मात्रा २४ भाग ९

×	२	३	४	५	६	७	८	९
धि न्ना	धी त्रिक धी न्ना	ती न्ना	ती त्रिक ती न्ना	तिट कत	गदि गन	धा त्रिक	धि न्ना तेटे कत	तु न्ना
१ २	३ ४ ५ ६	७ ८	९ १० ११ १२	१३ १४	१५ १६	१७ १८	१९ २० २१ २२	२३ २४

११–कन्दर्प ताल, मात्रा २४ भाग ७

×	२	३	४	०	५	०
धा ऽ	धा ऽ	ते टे क त्ता	गि दि गि न	ता दि थु न्ना	ते टे क त	ग दि गि न
१ २	३ ४	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२	१३ १४ १५ १६	१७ १८ १९ २०	२१ २२ २३ २४

१२–प्रतापशेखर ताल, मात्रा १७ भाग ४

×	२	३	४		
धी धी ना त्रक तु न्ना	क त्ता वे वे तेटे–त्रिक	तेटे कत	कत्ता	गदि	गन
१ २ ३ ४ ५ ६	७ ८ ९ १० ११ १२	१३ १४	१५	१६	१७
धिट किट तकिट धिकिट धिन	कत्त कत तक्क धि किट तड़	धा किट	तक	धि	किट
तक धि किट धिट त किट	तिट धिड़ान न गिनतक थुम	किट तिट	कत	गिन	गिन

१३–जयझम्पा ताल, मात्रा १५ भाग ५

×				०				२		३		४		
धा	ऽ	तेरे	केटे	ता	ऽ	तेरे	केटे	धि	न्ना	ति	न्ना	धी	धी	न्ना
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
धा	किट	तक	धुम	किट	तक	थुं	गा	त	क्का	थुं	गा	किट	तक	गिद्
गिन	धा	ऽ	ऽ	ऽ	गिद	गिन	धा	थुं	गा	धुम	किट	तक	गिद्	गिन

१४–संघलीला ताल, मात्रा १४ भाग ५

×				२		३		४		५			
धी	त्रिक	धी	ना	तु	न्ना	धी	धी	ना	धी	धी	ना	क	त्ता
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
धा	किट	तक	धुम	किट	तकि	ट	तका	किट	धुम	किट	तक	धि	त्ता
किड़	नग	धि	ध्धा	किट	तकि	ट	तका	किट	धुम	किट	तक	गिद्	गन

१५–जगपाल ताल, मात्रा ११ भाग ४

×					२		३		४		
धा	धुन	केटे	धुम	केटे	तागे	तेटे	धागे	तेटे	गदि	गिन	
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	
धग	तिट	नग	तिट	तग	तिट	कृधा	किट	धग	तिट	गिद्	
गिन	नग	तिट	कति	टत	गिन	धा	किट	तक	गिद्	गिन	× धा

१६–उद्भव ताल मात्रा १० भाग ४

×				२		३		४		
धागे	तेटे	तागे	तेटे	धा	त्रिक	क	त्ता	गदि	गन	
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	
धा	किट	तकिट	त	का	किट	धुम	किट	तकि	टत	
का	किट	तकिट	त	का	किट	किट	तक	गदि	गिन	× धा

नोट–ऊपर जो नन्दी ताल मे रेला दिया है, वह बराबर की लय में है। अर्जुन और कंदर्प ताल मे रेला इसलिये नहीं दिया गया कि नन्दी ताल का ही रेला अर्जुन और कंदर्प ताल में बजेगा, क्यों कि इन तीनों तालों की मात्रा बराबर है।

१७–शिखर ताल, मात्रा १७ ताली ३ खाली १ भाग ४

× १	२	३	४	५	६	२ ७	८	९	१०	११	१२	३ १३	१४	४ १५	१६	१७
धी	धी	तक	तूना	किडनग	धा	Sधागे	तिट	धुम	किट	धा		S	तिट	कत्ता	गदि	गिन

१८–मत्त ताल, मात्रा १८ ताली ६ खाली ३ भाग ९

×		०		२		३		०		४		५		६		०	
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
धा	किट	धि	न्ना	ता	गे	ति	न्ना	ता	तिर	धिड	नग	त	Sक	तिट	कता	गदि	गिन

१९–पंचसाधा ताल, मात्रा १६ ताली १ खाली २ भाग ७

×		०		२		०		३				४		५	
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
धि	त्ता	तिट	तक	गदि	गिन	धुम	किट	तिरकिट	नगकत	तिरकिट	धाती	धी	ना	तूना	कत्ता

२०–चन्द्रक्रीड़ा ताल, मात्रा ९ ताली ४ खाली ० भाग ४

× १	२	२ ३	४	३ ५	४ ६	७	८	९
धि	न्ना	तिट	कता	कत्	ति	न्ना	तिट	कता

२१–उदीरण ताल, मात्रा १६ ताली ३ खाली ० भाग ३

× १	२	३	४	५	६	७	२ ८	९	३ १०	११	१२	१३	१४	१५	१६
धी	धी	नक	धागे	तिरकिड	धी	ना	ती	ना	ती	ती	नक	धागे	तिर	किट	धीना

२२–भानुमती ताल, मात्रा ११ ताली ४ खाली ० भाग ४

× १	२	३	४	२ ५	६	३ ७	८	४ ९	१०	११
धाS	गे	तिट	कता	धा	त्रक	धी	ना	धो	धी	ना

२३–मण्डरी ताल, मात्रा ११ ताली ४ खाली ० भाग ४

×			२		३			४		
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
धा	ऽ	धा	गे	धि	त्रा	धिन	धिन	ति	त्रा	कत्

२४–फरोदस्त ताल, मात्रा १४ ताली ५ खाली २ भाग ७

×		२		३		४		०		५		०	
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
धिन	धाधा	धिन	धाधा	धिन	तागे	तिरकिट	तिन	ताता	तिन	ताता	तिन	धागे	तिरकिट

२५–ब्रह्मताल, मात्रा १४ ताली १० खाली ४ भाग ४

×	०	२	३	०	४	५	६	०	७	८	९	१०	०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
धि	ऽ	तिरकिड	धि	धि	धि	तिरकिड	धि	त्रा	ति	ऽ	तिरकिड	धा	ऽ

२६–राजमार्तण्ड ताल, मात्रा १४ ताल ३ खाली १ भाग ४

×				०				२				३	
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
धि	धिन	किट	तक	धा	धिन	किट	तक	धा	त्रक	धिन	किट	धाऽ	त्रक

२७–लीला ताल, मात्रा १३ भाग ४ ताल ४

×				२				३			४	
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
धिं	धिं	धा	त्रक	धिं	ऽ	तिं	तिं	ता	त्रक	धिं	धिं	ऽ

२८–शक्तिताल, मात्रा १० ताली ८ भाग ३ खाली २

×	'	'	'	'	'	'	'	०	०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
धिं	न्ना	तिट	ता	तिं	न्ना	ता	तिरकिट	धिं	धिं

२९—सवारी ताल, मात्रा १५ ताल ४ काल ४ भाग ८

×	०	२	०	३	०	४	०
१	२ ३	४ ५	६ ७	८ ९	१० ११	१२ १३	१४ १५
धिन्ना	ऽधि न्ना	ता धीधी	नाधी धीना	तकि तीना	तिरकिड तूना	कत्ता धीधी	नाधी धीना

३०—रुद्रताल, मात्रा ११ ताली ८ खाली ३ भाग ११

×	२	०	३	४	५	०	६	७	८	०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
धी	ना	धी	ना	ती	ती	ना	क	त्ता	धी	ना

रुद्रताल के ग्यारह ही भेद हैं, वह निम्नलिखित हैं। वीर विक्रम, १ विषम समुद्र २, धरण ३, वीरदशक ४, मण्डूक ५, कन्दर्प ६, डांशपाहिड ७, ध्रुवचरण ८, दशकोषी ९, गजेन्द्रगुरु १०, छटका ११। इस प्रकार ग्यारह भेद कहे हैं।

"नादाब्धेस्तुपरंपारं न जानातिसरस्वती"

अतः तालाध्याय यहां ही सम्पूर्ण किया जाता है।

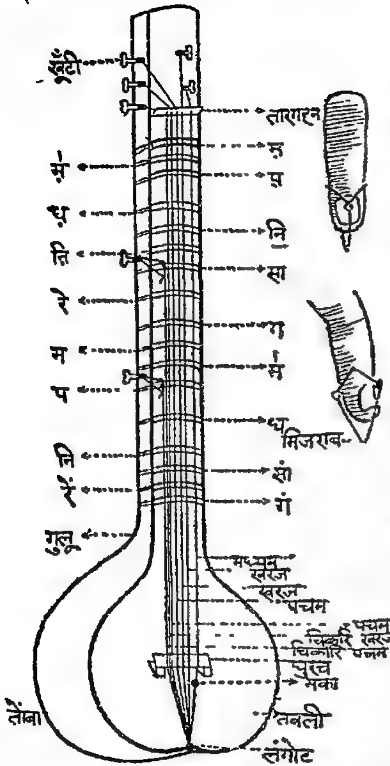
उपरोक्त गुप्त तालों के प्रेषक

नं० १ से ८ तक श्री० केशवगोपाल मृदङ्गाचार्य, नं० ९ से १६ तक श्री० छत्रप्रतापसिंह जी और १७ से २४ तक श्रीयुत भट्ट पद्मनाभ जी चक्रवर्ती हैं!

—सम्पादक

सितार शिक्षा

लेखक—श्रीयुत, ज्योतिस्वरूप मटनागर बी० ए० सङ्गीत विशारद



"सितार"

सितार तार का बाजा है। इसमें सात तार कई तरह के छोटे बड़े होते है, इन सातों तारों के नाम सितार के चित्र मे इस तरह है—

(१) पहला तार लोहे का होता है जो कि सितार में खास तार होता है, और उसी पर भिन्न-भिन्न प्रकार की राग-रागनियां बजाई जाती है। इस तार को बाज का तार कहते है।

(२) दूसरा तार पीतल का तार होता है जिसे षडज का कहते हैं।

(३) तीसरा तार-दूसरे तार की तरह पीतल का तार होता है, और उसे भी षडज का तार कहते है। दूसरे और तीसरे तार को जोड़े के तार भी कहते है। दूसरे और तीसरें तार की मुटाई एक ही सी होनी चाहिये।

(४) चौथा तार-लोहे का होता है, जिसे पंचम का तार कहते है। इस तार की मुटाई पहले तार से कम होनी चाहिये।

(५) पांचवां तार दूसरे तार से दुगना मोटा, पीतल का होता है। जिसे पंचम का तार कहते है, लेकिन चौथे तार की पंचम से एक सप्तक नीचे की आवाज देता है।

(६) छटा तार लोहे का तार जिसे षडज (चिकारी) का तार कहते हैं। यह तार चौथे तार की मुटाई से कुछ कम होना चाहिये।

(७) सातवां तार-लोहे का, छटे तार की तरह होता है इस तार, को षड़ज व पंचम (चिकारी) का तार कहते है। इस तार को षडज व पंचम मे जैसी जरूरत हो मिला लेते है।

सितार के स्वर

सितार में कोमल और तीव्र सभी स्वरो के सारे परदे लगाए जा सकते हैं, परन्तु कोमल तीव्र सभी परदों के होने से सितार सीखने वालों को बहुत कठिनाइयां पड़ती है। इसलिये जैसा कि चित्र मे सितार दिया है सब १७ परदे होते है। जिसमे से १६ परदे पीतल या लोहे के होते हैं। और एक परदा वह माना गया है जहां कि तार ठहरता है, जो पहिले सप्तक की मध्यम का स्वर होता है। इस प्रकार सब स्वर इस प्रकार हैं।

म़	मं़	प़	ध़	नि़	नि़	सा	रे	ग	म	मं	प	ध	नि	सां	रें	गं
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७

सितार के तार मिलाने की रीति

सितार के तार मिलना कोई सरल बात नहीं है, इसलिए सितार सीखने वालों को कुछ गाना जानना बहुत जरूरी है। यह बात दो प्रकार से और भी सरल हो जाती है।

(१) अगर सितार सीखने वाले के पास हारमोनियम बाजा है, तो वह उसके स्वरो से सितार के तार और उसके परदे बहुत सरलता से ठीक कर सकता है, परन्तु हारमोनियम की ट्यूनिंग ठीक होनी चाहिये। अगर सितार सीखने वाले के पास हारमोनियम नहीं है तो उसके लिये अलग-अलग स्वरों के तार आसानी से मिलाये जा सकते हैं। जहां तक हो ऊपर लिखी हुई मदद अगर न लें तो बहुत अच्छा है। ऐसा न हो तो सातों तारां के मिलाने के लिये उनके स्वरों के अलग-अलग रीड लें। रीड की और तार की आवाज जब बिल्कुल एक हो जाये यानी दोनों की आवाज अलग-अलग न मालूम हो तब समझ लें कि तार उस आवाज मे जिसमें मिला रहे थे, मिल गया। खूंटी को अन्दर दबा कर तार कसना चाहिये जिससे तार के खिचाव से खूंटी घूम न जाय।

"रीति"—सबसे पहिले दूसरे नम्बर के तार को मिजराब से छेड़ें और बांये हाथ से उस तार की खूंटी को घुमाकर तार को कसें और एक जगह जहां न बहुत ज्यादा कस जाये और न बहुत ढीला हो, छोड़ दें। अब इस तार को मिजराब से छेड़ने से जो आवाज पैदा होगी उसे पहले सप्तक के षड्ज की आवाज कहेगे।

तीसरे नम्बर के तार को दूसरे नम्बर के तार की आवाज में मिलावें। दूसरे और तीसरे नम्बर के तारों की आवाज बिलकुल एक सी होनी चाहिये। इसलिये इन दोनों तारों को जोड़े के तार कहते है।

दूसरे नम्बर के तार को मिजराब से छेड़ें और बांये हाथ की तर्जनी यानी अँगूठे के पास की उँगली से उस तार को 'स' के परदे पर इस तरह दबायें कि उस

तार पर दबाव न पड़े और उङ्गली तार को परदे पर ठहरा कर परदे से ऊपर की ओर लगी रहे तो पहले सप्तक के स्वर 'प' की आवाज पैदा होगी, इस आवाज को अच्छी तरह ध्यान मे रक्खे फिर चौथे नम्बर के तार को यहां तक कसें कि उसे मिजराब से छेड़ने पर पहले सप्तक के स्वर 'प' की आवाज पैदा हो।

पांचवें तार को चौथे तार की आवाज मे मिलायें। ध्यान रखना चाहिये कि पांचवें नम्बर के तार की आवाज से एक सप्तक नीचे की आवाज होगी।

छटे तार को यहां तक कसें कि उससे षड्ज की आवाज पैदा हो। यह दूसरे सप्तक के षड्ज की आवाज होगी। यह मालूम करने के लिये कि यह ठीक षड्ज की आवाज है, दूसरे नम्बर के तार को दूसरे सप्तक के स्वर 'प' पर स्वर पैदा करके उस आवाज को छटे नम्बर के तार की आवाज मे मिलावें।

सातवें तार को छटे तार की आवाज मे मिलाने से तार सप्तक के षड्ज मे बोलेगा और चौथे तार की आवाज मे मिलाने से तार स्वर पंचम मे बोलेगा, मगर ध्यान रखना चाहिये कि यह आवाज स्वर 'सां' व 'प' होगी। अगर ऐसा हो कि कोई ऐसा राग बजाना है कि जिसमे स्वर, पंचम नहीं लगता हो तब इस तार को षड्ज स्वर में ही मिलाना चाहिये और अधिक खूब सूरती भी इसी में रहती है।

अब पहले तार को इतना कसें कि उस तार को 'सा' परदे पर दबाकर बजाने से जो आवाज पैदा हो वह आवाज दूसरे तार की आवाज से मिलनी चाहिये, अगर पहले छटा तार मिला लिया हो तो पहले नम्बर के तार को इतना कसें कि उसकी आवाज बिना किसी परदे पर दबाये दूसरे और छटे नम्बर के तार के बीच की आवाज से मिले। दूसरे और छटे नम्बर के तार स्वर षड्ज में आवाज देते हैं लेकिन दूसरे और छटे तार की आवाज मे पूरे एक सप्तक का फर्क है यानी दूसरा तार पहले सप्तक की षड्ज की आवाज देता है और छटा तार दूसरे सप्तक की षड्ज की आवाज देता है। इसलिये जब इन दोनों षड्जों के बीच की आवाज में पहला तार *मिलाया जायगा* तो लगभग पहले सप्तक की मध्यम की आवाज से मिलेगा। (जहां-जहा मध्यम लिखा है वहां शुद्ध मध्यम समझना चाहिये) क्योंकि अभी यह मालूम नहीं हुआ कि पहले नम्बर का तार ठीक-ठीक मिला या नहीं, इसलिये पहिले नम्बर के तार से स्वर 'सा' बजायें और उस आवाज को छटे तार की आवाज से मिलायें। अगर मिल जाय तो ठीक-यदि छटे तार की आवाज से उसकी आवाज ऊँची हो तो खूंटी से परले तार को कुछ ढीला करले किन्तु फिर भी न मिले और छटे तार की आवाज से नीचा बोले तो मनका को ऊपर नीचे सरका कर तार को मिलायें। (मनका एक गोली होती है जिसमे मोती की तरह छेद होता है और पहला तार उसमें होकर निकलता है, जैसा कि चित्र मे है।)

सातों तारों को मिलाने के बाद पहले तार को मिजराब से छेड़ें और सभी स्वरों के परदों पर स्वर बजाकर मालूम करलें कि सब स्वर ठीक हैं। यानी हर एक परदा अपनी ठीक जगह पर है या नहीं।

सितार के मौजूदा परदों के दोनों तरफ निशान लगालें कि यदि कोई परदा अपनी जगह से हट जाये तो उसे ठीक करलें। कोमल तीव्र सब ही स्वरों की आवाज ध्यान मे रखनी चाहिये, ताकि परदो को बदलने और ठीक जगह पर लाने में आसानी हो।

थाट बदलने की रीति

सितार मे १७ स्वरो के परदे होते है। उनमें से "म़ मं़ प़ नि़ नि़ सा प सां" अपनी जगह से हटाये नहीं जाते, बाकी "ध़ रे ग म मं ध नि रें गं" थाट बदलने में अपनी जगह से दूसरे स्वर बनाने के लिये हटाये जाते है। स्वर 'म मं' केवल राग पीलू मे सरकाये जाते है, क्योंकि इस राग मे कोमल और तीव्र दोनों गाधार बनानी पड़ती हैं।

सितार के सब परदे यह हैं—'म़ मं़ प़ ध़ नि़ नि़ सा रे ग म मं प ध नि सां रें गं" लेकिन 'म़' से 'गं' तक सब कोमल और तीव्र स्वर यह हैं—'म़ मं़ प़ ध़ ध़ नि़ नि़ सा रे़ रे ग़ ग म मं प ध़ ध नि़ नि सां रें़ रं गं़ गं' यानी सितार मे नीचे लिखे हुए स्वरों के परदे नहीं है—"ध़ रे़ ग़ ध़ नि़ रें़ गं़" यह कोमल स्वर है। अब अगर हमें इन कोमल स्वरों के परदे अपने सितार मे बनाने है, तो इस प्रकार बनायेंगे:—

पहले अपने सितार के परदो के बीच की खाली जगह की लम्बाई अच्छी तरह अपने ध्यान में रक्खें।

तीव्र धैवत से कोमल धैवत बनेगी यानी 'ध़' से 'ध़' इसी तरह 'रे' से 'रे़' और 'ग' से 'ग़', 'ध' से 'ध़', 'नि' से 'नि़', 'रें' से 'रें़', और 'गं' से 'गं़'। तीव्र स्वरों से कोमल स्वरों की आवाज धीमी होती है। इसलिए अगर हम 'ध़' के परदे को 'प़' के परदे की ओर इतना हटायें कि उसकी दूरी 'प़' से उतनी ही हो जितनी कि 'मं़' और 'प़' में है। तब वह परदा जो कि तीव्र धैवत था, कोमल धैवत बन जायगा। इसी तरह 'रे' को 'सा' की ओर इतना हटावें कि उसके और 'सा' के बीच मे उतनी ही जगह हो जितनी कि 'नि़' और 'सा' के बीच में है, तब वह परदा जो कि तीव्र रिषभ था, कोमल रिषभ बन जायेगा। 'ग' को 'रे़' की ओर इतना हटाये कि हटाने वाला परदा 'रे़' और 'म' के ठीक बीच मे रहे। यदि केवल गांधार को ही कोमल बनाना है और रिषभ तीव्र ही रहे तो 'ग' के परदे को 'रे' की ओर इतना सरकायें कि उसके और 'रे' के बीच मे उतनी ही जगह हो जितनी कि 'म' और 'मं' के बीच में है। या 'म' और 'ग़' के बीच मे उतनी ही जगह होनी चाहिये जितनी कि 'सा' और 'रे' के बीच मे है। 'ध' को 'प' की ओर इतना सरकायें कि उसके और 'प' के बीच मे उतनी ही जगह हो जितनी कि 'मं' और 'प' के बीच मे है। 'नि' को 'ध़' की ओर इतना हटाऐं कि वह 'ध़' और 'सां' दोनों के ठीक बीच में हो। यदि केवल 'नि' को ही कोमल बनाना है और 'ध' को तीव्र रखना है तो 'नि' को 'ध' की ओर इतना हटायें कि उसके और 'ध' के बीच मे उतनी ही जगह हो, जितनी कि

'नि' और 'सां' मे है। या 'सां' और 'नि' के बीच मे उतनी जगह होनी चाहिये जितनी कि 'प' और 'ध' के बीच में है। 'रें' और 'सां' के बीच मे उतनी ही जगह होनी चाहिये जितनी कि 'सां' और 'नि' के बीच मे है। 'गं' और 'रें' के बीच मे उतनी ही जगह होनी चाहिये जितनी कि 'नि' और 'सां' मे है। स्वर बदलने के बाद उनको बजाकर देख लेना चाहिये, आवश्यकतानुसार परदे आगे पीछे हटा कर ठीक करलें।

सरगम निकालने की रीति—

सितार को सीधे हाथ की ओर इस प्रकार रक्खे कि सितार के तूँबे का पिछला हिस्सा कूल्हे से लगे। सीधे हाथ कुहनी और कलाई के बीच के हिस्से को गुलू के नीचे तूँबे के ऊपर रक्खें और बांऐ हाथ से सितार की डांड को इस प्रकार साधें कि तर्जनी स्वर के परदे के ऊपर के हिस्से को छोड कर जहां तार ठहरता है पास रख कर पहले तार को इतना दबायें कि तार केवल परदे के ऊपर ठहर जाय, ऐसा न दबायें कि तार खिंच जाय और उसी हाथ के अँगूठे को उस परदे की तांत के ऊपर डांड के पिछले हिस्से पर रक्खें, जिस परदे पर तर्जनी रक्खी है। पहले तार को जिसे तर्जनी स्वर के परदे पर दबा रही है (यानी पहले नम्बर के तार को) मिजराब से छेड़ें। अब जो आवाज पैदा होगी वह दूसरे सप्तक के षडज की आवाज होगी। तार को मिजराब से आगे से पीछे को छेड़ने से 'दा' और पीछे से आगे को छेदने से 'रा' का बोल निकलता है। तर्जनी को 'सा' के परदे पर रख कर और मिजराब से 'दा' निकालकर 'सा' बजावें और तर्जनी के पास वाली उङ्गली को 'रे' के परदे पर रख कर और मिजराब से 'रा' निकालकर 'रे' बजावें। उङ्गली परदे पर पहले रखना और मिजराब से तार को पीछे छेड़ा जाना चाहिये।

'सा' से 'सां' की ओर सरगम इस प्रकार बजेगी—

बांये हाथ की तर्जनी से—	सा	ग	प	नि
तर्जनी के पास की उङ्गली—	रे	म	ध	सां
मिजराब के बोल—	दारा	दारा	दारा	दारा

'सां' से 'सा' की ओर आने मे केवल तर्जनी ही सब स्वरों पर जायेगी।

सितार बजाते समय तर्जनी को तार से ऊपर न उठाना चाहिये, वह बराबर तार पर ही रहनी चाहिये। उसको केवल उस समय जब दूसरे स्वर पर जाना हो तब इतना उठाया जावे कि तार में थोड़ा भी दबाव न रहे और न तर्जनी ही तार से अलग हो। सरगम अच्छी तरह बजानी चाहिये जिससे हाथ को अच्छा अभ्यास हो जावे और गत बजाने मे कोई कठिनाई न हो।

कुछ ध्यान में रखने योग्य बातें !

(१) घुटने के बल बैठकर सितार बजाना चाहिये। अगर इसमें आसानी न हो तो पालथी मार कर बैठें।

(२) सितार बजाते समय मुँह बनाना व बदन हिलाना उचित नहीं। इसलिए अभ्यास करते समय अपने मुँह के सामने शीशा रख कर सितार बजाना सीखें।

(३) तर्जनी, यानी अँगूठे के पास वाली उङ्गली को नाखून के आधे हिस्से के नीचे तार पर रखकर स्वर बजाना चाहिए। मिज़राब से तार को इस प्रकार से छेड़ें कि उस हाथ की सब ही उङ्गलियां मिज़राब की उङ्गली के साथ आगे पीछे हरकत करें। अगर केवल मिज़राब की उङ्गली ही हरकत करे और बाकी उङ्गलियां ठहरी रहें तो हाथ मे कम ताकत पैदा होगी और हाथ बहुत जल्द थक जायेगा तथा मिज़राब के बोल भी साफ-साफ न निकलेंगे। मिज़राब छेड़ते समय अँगूठा डांड पर ठहरा रहना चाहिए।

(४) सरगम बहुत धीरे-धीरे बजाना चाहिए, जिससे बोल साफ-साफ निकलें और एक से दूसरे परदे पर जाते समय, समय का इस तरह ध्यान रखते हुए जावें कि जैसे चलती हुई घड़ी अपनी आवाज़ कट-कट करने में एकसा ही समय लेती है। गाने बजाने में समय बहुत जरूरी चीज़ है और उसे ही ताल कहते हैं।

(५) गत की चाल से तोड़े की चाल दुगुनी होती है, यानी एक-एक मात्रा में दो-दो स्वर बजाने हैं, इसलिए जब गत बजाना शुरू करे तो बहुत धीरे बजावें, ताकि तोड़े को गत के साथ बजाने में आसानी हो और साफ-साफ बजे।

गत—

ख्याल, ठुमरी, दादरा वगैरह गानों के नाम हैं और जिस रागिनी में ये चीज़ें गाई जाती है, उसी तरह उनका नाम भी होता है। मगर सितार में उन नामों के अतिरिक्त एक और नाम है जिसे "गत" कहते हैं। जो हर एक रागिनी के नाम से पुकारी जाती है, जिस प्रकार गाने में तान और पल्टे होते हैं, उसी प्रकार सितार में तोड़े होते है।

गतों के भेद—

गत मुख्यतः दो प्रकार से बजाई जाती हैं—

(१) जो गत धीरे बजाई जाती है, उसे मसीतखानी गत कहते हैं।

(२) जो गत तेज़ बजाई जाती है, उसे रज़ाखानी गत कहते हैं।

"मिज़राब"

मिज़राब—यह तार का एक छोटा सा यन्त्र है, जिसे दाहिने हाथ की तर्जनी में पहनकर सितार बजाया जाता है। मिज़राब से तार को छेड़ने से जो नाद उत्पन्न होता है, उसे मिज़राब का बोल कहते है।

आगे से पीछे की ओर मिजराव लगाने से 'दा' की ध्वनि होती है और पीछे से आगे की ओर लगाने से 'रा' की ध्वनि होती है। इस प्रकार 'दारा' मिजराव का एक बोल हुआ और इसी प्रकार मिजराव से अनेकानेक ध्वनिया निकलती हैं। सरगम बजाते समय पहिले 'दा' बजाकर 'सा' निकालना चाहिए। इसी भांति पूरी सरगम 'आरोही और अवरोही' निकालनी चाहिए।

जितने समय मे मिजराव का बोल 'दा' या 'रा' बोलता है, उतने ही समय मे 'दा' 'रा' दोनों शब्दो को मिलाकर बजाने से 'दिर' होता है।

'दार' शब्द निकालने की रीति

मिजराव को आगे से लगाकर 'दा' निकालें, और जो समय 'रा' निकालने मे लगता है उनका आधा समय 'दा' के बजाने के बाद लेलें और फिर मिजराव को पीछे से लगाकर 'रा' शब्द को उसके आधे समय मे निकालें तो शब्द 'दा' और 'रा' मिलकर 'दार' होगा।

 (तीनताल)

गत—सितार
(विलम्बित लय)



स्वरकार—
श्री. ज्योतिस्वरूप भटनागर, सङ्गीत विशारद

स्थायी—		सासा दिर	रेगरे- रेंरे म प दाऽऽऽ दिर दा रा
नि नि सां सांसां दा दा रा दिर	निध पध म पध दाऽ दिर दा राऽ	म ग रेग दा दा राऽ	
अन्तरा— नि नि सा निनि दा दा रा दिर	सा रेंरें रेंगंरें रेंम दा दिर दाऽऽ राऽ	गं रे सां सांरें दा दा रा दिर	निध पध मग रे- दाऽ दिर दारा दाऽ
रे निनि नि ध दा दिर दा रा	प मप निध प दा दिर दाऽ रा	म ग रेग दा दा राऽ	

तोड़ा नं० १

सांनि धप मग रे–	सारे मरे मप निसां	धप मग रेग सासा	रेग़रे– रेंरे म प
दारा दारा दारा दाऽ	दारा दारा दारा दारा	दारा दारा दारा दारा	दाऽऽऽ दिर दा रा

तोड़ा नं० २

सानि सारे मरे मप	निसां निध पम गरे	पध मग रेग सासा	रेगरे– रेंरे म प
दारा दारा दारा दारा	दारा दारा दारा दारा	दारा दारा दारा दिर	दाऽऽऽ दिर दा रा

तोड़ा नं० ३

निसा रेंनि सारें निसां	रेंसां निध पम गरे	सारे मरे मप निसां	मप निम पनि मप
दारा दारा दारा दारा	दारा दारा दारा दारा	दारा दारा दारा दारा	दारा दारा दारा दारा

तोड़ा नं० ४

सानि सारे गरे सारे	मप निध मप निसां	निध मग रेग सासा	रेगरे– रेंरे म प
दारा दारा दारा दारा	दारा दारा दारा दारा	दारा दारा दारा दारा	दाऽऽऽ दिर दा रा

तोड़ा नं० ५

सांनि धप मप ध–	मप ध– धप मग	रे– – धप मग	रे– – सारे मप
दारा दारा दारा दारा	दारा दारा दारा दारा	दाऽ ऽ दारा दारा	दाऽ ऽ दारा दारा

राग विवरण—"देश" खमाज थाट का औडव-सम्पूर्ण राग है। इसका वादी स्वर रिषभ और सम्वादी स्वर पंचम है। आरोह में गंधार और धैवत नहीं लगते, इसमें निषाद तीव्र लगाई जाती है। अवरोह में कोमल निषाद लगाते हैं और रिषभ का स्वर वक्र रहता है। इस राग का समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। यह राग सोरठ से मिलता है। सोरठ में गांधार स्वर वर्ज्य है, परन्तु देस में गांधार अवरोह में लगाई जाती है, इसीसे वह सोरठ से अलग होता है। कभी-कभी कोमल गांधार का कण भी लगाते हैं।

नोट—गत देश में दोनों निषाद यानी कोमल और तीव्र लगाई जाती है। अतः जहां कोमल निषाद बजाना है, वहां स्वर 'ध' से मींड़ खींच कर बजावें।

आरोह—सा रे म प नि सां
अवरोह—सां नि ध प म ग रे सा } साधारण

आरोह—सा रे म प नि ध प नि
अवरोह—सां नि ध प म ग रे ग } वक्ररूप

पकड़—रे, म प, नि ध प, पधपम, गरेगसा।

गत सितार—

राग हमीर, त्रिताल (द्रुतलय)

[स्वरकार—श्री० विक्रमादित्यसिंह निगम एम. ए., एल–एल. बी.]

०	३	×	२
मं धध पप मंमं	प पग –ग म	ध – नि सां	नि ध प प
दा दिर दिर दिर	दा रदा ऽर दा	दा ऽ र्दा रा	दा रा दा रा

अन्तरा—

मं धध पप मंमं	प प –ग म	प पप प मं	– प ध प
दा दिर दिर दिर	दा रदा ऽर दा	दा दिर दा रा	ऽ र्दा दा रा
ग मम पप मम	रे रेसा –सा सा	ध रेंरें सां नि	ध प मं प
दा दिर दिर दिर	दा रदा ऽर दा	दा दिर दा रा	दा रा दा रा

यह तोड़े उसी लय अर्थात् चाल से बजेंगे, जिस प्रकार गत बजेंगी।

तोड़ा नं० १ सम से

×	२	०	३
ध नि सां रें	सां नि ध प	ग म ध प	ग म रे सा
दा रा दा रा	दा रा दा रा	दा रा दा रा	दा रा दा रा
ध रेंरें सां नि	ध प मं प	मं धध पप मंमं	प पग –ग ग
दा दिर दा रा	दा रा दा रा	दा दिर दिर दिर	दा रदा ऽर दा

तोड़ा नं० २ सम से

सां रें गं रे	सां नि ध प	मं प ध प	ग म रे सा
दा रा दा रा	दा रा दा रा	दा रा दा रा	दा रा दा रा
सा रेरे ग म	सां – सा रेंरें	ग म सां –	सा रेरे ग म
दा दिर दा रा	दा ऽ दा दिर	दा रा दा ऽ	दा दिर दा रा

तोड़ा नं० ३ खाली से

०	३	×	२
सां सां – रें	सां निनि ध प	मं प ध प	ग म प ग
दा रा ऽ दा	दा दिर दा रा	दा रा दा रा	दा रा दा रा

								नि					नि		
म	रे	सा	—	नि़	सा	ग	म	सां	—	ध	सां	—	ध	प	प
दा	रा	दा	ऽ	दा	रा	दा	रा	द्रा	ऽ	दी	द्रा	ऽ	दीं	दा	रा
मं	धध	पप	मंमं	प	पग	—ग	म	ध							
दा	दिर	दिर	दिर	दा	रदा	ऽर	दा	दा							

तोड़ा नं० ४ दूसरी से

२				०				३				×			
मं	गं	रें	सां	नि	रें	सां	नि	ध	प	मं	प	ध	रेंरें	सां	नि
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
ध	प	मं	प	मं	धध	पप	मंमं	प	पग	—ग	म	ध			
दा	रा	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा	रदा	ऽर	दा	दा			

तोड़ा नं० ५ सम से

×				२				०				३				
गं	गं	—	मं	गं	रेंरें	सां	नि	ध	नि	—	ध	नि	रेंरें	सां	नि	
दा	रा	ऽ	दा	दा	दिर	दा	रा	दा	रा	ऽ	दा	दा	दिर	दा	रा	
																सा
ध	रेंरें	सां	नि	ध	प	मं	प	मं	धध	पप	मंमं	प	पग	—ग	म	ध
दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा	रदा	ऽर	दा	दा

राग विवरण—

(१) राग 'हमीर' कल्याण थाट से उत्पन्न होता है।

(२) इस राग में दोनों मध्यमो का प्रयोग होता है, परन्तु तीव्र मध्यम का प्रयोग अधिकतर आरोह में होता है और कोमल मध्यम का प्रयोग आरोह तथा अवरोह दोनों मे होता है।

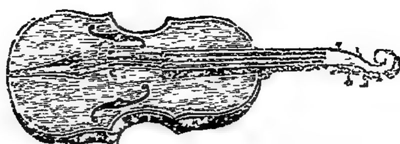
(३) इसमे धैवत वादी और गांधार सम्वादी स्वर है, परन्तु कुछ लोग पञ्चम को वादी मानते हैं।

(४) इस राग के आरोह में 'रे' 'प' और 'नी' कम प्रयोग होते हैं।

(५) इसके गाने तथा बजाने का समय रात्रि का पहला प्रहर है।

बेला

Violin

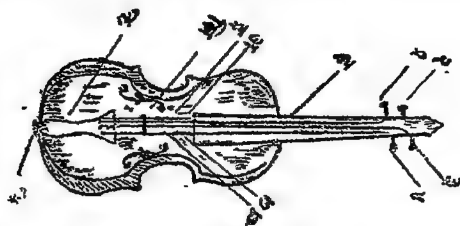


——(लेखक—श्री० गणेशदत्त 'इन्द्र')——

वॉयलिन अपने नाम से एक प्रसिद्ध वाद्य इसे बेला भी कहते है। फिडिल (Fiddle) भी इसी का नाम है। यह वाद्य यद्यपि विदेशी है, तथापि इसका भारतवर्ष मे भी काफी प्रचार हो गया है। विशेषत. बङ्गाल प्रान्त मे इसे लोग खूब ही बजाते हैं, यह तन्तु वाद्य है। हमारे देश मे इससे बहुत कुछ मिलता जुलता एक वाद्य है—जिसे चिकारा कहते हैं। बड़े नारियल की नरेटी को चमड़े से मँढ़ कर उसमें से बॉस का डण्डा लगा कर चिकारा तैयार किया जाता है। बजाने के लिये गज का प्रयोग होता है और तारों की जगह तांते चढ़ी होती है बजाने की पद्धति दोनो की एक सी होती है। चिकारा भी बहुत अच्छा बोलता है बशर्ते कि बजाने वाला कुशल हो। भीख मांगने वाले शैव जोगी प्राय. चिकारा बजाकर ही भीख मांगते हैं। वायोलिन चिकारे का अत्यन्त संस्कृत रूप है। बनावट बडी मनमोहक होती है। जो लोग चिकारा बजाने मे शर्माते हैं वे ही वायोलिन बजाने मे अपने को गौरवान्वित समझते है। सारङ्गी को हम वायोलिन के समकक्ष कह सकते है, परन्तु दोनों मे बडा भारी अन्तर है। सारङ्गी मे नीचे धातु निर्मित तार लगे होते है, जिन्हे तुरप कहते है ऊपर जो तार होते हैं वे तांत होती हैं। वायोलिन मे तुरपें नहीं होतीं केवल चार तार होते हैं, जिस पर गज को घिस कर अँगुलियों की सहायता से स्वर उत्पन्न किया जाता है। वायोलिन विदेशी वाद्य है, इसलिये वह विदेशों मे बनता है, किन्तु भारत मे बना हुआ भी अब मिलने लगा है जो विदेशी से किसी बात मे कम नहीं होता। भारतवासियों ने इसके पकडने की पद्धति अपनी अलग बनाली है। चित्र नं० ४ मे आप देखेंगे कि वायोलिन कैसे बजाया जाता है। यह विदेशी पद्धति है। देशी तरीका बैठ कर बजाने का है। वायोलिन कन्धे की ओर न रख कर ठुंडी के सामने से छाती और पेट की सीध मे सामने रखा जाता है और वाद्य का अन्तिम भाग अपने पैर के पंजे पर सहूलियत के लिये रख लिया जाता है। पकडने और बजाने का तरीका देशी और विदेशी एक सा ही है।

वायोलिन किसी अच्छी दूकान से खरीद लीजिये। सस्ते से सस्ता २५), ३०) रुपये मे मिल जावेगा। परन्तु कम से कम ५०) रु० का लेना चाहिये जो सीखने वाले के लिये ठीक होगा। यदि उसके रखने का बाक्स भी लेना हो तो ८–१० रुपये अधिक देने पर मिल जावेगा। ८–१० रुपयों का लोभ न कर के बाक्स अवश्य लेलेना चाहिये इससे वाद्य सुरक्षित रहता है और बहुत दिनो तक खराब नहीं होता। बाजा खरीद चुकने पर जिन बातो की जानकारी होनी चाहिये उन्हे हम यहा बतलाए देते है।

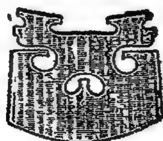
चित्र नं० १ मे देखिये। वायोलिन दिखाया गया है। समझने योग्य सभी बातें इस चित्र मे अङ्कित है। इस पर चार तार लगते है। चित्र मे अ, इ, उ, ए,



तारों को दिखा रहे हैं। इसमें पहला तार रुपहरी होता है। यह तार वायोलिन विक्रेताओं के यहां मिलता है। शेष तीन तार तांत या फौलाद के मोटे और पतले क्रम पूर्वक लगाये जाते हैं। ये शेष तार भी बाजारू तांत या तार नहीं होते, बल्कि वायोलिन के लिये ही बनाये जाते हैं जो वायोलिन बेचने वालों के यहां से खरीदे जा सकते हैं। उनके अभाव में देशी तार या तांत भी प्रयोग की जा सकती है, परन्तु स्वर में वह माधुर्य नहीं रह जाता।

चित्र नं० १ में 'टे' देखिये। यह जिसकी ओर संकेत करता है उसे टेलपीस (Tail piece) कहते हैं। जहां से तार शुरू होते हैं वहां टेलपीस मे ४ छिद्र होते हैं। उन चारों छिद्रों मे से एक-एक तार डाल कर खूंटियों तक ले जाना है। इन तारों के एक सिरे में एक गोल-गोल छोटी सी धातु की चीज बँधी रहती है। इसके कारण तार छिद्रों से निकलने नहीं पाते और वहीं अड़ जाते है। तांत मे या तार में गांठ लगा कर भी यह काम किया जा सकता है।

चित्र नं० १ 'ब्रि' ब्रिज (Bridge) का सूचक है। यह चित्र नं० १ में स्पष्ट नहीं है। एक काली लकीर सी है। अतएव ब्रिज को समझने के लिये चित्र नं० २ देखिये। यह ब्रिज का असली रूप है। चित्र नं० १ में जहां ब्रि है यहां तक खड़ा किया जाता है और इसी पर से चारों तार खूंटियां की ओर जाते हैं।

चित्र नं० २  ब्रिज

चारों तारों को छिद्रों में से निकाल कर चारों खूंटियों में लगा कर कस दो हमने समझने के लिये प्रत्येक खूंटी पर नम्बर लगा दिए हैं। देखो चित्र नम्बर १, २, ३, ४। स्पष्ट समझाने के लिए हमने तारों पर भी अ, इ, उ, ए, लिख दिया है, 'अ' तार पर खूंटी नं० १ पर 'इ' तार खूंटी नं० २ पर, 'उ' तार खूंटी नं० ३ पर और 'ए' तार खूंटी नं० ४ पर होगा। खूंटियों के माप से ४-६ अंगुल ज्यादा लम्बा तार लेना चाहिये, ताकि उन पर अच्छी तरह लिपट सके।

खूंटियों को अंग्रेजी मे पेग्ज (Pegs) कहते है। कई लोग इन्हें चावियां कहते हैं। जिस पटरी पर से अर्थात् ब्रिज पर से खूंटियां तक तार जाते है उसे टङ्ग (Tounge) कहते है। देखो चित्र नं० १ मे 'ह'। टेलपीस को एक तांत के टुकड़े से बांध कर एक आकड़े मे अटकाया जाता है। यह आंकड़ा चित्र नं० १ मे 'क' सूचित करता है।

अब आप वायोलिन की बॉडी (Body) के सम्बन्ध मे अच्छी तरह अवगत होगये तारों के सम्बन्ध में अभी समझना बाकी है। तार चढ़ाने की दो पद्धति है। (१) भारतीय और (२) पाश्चात्य। भारतीय पद्धति मे पहला तार रुपहरी और शेष तार फौलाद के लगाये जाते है। पाश्चात्य पद्धति मे पहला तार रुपहरी और शेष तीन तांत के होते है। हमारी सम्मति मे भारतीय पद्धति से तार चढ़ाने चाहिए, क्योंकि तांत पर मीड़ निकालने से उसमें रेशे निकलने लगते है। तार इस दोष से सर्वथा मुक्त रहता है। भारतीय पद्धति के तारो मे संगीत मे माधुर्य उत्पन्न होकर वह आकर्षक बन जाता है।

तार ठीक-ठीक चढ़ा चुकने के बाद उन्हे स्वर मे मिला लेना चाहिए। नौसिखुए व्यक्तियों को हारमोनियम आदि वाद्यों के स्वर से सहायता लेनी चाहिए। जब कान स्वरों को पहिचानने लगे तब बिना किसी सहायता के भी तारों को ठीक किया जा सकता है। चित्र नं० १ देखिये। 'अ' तार को स्वर मे मिलालो अर्थात् जिसे आप स्वर कायम करना चाहते हों उसमे मिलाओ। अब 'इ' तार को 'अ' तार के पंचम मे मिलालो। ए, तार को अ, तार के टीप अर्थात् तीव्र मे मिलालो। अर्थात् दूसरी सप्तक के स्वर मे करलो। 'उ' को 'ए' के पंचम मे करलो। यों समझिये जिस स्वर मे अ हो, उसके दुगुन मे ए और इ के दुगुन मे उ करलो। सा, प और सां, पं इस प्रकार तार मिलेंगे। हारमोनियम द्वारा सहज मे ही समझा जा सकता है। हारमोनियम के प्रथम सप्तक के सा मे 'अ' मिलालो और इसी सप्तक के पंचम मे 'इ' मिलालो। 'ए' को दूसरी सप्तक के सा में और 'उ' को इसी के पंचम मे मिलालो। बस ! वायोलिन मिल गया और बजने के लिये तैयार हो गया।

अब जिस वस्तु से इसे बजाया जाता है उसे 'बो' (Bow) कहते है। देखो चित्र नं० ३ यह सारङ्गी के गज से भिन्न शक्ल का होता है।

चित्र नं० ३



'बो' लम्बा काफी होता है। 'बो' के चित्र नं० ३ में जहां १ लिखा है, उसे आगे पीछे घुमाने से नं० २ का स्थान सरकने लगता है। बांई ओर घुमाने से बो, के बाल तनने लगते है। दाहिनी ओर घुमाने से बाल ढीले पड़ जाते है। चित्र नं० ३ मे अङ्क ३ यह सूचित करता है कि यह सीधी छड़ी है और अङ्क ४ बालों को बता रहा है। जब वायो-लिन बजाना हो तो बालों को आवश्यकतानुसार तङ्ग कर लेना चाहिये और बजा चुकने

पर ढीला करके रख देना चाहिये। बजाने से पूर्व जब गज के बाल तङ्ग कर लिये जावें, तब उन्हें रॉजिन्स (Rosins) पर धीरे-धीरे घिस लेना चाहिये। रॉजिन्स को हिन्दी में बेरची या बिरोजा कहते हैं। यह रॉजिन्स भी किसी वाद्य-यन्त्र विक्रेता के यहां से चार छैः पैसे में खरीद लेना चाहिये।

वायोलिन और गज बिलकुल ठीक होगये। अब इन्हें किस प्रकार पकड़ा जाय? यह बतलाना है। इसके पकड़ने की दो पद्धतियां हैं, जिनका हम पीछे उल्लेख कर आये हैं। यहां चित्र नं० ४ देखिये। आपको मालूम हो जायगा कि वायोलिन कैसे पकड़ना चाहिये और (Bow) गज कैसे? यह पाश्चात्य पद्धति है।



चित्र नं० ४

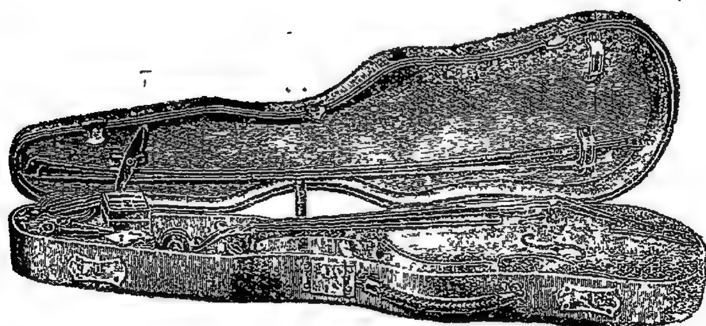
चित्र नं० ४ में अच्छी तरह देखकर समझें कि बांये हाथ का अँगूठा टङ्ग की लकड़ी की बांई ओर और दाहिनी तरफ टङ्ग पर शेष चारों अँगुलियां, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और कनिष्ठा रहेंगी। इन चारों अंगुलियों को तारों पर यथा-स्थान रखने और उठाने से स्वरोत्पत्ति होती है। केवल अंगुलियां रखने से या उठाने से ही स्वर नहीं निकलने लगता है, बल्कि आवश्यकतानुसार गज को तारों पर चलाना पड़ता है, तब कहीं स्वरोत्पत्ति होती है। गज को दाहिने हाथ में लो और उस जगह से पकड़ो जहां उसके दाहिने भाग पर अँगूठा रखने के लिये स्थान बना होता है। एक ओर अर्थात् अपनी ओर हाथ के अँगूठा का पोर जमा कर दूसरी ओर तीन अँगुलियां गज की लकड़ी पर झुकी हुई रखनी चाहिए और कनिष्ठा को गज के स्क्रू (Screw) पर रखना चाहिए।

गज को विरोजे पर घिसकर उसे ब्रिज और टङ्ग के बीच में सीधा चलाओ, गज के इधर-उधर हिलते हुए चलने से आवाज स्पष्ट नहीं होगी। ब्रिज की ओर गज के चले जाने पर 'चर्र-चर्र' की आवाज निकलने लगती है। गज को दूसरे सिरे से लगभग ६ इन्च तक के हिस्से को जोर से चलाना चाहिये। ऐसा करने से स्वर पर अधिकार हो जाता है। नये वायोलिन की आवाज कई दिनों तक बजने पर खुलती है।

अब स्वर निकालना है। इसमें पर्दे नहीं होते, इसलिए स्वरों का निकालना अँगुलियों और कानों पर अवलम्बित है। स्वर-साधन में जल्दी की आवश्यकता नहीं है, धैर्य और शान्ति रक्खें। सात स्वरों में से दो में तो तार मिले ही रहते हैं। केवल ५ स्वर

और निकालने हैं। रुपहरी तार (Silver wire) पर धीरे-धीरे गज चलाओ 'सा' बन जावेगा। गज को इस तरह से चलाओ कि स्वर टूटा न जान पड़े। अब बांये हाथ की तर्जनी अंगुलियों को टङ्ग के उस ऊँचे उठे भाग के नीचे, जहां से तार खूंटियों पर जाते है, दो अंगुल के अन्तर पर रखने से 'रे' निकलेगा। तर्जनी से सवा अंगुल नीचे मध्यमा रखने से 'ग' और मध्यमा के पास ही अनामिका रखने से 'म' निकलेगा। अब सब अगुलियां उठाओ और पास के दूसरे तार पर गज चलाओ यह 'प' होगा। इसके दूसरे तार पर 'रे' निकालने की जगह अंगुली रखने से 'ध' और 'ग' निकालने की जगह अंगुली रखने से 'नी' और पास ही अनामिका रख देने से 'सां' निकल आवेगा। इस प्रकार दो तारों पर सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां बन जाता है। अनामिका रखकर यदि दूसरे तार पर 'सा' न निकाला जाय तो खाली तीसरे तार पर गज फेरने से भी 'सा' निकलेगा। इसी प्रकार तीसरे और चौथे तारों पर गज चलाकर दूसरी सप्तक तैयार करो। यह शुद्ध स्वरों की सप्तक है। कोमल निकालने के लिये अगुलियों को थोड़ा आगे पीछे सरकाकर अभ्यास करना चाहिये। 'सरगम' निकाल आने पर खूब अभ्यास बढ़ाना चाहिये और विविध प्रकार की सरगमों के आरोह-अवरोह का खूब अभ्यास करना चाहिये। सरगमों के पाठ के लिये इसी पुस्तक के प्रथम अध्याय से सहायता लेनी चाहिये, सरगमें तैयार हो जाने पर ही बोल निकालने की चेष्टा करना ठीक है।

(बक्स सहित वॉयोलिन)



गान्ध राग भूपाली (त्रिताल)

[रचयिता—श्री रामस्वरूप परमार]

स्थाई—

०				३				×				२			
सा	रे	ग	रे	सा	ध़	ध़	प़	प़	ग	ग	रे	रे	सारे सा	सा	-
सा	रे	ग	प	ध	सां	प	ध	प	-	रे	रे	रे	सारे सा	सा	-

अन्तरा—

ग	ग	ग	रे	ग	प	धसां	पध	सां	-	सां	सां	सांध	रें-	सां	-
ध	सां	रें	सां	ध	प	ग	रे	ग	प	ध	पध प	रे	रे	सा	-

तानें सम से—

सा	रे	ग	रे	सा	ध़	ध़	प़	(१)	पृध़ सारे गप धप	गप गरे गरे सा-
”	”	”	”	”	”	”	”	(२)	सारे गसा रेग सारे	पग -प गरे सा-
”	”	”	”	”	”	”	”	(३)	सारे गप धसां रेंगं	रेंसां धप गरे सा-
”	”	”	”	”	”	”	”	(४)	पध सांप, धसां, पध	सांसां धप गरे सा-
”	”	”	”	”	”	”	”	(५)	सारे गरे ग- रेग	पग प- गप धप

ध- पध सांध सां-	धसां रेसां रें- सांरें	सां- पध प- गप	ग- रेग रे- सारे
सा रे ग रे	सा ध़ ध़ प़		
	(६)	गग -ग रेग रेसा	धध -ध पध पग
रेंरें -रें सांरें सांध	पप -प पध पग	सारे गप धसां पध	प - सारे गप
धसां पध प -	सारे गप धसां पध	प ग ग रे	रे सा(सारे) सा -
सा रे ग रे	सा ध़ ध़ प़	प ग ग रे	रे सा(सारे) सा -

तानें खाली से—

(७) सारे गप धसां रेंगं	रेंगं -रें सांरें -सां	धसां -ध पध -प	गप -ग रेग सारे
सारे गरे साध़ प़-	प़ध़ सारे गरे सारे	प ग ग रे	रे सा(सारे) सा -
(८) सारे गप धसां रेंगं	रेंगं सांरे धसां पध	गप धप गरे सारे	सारे गरे साध़ प़-
प़ध़ सारे ग- प़ध़	सारे ग- प़ध़ सारे	प ग ग रे	रे सा(सारे) सा -

नोट—जिन स्वरों के नीचे ‿ ऐसा चिन्ह होगा वह सब स्वर एक ही गज में बजेंगे।

———

मोहिनी बाँसुरी

[लेखक—श्री० रूपकिशोर जैन,]

छोटे वाद्य-यन्त्रों में बांसुरी भी एक अलौकिक वाद्य है। इसकी प्यारी और सुरीली तान सुनने वालों पर जादू का काम करती है। यह बहुत प्राचीन वाद्य है। भगवान श्रीकृष्ण ने इसे अपना कर इसका गौरव बढ़ाया था। बांसुरी के कारण ही श्रीकृष्ण भगवान् के मुरली मनोहर, मुरलीधर, बांसुरीवाला, बन्शीधर, मनमोहन इत्यादि नाम पड़े। इस बांसुरी के कारण कृष्ण भगवान् के तो इतने नाम पड़े ही, किन्तु उनके अपनाने से बांसुरी की प्रतिष्ठा भी खूब बढ़ी। एक बृजभाषा के कवि ने कहा है:—

अरी बन्शी प्यारी, तुमहुं बड़ भारी तप कियौ।
रहे कान्हा हाथा, अधर-रस तैंने नित पियौ॥

कृष्ण की बांसुरी गोपियों को बावली बना देती थी बांसुरी की तान जहां गोपियों के कान में पहुंची कि गोपियां सुध-बुध भूल जाती थीं, ऐसी दशा का वर्णन एक कवि ने खूब किया है—

जल के न घट भरें, मग को न पग धरें,
घर में न कछु करें बैठी भरें सांसुरी।
एकै सुनि लोट गई, एक लोट-पोट भई,
बहुतन के दृगते निकस आये आंसुरी॥
कहैं रस नायक सो बृज वनितान-बधि,
बधिक कहाये हाय! भई कुल हांसुरी।
करिये उपाय बांस डारिये कटाय,
नाहिं उपजेगो बांस नहिं बाजे फेर बांसुरी॥

* * *

और सुनिये एक दूसरे कवि गोपियों की दशा का कैसा चित्र खींचते हैं—

बाजी उठि धाई, बाजी देखिबे को द्वार धाई,
बाजी अकुलाई सुनि बन्शी-वन्शीधर की।
बाजी ना धरें धीर, बाजी ना पहरें चीर,
बाजिन के उठी पीर विरहानल भरकी॥
बाजी ना बोलें, बाजी संग लगी डोलें बाजी,
आलिन को बिसर गई, सुधि-बुधि सब घर की।
बाजी कहैं बाजी-बाजी! बाजी कहैं कहां बाजी?
बाजी कहैं बन्सी बाजी! सांवरे सुन्दर की॥

देखा यह गजब करती थी बांसुरी ! फिर क्यों न इस मोहनी मन्त्र को सीखने बजाने के लिये लोग उत्सुक हों ? बासुरी बजाने में विशेष द्रव्य खर्च करने की आवश्यकता नहीं, अन्य बाजों के अलावा इसका मूल्य भी बहुत कम रहता है। सभी जगह घूमने फिरने में आप इसे साथ रख सकते हैं, जहां मन आवे बजा सकते हैं। खड़े होकर बजाइये, बैठकर बजाइये, लेट कर बजाइये। तात्पर्य यह है कि यह बाजा बहुत ही सरल, सीधा, सस्ता और सुन्दर है।

आजकल कई प्रकार की बासुरी प्रचलित है। बांस, लकड़ी, पीतल, लोहा, स्टील, सैलोलाइड, इत्यादि तरह-तरह की मिलती है। बजाने वाले अपनी-अपनी रुचि के अनुसार पसन्द करते हैं। इसमें बांस की तथा पीतल की बासुरी अधिक चालू है। इसमें भी दो भेद हैं, सीधी और आड़ी। सीधी की अपेक्षा आड़ी बांसुरी बजाना कुछ कठिन है किन्तु गायन निकालने का ढङ्ग दोनों का एक सा ही है अतः नव-शिक्षितों को पहले सीधी बासुरी पर ही अभ्यास करना अच्छा है।

साधारण देशी बासुरियों में ६-या-७ छिद्र (सूराख) रहते हैं तथा एक सूराख पीछे की तरफ रहता है। विलायती बासुरियों में केवल ६ सूराख ऊपर ही रहते है, पीछे का सूराख उनमें नहीं रहता, हम यहां देशी बनी हुई बांसुरी का ही जिक्र करेंगे क्योंकि विलायती बासुरियों की अपेक्षा देशी बासुरी ही बढ़िया रहती है, बशर्ते कि अच्छे कारीगर द्वारा तैयार की हुई हों।

बांसुरी पर अंगुली चलाने की रीति—

बांसुरी के ऊपर के छिद्रों पर बाये हाथ की पहिली, दूसरी, तीसरी अँगुलियों को सबके ऊपर के तीनों छिद्रों पर क्रमशः रक्खो, फिर दाहिने हाथ की इन्हीं तीनो उङ्गलियों को चौथे, पाँचवें, छटे, छिद्रों पर रक्खो। इस प्रकार छैं सूराख बन्द होगए। इसके बाद एक या दो सूराख और हों तो उन्हें खुले रहने दो। अभ्यास होजाने पर उनसे भी काम लेने लग जाते है। किन्तु पीछे वाले सूराख को बाए हाथ के अँगूठे से बन्द रक्खो। इस प्रकार अंगुलियाँ रखकर सूराखों को बन्द रक्खो कि कोई अंगुली टेढ़ी होकर सूराख न खुल जाये वरना स्वर ठीक न निकलेगा। बस बजाने के लिये बासुरी तैयार होगई। अब उसे हलकी सधी हुई फूंक से बजाना आरम्भ करिए और इस प्रकार सरगम निकालिए:—

सा—उपरोक्त कायदे से सब अंगुलियाँ ज्यों की त्यों रक्खी रहे।

रे—सबसे नीचे की एक उङ्गली उठाने से निकलेगा।

ग—उसके बाद की उङ्गली उठाने से निकलेगा।

म— " तीसरी " "

प— " चौथी " "

ध— " पाँचवीं " "

नि—नीचे का अंगूठा उठाने से निकलेगा।

सां—ऊपर वाली उङ्गली को उठाने से (सब सूराख खुलने पर) निकलेगा, यह आरोही की सरगम होगई, अवरोही मे इसी प्रकार ऊपर से क्रमशः बन्द करते आइए।

इसी प्रकार नित्य प्रति १ घण्टे तक आरोही-अवरोही की सरगम निकालने का अभ्यास कम से कम एक सप्ताह तक करना चाहिये। फिर निम्नलिखित सरगमों को निकालने का अभ्यास करना चाहिये।

(१)

आरोही—सारेग रेगम गमप मपध पधनि धनिसां।
अवरोही-सांनिध निधप धपम पमग मगरे गरेसा।

(२)

आरोही—सासा रेरे गग मम पप धध निनि सांसां।
अवरोही-सांसां निनि धध पप मम गग रेरे सासा।

(३)

आरोही—सारेगम रेगमप गमपध मपधनि पधनिसां।
अवरोही-सांनिधप निधपम धपमग पमगरे मगरेसा।

(४)

आरोही—सारेसारेग रेगरेगम गमगमप मपमपध पधपधनि धनिधनिसां।
अवरोही-सांनिसांनिध निधनिधप धपधपम पमपमग मगमगरे गरेगरेसा।

इन सरगमों का अभ्यास हो जाने से स्वर ज्ञान होने के साथ ही उङ्गलियों में भी लचक पैदा हो जायगी, फिर गायन निकालना बहुत आसान हो जायगा। तीव्र स्वर का आधा सूराख दबाने से कोमल स्वर बन जाता है।

बांसुरी में गायन निकालने की विधि—

जो गाना बांसुरी में निकालना है, पहिले उसे खूब याद कर लेना चाहिए। बांसुरी बजाते समय गाने की मात्राओं को मुँह में इस प्रकार उच्चारण किया जाता है कि मुँह की आवाज पैदा न होकर बांसुरी की ही आवाज पैदा हो।

जैसे—प्र भो डा लि ये जा न वे जा न हैं ह म।

अ ओ आ इ ए आ अ ए आ अ ऐ अ अ।

मुँह से केवल मात्राओं का इशारा दिया जाता है और उङ्गलियों द्वारा स्वर बदले जाते हैं। नवशिक्षितों को चाहिए कि नित्य प्रति थोड़ी बांसुरी अवश्य बजाने का अभ्यास किया करें, ऊब कर छोड़ें नहीं। शीघ्र ही गाना निकालने लगेगा।

नीचे एक गाना बांसुरी की स्वरलिपि सहित दिया जाता है, गाने के शब्दों के ऊपर जो नम्बर लिखे हैं, उनसे यह मतलब है कि गाने के जितने टुकड़े के ऊपर जितने नम्बर दिए हैं, उस टुकड़े को बजाते समय बांसुरी के ऊपर के उतने ही सूराख बन्द रक्खो। जहां पर ऽ चिन्ह आवे वहां उतनी ही मात्रा तक ठहरना होगा। ऊपर के उतने ही छिद्र दबाने चाहिये जितने लिखे हैं, बाकी नीचे के सब सूराख खुले छोड़दो। चाहे वे कितने ही हों। बांसुरी के पीछे वाले सूराख को अंगूठे से बन्द रक्खो, अभ्यास होजाने पर उसे भी काम में लेने लग जाते हैं।

गायन (ताल कहरवा, मात्रा ८)

कित बाज रही सखी बांसुरिया, मधुवन में या मोरे तन में।
मोय जान परति लहरावति है, यमुना की धारा या मन मे॥
तन मधुवन सो, मन यमुना सो, निश्चय सो वृक्ष कदम्ब खड़ो।
मुरली संकेत सी जान परे, पटु प्रेम को गीत बजावन मे॥
राधा, राधा, राधा, राधा, धारा, धारा, धारा, धारा।
श्री राधा की अमृत धारा, झर-झर झहरावति कानन मे॥
वह मुरली वारा सांवरिया, छिप ठाड़ौ हरे-हरे पत्तन में।
सो दीख परे सखि वाही को, छवि छाई जाके नैनन मे॥



ऊपर से सूराख बन्द करो गायन	५ कि	४ त	६ बा ऽ	५ ज र	३ ही ऽ	२ स खि	१ बां ऽ सु रि या ऽ

१	२	३	४	१	२	३	४	५
म धु	वन	में	ऽ	या ऽ	मो ऽ	रे ऽ	तन	मेंऽ

स्थाई का दूसरा चरण भी इन्हीं स्वरों पर बजाओ।

अन्तरा—

०	२	१	०	१	१	२
तन मधुवन सो ऽ	मन	य मु	ना ऽ	सो ऽ	निश	चय

३	४	१	२	३	४	५
सो	ऽ	वृऽ	क्ष क	दऽ	म्ब ख	ड़ोऽ

जहां ० शून्य है, वहां सब छिद्रों से उङ्गलियां हटा देनी चाहिये।







जलतरंग

> सङ्गीत वाद्य यन्त्रो मे जलतरङ्ग भी एक मनोहर वाद्य है, इस वाद्य का सितार के साथ गहरा सम्बन्ध है। यही कारण है कि सितार के साथ जलतरङ्ग बजाने मैं विशेष आनन्द आता है।
>
> (इसके तथा अगले ३ लेखो के लेखक हैं—श्रीयुत शिवशंकर जी जोशी, देहली)

देशी और विलायती जलतरंग में भेद—

(१) देशी जलतरङ्ग में १६ प्याले होते हैं, किन्तु इङ्गलिश जलतरङ्ग में लगभग ११ होते हैं।

(२) देशी जलतरङ्ग में चीनी के प्याले होते है, इङ्गलिश में सङ्गमरमर के।

(३) देशी जलतरङ्ग के प्यालों मे पानी भर कर बजाते है, किन्तु इङ्गलिश जलतरङ्ग के खाली प्याले बजाये जाते है। इसीलिये तो इसमें वह मधुरता नहीं आती, इस (विलायती) को तो जलतरङ्ग कहना भी व्यर्थ है; मेरी राय मे इसे "सङ्गमरमर तरङ्ग" कहा जाय तो अनुचित न होगा।

(४) देशी जलतरङ्ग उकड़ूं (घुटनों के बल) बैठकर दोनों हाथों में दो कलमें लेकर तथा हाथों को थोड़ा घुटनों के बीच मे देकर बजाया जाता है। किन्तु अंग्रेजी जलतरङ्ग के प्याले टेबिल पर रखकर और खड़े होकर बजाये जाते हैं।

(५) देशी जलतरङ्ग सितार इत्यादि के साथ बजाया जाता है, किन्तु इङ्गलिश जलतरङ्ग प्यानो के साथ बजाया जाता है।

(६) देशी जलतरङ्ग में बड़े प्याले बांयी ओर रक्खे जाते है और अंग्रेजी मे दांयी ओर रक्खे जाते हैं।

जलतरंग मिलाने की रीति

ऊपर बताया जा चुका है कि सितार के साथ इसको बजाने से विशेष आनन्द आता है, अतः पहिले सितार बजाने वाले सज्जन बैठे, फिर जलतरङ्ग बजाने वाले बैठे, उनके बाद तबले वाले बैठ जांय। सबसे प्रथम सितार मिलाया जावे, जौनसी राग-रागिनी बजानी हो उसका थाट ठीक करे। फिर जलतरङ्ग वाले को १६ चीनी के प्याले (जो कि क्रम पूर्वक बने होते हैं) अपने सामने इस प्रकार रखने चाहिये, जैसे-धनुष का आकार होता है। बडा प्याला बांयी ओर से रखना आरम्भ करे। सब प्यालों मे ऊपर तक पानी भरदेना चाहिये। इसके बाद चमचे से पानी को घटाते बढ़ाते हुए बड़े प्यालों को सितार के उतरे परदों मे और छोटे प्यालो को चढ़े परदो मे कलम से टकोर (जरब) दे दे कर मिलावे (जैसा कि उपरोक्त चित्र मे नम्बर देकर दिखाया गया है) इस प्रकार जब दोनो के स्वर मिलजावें तब उसी थाट मे गत बजाना आरम्भ करदे (आगे एक गत 'यमन' उदाहरणार्थ दी जा रही है) गत बजाते समय यदि किसी स्थान पर सितार मे मींड जाहिर की जावे तो प्याले मे कलम डुबोकर टकोर (जरब) देने से इसमें भी मींड प्रकट हो जावेगी। 'डा' पर कलम की एक टकोर और डिड पर दो टकोर देनी चाहिए।

तबले वाले महाशय को चाहिये कि वे तबला मिला कर शुद्ध ठेका धीरे-धीरे लगाते रहे।

गत यमन-थाट कल्याण

(तीन ताल, मात्रा १६)

नोट—इन नकशों मे ऊपर सितार के बोल हैं और नीचे जलतरङ्ग के प्यालों के नम्बर है।

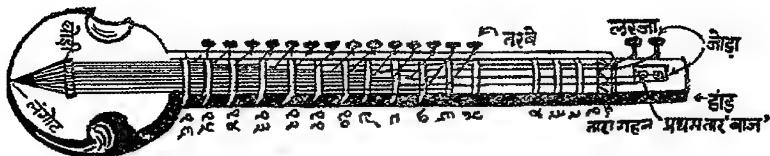
३	×	२	०
डा डिर डा रा	डा डा रा डिर	डा डिर डा रा	डा डा रा डिर
७-७ ६ ५ ६	७ ७ ८ ७	८ १० १०,११,१२,११ ११ १०	८ ७ ७ ८

तोडा—पहिली ताल से आरम्भ करके, अर्थात् गत बजाने के बाद लो और फिर गत पहिले से शुरू करके मिलादो।

डिर डिर डा रा	डा डा रा डा	डा डिर डा रा	डा डा रा डिर
११ ११ १२ १२	१२ १२ १२ १२	१३ १२ १२ १३	२३ १२ ११ ११
डा डिर डा रा	डा डिर डा रा	डा डिर डा रा	डा डा रा डि
११ १२ १३ १२	११ १० १०,११,१२,११ ११	८ ७ ८,१०,११,१२,११ ११	८ ७ ७ ८

पहिले पहल सितार इत्यादि किसी वाद्य के साथ ही जलतरङ्ग बजाना आरम्भ करना चाहिए, स्वर ज्ञान और अभ्यास हो जाने पर इसे अलग भी बजा सकते हैं।

————ऐसी लकीर मे जितने नम्बर हैं, वे एक मात्रा मे बजेंगे।



दिलरुबा

यह बाजा बड़ा मधुर और सुरीला होता है। इसमें सारङ्गी की भांति एक-एक अक्षर साफ़-साफ़ निकलता है। आजकल इसका प्रचार खूब होगया है।

वर्तमान समय में कई डिज़ायन की दिलरुबा देखने में आती हैं, इसकी डांड ऊपर से सितार की भांति और नीचे से सारङ्गी जैसी होती है। इसकी तबली भी उसी प्रकार खाल से मढ़ी होती है तथा सितार की तरह १६ पीतल के परदे तांत से कसे हुए होते हैं। सारङ्गी की तरह इसे भी गज से बजाते हैं।

तार मिलाने की विधि

जब से हारमोनियम प्रचलित हुआ है, तार वाद्यों का मिलाना बहुत ही आसान होगया है किन्तु इससे एक हानि भी हुई है, वह यह कि हमारा स्वर ज्ञान जाता रहा, हम हारमोनियम से ही तारवाद्यों को मिलाने के आदी होगए हैं। अतः जहां तक होसके बिना हारमोनियम के ही तारवाद्यों को मिलाने का अभ्यास करना चाहिए, इससे आपको स्वरज्ञान की वृद्धि में बहुत सहायता मिलेगी।

पहिले तार (बाज का तार) को कोमल मध्यम से दूसरे और तीसरे को षड्ज (स) से और चौथे तार को प्रथम सप्तक के 'सा' से मिलाओ। तार तो मिल गए अब तरबों के मिलाने की सरल विधि यह है कि तरब दिलरुबा के जिस परदे के पास हो उसी से उस तरब को मिलाओ। जिस थाट मे जौनसी गत बजानी हो उसी थाट के स्वरों में यदि तरबें मिलाली जावें तो फिर कहना ही क्या है। बड़ी मधुरता मालुम होगी।

थाट व्याख्या

यदि कुल परदे १६ ही हैं तब तो थाट बदलना आवश्यक है। किन्तु 'अचल थाट' जिसमें कुल २२ परदे उतरे और चढ़े (कोमल, तीव्र) होते हैं, उसमें थाट बदलने की कोई जरूरत नहीं होती। सोहल परदों पर भी हर एक थाट बन सकता है। यदि स्वरज्ञान पूर्ण हो तो तार को खींचने से उतरे चढ़े स्वर बन जाते है।

परदे को ऊपर चढ़ाने से उतरा (कोमल) और नीचे उतारने से चढ़ा स्वर (तीव्र) बन जाता है, प्रचलित राग-रागनियों के स्वरों का ज्ञान होना अति आवश्यक है।

परदों के नाम

खूंटियों की ओर से नीचे को:—

(१) कोमल मध्यम (जो तार १ को परदों पर बिना दबाए ही बोलता है)
(२) मं—तीव्र
(३) प—अचल
(४) ध़—कोमल
(५) ध—तीव्र
(६) नि—तीव्र
(७) सा—अचल
(८) रे—तीव्र

(९) ग—तीव्र
(१०) म—कोमल
(११) मं—तीव्र
(१२) प—अचल (मध्यम सप्तक)
(१३) ध—तीव्र
(१४) नी—तीव्र
(१५) सा—अचल (टीप सप्तक का)
(१६) रे—तीव्र

उपरोक्त स्वरो के थाट पर निम्न लिखित राग-रागनियों की गतें बज सकेंगी।

१-बिलावल, २-जैत, ३-झिंझोटी, ४-सरपदा, ५-देश, ६-कामोद, ७-अल्हैया, ८-तिलङ्ग, ९-गौड़सारङ्ग, १०-देवगिरी, ११-देवसाख, १२-कुकुभ (संपूर्ण), १३-श्याम, १४-छाया, १५-ईमन, १६-विहाग (दोनों मध्यम) १७-शंकरा, १८-गारा।

बजाने की विधि—

गज को पक्के बहरोजे की डेली पर भली प्रकार रगड़ कर दिलरुबा पर सीधा इस प्रकार चलावें कि बाज के तार के अतिरिक्त और किसी तार से गज न लगे। गज के खींचने को 'धा' कहते हैं। एक बार खींचने से १ धा और दो बार खींचने से २ धा कहे जायेंगे।

अब दाहिने हाथ से गज चलाइये और बांए हाथ की पहिली और दूसरी अंगुली से परदे पर तार को (परदे से कुछ ऊपर की ओर हटी हुई) दबाओ और सा रे ग म इत्यादि निकालो। जब दोनों हाथ जम जाएँ अर्थात् अपना काम ठीक करने लगे तो नीचे लिखी गत का अभ्यास करो। यदि गत का अभ्यास करने के साथ-साथ तबले पर ठेका भी लगता रहे तो और भी लाभदायक होगा।

गत राग 'गारा' तीनताल

थाट—सा, रे, ग, म, प, ध, नी, सां।

चित्र के नम्बरों द्वारा नोटेशन—

×				२				०				३			
				२	५	६	७	५	६,७	६	५	८,९	७,८	६,७	५,६
				धा	धा	धा	धा	धा	धा	धा	धा	धा	धा	धा	धा
५	६,७	६	५	२	५	६	७	५	६,७	७	५	–	–	–	–
धा	धा	धा	धा	धा	धा	धा	धा	धा	धा	धा	धा	धा	धा	धा	धा

तान सम से शुरू—

×				२			
५,६,७,५,	७,८,९,११,	९,११,१२,१३,	१२,१३,१४,	९,८,७,८,	५,६,७,	६	५
धा	धा	धा	धा	धा	धा	धा	धा

इसके बाद लहरे मे मिलाइये।

चिन्ह परिचय— ⌣ ‿ इन चिन्हों मे जितने नम्बर हो वे एक मात्रा मे बजेंगे।



सँपेरे की बीन

भारतवर्ष में आजकल इस बाजे को इस रूप में प्रायः सपेरे (Snake Players) ही बजाते है और सांपों के पकड़ने मे मदद लेते है, साथ ही इससे अपना पेट भी पालते है।

इतिहास से यह ठीक पता नहीं चलता कि इस बाजे का आविष्कार किसने और कब किया, किन्तु सुना जाता है कि इसके प्रचलित करने वाले गुरु गोरखनाथ थे (जो कि महान् योगी हो गये हैं) कुछ भी हो, यह बाजा बड़ा सुरीला और आकर्षक है, इसका जादू सांपों पर तो आप देखते है, हरिण आदि भी इसके द्वारा मोहित हो जाते हैं।

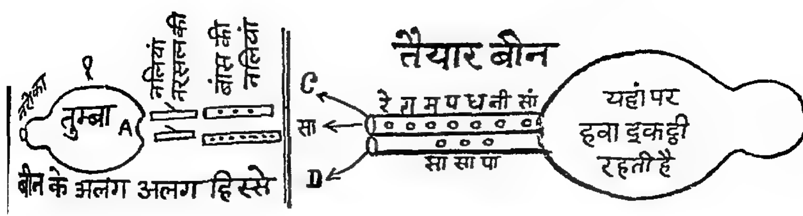
बीन के पृथक-पृथक भाग—

(१) तूंबा, (२) नरसल की २ नलियाँ एक-एक गिरह की, (३) २ नलियां बांस की १० इन्च की, (४) मोम, (५) मनुष्य के बाल।

बीन बनाने की विधि—

नरसल की दो नलियां पतली-पतली गिरह-गिरह भर की लेकर उनका खपरा बीच मे (Centre) में से चीर कर, उनमें एक-एक बाल आदमी के सिर का रख कर ऊपर की ओर से तुम्बा (नं० १) के छिद्र A में और नीचे की ओर से आधी बांस की नलियों में रखकर चारों ओर से अच्छी तरह मोम से बन्द करदें। फिर सबसे पहिले नली "C" में सात सूराख इस प्रकार करें।

टीप से-सां, नी, ध, प, म, ग, रे, सा और दूसरी नली "D" में तीन सूराख नीचे से ऊपर की ओर करें, दो षड्ज के अर्थात् जोड़ा और एक पञ्चम का। पहिली नली C के सा या प मिलते हुए कर लेवें। यह तीन स्वर "आंस" के स्वर कहलाते हैं, अब बीन बिलकुल तैयार है। आगे दिये हुए चित्र में सब हिसाब देख लीजिये।



बीन बजाने की विधि—

पहिले अच्छी तरह से लगातार फूंक देने का अभ्यास कर लेना चाहिये। आपने सपेरों को बीन बजाते देखा होगा कि बजाते समय उनके दोनों गाल बराबर फूले ही रहते हैं। इसी प्रकार आपको अभ्यास करना होगा। नाक द्वारा बराबर हवा (सांस लेते जाइये गाल फूले रहेंगे, हवा का स्टाक मुँह में हर समय रहना जरूरी है, मतलब यह कि बीन बजाते समय सांस टूटने न पाए। तूंबे में लगातार हवा पहुँचती रहनी चाहिये। इसके बाद आरोही—सा रे ग म प ध नी सां, अवरोही—सां नी ध प म ग रे सा, का अभ्यास भली प्रकार करलें, ताकि हाथ जम जावे और उङ्गलियां ठीक से काम करने लगें। दूसरी नली "D" के स्वरों (जोड़ा-षड्ज और पंचम) को शुरू में छोड़े रहिये, जब लहरा आदि बजाना हो तब जोड़ा, षड्ज को कभी पंचम को छेड़ते अर्थात् खोलते बन्द करते रहिये, हाथ सध जाने पर ठुमरी गजल आदि बड़ी सुगमता से निकल आवेंगी, फिर तो केवल अभ्यास की आवश्यकता रह जाती है। यहां पर यह भी बता देना जरूरी है कि स्वरों (सूराखों) को आधा खोलने से (सा और प को छोड़कर) सब स्वर कोमल और तीव्र बन जाते हैं, अब आलाप के लिए राग बरवा की आलाप सरगम दी जाती है।

बरवा—

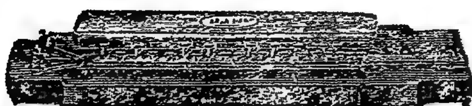
सरगम—सा रे ग़ म प ध़ नि (वादी स्वर 'नि' है)

रूप—अठारह वर्ष की उम्र, जोगिया वस्त्र धारण किए हुए, गले में सुगंधित फूलों का गजरा पहिने, पहाड़ के वृक्षों की सैर करता हुआ, फूलों की गेंदें उछालता हुआ, वियोगी बरवा घूम रहा है।

स्थाई—नि़ सा म ग़ म ग़ म प ध़ प म प ग़ म प म ग़ रे सा निध़प मग़रे सा।निध़पम़ प़ नि़ सा।

अन्तरा—म म प प नि सां सां नि सां ग़ं रें सां रे सां नि नि ध़ प म प नि ग़ं रें सां नि ध़ प म ग़ रे सा नि़ ध़ प़ नि़ नि़ सा।

टैशोकोटो (बैंजो)



(लेखिका—सुश्री विनयकुमारी)

टैशोकोटो एक जापानी तार-वाद्य है। इसे बुलबुलतरङ्ग या बैंजो भी कहते हैं। इसे जापान ने कुछ दिन पहिले तैयार किया है। यह सितार का रूपान्तर है। फिर भी सितार को यह पा नहीं सकता। इसमें टाइप राइटर के समान २३ चावियां होती हैं। इसका स्वर अति मधुर तथा आकर्षक होता है। छोटे बड़े सभी आसानी के साथ इसे बजा सकते हैं। सस्ता होने के कारण इसके अधिक प्रचार होने की आशा है।

टैशोकोटो ४, ५, ७, ८ और १० तार के होते हैं।

बाजे के अन्य भागों का वर्णन—

इसमें २३ चावियां होती हैं। जिस तख्ते में चावियां लगी होती हैं, वह की बोर्ड Key-board कहलाता है। इसके नीचे स्प्रिङ्ग होती है। जिनमें चावियां बँधी होती हैं, वह बिलोस्प्रिङ्ग Below spring कहलाता है। चावियों के नीचे एक लकड़ी की तख्ती चिपकी होती है, इनमें पीतल के छोटे-छोटे टुकड़े लगे होते हैं। ये सुन्दरियां कहलाते हैं।

बाजे के दाहिनी ओर कील सी उठी होती हैं, इनमें तार अटका कर ब्रिज के ऊपर से लेजा कर खूँटियों में कस दिये जाते हैं।

सितार में मिजराब काम में लाया जाता है। पर इसमें स्ट्राइकर काम में लाया जाता है। स्ट्राइकर कचकड़े का बना होता है। यदि पिन या पेन्सिल द्वारा भी तारों पर आघात किया जाय तो भी काम चल सकता है।

तार मिलाना—

टैशोकोटो में दो प्रकार के तार होते है। एक तो पतला स्टील का तथा दूसरा मोटा सफेद रङ्ग का। स्टील का तार बाजार से लाकर लगाया जा सकता है। मोटे तार के बिना भी काम चल सकता है।

प्रथम पतले तार को किसी भी स्वर में मिलालो। फिर तमाम स्टील के तारों को इसी स्वर में मिलालो। फिर गूंज के तार को इस प्रकार मिलाओ कि स्टील के तारों की गूंज उसके साथ मिल जाय। सब तारों को एक स्वर में मिलाना बताकर सिखाया है, जिससे नौसिखिये भ्रम में न पड़ जांय।

चावियों का वर्णन—

ऊपर बताया जा चुका है कि इसमें टाइप राइटर के समान २३ चावियां होती हैं। इन चावियों से मजे में दो सप्तक तैयार होजाते हैं। इन चावियों पर अंग्रेजी की गिनतियां लिखी होती हैं। मुख्य स्वर सात ही हैं। १ और ५ 'सा' और 'प' होने के कारण कभी कोमल नहीं होते। इसके अतिरिक्त अन्य सब कोमल हैं, जो छोटी चावियां हैं वे कोमल हैं।

अब आपको टैशोकोटो का तमाम हाल मालुम होगया। यह चाहे जहां वैठकर बजाया जा सकता है, पर इतना ध्यान अवश्य रहे कि दोनों हाथ चलते रहें।

बाजा बजाना—

बाजा बजाते समय धीरे-धीरे गाइये भी। स्ट्राइकर धीरे-धीरे चलाना चाहिये। एक अत्तर पर स्ट्राइकर लगाना चाहिये, पांचों उङ्गलियों को काम में लाना चाहिये। यह ध्यान रहे कि कोई उङ्गली किसी अन्य उङ्गली को फलांग कर न जाय और हारमोनियम की भांति अंगूठा ऊपर के स्वरों पर न रखना चाहिये।

कोई गाना बजाने से पहिले उङ्गलियां जल्दी-जल्दी चलाने का अभ्यास कर लेना चाहिये। यहां कुछ सरगम दिये जाते हैं। पहिले इन सरगमों पर ही खूब अभ्यास करना चाहिये, तब गायन निकालने की कोशिश करें।

सरगम नं० १

1	2	3	4	5	6	7	° 1
आरोही—सा	रे	ग	म	प	ध	नि	सां
° 1	7	6	5	4	3	2	1
अवरोही—सां	नि	ध	प	म	ग	रे	सा

सरगम नं० २

123	234	345	456	567	° 671
आरोही—सारेग	रेगम	गमप	मपध	पधनि	धनिसां
° 176	765	654	543	432	321
अवरोही—सांनिध	निधप	धपम	पमग	मगरे	गरेसा

सरगम नं० ३

12	123	23	234	34	345	45	456	56	567	67	° 671
आरोही—सारे	सारेग	रेग	रेगम	गम	गमप	मप	मपध	पध	पधनि	धनि	धनिसा
° 17	° 176	76	765	65	654	54	543	43	432	32	321
अवरोही—सांनि	सांनिध	निध	निधप	धप	धपम	पम	पमग	मग	मगरे	गरे	गरेसा

सरगम नं० (४)

	12333	23444	34555	45666	56777	67111
आरोही—	सारेगगग	रेगममम	गमपपप	मपधधध	पधनिनिनि	धनिसांसांसां
	17666	76555	65444	54333	43222	321 1 1
अवरोही—	सांनिधधध	निधपपप	धपममम	पमगगग	मगरेरेरे	गरेसासासा

इसी प्रकार आप स्वयं अन्य सरगम भी तैयार कर सकते हैं। जो इस बाजे में प्रवीण होना चाहते हैं वे पहिले खूब सरगम बजावें। गाना निकालने की जल्दी नहीं करनी चाहिए। आगे एक गाने की सरगम भी दी जाती है।

जावो–जावो ऐ मेरे साधू..........................!

जावो–जावो ऐ मेरे साधू रहो गुरु के संग।
सोला बरस पर आए थे एक दिन, शान्त रहे हम लोग।
अब फिर छोड़ चले हम सबको, कहो कौन ये ढङ्ग ॥ जावो–जावो...॥
जितनी दूर भी जाय रहोगे हृदय ही के समीप।
ऐसे ही तुम हर एक युग में, बदलो हर एक रङ्ग ॥ जावो–जावो...॥
जावो परमेश्वर को भजलो, करो भलाई सबकी।
सब संसारी गुण गायेंगे, पूरन नाम के संग ॥ जावो–जावो...॥



स्थाई—

H H
6 6 6 2 2 2 1 2 3 4 3 2 1 2 1 1 0 0 0
0 0
जाऽ वोऽ जाऽ वोऽ ऽऽऽ ऐऽ मे ऽ रे ऽ साऽ धूऽ र होऽ गु रूऽ केऽ सऽ गऽ

अन्तरा—

4 4 4 4 4 3 3 4 3 4 2 2 3 5 5 4 3 4 2
सो ला ऽ ब रस पर आऽ ये थे ए क दिन शाऽ न्त र हेऽ ह मलोऽऽऽऽऽऽ ग
H H
6 6 6 6 6 6 6 5 6 5 4 3 3 4 5 4 4 3 3 6 6 6
o o o
अ ब फि र छोऽ ड़ च लेऽ ह म स ब कोऽ क हो कौऽ न ये ऽ ढं ऽ ग

इसी प्रकार अन्य गायन भी बजाए जा सकते हैं। किन्तु सितार की भांति इसमें मींड नहीं निकल सकती।

वीणा

(लेखक—श्री शिवशङ्कर जी जोशी)

वीणा एक प्राचीन वाद्य है। यह नारद वीणा के नाम से भी प्रसिद्ध है। वर्तमान समय में कई प्रकार की वीणा नये-नये डिजायनों की देखने में आती हैं। वीणा का आविष्कार भगवान शङ्कर ने किया था। ऐसा प्राचीन ग्रन्थों से पता चलता है। इसके आविष्कार का कारण इस प्रकार लिखा है:—

एक बार देवी पार्वती को श्री महादेव जी ने इस प्रकार शयन करते हुए देखा कि उनके दोनों हाथ (चूड़ियां पहिने हुए) दोनों छातियो पर रक्खे हैं और वे सीधी (चित्त) सो रही हैं, महादेव जी ने पार्वती जी की दोनों छातियों के रूप मे दो तुम्बे और हाथो को डांड रूप में बना कर वीणा तैयार की और चूड़ियों के स्थान पर तरबें लगादीं, इस प्रकार वीणा का आविष्कार किया।

वीणा के मुख्य—मुख्य भाग

(१) डांड (बांस या लकड़ी की)
(२) तूंबा, दो
(३) सारें २४
(४) मोर या अन्य चोंचदार पत्ती का मुँह १
(५) खूँटियां ७
(६) शाम, तार इत्यादि

वीणा के बनाने की विधि

बांस या लकड़ी की १ डॉड लेकर उसे बराबर भागों में चीर कर अन्दर से खाली (खोखली) करो, फिर उन दोनो भागों को मिलाकर सरेस से जोड़ दो, फिर इनको लोहे के तार अथवा लोहे की शामो से ३ स्थानो पर कसदो। अब सात सूराख खूंटियों के वास्ते पॉच बांई ओर के सिरे पर और दो मध्य मे बनाओ, इसमें खूंटियॉ भली प्रकार कस दो, फिर २४ सारें लो और उनको पीतल या लोहे की पतली चहर से मढ़लो, फिर डांड पर मोम या सरेस से जमादो, अब दोनों तुम्बों

को डांड के दोनों सिरों पर (कुछ-कुछ सिरा छोड़कर) लगादो, फिर मोर या और किसी चोंचदार शक्ल को (जो हाथी दांत या हड्डी की बनी हुई हो) डांड के दांई ओर इस प्रकार लगाओ कि उसके दोनों पंख डांड के दोनों ओर रहें। इसके बाद पहिली खूंटी नं० १ में तांबे का तार, नं० २ में लोहे का तार, और नं० ३ में पतला तार लोहे का नं० ४ में तांबे का तार नं० ५ में लोहे का तार और नं० ६ तथा ७ में लोहे का पतला तार डाल दो। ध्यान रहे कि नं० ६ व ७ के तार पत्ती के पंखों पर से होते हुए जाने चाहिए ! (यह सब तार पक्के होने चाहिए) अब वीणा तैयार है। आवश्यकतानुसार इस पर रङ्ग रोगन कर सकते हैं।

तारों के मिलाने की विधि और सारों के नाम

खूंटी नं० १ तार को षरज अर्थात् 'सा' से मिलाओ।
" २ " को मध्यम " मं (तीव्र) मिलाओ।
" ३ " षरज (टीप) " सां से मिलाओ।
" ४ " षरज " सा "
" ५ " पंचम " प "
" ६ " षरज (टीप) " सां "
" ७ " षरज (टीप) " सां "

अब सारें बांई ओर से दांई ओर को गिनते हुए निम्नलिखित स्वरों में मिलाओ।

प्रथम सप्तक

१—मं (तीव्र) २—प (अचल) ३—धु (कोमल) ४—ध (तीव्र)
५—नि (कोमल) ६—नि (तीव्र) ७—सा (अचल)

दूसरी सप्तक

८—रे (कोमल) ९—रे (तीव्र) १०—ग (कोमल) ११—ग (तीव्र)
१२-म (शुद्ध) १३—मं (तीव्र) १४—प (अचल) १५-धु (कोमल)
१६-ध (तीव्र) १७—नि (कोमल) १८—नि (तीव्र) १९-सां (अचल)

तीसरी सप्तक—

२०-रें (कोमल) २१-रे (तीव्र) २२-गं (कोमल) २३-गं (तीव्र)
२४-मं (शुद्ध यानी कोमल)

बोल निकालने की विधि—

दाँये हाथ की पहली उङ्गली और बीच की उङ्गली में मिजराब आड़ी पहन कर बाज के तार 'म' पर अन्य सब तारों को स्पर्श करते हुए अपनी ओर जरब लगाने से 'डा' और इसका उल्टा करने से 'रा' निकलेगा, परन्तु यह बोल उसी हाथ की चिटली में बांक डालकर, 'डा' निकालने के बाद ही चिकारियों पर निकलेगा।

डिरा—यह बोल 'डा' और 'रा' को मिलाकर बजाने से उसके आधे समय में निकलेगा।

बजाने के विधि—

वीणा बजाने वाले को चाहिये कि औधे घुटने करके (उकडूं) बैठे। बांये कांधे पर वीणा रक्खे (कोई-कोई इसे अपने सामने रखकर भी बजाते हैं) फिर प्रथम धीरे-धीरे सारेगम आदि तारों पर बांया हाथ चलाने का अभ्यास करे। जब भली प्रकार हाथ जम जावे तब गत निकालने की कोशिश करें।

नोट—प्राचीन समय में वीणा के साथ-साथ तम्बूरे वाले और १ पखावजी सङ्गत मे हुआ करते थे, किन्तु अब जमाना नया है, नये-नये साज़ हैं अतः मनमानी सङ्गत होती है। अब आगे वीणा की एक गत 'गूजरी टोड़ी' अभ्यास के लिये दी जाती है। इस पर कुछ दिन परिश्रम करके हाथ तैयार हो जावेगा, बाद मे फिर और-और गतें भी आसानी से निकल सकेंगी।

"गूजरी टोड़ी ध्यान"

मलयागिर वृक्ष के कोमल पत्तों की शैया पर बैठी हुई १६ वर्ष की अवस्था, सुन्दर केश है जिसके। वीणा हाथ में लिये, श्रुति और स्वर इनके विभाग को दरशाती हुई ऐसी गूजरी रागनी है।

उत्पत्ति

रामकली टोड़ी संयुक्ता वराटी मिश्रता पुनः।
गुर्जरी जायते विद्वान अधयामे प्रगीयते ॥

अर्थ—रामकली टोड़ी संयुक्ता वराली मिली हुई गूजरी होती है—इसे विद्वान पहले प्रहर मे गाते हैं।

गत गूजरी टोड़ी

"मं तीव्र" —— कोमल स्वर रे ग ध

तीन ताल—

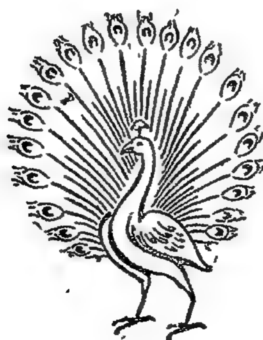
×				२				०				३			
											डिग	डा	डिग	डा	ग
											निनि	ध	पप	मं	ग
											१८,१८	१५	१४,१४	१३	१०
डा	डा	रा	डिरा	डा	रा	डा	डिरा	डा	डा	रा	डिरा	डा	डिरा	डा	डा
प	प	प	पप	मं	ग	मं	पप	मं	ग	रे	गग	रे	सासा	ध़	प़
१४	१४	१४	१४	१३	१०	१३,	१४	१३	१०	८	१०,१०	८	७,७	३	२

डा डिण डा णा	डा डिण डा णा	डा डा णा	
मं धध नि रे	ग मंमं प प	मं ध ध	
१ ३,३ ६ ८	१० १३,१३ १४ १४	१३ १५ १५	

अन्तरा—(चौथी मात्रा से)

डिण	डा डिण डा णा	डा डिण डा णा	डा डिण डा णा
मंमं	प निनि रें गं	गं गंगं रें सां	नि निनि ध प
१३, १३	१४ १८,१८ २० २२	२२ २२,२२ २० १६	१८ १८,१८ १५ १४
डा डा णा डिण	डा डिण डा णा	डा डा णा	
मं ध ध निनि	ध पप मं ग	मं प प	
१३ १५ १५ १८,१८	१५ १४,१४ १३ १०	१३ १४ १४	

चिन्ह परिचय अन्य स्वरलिपियों की तरह समझिए । ऊपर वीणा के बोल हैं, उनके नीचे सरगम, और सरगमों के नीचे वीणा की सारों (परदों) के नम्बर हैं ।



चौथा अध्याय





नृत्य-कला



नृत्यकला मनुष्य लोक की ही नहीं, देवलोक की भी एक प्रधान कला है। पुराणों से पता चलता है कि देवराज इन्द्र तथा अन्य देवगण केवल मनोरञ्जन के लिये ही इसका उपयोग नहीं करते थे, वरन् स्वयं इन्द्र भी इस कला मे पारङ्गत थे। देवादिदेव भगवान शकर भी नृत्यकला के महान् आचार्य थे। उनका तांडव नृत्य आज भी प्रसिद्ध है। भगवान् कृष्ण भी नृत्यकला के विशेष प्रेमी थे। श्री मद्भागवत मे गोपियो के साथ कृष्ण की नृत्यकला का विशद और सरस वर्णन किया गया है। महाभारत मे एक जगह लिखा है कि भीष्मपितामह ने युधिष्ठर को नृत्यकला सीखने का आदेश दिया था। अर्जुन तो तत्कालीन भारत मे नृत्य-कला के विशेषज्ञ माने ही जाते थे, अज्ञातवास के समय विराट-नरेश के अन्तपुर मे उन्होने नृत्यकला के पाठन की ट्यूशन ही की थी। बलरामजी रेवती के साथ तथा अर्जुन सुभद्रा के साथ नाचा करते थे। सावित्री सत्यवान के नृत्य को भी सभी जानते है। इससे पता चलता है कि महाभारत काल मे यह कला विशेष जोरों पर थी। रामायण काल मे भी इस कला का विशेष मान था।

नाट्यशास्त्र पंचम वेद माना जाता है। नाट्यशास्त्र के निर्माता भरत हैं। नाट्यशास्त्र मे गायन, वादन तथा नृत्य तीनों का वर्णन है। भरत मुनि देवताओं के नाट्य प्रबन्धक थे। ऐसा भी कहा जाता है कि संसार के लाभार्थ ब्रह्मा ने ध्यान मग्न होकर नाट्य, सङ्गीत और नृत्य को जन्म दिया और भरत मुनि को यह विद्या सिखा दी। नाट्य शास्त्र संसार को विषय वासनाओं में लीन करने या केवल मनोरञ्जन के लिये नहीं है, वरन् यह चारों पदार्थों धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष की प्राप्ति का साधन माना गया है। माना कि वर्तमान काल में नृत्य-कला का उद्देश्य केवल इन्द्रियों की तृप्ति तथा मनोरञ्जन ही है, लेकिन साहित्य के समस्त रसों के प्रकाशन की शक्ति भी नृत्य में सम्यक् रूप से विद्यमान है। और तो और, रसों तथा उनके सूक्ष्म भेदों तक के प्रकाशन की सामर्थ्य नृत्य के भिन्न-भिन्न रूपों तथा गतियों में भली भांति समाविष्ट है। यदि हम नृत्य को जीवन की एक आनन्द प्रदायिनी कला भी मानें तो केवल इतने से ही बस न होगा। यह कला आनन्द को सब तरह से आदर्श रूप मे प्रकट करने वाली है। नृत्यकला मानवीय आदर्श अनुभव का एक प्रकाश-मान दृश्य है और भारतीय सङ्गीत में मानवीय व्यक्तिगत अनुभव अर्थात् विकार-उत्तेजना या कुत्सित भावनाओं को कोई स्थान नहीं। भारतीय नृत्य कला का सम्बन्ध केवल मानवीय शरीर तथा उसके विचार और विकारों से ही नहीं वरन् आन्तरिक आध्या-त्मिकता, आत्मा और परमात्मा से है। ठीक उसी तरह, जिस तरह मनुष्य देह के ध्यान मग्न होने के लिये आसनों तथा मुद्राओं का विधान किया गया है। आसनों तथा मुद्राओं के सहारे मनुष्य ध्यान मग्न होकर अन्तरात्मा तक में लीन हो जाता है। नृत्यकला में भी वही विशेषता है। भरत मुनि के नाट्य शास्त्र में जिन



गगरी नृत्य

नृत्यों की मुद्राओं का वर्णन है, उनमे स्वर्गीय नृत्यकारा की दैवी क्रियाओं का और उन्हीं क्रियाओं का मानवीय विचारों और ध्येयों के साथ उपयोग का सम्मिलन है।

अन्य देशों के नृत्य—

संसार के सभी देशों मे प्राचीन समय से ही इसकी उपस्थित भिन्न-भिन्न नामों के साथ पाई जाती है। यूनान के प्राचीन एवं प्रसिद्ध नृत्य का नाम वॉल्ज़ (Waltz) है। इङ्गलिस्तान के प्राचीन नृत्य का नाम 'मे पोल' (Map pole) है। 'मे पोल' नृत्य बसन्त ऋतु के समय उल्लास-प्रदर्शन के लिये होता था। आयरलैंड के जातीय नृत्य का नाम ज़िग (Jig) है। स्पेन के नृत्यो में फैंडागो नृत्य (Fandago Dance) सबसे प्राचीन एवं प्रसिद्ध है। यह स्पेन में सब नृत्यों का आधार माना जाता है। फैंडागो नृत्य के विषय मे एक किम्वदन्ती भी प्रचलित है। प्राचीन काल में स्पेन देश के पादरियों के सम्मुख एक अर्जी पेश की गई, जिसमें नृत्यों के कामोत्तेजक प्रभावों की जबरदस्त शिकायत की गई थी। इस पर पादरियों ने जनता के बयान लिये। बयानों पर से भविष्य के लिये नृत्य बन्द कर दिया गया। इस पर एक नेता ने कहा कि हमेशा के लिये इसे बन्द कर देने के पहले आखिरी बार इसे देख तो लें। इस पर पादरियों की आज्ञा से नर्तक बुलवाये गये और वहीं फैंडागो नृत्य हुआ। पहिले तो नृत्य मन्द-गति से हुआ, इसलिये दर्शकों पर कोई विशेष प्रभाव न हो सका, पर ज्यों ही उस नृत्य की गति द्रुत हुई कि पादरी रसोद्रेक के कारण झूमने लगे। वहां जितने धार्मिक अधिकारी बैठे थे



गोपी नृत्य

सभी के मन नृत्य की तरङ्गों मे परिप्लावित हो उठे। पादरियों ने हुक्म दे दिया कि यह नृत्य बन्द नहीं किया जा सकता।

फ्रांस प्राचीन काल से ही नृत्यकला के लिये प्रसिद्ध रहा है, वहां तो यहां तक प्रसिद्ध है कि जो मल्ल दिन मे चाहे दूसरो को अखाड़े में पछाड़ दें, किन्तु यदि रात्रि में वे नृत्य द्वारा अपनी अद्भुत शक्ति का प्रदर्शन नहीं करते तो वे पारितोषिक के अधिकारी नहीं हो सकते।

फ्रांस का माइन्यूट (Minuet) नृत्य बहुत प्राचीन एवं प्रसिद्ध है। इसी प्रकार सभी देशों में नृत्य भिन्न-भिन्न नामों से विख्यात हैं। सभी देशों के साहित्य मे इस कला का प्राचीन वर्णन और इतिहास विद्यमान है।



बांसुरी का भाव—

भारतीय और पाश्चात्य नृत्य की तुलना—

भारतीय एवं पाश्चात्य नृत्यों में आकाश पाताल का अन्तर है। इसका कारण यह है कि भारतीय कलाओं के विकास के गर्भ मे पवित्रता एवं अध्यात्मिकता का निवास है। भारतीय नृत्य कला का उपयोग हमारे आन्तरिक रूप या परमात्मा स्वरूप के प्रकाशनार्थ ही है। इसीलिये नृत्य-कला को धर्म के साथ जोड़ दिया गया है। पश्चिम मे जब से प्रोटेस्टैण्ड मत (Protes tants) का जोर हुआ तभी से देवालयों मे से यह कला बहिष्कृत कर दी गई और इसका रूप उसी समय से सांसारिक होगया पश्चिम में पूर्व की अपेक्षा यह कला समुन्नत है, किन्तु इसकी पहुँच जनता के आमोद-प्रमोद की उपलब्धि के आगे नहीं। उद्योग धन्धों के केन्द्र यूरोप और अमेरिका नृत्यकला के जबरदस्त पोषक हैं, किन्तु इसका उद्देश्य वहां जीविकोपार्जन में व्यस्त जनता को नाच गान के उपभोग से क्षणिक विश्राम और मनोरंजन की प्राप्ति तक ही है। पश्चिम की कला का एक मात्र लक्ष्य केवल जनता का आमोद प्रमोद है। वहां कला की वास्तविकता-सादगी बारीकी और घनिष्ठता की ओर किसी का

लक्ष्य नहीं। भारतवर्ष मे कला के सब रूपों का धर्म के साथ सम्बन्ध रहा है और इनमे से सङ्गीत और नृत्य ने तो मानव आत्मा के अन्तरतम को प्रकट करने का सबसे अधिक कार्य किया है। इसीलिये भारतीय कलायें हजारों वर्षों के योग और साधनों के परिणाम हैं। भारतीय नृत्य विश्व के रहस्यपूर्ण ताल का ज्वलन्त रूप है। भारतीय कलाओं का जन्म उस समय हुआ था जिस समय पश्चिम का उदय ही नहीं हुआ।

हिन्दू धर्म में अध्यात्मिकता आदर्श एवं विश्व व्यापकता का उद्गम सर्वोच्च आत्मा परमात्मा में माना गया है। चित्तवृत्ति का सुधार केवल आध्यात्मिकता का ही साधन नहीं, वरन् चरित्र की उज्वलता एवं पवित्रता के लिये भी इसकी आवश्यकता है। चरित्र का अर्थ सुसम्पादित चित्तवृत्ति है, जिसकी प्राप्ति के साधन अन्य साधनों के साथ नृत्य और सङ्गीत भी है। योग साधनों की तरह नृत्य और सङ्गीत भी योग साधन है—योग की क्रियाओं का फल पहले शरीर पर पड़ता है, दूसरे शब्दों मे पहले-पहल शारीरिक शक्तियों का सुधार और विकास होता है। उसके बाद मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है उसी भांति नृत्य और सङ्गीत शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास मे सहायक होते हैं।



कमर की गति

पाश्चात्य व्यायाम क्रियाओं और भारतीय योग क्रियाओ के उद्देश्य मे यही अन्तर है कि पाश्चात्य व्यायाम क्रियाओं का लक्ष्य केवल शारीरिक सुधार तक ही सीमित है और भारतीय योग क्रयाओं का उचित पालन एवं लक्ष्य परमात्म पद को प्राप्त कराना है। भारतीय योगशास्त्र मे कोई भी क्रिया ऐसी नहीं है, जिसमें

शारीरिक के साथ ही साथ मानसिक विकास न हो। भारतीय नृत्यकला का उद्देश्य केवल पाश्चात्य नृत्यकला की तरह सांसारिक उद्देश्यों की प्राप्ति ही नहीं है वरन् आध्यात्मिक एवं परमात्म पद की प्राप्ति इसका चरम लक्ष्य है।

नृत्यकला का प्रभाव—



इस कला का अर्थ केवल अङ्ग परिचालन या हाव-भाव का प्रकाशन ही नहीं है और न इस कला का अर्थ केवल नृत्यकार की वेशभूषा या देह की सजावट तक ही सीमित है, जैसा कि वर्तमान नर्तक एवं नर्तकियों में देखा जाता है। यह कला मूक नहीं फिर भी इस कला का बोलना साधारण बोलना नहीं है। इस कला में वह शक्ति है कि आत्मा में हिलोरें उठने लगती हैं। जो बात वक्तृत्व. गायन से नहीं हो पाती, वही तरङ्ग, भाव एवं प्रभाव के सहारे नृत्यकला के द्वारा इस प्रकार होती है कि आत्मा का अन्तरतम तक हिल उठता है। नर्तक की प्रेरणा जितनी ही निर्मल एवं पवित्र होगी, उतना ही उच्च और पवित्र स्थायी फल वह पैदा कर सकेगी। नर्तक नृत्य के द्वारा मन की तरङ्गों और भावों की सजीव मूर्ति दर्शकों के सम्मुख बड़े ही सुन्दर ढङ्ग से रख देता है एवं इस कला के प्रदर्शन के समय वह अपनी ही सुध-बुध नहीं भूल जाता, वरन् दर्शकों को भी भुला देता है, उन्हें आत्म विस्मृत कर मूर्तिवत् स्थिर कर देता है।

नृत्यकला और स्त्री जीवन—

स्त्रियों के शारीरिक संगठन एवं आरोग्य के लिये भी नृत्य बहुत ही लाभप्रद है। नृत्य को स्त्रियों के सामाजिक जीवन के लिये महान् उपयोगी बताते हुए एम० आर० ब्राउन ने लिखा है:—

The Dance produces a condition, in which the unity, harmony and concord of the Community are at a maximum.



रागिनीदेवी का एक नृत्य



शिव ताण्डव नृत्य

अर्थात् नृत्य से यह अवस्था उत्पन्न हो जाती है, जिसमें समाज का संगठन सामञ्जस्य एवं मैत्री चरम सीमा पर पहुँच जाती है। इसी प्रकार पाश्चात्य नृत्यकला विशारद एच. डी. हैम्बली ने अपने ग्रन्थ मे लिखा है कि मानवीय जीवन यात्रा में नृत्य को सम्मिलित करने से जीवन सुगम ही नहीं वरन् महान् आनन्ददायी हो जाता है। इसी तरह नारी विज्ञान विशारदा ई. ए. राउट ने अपनी पुस्तक मे लिखा है कि नृत्य से स्त्रियों की मांस पेशियां सुडौल एवं पुष्ट होती हैं और इससे उनको मातृत्व शक्ति की प्राप्ति के लिये विशेष सहायता मिलती है।



मुकुट की गति

इस विद्या के विषय में आज ऐसी बातें पाश्चात्य विद्वान लिख रहे है, परन्तु जिस कला की हमारे यहां लौकिक धार्मिक और सामाजिक सभी विधानो मे पूर्ण गति थी, वह भी आज हमारे यहां सभी तरह से भुलाई जा रही है। धार्मिक विधान एवं सामाजिक जीवन में आज इसका ह्रास हो रहा है और स्त्रियों में से इसका चलन उठ रहा है। यदि हमारी बहिनें इसके उच्चादर्शों को छोड़कर केवल शारीरिक उन्नति के लिये ही इसका पुनुरुद्धार करे तो भी बड़ा हित हो सकता है। भारतीय महिलाओं की शारीरिक स्थिति भी तो समाज मे गिरी हुई है, पाश्चात्य देशों में तो केवल शारीरिक सुधार को लक्ष्य मे रख कर ही इस कला का प्रचार, मनन एवं विवेचन हो रहा है।

(सि० सिरीज से)

नोट—कथकलि नृत्य के विषय में एक सचित्र लेख "माधुरी" में प्रकाशित हुआ था। पाठको की जानकारी के लिये हम उसे यहा दे देना उचित समझते हैं। इस लेख में विद्वान लेखक ने यह भली प्रकार बता दिया है कि अँगुलियो की भिन्न-भिन्न मुद्राओं से किस प्रकार नृत्य प्रदर्शित किये जा सकते हैं:—

कथकलि नृत्य

(लेखक—श्री० परमेश्वरीलाल गुप्त)



त्य, गीत और वाद्य, भारतीय अभिनय के तीन मुख्य अङ्ग हैं। उसको चार भागों में विभक्त किया जा सकता है—आंगिक (मुद्रा प्रदर्शन) सात्विक (भाव प्रदर्शन), वाचिक (शब्द प्रदर्शन) और वाह्य प्रदर्शन। वाह्य प्रदर्शन का मुख्य साधन वस्त्र है और इसका विकास कलाकार और चित्रकार की तूलिका से हुआ है। वाचिक (शब्द प्रदर्शन) में गद्य और पद्य के दुहराने की क्रिया है और इसका सम्बन्ध गीत और साहित्य से अधिक है। किन्तु मुद्रा और भाव-प्रदर्शन स्वयं कला है।

आँसू, कँपकपी, स्वरभेद, रंगभेद, भय, मूर्छा आदि शारीरिक अवस्थाओं का प्रदर्शन भाव-प्रदर्शन होते हुए भी उसकी मुख्य सफलता मुद्रा-प्रदर्शन पर ही निर्भर करती है। यदि यह कहा जाय कि वस्तु, विचार और भाव अङ्ग (मुद्रा) प्रदर्शन के द्वारा ही किये जा सकते हैं तो अत्युक्ति न होगी, वस्त्र, शब्दभाव आदि तो आंगिक प्रदर्शन के सहायक हैं।

कहा यह जाता है कि मनुष्य के भाषा द्वारा विचार प्रकट करने के पूर्व मुद्रा प्रदर्शन ही उसके विचार-प्रदर्शन का एकमात्र साधन था। उसके सभ्यता के मार्ग में बढ़ने की पहली सीढ़ी मुद्रा (Gesture) ही थी। अब भी, जब कि सभ्यता ने भाव व्यक्त करने के सर्वोच्च साधन प्राप्त कर लिये हैं, यह कला मनुष्य जीवन के साथ है। जब वह बोलता है तो उसकी आंखें, गर्दन, नाक आदि हिल-हिलकर अपनी मुद्रा द्वारा उसके विचारों और भावनाओं का स्पष्टीकरण करती हैं। यदि वे अपना प्रदर्शन बन्द करदें या गलत प्रदर्शन करें तो बात नीरस हो जाय। मनुष्य के विचार के साथ मुद्रा-प्रदर्शन का घनिष्ठ सम्बन्ध है। भौंह का बांकापन आँख की चितवन, कपोल की ललाई, गर्दन के घूमने और हाथ के हिलने से हम उन भावों को तुरन्त समझ लेते हैं जिन्हें शब्द व्यक्त करने में असमर्थ होता है।

मुद्रा-प्रदर्शन से अभिनय का उसी प्रकार सम्बन्ध है, जिस प्रकार भाषा से साहित्य और स्वर के चढ़ाव-उतार से संगीत का। करों की मुद्रा के द्वारा अभिनय के इतने ही ऊँचे भाव प्रदर्शित किये जा सकते हैं, जितना कि साहित्य के वर्णन द्वारा। अभिनय अपने कवित्वमय संचालन से हमारे मस्तिष्क में उसी प्रकार गुदगुदी उत्पन्न कर देते हैं, जिस प्रकार सङ्गीत के ताल और लय।

अभिनय-कला का विकास भारत में बहुत पहले हो चुका था! प्रकृति की कृपा से अनेक शताब्दियों तक खाने-पीने आदि के दैनिक झगड़ों से वह मुक्त था। उन दिनों उसका ध्यान कला और दर्शन की उन्नति की ओर गया। अकेले अभिनय कला पर संस्कृत में पचास से अधिक पुस्तकें पाई जाती हैं, जिनके मौन, किन्तु विस्तृत समालोचना के रूप मे अजन्ता और चिदम्बरम् के मन्दिरों के चित्र आज वर्तमान हैं। यद्यपि उस कला के जीवित रूप की मृत्यु हो चुकी है, फिर भी केरल-प्रान्तवासियों को इस बात का गौरव प्राप्त है कि उन्होंने इस प्राचीन

कला को अपने पूर्ण एवं निर्मल रूप मे अर्थात् "कथकलि" के रूप मे आज तक जीवित रक्खा ।

"कथकलि" को पूर्णत्व प्रदान करने के लिये शब्द-प्रदर्शन को गौण रूप दे दिया गया, ताकि अभिनय मे मनोवैज्ञानिक और शारीरिक वस्तुओं को अधिक स्पष्ट रूप से ग्रहण किया जा सके। इस प्रकार गीत-तत्व के साथ ही वाद्य की ऐसी अवस्था होगई कि उसकी प्रधानता ही लुप्त हो गई। साधारण अनुभव की बात है कि बात-चीत करने या गाने के साथ ही भावों को अधिक स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं किया जा सकता। इसलिए 'कथकलि' के समझने के लिये उसका तत्वज्ञान आवश्यक हो गया।

किसी भी कला को समझने के लिए कुछ न कुछ तत्वज्ञान की आवश्यकता है। अनुभव यह बताता है कि उच्च साहित्य ज्ञान के बिना किसी भी साहित्य को समझना कठिन है। इसी प्रकार भारतीय नृत्य-कथकलि के समझने के लिये जिस तत्वज्ञान की आवश्यकता है, वह हाथों की मुद्रा का भाव समझना है। ये भाव इतने सुन्दर है कि किसी को नीरस नहीं जान पड़ते।

कला का यह तत्व भाग ऐसा है कि हाथ, हथेली और उङ्गलियों के इशारे द्वारा साधारण से साधारण वस्तु भी बहुत ही सुन्दर रूप में प्रदर्शित की जा सकती है। उदाहरण के रूप मे यों समझिए--"एक भ्रमर कमल का रस लेकर उड़ गया" यह बात सुनने में बहुत ही साधारण है और कानों को इसमे कोई सौन्दर्य नहीं जान पड़ेगा। किन्तु यही बात एक कुशल अभिनेता द्वारा प्रदर्शित होने पर आखों के लिये बहुत ही सौन्दर्यमयी हो सकती है। अभिनेता की दोनों गहरी हथेलियां एक मे मिलकर (कपोत-मुद्रा मे) जिस समय धीरे-धीरे ऊपर को उठती हैं तो यह प्रदर्शन दर्शक को तुरन्त अनुभव कराता है कि कमल की बन्द कली ऊपर को आरही है, फिर उङ्गलियां पीछे की ओर झुलती हुई अन्त मे खिले कमल (दो पद्मकोश-मुद्रा साथ ही) का रूप प्रदर्शित करती हैं। इस समय अभिनेता की दृष्टि पुष्परूप पर लगी होती है और उसकी मुख-मुद्रा उस समय ऐसी होती है जो सच्चे कमल को देखकर होती है। फिर वह अपने दाहिने हाथ को हटाकर एक विचित्र तरीके से उङ्गलियों को प्रदर्शित करता है। मुकुर-मुद्रा मे अपनी हथेली को ऊपर नीचे, आगे पीछे करता है और अपनी दृष्टि इन कृत्यो पर गढ़ाए है, जिससे दर्शक को यह ज्ञात होता है कि भ्रमर अपने परो से उड़ रहा है। ऐसी ही अवस्था मे दाहिना हाथ लाकर बांए हाथ पर जमा देता है, जो अब भी खिले कमल का रूप प्रदर्शित करता है। रस चूसने का दृश्य प्रभावोत्पादक रूप मे आखों द्वारा व्यक्त किया जाता है और कुछ क्षण मे भ्रमर उड जाता है। इसके अभिनय मे यद्यपि कमल का फूल वास्तविकता से परे है, फिर भी इसके आशय को समझने में मधुमक्खी के उड़ने की विचित्रता का प्रदर्शन हमारे मस्तिष्क मे घुसा देता है कि प्रदर्शन क्या है ?

यही इसका रहस्य है। हमारे शब्दों मे या तो शक्ति नहीं है या बराबर सुनते-सुनते वे इतने नीरस होगए हैं कि हमारे मस्तिष्क में भाव या भावनाएं उत्पन्न करने में

असमर्थ हो जाते है। किन्तु अभिनेता उसी वस्तु को अपनी कर मुद्रा द्वारा प्रदर्शित करते समय अपने चेहरे पर भी वही भाव लाता है और उसे अपनी आंखों द्वारा प्रदर्शित वस्तु से सम्बन्धित कर देता है। इस प्रकार वस्तु का रूप और तत्सम्बन्धी भावना एक ही बिन्दु पर आकर केन्द्रित होजाती है और एक नई गुदगुदी पैदा कर देती है।

मुद्रा-विशारदों के कथनानुसार "कर-मुद्रा द्वारा प्रदर्शन" नेत्र मुखाकृति एवं अन्य शरीराङ्गों की सहायता से, इस रूप मे किया जाना चाहिये कि वह अपने भावों को अच्छी तरह प्रकट करदे। जहां कर जाता हो, वहाँ आंख जाय, जहां आंख जाती हो, वहीं मस्तिष्क पहुँचे और मस्तिष्क में जो वस्तु उपजे वह स्वाभाविक और ठीक लक्ष्य पर पहुँचती हो। यही अभिनय की सफलता का रहस्य है।

इस प्रकार जब अभिनेता किसी पर्वत, सिंह, मृग, सर्प, सम्राट या लावण्यमय युवती का प्रदर्शन करता है तो स्वयं अपने को वही समझता है और तब दर्शक भी वही अनुभव करता है, जो वह जीवन में देख पाता है। अभिनेता के भाव की छाया स्वभावतः दर्शक पर पड़ती है।

विद्वानों के मतानुसार मुद्रा-प्रदर्शन का विकास ईशोपासना के रूप में वैदिक युग (यन्त्रो) मे हुआ था। जो भी हो 'कथकलि' का मुद्रा प्रदर्शन नाट्य-शास्त्र से लिया गया है, जो बहुत दिनों तक भारत का गौरव-निधि था। किन्तु संस्कृत पुस्तक 'हस्त-लक्षणदीपिका' जो कथकलि पर पहली पुस्तक समझी जाती है और शायद केरल प्रान्त में ही प्रचलित भी है, बहुत ही भ्रमात्मक है। उसमें २४ मुद्राओं के नाम वे ही हैं जो नाट्यशास्त्र मे पाये जाते हैं, किन्तु उनका प्रदर्शन रूप बिलकुल ही निराला और उनके विपरीत है। दूसरे शब्दों में दोनों पुस्तकों के प्रदर्शन का ढङ्ग अलग-अलग है। कभी-कभी यह भी सन्देह होता है कि 'कथकलि' की मुद्राएँ द्रावणों या मलयालियों की निधि हो सकती हैं। इसके सन्देह का कारण एक यह भी है कि ट्रावनकोर के पुरातत्व विभाग की ओर से एक चार्ट (Hand poses in Hindu art) (हिन्दू-कला मे कर मुद्राएँ) प्रकाशित हुआ है, जिसमें कर-मुद्रा के १५० रूप दिये हैं, जो नाट्यशास्त्र हस्तलक्षण दीपिका, अभिनयदर्पण और शिल्पप्तिकार की कर-मुद्राओं के अनुरूप ही है। रहस्य क्या है, इसकी खोज में मस्तिष्क चकरा जाता है।

भरत के अनुसार एकाकी कर-मुद्रा (Single hand pose) के २४ और संयुक्त कर मुद्रा (Combined hands pose) के १३ और नृत्य-मुद्रा के २८ रूप हैं इनमें नृत्य-मुद्रा मे पूरे बाहु की सुन्दर मुद्राएँ हैं जो नृत्य के समय धारण की जाती हैं इसके अतिरिक्त उनकी कोई विशेषता नहीं है। बाकी दोनों प्रकार की मुद्राओं का विशेष महत्व है और वे मुद्राएं प्रदर्शित वस्तु की रूप रेखा का अनुभव कराती हैं। कुछ स्थानों पर जीवित वस्तु भी कर, भ्रूभंगी और नृत्य-मुद्राओं द्वारा प्रदर्शित की जाती हैं।

अभिनयदर्पण मे, जो नाट्यशास्त्र के बहुत पीछे का है और दक्षिणी भारत के वायुमंडल का जान पड़ता है, एकाकी कर मुद्रा के ३२ और संयुक्तकर मुद्रा के २३ रूप दिये हुए हैं। इसमे नाट्यशास्त्र की सभी मुद्राओं के साथ ६-१० नई मुद्राएँ जोड़ दी गई है। इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि 'अभिनय-दर्पण' के युग में मुद्राओं की विशेष उन्नति हुई थी। इन ३२ मुद्राओं मे से २६ कथकलि की ३२ मुद्राओं में सम्मिलित

करली गईं और ३ उपयुक्त मुद्रा आविष्कृत की गईं। हस्तलक्षण दीपिका में केवल २४ मुद्रायें दी गई हैं। इसके अतिरिक्त नाट्यशास्त्र तथा अन्य पुस्तकों में मुद्रा का नामकरण उन वस्तुओं के आधार पर किया गया है, जिनको वे व्यक्त करती हैं, किन्तु हस्तलक्षण दीपिका में इसका तनिक भी ध्यान नहीं रक्खा है (जैसे—कर्तरीमुखी-कैंची की नोंक मुद्रा-४) इससे हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि हस्तलक्षण दीपिका कोई प्रमाणिक पुस्तक नहीं है और वह इधर-उधर से संकलित करली गई है, जिसके कारण बहुत ही जटिल होगई है।

यह समझ लेना चाहिये कि अधिकांश मुद्राओं का निरूपण उङ्गलियों के कुछ ही रूप परिवर्तन या सम्मेलन से होता है, और बाकी सौन्दर्य और सुविधा की दृष्टि से मुद्रा के स्थान परिवर्तन द्वारा। चूँकि अभिनेता अनेक मुद्राओं को एक के बाद एक दिखाता रहता है और हम उस पर अधिक ध्यान नहीं देते, इससे हमें यह भेद स्पष्ट नहीं जान पड़ता। पर यदि हम इस पर ध्यान दें तो हमें बहुत ही आश्चर्य होगा।

हमने प्रस्तुत लेख में मुद्राओं का विवरण पुस्तकों के विवरण से भिन्न इस रूप में दिया है, जो समझने में बहुत ही सरल जान पड़े। यहां दिये जाने वाले चित्र सब के सब 'कथकलि' से लिये गए हैं। मतान्तर कोष्ट में दे दिये गये हैं। मुद्राओं के नाम नाट्य-शास्त्र और अभिनव दर्पण से लिये गये है, क्योंकि वे ही इसकी प्रमाणिक पुस्तकें हैं।

इस छोटे से लेख में 'कथकलि' के मूल तत्व के ऐतिहासिक तथ्य को खोज की दृष्टि से लिखा गया है, यह सम्भव नहीं कि संयुक्त कर-मुद्राओं के सम्बन्ध में लिखा जा सके। वे मुद्राएँ किसी वस्तु को संयुक्त-करों द्वारा विशेष रूप में प्रदर्शित करने के लिये उपयुक्त होती है। कथकलि में नाट्यशास्त्र के अतिरिक्त जो दस या बारह रूप अभिनव-दर्पण में हैं और किसी वस्तु को कम या अधिक रूप में व्यक्त करते हैं, प्रयुक्त होते हैं। इस पर कुछ लिखे बिना ही हम कुछ मुद्राओं के चित्र दे रहे हैं, जो स्वयं अपना परिचय देंगे।

इनके अच्छी तरह समझने के लिये हस्तलक्षण-दीपिका सहायक नहीं होगी। उसमें भी संयुक्त कर मुद्राओं के कुछ रूप मिलेंगे, किन्तु वे मुद्रायें दोनों करों द्वारा अलग-अलग व्यक्त की जाती है। इसके अतिरिक्त उनकी संख्या ३०० से अधिक है।

एकाकी कर-मुद्रा और संयुक्त कर-मुद्रा के द्वारा ४०० से अधिक शब्द व्यक्त किये जा सकते हैं। उदाहरणतः संदेश मुद्रा-चित्र २१ में दाहिना हाथ छाती पर रक्खे हुए हथेली नीचे की ओर किये उङ्गलियों को भिन्न-भिन्न दिशाओं में घुमाते हुए मस्तिष्क ज्ञान, शंका, विचार, इच्छा, प्रसन्नता के भाव व्यक्त कर सकते हैं। इसके लिये दोनों कर प्रयुक्त होंगे।

ये मुद्रायें शिक्षक द्वारा ही सीखी जा सकती है, लेखों द्वारा उनका सीखना बहुत ही कठिन है। अगर किसी प्रकार समझा जा सके तो निरन्तर की थोड़ी भी चेष्टा से उनका सुन्दर प्रदर्शन किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त 'कथकलि' में हर एक संकेत के साथ नृत्य भी होता है। बाहु नियमित, निरन्तर और समान रूप से घूमने चाहिये। संक्षेप में कथकलि में हर एक शब्द छोटा सा नृत्य है।

———

एकाकी कर-मुद्रा

१--पताका--यदि समस्त उङ्गलियां सीधी तनी रहें और अँगूठा तनिक सा झुका रहे तो यह मुद्रा पताका की होगी।

२--त्रिपताका--

३--अर्ध पताका--

४--तर्तरी-मुख (कैंची की नौंक) अगर अर्धपताका की स्थिति में अनामिका और मध्यमा को खोलकर अनामिका को आगे और मध्यमा को पीछे कर दिया जाय तो कर्तरी मुख बन जायगा।

५--सूचीमुख

६--अर्धसूची

७--तमचुर

८--अरल (वक्र) यदि पताका (चित्र १) की स्थिति मे अनामिका को टेढ़ा करदें तो नई मुद्रा अरल होगी।

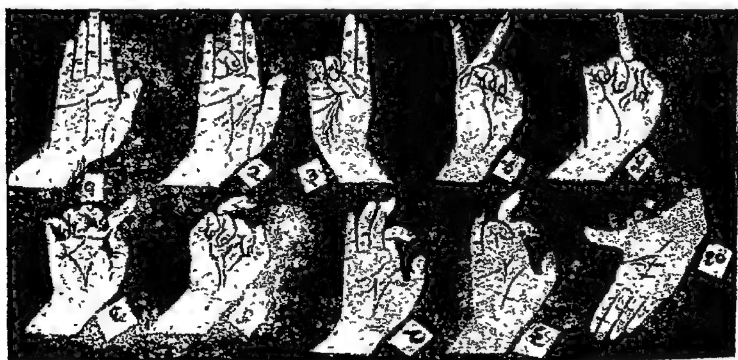
९--शुकतुण्ड--यदि कनिष्ठका के बगल वाली उङ्गली भी टेढ़ी करदी जाय तो शुकतुण्ड (तोते की चोंच होगी)

१०-अर्धचन्द्र--यदि पताका (चित्र १) में अँगूठे को तान दें तो अर्धचन्द्र बन जायगा।

११-सर्पशीर्ष-यदि पताका (चित्र १) को पूरा का पूरा आगे झुकादें अथवा हथेली को गहरा करदें तो सर्पशीर्ष हो जायगा।

१२-हन्सपन्त--यदि सर्पशीर्ष मे कनिष्टका को छोड़कर बाकी उङ्गलियों को थोड़ा और झुकादें और कनिष्टका को सीधी तान दें तो हन्सपन्त हो जायगा।

१३-चतुर--यदि अँगूठे को कनिष्टका की बगल तक लेजांय तो चतुर बन जायगा



१४-मृगशीर्ष

१५-मुष्टि

१६-कंकटमुख-दृढ़-मुष्टि

१७-शिखर-१७ अ-वर्धमानक

१८-चन्द्रकला

१९-कपित्थ

२०-कटकमुख

२१-संदंश

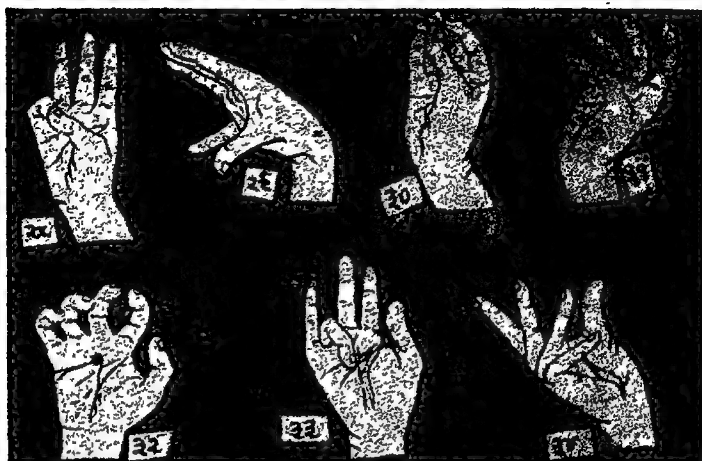


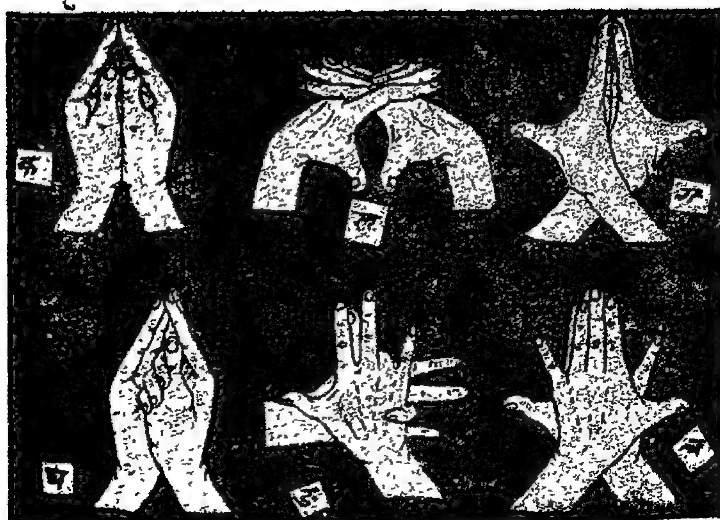
२२–हंसास्य
२३–भ्रमर
२४–सिंहमुख २४ (ब) हरिणशीर्ष सिंहमुख कथकलि मे प्रयुक्त नहीं होता। हस्तलक्षण दीपिका मे मृगशीर्ष (२ ब) पाया जाता है। किन्तु नाट्यशास्त्र में मृगशीर्ष (रूप १४) है, इसलिये अन्तर प्रदर्शित करने को हरिणशीर्ष प्रयुक्त किया गया है।

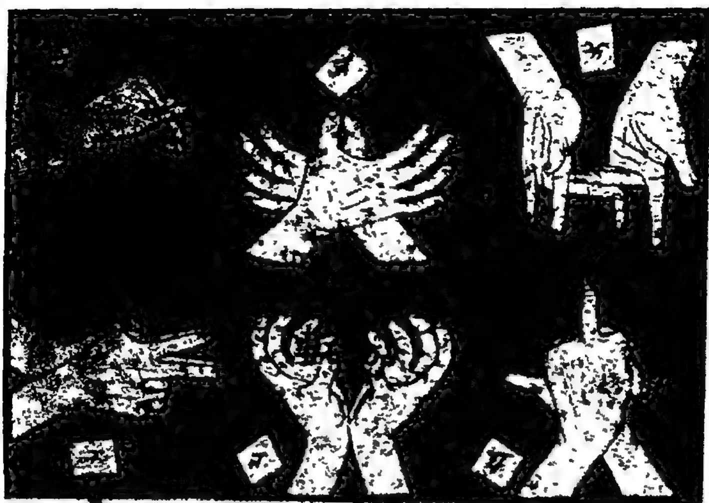
२५–मुकुर
२६–मयूर
२७–पल्ली (छिपकली) कथकलि मे प्रयुक्त नहीं होता।
२८–त्रिशूल
२९–व्याघ्र
३०–मुकुल
३१–पद्मकोश
३२–उर्णनाभ (मकड़ी)



३३-कांगुल (रागी अन्न का संकलन) ३४-अलपल्लव (कोमल पत्ती का हिलना)







संयुक्त कर-मुद्रा

क—कपोत-इसका प्रयोग कुमुद प्रार्थना आदि व्यक्त करने के लिये होता है, यदि कर विपरीत दिशा में हों तो वह 'वाराह' व्यक्त करते हैं।

ख—कर्कोटक (केकड़ा)-चर्म आदि व्यक्त करने के लिये प्रयुक्त होती है।

ग—स्वस्तिक

घ—शंख

ङ—चक्र

च—मत्स्य-कथकलि में कनिष्ठिका सीधी नहीं रहती, अँगूठा हिलता रहता है।

छ—वाराह-कथकलि मे यह भिन्न है (देखिये रूपक)।

ज—गरुड़-इसका प्रयोग कथकलि में नहीं होता।

झ—खट्वा (चारपाई)-कथकलि में प्रयोग नहीं होता।

ञ—हन्स-कथकलि मे गरुड़ भी इसी से व्यक्त किया जाता है। यदि खुली हुई उङ्गलियां बन्द करदी जांय और बन्द उङ्गलियां इसी तरह खोल ली जांय तो 'मयूर' व्यक्त होगा।

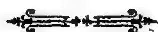
त—कमल

थ—कच्छप

इसमें से प्रथक ६ का वर्णन अभिनय-दर्पण मे है। बाकी तीन 'कथकलि' में प्रयुक्त होती हैं।

—(एक मलयालम लेख के आधार पर)

नृत्यकला के भेद-भाव



नृत्यकला के मुख्य दो भेद है, पहला तांडव, दूसरा लास्य। तांडव-नृत्य उसे कहते हैं जिसके हाव-भाव में कुछ खड़ापन हो और लास्य-नृत्य उसे कहते है जिसके हाव-भाव मे सुकुमारता हो। इनमें भी तीन भेद हैं। पहला नाट्य, दूसरा नृत्य, तीसरा नृत्त। जिस नाच में हाव-भाव खड़ा हो उसे नाट्य, जिस नाच में लय और ताल न हो उसे नृत्य और जिसमे ताल और लय हो उसे नृत्त कहते हैं।

यहाँ भाव का अर्थ है, मुख की आकृति या चेष्टा। अथवा मन में उत्पन्न होने वाली प्रवृत्ति को 'भाव' कहते हैं। जबान से कुछ बोले ही बिना केवल अङ्ग संचालन द्वारा नायक को नायिका अपने मन की वात समझा देती है, यही तो नृत्यकला की विशेषता है। भाव तीन प्रकार के कहे गये हैं।

(१) **बोल भाव**—अर्थात् जिस ताल में नृत्य किया जावे, उसके एक-एक बोल पैरों के घूंघरू द्वारा साफ-साफ निकाल कर बता दिये जावें, जैसे दादरा में नृत्य हो रहा हो तो घूंघरू से "धाधिन्ना तातिन्ना" साफ-साफ सुनाई पड़ें।

(२) **अर्थ भाव**—नृत्यकार जैसे गीत के साथ नाच रहा है, उस गीत के अर्थ को इशारों से बता देना ही "अर्थ भाव" है। जैसे गीत में हँसी का जिक्र है तो वहां मुस्करा कर बताना होगा। कहीं रंजो, राम की बात है तो वहां उदासी धारण करके बतानी होगी।

(३) **नेत्र भाग**—किसी गीत के भाव को नृत्यकार अपने नेत्रों द्वारा, पुतलियों के इशारे से व्यक्त करे तो उसे "नेत्र भाव" कहते है।

नाचने का अभ्यास—

नृत्यकला के विद्यार्थी को चाहिये कि पहले कुछ दिनों तक ताल का अभ्यास करले क्योंकि बिना ताल ज्ञान के नृत्यकला आ ही नहीं सकती। पैरों में घूंघरू बांधकर नाचने का अभ्यास करना चाहिये। आगे कुछ गतें, नृत्य के बोल और तोड़े दिये जाते हैं, उन्हीं के अनुसार पैर के घूंघरू से आवाज निकालने की चेष्टा करनी चाहिये। (अभ्यास करते समय तबला या मृदङ्ग बजाने वाले का प्रबन्ध कर लेना चाहिये। इससे अभ्यासी को बड़ी सहायता मिलती है)।

नृत्य के बोल—

तत, तीदा, थूं, थेई, थलांग, थन, तत, छा, छिछि, छूम, छम, छाम इत्यादि।

त्रिताल मात्रा १६ बोल "थकारान्त" घुंघुरू का।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
								ता	थेई	ता	थेई	थुं	थुं	थेई	थेई
थुं	थुं	थेई	थेई	थुं	थुं	थेई	थेई	तन	थेई	ता	क्रिधा	थेई	ता	क्रिधा	थेई

छकारान्त बोल, मात्रा १६

छाम छम छिछि छाम छाम छाम छिछि छाम

छः छः छाम छान धा छा म छः छः छाम छाम धा छा म छःछः छाम छाम धा

दादरा का नाच, मात्रा ६ — गरबा नृत्य (दादरा)

×			०			×			०			×			०		
१	२	३	४	५	६	१	२	३	४	५	६	१	२	३	४	५	६
ता	थेई	ता	थेई	तत	थेई	छ	न	न	छा	छू	म	छ	न	न	छा	छू	म

झपताल का नाच, मात्रा १०

×		२			०		३		
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
ता	थेई	ता	थेई	तत	ए	थेई	ता	थेई	तत

कहरवा का नाच, मात्रा ८ (२ आवृत्ति में)

×				२				×				२				×
१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८	
छाम	छुम	छाछा	छूम	छूम	छूम	छाछा	छूम	छाम	छुम	छा	छुम	छूम	छा	छूम	छूम	छा

नर्तकी सुलोचना के नृत्य की

एक गत



स्वरलिपिकारः—

(श्री० विक्रमादित्यसिंह निगम)

×				२				०				३			
नि़	सा	ग	–	ग	ग	ग	–	ग	गरे	म	–	म	म	सा	–
म	मप	ग॒	–	ग॒	ग॒	ग॒	–	ग॒	रेसा	रे	–	नि़	–	सा	–

नोट—इस गत को धीरे-धीरे बजाना चाहिये, लय विलम्बित होगी। इसे बजाने से नाच का समा बंध जायेगा।

नाच की गत सरगम

(लेखक—श्री० ज्योतिस्वरूप भटनागर, संगीत विशारद)

	×				२				०				३			
१	प	–	–	प	प	–	प	ध	म	प	ग	प	म	ग	सा	रे
२	प	–	–	प	प	–	प	ध	प	नि॒	ध	प	म	ग	सा	रे

नाच के तोड़े

	×				२				०				३			
१	सां	रें	सां	नि॒	ध	प	म	प	सां	नि॒	ध	प	म	ग	सा	रे
२	सा	रे	सा	म	ग	रे	सा	रे	म	प	ध	प	म	ग	सा	रे

३	सा	रे	ग	रे	ग	म	प	ध	म	प	ध	सां	नि॒	ध	म	प
	सां	रें	सां	नि॒	ध	ध	म	प	सां	नि॒	ध	प	म	ग	सा	रे
४	प	ध	प	ध	नि॒	ध	नि॒	ध	नि॒	सां	रें	सां	नि॒	ध	म	प
	गं	मं	पं	मं	गं	रे	सां	नि	सां	रे	सां	नि॒	ध	प	म	प
	प	म	ध	प	प	म	ध	प	नि॒	ध	प	म	ग	रे	सा	रे
५	म	प	ध	–	प	ध	नि॒	–	ध	नि॒	सां	रें	सां	नि॒	ध	–
	गं	मं	पं	मं	गं	रें	सां	–	सां	रें	सां	नि॒	ध	प	म	–
	म	प	ध	नि॒	सां	नि॒	ध	प	नि॒	ध	प	म	ग	रे	सा	रे
६	म	ध	प	नि॒	ध	सां	प	रें	सां	मं	गं	रें	सां	नि॒	ध	प
	म	ध	नि॒	सां	नि॒	ध	म	प	नि॒	ध	प	म	ग	रे	सा	रे
७	ध़	नि़॒	ध़	सा	नि॒	ध	म	प	सा	रे	ग	सा	रे	ग	म	प
	ध	नि॒	सां	नि॒	ध	प	म	ग	म	प	ध	प	म	ग	सा	रे
८	निसां	निसां	–	रें	सां	नि॒	ध	प	पध	पध	–	नि॒	ध	प	म	ग
	गम	गम	–	प	म	ग॒	रे	सा	सारे	सारे	ग	सारे	सारे	ग	सारे	सारे
९	गप	पप	गध	धध	पनि	निनि	धसां	सांसां	निसां	निरें	सांनि	धप	नि॒ध	पम	गरे	सारे

निम्नलिखित नाच के बोल हमे सरदार सुन्दरसिंह नृत्य शागिर्द उस्ताद बूटेखां, शागिर्द कालका बिंदादीन (लखनऊ) से प्राप्त हुये हैं।

(लखनऊ वालों का ततकार ८ मात्रा)

×				०			
ता	थई	थई	तत्	ए	थई	थई	तत्
१	२	३	४	५	६	७	८

(जयपुरियों का ततकार ८ मात्रा)

×				०			
१	२	३	४	५	६	७	८
ता	थइया	थइया	तत्	तीदा	थइया	थइया	तत्

कहरवा का नाच (छकारांतक)

×				०			
१	२	३	४	५	६	७	८
छि	छी	छुम	उम	छि	छी	छुम	उम